

83

वैद्य श्रीकृष्ण जी द्वारा

प्रदत्त

श्री:

— प्रमोदकुमारदीक्षी

योगेश्वरश्रीयुतगौरीपुत्रनित्यनाथविरचितं

कामरत्नम्



मुरादाबादनिवासि श्रीयुत पण्डित ज्वाला-

प्रसादमिश्रकृतहिन्दीटीकासहितम्



गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक—“लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर” स्टीम्-प्रेस

कल्याण-बंबई.

संवत् २०४०-सन् १९८३

सर्वाधिकार “श्रीवेङ्कटेश्वर” यन्त्रालयाध्यक्षाधीन है

अधिकतम मुचि मुख्य २४ रुपया

मुद्रक —

दे स शर्मा. मेनेजर, खेमराज श्रीकृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस, खेतवाडी, बम्बई-४

प्रस्तावना

उस सर्वशक्तिमान् परब्रह्म परमात्माको कोटिशः धन्यवाद है जिसने इस असार संसार सागर में नाना विद्वान् पुरुष रत्न उत्पन्न किये हैं जिन्होंने लौकिक जीवों के उपकारार्थ व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिषादि अनेक विषय के ग्रन्थ निर्माण किये हैं।

उन्होंने महाशयों की गणना में यह एक श्रीयुत योगेश्वर गौरीपुत्र नित्य-नाथजी भी हैं जिन्होंने परम अद्भुत यह “कामरत्न” ग्रन्थ निर्मित किया है। वास्तव में लोकोपकारहित यह ग्रन्थ अद्वितीयही है संसार में यावत् आवश्यक-कीय प्रयोग मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण, स्तम्भनादिक हैं सबकी विधि सविस्तर इसमें लिखी है, इसके सिवाय सर्वव्याधि निवारण चिकित्सा और यन्त्र मन्त्र तंत्रादि सब पदार्थोंसहित कल्पवृक्ष इव अभीष्टदायक है। अब और विशेष हम क्या प्रशंसा करें? अवलोकनसे सब वृत्त ज्ञात होगा।

यह परमोपयोगी ग्रन्थ हमको श्रीत्रिविक्रममिश्र स्टूडेंट, मेडिकल कालेज आगरा द्वारा प्राप्त हुआ है। हमने पं. श्रीज्वालाप्रसादजी मिश्र द्वारा इसका सरल भाषानुवाद कराय निज “लक्ष्मीवैकटेश्वर यन्त्रालय” में मुद्रित कर प्रकाशित किया है। आशा है कि पाठक गण उक्त हमारे हितैषियोंको धन्य-वाद देते हुए हमारे परिश्रमको सफल करेंगे।

आप सज्जनोंका कृपापात्र—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
“लक्ष्मीवैकटेश्वर” छापखाना
कल्याण—बम्बई

भूमिका

भारतवर्षकी विद्याओंमें तन्त्र शास्त्रभी एक अनुपम सामग्री है इस शास्त्रके मुख्य आचार्य भूतभावन देवादिवेव महादेवजी हैं। इन्होंने प्राणियोंका अल्प सामर्थ्य देख थोड़े परिश्रमसे ही भक्तोंकी कार्यसिद्धिके निमित्त तन्त्र शास्त्रका उपदेश किया है, तन्त्र में मन्त्र यन्त्र और औषधी तीनों का प्रयोग होने से शीघ्र ही कार्यकी सिद्धि होती है, इसी कारण तन्त्र शास्त्र की महिमा सर्वत्र बड़े प्रभाव के साथ सुनी जाती है, जब काल क्रमसे शास्त्र लुप्त हुआ तब बड़े २ सिद्ध योगी महात्माओं ने अपने तपके द्वारा मन्त्र और यन्त्रोंको देखकर उनमें दैवी शक्ति स्थापन कर चराचरके उपकारकी इच्छा की, तंत्रों में आदि आचार्य होने और सब विषय महेश्वरी से कथन करने के कारण शिवजी का सर्वत्र संवाद पाया जाता है, । सिद्धि योगियोंने तपसे उस वार्ताको जान अपने ग्रंथों में भी प्रायः वैसाही लिखा है। देश, काल, पात्र, राशि, मुहूर्त, योग मिलाकर मन्त्र साधने से साधक को शीघ्र सिद्धि होती है। तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र पूर्वक औषधी का प्रयोग करनेसे रोगीको बहुत शीघ्र आरोग्यता होती है तथा षट् कर्मसे कुशलता होती है, इन्ही सब योगों से यह विद्या एक समय संपूर्ण विश्वमें व्याप्त थी, अथर्ववेद में इसका मूल है, बड़ी २ गूढ़ विद्या मन्त्रशास्त्रमें प्रत्यक्ष फल देनेवाली विद्यमान है, जिनके अनुष्ठान से साधक मनोरथ बहुत शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु मन्त्रानुष्ठानमें गुरुकी बड़ी आवश्यकता है। जो कृतज्ञ, कृतकार्य, अनुभवी, जितेन्द्रिय गुरुके मुखसे विधि ग्रहण कर उनकी आज्ञासे शुभ दिन में अनुष्ठान प्रारंभ करते हैं वे सिद्धि लाभ करते हैं और जो निरक्षर भट्टाचार्य बिना गुरु के मन्त्र सिद्धि करना चाहते हैं उनके मनोरथकी प्राप्ति नहीं होती। इस कारण गुरुके द्वाराही तन्त्र विधानमें प्रवृत्त होना चाहिये और कठिन प्रयोगों में तो कृतकार्य गुरुकी बड़ी ही आवश्यकता है। कालक्रमसे इस समय फिर तन्त्रशास्त्रका प्रचार घट चला है, कोई २ देश तो ऐसे हो गये कि तन्त्र क्या पदार्थ है इसको भी नहीं जानते और कार्य सिद्धि के

निमित्त इधर उधर भटकते फिरते तथा सैकड़ों रुपये व्यय करके भी पूर्णरूपसे कृतकार्य नहीं होते हैं। तन्त्र द्वारा स्वल्प व्यय और स्वल्प परिश्रमसे कृत-कार्यता हो। यहाँ विचारकर परोपकार दृष्टिसे वैश्यवंशदिवाकर जगद्विख्यात सेठजी श्रीयुत गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी महोदयने सत्प्राचीन तन्त्रों के प्रचार करनेकी इच्छासे कितने एक तन्त्र भाषाटीकासहित प्रकाशित किये और करते जाते हैं, जिनमें ६४ तन्त्रों का सार-महानिर्वाण तन्त्र बलदेवप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीका सहित, तथा रावणकृत बालतन्त्रादि मुख्य हैं प्रकाशित हुए। ऐसे ग्रन्थोंमें कामरत्न ग्रन्थ बहुत उत्कृष्ट और सर्व साधारणको लाभ-दायक है। इसकी एक लिखी हुई पोथी सेठजीने मेरे पास भेजकर भाषाटीका करनेको कहा, यद्यपि वह लिखी पुस्तक विशेषरूपसे अशुद्ध थी परन्तु दो और पुस्तक मिल जाने के कारण उसके शुद्ध करनेमें विशेष कठिनाई न पड़ी और भाषाटीकासहित तयार कर पुस्तक प्रेषण की।

इस ग्रन्थमें कितने विषय हैं इसके कहनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं। कारण कि, इसकी सूचीमें वह विषय विस्तारसे लिखे हैं परन्तु यह कहने में अत्युक्ति नहीं है कि, इस समयतक जिसने तन्त्र प्रकाशित हुए हैं उनसे यह उत्कृष्ट है और प्रायः इसमें सब विषय सन्निविष्ट हैं। इसकी उत्तमताका एक और भी प्रमाण यह है कि, प्रकाशित होतेही शीघ्रतासे यह ग्रन्थ निकल गया और किन्ही असहनशील ईर्ष्यापरवश लोलुप जनोंको यहाँतक क्षोभ हुआ कि, बंबई सरकारमें, पुस्तक को अश्लील कहकर अभियोग उपस्थित कर दिया, परन्तु 'यतो धर्मस्ततो जयः' जहाँ धर्म वहाँ जय, सत्यकी जय होती है अनृतकी नहीं। अन्तमें पुस्तक उपयोगी और प्रकाशनीय सिद्ध होकर श्रीधरालयाध्यक्षकी जय हुई।

अबकी आवृत्तिमें प्राचीन लिखित कामरत्नकी पुस्तकोंसे मिलाकर इसको विशेष शुद्ध करदिया है, तथा जहाँ कहीं कोई विशेषता इनमें देखी वह भी इसमें संयुक्त करदी गई है जिसमें प्रथमकी अपेक्षा पुस्तक बहुत शुद्ध और बृहत् भी हो गई है। औषधि और मन्त्र के प्रयोगों के साथ ग्रंथकारने यंत्र भी लिखे हैं। मन्त्र और यंत्र दोनोंही मिलकर तंत्र सिद्ध होता है इस कारण दोनोंही इस ग्रन्थमें संयुक्त करदिये गये हैं।

तंत्र शास्त्र के प्रचार करनेमें इस समय मुरादाबाद निवासी पंडित बलदेवप्रसाद मिश्रभी अतिशय यत्नवान् हैं और उन्होंने बहुतसे तंत्र बड़ी खोजके साथ प्रकाशित भी किये हैं जिससे इस विद्याके प्रचारकी शीघ्र सम्भावना है, परन्तु साथही इस तंत्र शास्त्रका प्रचार होता देख उदरभर स्वार्थी केवल द्रव्य उपार्जनकी इच्छासे तन्त्रोंमें खमेलकरनेको कटिबद्ध हो रहे हैं कोई तो कहींकी सौपचास श्लोक संग्रह कर उसका प्राचीन तंत्रोंके नामोंमेंसे कोई चमकता-सानाम रख देते हैं, कोई मिथ्याही किसी पुस्तकको तंत्र कहकर अनर्थ करते हैं, कोई अपने तंत्रको अथर्व वेदान्तगत प्रगटकर सहृदय पुरुषोंको प्रतारण करनेकी आसुरी लीला प्रगट कर रहे हैं, कोई भत प्रेत सिद्धि वीरभद्रसिद्धि दो दो चार २ पत्रोंकी पुस्तकों को बड़े आडम्बर के साथ प्रकाश करके बड़ी कीमत लेकर ग्राहकों के चित्त संकुचित कर रहे हैं, किन्हीं की यथार्थ तंत्रोंको देख इतनी आत्मा कुलबुलाती है कि, तंत्रोंके ऊपर वरुणालयका प्रयोग करके चिल्ला रहे हैं । कोई कहींसे दो चार पत्रे उठाय तंत्र बनाय यही तंत्र है २ कहते हुए ढोल पीटते हुए दान पात्र बन रहे हैं बहुत क्या इन मिथ्यातंत्र और कल्पोंके नामसे जो पुस्तकें प्रकाशित होती हैं इनसे बड़ी हानि है कारण कि, जब कभी वे असली पुस्तक प्रकाशित होंगी तब लोगों को बड़ा भ्रम होगा कि, इसमें सत्य ग्रन्थ कौनसा है ? एक नामके दो ग्रन्थोंका बखेड़ा पाठक जानही सकते हैं । “केटलाग आफ संस्कृत मेन्युस्क्रिप्स” (Catalogue of Sanskrit Manuscripts) जिसमें प्रायः संस्कृतकी पुस्तकोंके बहुतसे नाम उनके पत्रों और श्लोकोंकी संख्या संवत् निर्माताका नाम तथा जिसके पास वह पुस्तकें हैं उनका पता लिखा रहता है जो गवर्नमेण्टके आर्डरसे प्रकाशित हुई हैं । इसके देखनेसे विदित होता है कि, कई मिथ्या तंत्र लोगोंने प्रकाशित किये हैं जो कि, उस ग्रन्थ में बृहत् और इस समय चार पांच पत्रोंमें प्रकाश किये गये हैं । फिर ऐसे तंत्रों को ग्रहण कर उससे लाभ न होनेसे सज्जनोंकी अरुचि होनेकी सम्भावना क्यों न हो ? इन नकली तंत्रोंकेभी प्रचारसे असली तंत्रोंके भी मिलजुलकर संदेह है । अनुवादक तथा तंत्रके खोजनेवालोंसे हमारा यह कहना है कि, यदि आपसे तन्त्र प्रकाश किये बिना नहीं रहाजाता तो असली तन्त्रोंको अनुवाद और प्रकाश कर यशके भागी हूजिये प्रपंचसे लाभ नहीं होता.

पाठक महाशयों से प्रार्थना है कि, इस ग्रन्थको अद्योपान्त देखकर लाभ उठावें। यद्यपि यथाशक्ति इसको ठीक करदिया है तथापि यदि कहीं कुछ त्रुटि रह गई हो तो क्षमा कर हंसके समान गुणग्राही हूजिये। इस आवृत्तिमें और भी विशेषयत्नके साथ शद्धिकी गई है।

आपका—

ज्वालाप्रसाद मिश्र
(दिनदारपुरा)—मुरादाबाद

श्रीः

कामरत्नस्य-विषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
प्रथमोपदेशः		तृतीयोपदेशः	
मङ्गलाचरणम्	१	जयः	४५
औषधिग्रहणे कालनिर्णयः ...	२	विजयकरयंत्राणि	४९
षट्कर्माणि	३	सौभाग्यकरणम्	५१
तत्र कालनिर्णयः	४	सौभाग्ययंत्राणि	५१
तत्र तिथिनिर्णयः	५	ईश्वरादीनां क्रोधोपशमनम्	५३
वारादिनिर्णयः	५	क्रोधोपशमनयन्त्रे, गजनिवारणम्	५३
माहेन्द्रादिनिर्णयः	६	व्याघ्रनिवारणम्	५४
तत्र नक्षत्राणि	६	चतुर्थोपदेशः	
तत्रांगुलीनिर्णयः	७	शत्रूणां मुखस्तम्भनम् ...	५५
औषधीनां बलावलविचारः	७	शत्रुमुखस्तम्भनयन्त्राणि ...	५६
मूलिकाग्रहणविधिः	८	निद्रा नौका शस्त्र-स्तम्भनम्	५७
अभिमंत्रणमंत्रम्	८	अथाग्निस्तम्भनम्	६१
नमस्कारः, खननम्	९	जलस्तम्भनम्	६२
वशीकरणम्, सर्वजनवशीकरणम्	१०	जलस्तम्भनयन्त्रे	६३
सर्वजनवशीकरणयंत्राणि ...	२१	दिव्यस्तम्भनम् यन्त्रे च ...	६४
राजवशीकरणम्	२५	लोहदिव्यस्तम्भनमन्त्रः ...	६६
राजवशीकरणयंत्राणि	२६	गजगोमहिष्यादिस्तम्भनम्	६६
स्त्रीवशीकरणम्	२७	मनुष्यस्तम्भनम्	६७
स्त्रीवशीकरणयन्त्राणि	२९	मनुष्यस्तम्भनयंत्राणि ...	६७
स्त्रीवशीकरणयन्त्रे, पतिवशीकरणम्	३४	मनःस्तम्भनम्	६८
द्वितीयोपदेशः		आसनस्तम्भनम्	६८
आकर्षणम्	३७	सर्वभूतबुद्धिस्तम्भनम् ...	६९
युवत्याकर्षणयंत्राणि	३९	शत्रुबुद्धिस्तम्भनम्	६९
आकर्षणयंत्राणि	३८		

(२)

कामरत्नस्य—

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
चौरगतिस्तम्भनम् ...	७०	कामामृतयोगः ...	११७
गर्भस्तम्भनम् ...	७०	धात्रीलोहम् ...	११८
शुक्रस्तम्भनम् ...	७१	कामेश्वरसः ...	११९
वीर्यस्तम्भनयन्त्रम् ...	७९	वाजीकरणकालः ...	१२१
त्रिभुवनस्तम्भनयन्त्रे ...	७९	वाजीकरणफलम् ...	१२२
पञ्चमोपदेशः		स्त्रीसङ्गमकालः ...	१२२
मोहनम्, धूपविधिः ...	८०	अन्यथास्त्रीसङ्गमे दोषाः ...	१२३
मोहनयन्त्राणि ...	८१	वाजीकरणयोग्या स्त्री ...	१२४
शत्रुमोहनम् ...	८३	वाजीकरणयोग्याः ...	१२४
मोहशमनम्, रञ्जनम् तत्र		सप्तमोपदेशः	
देहरञ्जनम् ...	८४	गाढीकरणम्, तत्र भ निषेधः	१२५
मुखरञ्जनम् ...	८७	स्त्रीद्रावरणम् ...	१२७
केशरञ्जनम् ...	९३	कामध्वजस्थूलीकरणं	
स्नानीयसुगन्धिद्रव्यम् ...	९९	दृढीकरणं च ...	१३२
केशयूकादिनिवारणम् ...	१००	स्तनवर्द्धनम्, उत्थापनं ...	१३७
केशस्येन्द्रलुप्तादिनिवारणम्	१०२	योनिस्कारः	
केशशुद्धीकरणम् ...	१०४	लोभशातनविधिः ...	१४१
षष्ठोपदेशः		अष्टमोपदेशः	
वाजीकरणम् ...	१०५	षष्ठीकरणम् तच्छमनं च...	१४४
नृसिंहचूर्णम् ...	१०९	दुष्टस्त्रीकृतध्वजपातोत्थापनम्	१४६
मदनमोदकः ...	१११	योनिबन्धनं मोक्षणं च ...	१४७
कामकलारसः ...	११२	गृहकोदारकनिवारण ...	१५१
अनङ्गसुन्दरीवटिका ...	११४	नष्टपुष्पायाः पुष्पकरणम्...	१५१
महाकामेश्वररसः ...	११४	पुष्पीकरणयन्त्रम् पातनं च	१५२
मदनोदयरसः ...	११६	गर्भस्त्रावणम् ...	१५२
कामाङ्गनायकचूर्णम् ...	११७	तन्त्राभिनवगर्भस्त्रावणम् ...	१५२

विषयानुक्रमिका

(३)

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
रक्तनिवारणम् ...	१५४	बन्धनयन्त्रम् ...	१९०
बन्ध्यानां गर्भधारणम् ...	१५८	बन्धमोचनम्, मंत्रश्च ...	१९०
जन्मबन्ध्याचिकित्सा ...	१५८	बन्धमोचनयन्त्राणि ...	१९०
यन्त्राणि च ...	१५९	निगडादिभञ्जनम् मंत्राश्च	२००
काकबन्ध्याचिकित्सा ...	१६५	गृहक्लेशनिवारणम् ...	२०३
मृतवत्साचिकित्सा ...	१६६	क्षेत्रोपद्रवनाशनम् ...	२०६
फलघृतम् ...	१६९	गोमहिष्यादिदुग्धवर्द्धनम् ...	२०८
बन्ध्यानां सर्वारिष्टनिवारणं		दशमोपदेशः	
यन्त्रम् ...	१७१	उच्चाटनम्-यन्त्राणि च ...	२०९
गर्भरक्षा ...	१७१	उच्चाटनप्रकारान्तरम् ...	२१४
सामान्यचिकित्सा ...	१७५	धवलाध्यानम् ...	२१५
गर्भशुष्कनिवारण, सुखप्रसव-		विद्वेषणम्-यन्त्राणि च ...	२१६
विधिः ...	१७८	निवापाञ्जलिमन्त्रः ...	२१८
सुखप्रसवमन्त्रः ...	१८०	व्याधिकरणम्-यन्त्राणि च	२१८
बालानां सर्वग्रहनिवारणं, यन्त्राणि	१८१	ज्वरानयनम्-यन्त्राणि च ...	२१९
नरसिंहमन्त्रः ...	१८५	अक्षिरोगजननम् ...	२२२
बालस्याहितुण्डकादिनिवारणम्	१८६	शत्रुभ्रामणम् ...	२२३
स्त्रीणां पुष्परक्षा ...	१८६	उन्मत्तीकरणम्-यन्त्राणि च	२२४
दुर्भगाकरणम् ...	१८८	मारण-यन्त्राणि च ...	२२५
दातृशक्तिप्रदयन्त्रे ...	१८८	अश्वनाशनम् ...	२३१
दातृशक्तिनिवारणयन्त्रम् ...	१८८	सस्यनाशनं, रजकस्य वस्त्र-	
कलहकरणम् ...	१८९	नाशनम् ...	२३२
नवमोपदेशः		धीवरस्य मत्स्यनाशनम् ...	२३३
सर्वारिष्टनाशार्थं रक्षा		कुम्भकारस्य भाण्डनाशनम्	२३३
यन्त्राणि च ...	१९०	तैलिकस्य तैलनाशनम् ...	२३३
निद्राकरणम् ...	१९५	गोपानां गवां क्षीरनाशनम्	२३५
निगमोक्तम् ...	१९५	तांबूलपर्णनाशनम् ...	२३५
निद्राकरणमन्त्रः ...	१९६	शाकनाशनम् ...	२३५
निद्रानाशनम् ...	१९७	तन्तुवायस्य सूत्रनाशनम् ...	२३५

(४)

कामरत्नस्य—

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
शौण्डिकस्य मदिरानाशनम्	२३६	त्रयोदशोपदेशः	
कर्मकारस्य लोहनाशनम् ...	२३६	निघिदशंकमञ्जनम्,	
शरीरवेधमोचनमंत्रः ...	२३६	अबिकायंत्रम् ...	२७३
एकादशोपदेशः		अदृश्यकरणम् ...	२८०
नानाकौतुकम् ...	२३७	मृतसञ्जीवनी ...	२८६
उपरोक्तयोगानां मन्त्रः ...	२४४	चतुर्दशोपदेशः	
खड्गस्तम्भनम् ...	२४४	विषनिवारणम् ...	२९०
सर्वार्थसिद्धिप्रदयन्त्रम् ...	२४५	सर्पविषनिवारणम्-मंत्रश्च	२९५
द्वादशोपदेशः		अष्टकुलनागाः ...	२९६
काम्यसिद्धिः ...	२४६	दंशभेदाः ...	२९७
वाक्सिद्धिः ...	२४७	स्थानभेदेन दंशफलम् ...	२९७
गुप्तधनगुप्तवेषचौरादिप्रका-		विषचिकित्सा ...	३००
शनम् ...	२४८	वृश्चिकविषनिवारणम् ...	३१४
धनुर्विद्या ...	२४९	शतपदीविषनिवारणम् ...	३१८
धनधान्याक्षयकरणम् ...	२५१	मूषकविषनिवारणम् ...	३१८
श्रुतिधरविद्यादिकरणम् ...	२५२	श्वानविषनिवारणम् ...	३१९
ब्राह्मीघृतम् ...	२५३	मत्स्यमेकादिविषनिवारणम्	३२०
किन्नरीकरणम् ...	२५६	व्याघ्रविषनिवारणम् ...	३२०
चक्षुष्यम् ...	२५८	कीटविषनिवारणम् ...	३२२
चन्द्रोदया वटी ...	२६१	सर्वजन्तूनां विषनिवारणम्	३२३
कर्णस्य बधिरत्वनाशनम् ...	२६२	उपविषादिनिवारणम् ...	३२३
कर्णपालीवर्द्धनम् ...	२६३	कृत्रिमविषनिवारणम् ...	३२४
दन्तदृढीकरणम् ...	२६४	योगजविषनिवारणम् ...	२२६
गण्डमालानिवारणम् ...	२६७	भल्लातकविषनिवारणम् ...	३२७
आहारकरणम् ...	२६८	पञ्चदशोपदेशः	
अनाहारकरणम् ...	२६९	द्वात्रिंशद्यक्षिणीसाधनम् ...	३२८
पादुकासाधनम् ...	२७०	तत्र साधकनियमाः	३२८
अनावृष्टिकरणयंत्रं, हरणं च	२७२		

विषयानुक्रमणिका

(५)

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
विभ्रमा रतिप्रियासाधनम्	३२९	रसमारणम्	३४६
सुरसुन्दरीसाधनम्...	३३०	गर्भयन्त्रप्रकारः	३५२
अनुरागिणीसाधनम्	३३०	हिङ्गुलशुद्धिः	३५३
सामुद्रीसाधनम्	३३१	गन्धकशुद्धिः	"
वटयक्षिणीसाधनम्	३३२	अभ्रकशुद्धिः	३५४
विशालासाधनम्	३३३	अमृतीकरणम्	३५६
महाभयासाधनम्	३३३	अभ्रकसत्त्वपातनम्	"
चन्द्रिकासाधनम्	३३४	मनःशिलाशुद्धिः	३५७
रक्तकंबलासाधनम्	३३४	हरतालशुद्धिः	"
विद्युज्जिह्वासाधनम्	३३५	तुथशुद्धिः	३५८
कर्णपिशाचिनीसाधनम्	३३५	काशीशशंखनाभिशुद्धिः	"
चिचपिशाचिनीसाधनम्	३३६	शातकुम्भादिधातुशोधनम्	"
कर्णयक्षिणीसाधनम्	३३७	तुथटङ्कणकाचलोहशोधनम्	३५९
स्वप्नावती विचित्रासाधनम्	३३७	सर्वेषां मते मारणम्	३६०
हंसी-मदनासाधनम्	३३८	अस्य दोषहरणम्	३६१
कालकर्णी-लक्ष्मीयक्षिणीसा.	३३९	ल्लेहमारणम्	३६२
शोभनासाधनम् नटीसाधनम्	३४०	मृतस्य लक्षणम्	३६३
पद्मिनीसाधनम्	३४१	शोधनम्	"
पुरसुन्दरीका साधन	३४२	अमृती करणम्, भूनागसत्त्वम्	"
मनोहरीसाधन, कलावतीसाधन	३४२	लवणपञ्चकम्, क्षाराः	३६४
कामेश्वरीसाधन	३४३	वृक्षक्षारः,	"
रतिकरीसाधन	३४३	विडः, अम्लवर्गः,	३६५
पद्मिनीसाधन, नंटीसाधन	३४३	वज्रभूषा	३६६
अनुरागिणीसाधन	३४४	तोलका प्रमाण	"
		दीर्घायुष्यकरणम्...	३६७
षोडशोपदेशः		इति विषयानुक्रमणिका	
रसशोधनम्	३४५		

श्रीगणेशाय नमः

अथ कामरत्नम्

हिन्दीटीकासहितम्



प्रथमोपदेशः

श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः

मंगलाचरणम्

यस्येश्वरस्य विमलं चरणारविन्दं

संसेव्यते विबुधविद्धमधुव्रतेन ।

निर्वाणसूचकगुणाष्टकवर्गं पूर्णं

तं शङ्करं सकलदुःखहरं नमामि ॥ १ ॥

दोहा—गौरीशंकर पदकमल, प्रेमसहित हियलाय ।

कामरत्नभाषातिलक, बहुविधि लिखत बनाय ॥

श्रीगणेशमंगलकरन, हरन सकल भयशूल ।

द्विजज्वालाप्रसादपर, सदा रहहु अनुकूल ॥

जिन ईश्वरके निर्मल चरणारविन्द देवता सिद्ध भ्रमरके समान उपासना करते रहते हैं, जिनके गुणानुवाद स्मरणसे मुक्ति होजाती है उन अष्टमूर्ति, वेदपूर्ण, सम्पूर्ण दुःख हरनेवाले शंकरको मैं नमस्कार करता हूं. “निर्माणशातकगुणाष्टकवर्गपूर्णम्” ऐसा भी पाठ है, अर्थ—जो सम्पूर्णसृष्टिके संहार गुण ध्यान धारणादि अष्टांग योग और धर्मादि चार वर्गमें विराजित हैं उन सम्पूर्ण दुःखनाशक शिवको प्रणाम है ॥१॥

(२)

कामरत्न

प्रथम-

पार्वतीप्रश्न

देव्युवाच

ज्ञातं तव प्रसादेन यथा कालस्य बन्धनम् ।
 मन्त्रस्य सारसंभूतमिदानीमौषधं वद ॥
 औषधान्यप्यनेकानि मनुजानां हिताय वे ।
 पूर्वं तु यत्त्वया प्रोक्तं प्रत्यक्षं कथयस्व मे ॥ १ ॥

देवी कहने लगीं—हे भगवन् ! आपकी कृपासे मैंने यथायोग्य कालका बंधन जाना, अब इस समय आप मन्त्रके सारसे प्रगट होनेवाली औषधी कहिये. आपने पहले मनुष्योंके हित करनेवाली अनेक औषधी कही हैं, अब प्रत्यक्ष कहिये ॥ १ ॥

औषधिग्रहणे कालनिर्णयः

ईश्वर उवाच

कामरत्नमिदं चित्रं नानातन्त्रार्णवान्मया ।
 वश्यादियक्षिणीमंत्रसाधनान्तं समुद्धृतम् ॥ २ ॥
 तिथिनक्षत्रकारेण ऋतुभेदैः परिग्रहः ।
 खननोत्पाटनं मन्त्रैः कारयेद्वै चिकित्सकः ॥ ३ ॥
 औषधं कालयोगेन गृह्णाति परमं बलम् ।
 शरद्धेमान्तिके देवि त्वचो मूलपरिग्रहः ॥ ४ ॥
 शिशिरे च फलं सम्यङ्मूलं सारसमन्वितम् ।
 वसन्ते पुष्पपत्रे च ग्रीष्मे च फलबीजके ॥ ५ ॥

उपदेश १.

हिन्दीटीकासहित

(३)

स्वकाले बलवन्तोऽपि वर्षासु तरवः सदा ।

मूले शुष्के बलं चाद्धं मलादौ भिषजे तथा ॥ ६ ॥

ग्रीष्मवर्षिकयोरेतच्छरत्संपूर्णता भवेत् ।

वृक्षादीनां फलं बीजं स्वकीये चार्तवे तथा ॥ ७ ॥

फलपुष्पलता ह्येते स्वकाले बलिनस्तथा ।

निशायां वनजा वीर्या जलजा बलिनो दिवा ॥ ८ ॥

शिवजी कहने लगे—हे देवि ! तुम्हारे प्रश्नके लिये यह विचित्र काश्मरत्न नामक ग्रन्थ अनेक सागररूप ग्रन्थोंसे संग्रह करके वशीकरणसे प्रारंभ कर यक्षिणीमन्त्रके साधनपर्यन्त उद्धृत किया है, इसमें तिथि-नक्षत्र, वार और ऋतुओंके भेदसे औषधियोंका ग्रहण, खनन, उखाडना मन्त्रपूर्वक वैद्यकी करना चाहिये । समय योगमें ग्रहण की हुई औषधी परम बल करती है । शरद् और हेमन्तमें त्वचा (छाल) और मूल ग्रहण करना । शिशिरमें फल मूल और सार ग्रहण करने चाहिये । वसन्तमें पुष्प पत्र और ग्रीष्ममें फल बीज ग्रहण करने चाहिये । अपने काल और वर्षा में वृक्ष संदा बलवान् होते हैं । मूल शुष्कहीजानेसे आधा बल होता है तथा मलादि निकालनेमें तथा भेषजमें निर्बल होती हैं । ग्रीष्म वर्षा और शरद्में सम्पूर्णता होती है, वृक्षादिके फल बीज अपनी ऋतुमें ग्रहण करने चाहिये । फल पुष्प लता अपने समयमें बलवान् होती हैं । रातमें वनकी होनेवाली बली होती हैं और दिनमें जलमें होनेवाली औषधी आदि बली होती हैं ॥ २-८ ॥

षट्कर्माणि

शान्तिवश्यस्तम्भनानि द्वेषणोच्चाटने तथा ।

मारणान्तानि शंसन्ति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥ ९ ॥

(४)

कामरत्न

प्रथम—

शान्ति, वशीकरण, स्तंभन, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण ये छः कर्म विद्वानोंने कहे हैं ॥ ९ ॥

षट्कर्मणि कालनिर्णयः

वश्याकर्षणकर्मणि वसन्ते योजयेत्प्रिये ।

ग्रीष्मे विद्वेषणं कुर्यात्प्रावृषि स्तम्भनं तथा ॥ १० ॥

शिशिरे मारणञ्चैव शान्तिकं शरदि स्मृतम् ।

हेमन्ते पौष्टिकं कुर्याद्विषयकर्मविशारदैः ॥ ११ ॥

हे प्रिय पार्वति ! वशीकरण और आकर्षण कर्म वसन्त ऋतुमें करने चाहिये । ग्रीष्मऋतुमें विद्वेषण, वर्षाऋतुमें स्तंभन, शिशिरमें मारण, शरद्में शान्तिकर्म हेमन्तमें पुष्टिकर्म इन छः कर्म कर्मोंके जाननेवालोंको करने चाहिये ॥ १० ॥ ११ ॥

वसन्ते चैव पूर्वाह्णे ग्रीष्मे मध्याह्ने उच्यते ।

वर्षा ज्ञेयाऽपराह्णे तु प्रदोषे शिशिरस्तथा ।

अर्द्धरात्रे शरत्काले ॐ उषा हेमन्त उच्यते ॥ १२ ॥

दुपहरसे पहिले वसन्त, मध्याह्नमें ग्रीष्म, तीसरे प्रहरको वर्षा, प्रदोषमें शिशिर, आधी रातमें शरद्, उषः काल (पांच घड़ीके तडके) में, हेमन्त ऋतु जाननी उचित है ॥ १२ ॥

ऋतवः कथिता ह्येते सर्वे ह्येव क्रमेण तु ।

तद्विहीना न सिद्ध्यन्ति प्रयत्नेनापि कुर्वतः ॥

अनन्यकरणात्ते हि ध्रुवं सिद्ध्यन्ति नान्यथा ॥ १३ ॥

यह क्रमसे ऋतुओंका वर्णन किया है, कालके बिना यत्न करने परभी मन्त्र सिद्धिको प्राप्त नहीं होते और अपने कालमें करनेसे वे सिद्ध होते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ १३ ॥

* पंचपंच उषःकालः इति धर्मशास्त्र

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(५)

तत्र तिथिनिर्णयः

वशीकरणकर्माणि ॐ सप्तम्यां साधयेद्बुधः ।

तृतीयायां त्रयोदश्यां तथाकर्षणकर्म वै ॥ १४ ॥

चतुर पुरुषको उचित है कि, सप्तमीमें वशीकरण कर्म साधन करे, तीज और तेरसके दिन आकर्षण कर्म करना चाहिये ॥ १४ ॥

उच्चाटनं द्वितीयायां षष्ठ्याञ्चैव प्रकारयेत् ।

स्तम्भनञ्च चतुर्दश्यां चतुर्थ्यां प्रतिपद्यपि ॥ १५ ॥

दोयज और छटको उच्चाटन कर्म करे, चौथ चौदसको तथा पडवाको भी स्तम्भन करे ॥ १५ ॥

मोहनन्तु नवम्याञ्च तथाष्टम्यां प्रयोजयेत् ।

द्वादश्यां मारणञ्चैवमेकादश्यां तथैव च ॥ १६ ॥

नवमी और अष्टमी को मोहनकर्म करे, एकादशी द्वादशीको मारण कर्म करना चाहिये ॥ १६ ॥

पञ्चम्यां पौर्णमास्याञ्च योजयेच्छान्तिकादिकम् ।

सर्वविद्याप्रसिद्धयर्थं तिथयः कथिताः क्रमात् । १७ ॥

पंचमी और पौर्णमासीको मारण कर्म करना चाहिये । यह तिथि-सर्व विद्याओंकी प्रसिद्धिके निमित्त कही हैं ॥ १७ ॥

वारादिनिर्णयः

शुक्रे लक्ष्मीः शनौ वश्यं रवौ मारणकर्म च ।

उच्चाटनं बुधे भौमे विद्वेषादि शुभं भवेत् ॥ १८ ॥

शुक्रवारमें लक्ष्मी, शनिको वशीकरण, रविवारको मारण, बुधको उच्चाटन, मंगलको विद्वेषणकर्म शुभ होता है ॥ १८ ॥

* दशम्यामित्यपिपाठ

(६)

कामरत्न

प्रथम-

माहेन्द्रादिनिर्णयः

स्तंभनं मोहनञ्चैव वशीकरणमुत्तमम् ।

माहेन्द्रे वारुणे चैव कर्तव्यमिह विद्विदम् ॥

विद्वेषोच्चाटनं वह्निवायुयोगेन कारयेत् ॥ १९ ॥

स्तंभनं मोहन और उत्तम वशीकरण माहेन्द्रं च वारुण मंडलमें करनेसे सिद्धिको देनेवाला है। विद्वेषण और उच्चाटन अग्नि और वायुके योगमें अर्थात् इन तत्त्वोंके उदय में करावे ॥ १९ ॥

तत्र नक्षत्राणि

ज्येष्ठा चैवोत्तराषाढा ह्यनुराधा च रोहिणी ।

माहेन्द्रमण्डलस्थाश्च प्रोक्ताः कर्मप्रसिद्धिदाः ॥ २० ॥

ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अनुराधा, रोहिणी यह माहेन्द्र मण्डलमें स्थित हुए कर्मविद्विके देनेवाले हैं ॥ २० ॥

स्यादुत्तराभाद्रपदा मूला शतभिषा तथा ।

पूर्वाभाद्रपदाश्लेषा ज्ञेया वारुणमध्यगाः ।

पूर्वाषाढा च तत्कर्मसिद्धिदा शम्भुना स्मृताः ॥ २१ ॥

उत्तराभाद्रपदा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, आश्लेषा यह वारुण मण्डलके मध्यचारी कहाते हैं और इसी प्रकार शिवजीने पूर्वाषाढाके उक्त कर्मसिद्धिका देनेवाला कहा है ॥ २१ ॥

स्वाती हस्तो मृगशिराश्चित्रा चोत्तरफाल्गुनी ।

पुष्य पुनर्वसुर्वह्निमण्डलस्थाः प्रकीर्तिताः ॥ २२ ॥

स्वाती, हस्त, मृगशिर, चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, पुष्य, पुनर्वसु वह्निमण्डलमें स्थित हैं ॥ २२ ॥

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(७)

अश्विनी भरणी चार्द्रा धनिष्ठा श्रवणं मघा ।

विशाखा कृत्तिका पूर्वाफाल्गुनी रेवती तथा ।

वायुमण्डलमध्यस्थास्तत्तत्कर्मप्रसिद्धिदाः ॥ २३ ॥

अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा, श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका
पूर्वाफाल्गुनी रेवती ये वायुमण्डलमें स्थित हुए उन उन कर्मोंकी
सिद्धि देनेवाले हैं ॥ २३ ॥

शान्तिकं पौष्टिकञ्चैव ह्यभिचारिक कर्मच ॥ २४ ॥

शान्ति, पुष्टि और अभिचारके कर्म—आगे लिखी अंगुली द्वारा करे
तो सिद्ध होते हैं ॥ २४ ॥

तत्राङ्गुलीनिर्णयः

तर्जन्यादिसमारूढं कुर्याद्यत्नात्कर्मं सुधीः ।

तथाङ्गुष्ठासमारूढा सर्वकर्म ह्युभे तथा ॥ २५ ॥

पूर्वोक्त कर्म तर्जनी (अँगूठेके निकटकी अंगुली) आदि द्वारा यथा
क्रमसे करे और अंगुष्ठसे सब शुभकर्म प्रयोग करने चाहिये अर्थात्
अंगुष्ठ और तर्जनी द्वारा शान्तिकार्य, मध्यमा और अंगुष्ठसे पौष्टिक,
अनामिका और अंगुष्ठके अभिचारकर्म करे ॥ २५ ॥

औषधीनां बलावलविचारः

विधिमन्त्रसमायुक्तमौषधं सफलं भवेत् ।

विधिमन्त्रविहीनं तु काष्ठवद्भूषजं भवेत् ॥ २६ ॥

विधिपूर्वक मन्त्रद्वारा लाईहुई औषधी सफल होती है और विधि
तथा मन्त्रके बिना लाईहुई औषधी काष्ठके समान होती है ॥ २६ ॥

एकान्ते तु शुभारण्ये तिष्ठत्येव यदौषधम् ।

कार्यविद्धिर्भवेत्तेन वीर्यमस्तिच तत्र वै ॥ २७ ॥

(८)

कामरत्न

प्रथम-

जो औषधी एकान्तमें अच्छे बनमें स्थित होती है उससे कार्य-
सिद्धि होती है, कारण कि, उसमें बल रहता है ॥ २७ ॥

बल्मीककूपरथ्यातरुतलदेवालयश्मशानेषु ।

जाता विधिना विहिता ओषधयः सिद्धिदा न स्युः ॥ २८ ॥

बाँबी, कूप (कुँआ), मार्ग वृक्षके नीचेकी, देवालय, श्मशा-
नमें उत्पन्न हुई औषधी विधिपूर्वक लाई हुई भी सिद्धि देनेवाली
नहीं होती ॥ २८ ॥

जलजीर्णमग्निकवलितमकालजातं कृमिक्षतशरीरम् ।

न्यूनं तथाधिकं वा द्रव्यमद्रव्यं जगुर्भिषजः ॥ २९ ॥

जलसे गलीहुई, अग्निसे जलीहुई, अकालमें उत्पन्न हुई, कृमिसे
खाई हुई, बहुत थोड़ी तथा अधिक औषधी (द्रव्य) होनेपरभी नहीं
होनेके समान है, ऐसा विद्वान् कहते हैं ॥ २९ ॥

अथ मूलिकाग्रहणविधिः

भूतादियुक्तमभ्यर्च्य गिरीशं प्रातरुत्थितैः ।

श्राद्धैरुपासितैर्वापि संग्राह्यं सर्वमौषधम् ॥ ३० ॥

प्रातःकाल उठकर भूतादिके सहित शिवका पूजन कर शुद्धव्रता-
दिसे युक्त हो सम्पूर्ण औषधियोंको ग्रहण करना चाहिये ॥ ३० ॥

इत्येवं सर्वमूलानां विधिर्मन्त्रश्च कथ्यते ।

आदौ वृक्षस्य मूलञ्च गत्वा तमभिमन्त्रयेत् ॥ ३१ ॥

इस प्रकारसे सब मूलोंकी विधि और मन्त्रको कहते हैं । पहले वृक्ष-
मूलमें जाकर उसको अभिमन्त्रित करे ॥ ३१ ॥

अभिमन्त्रणमन्त्रम्

ॐ वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च सरीसृपाः ।

अपसर्पन्तु ते सर्वे वृक्षादस्माच्छिवाज्ञया ॥ ३२ ॥

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(९)

यह मन्त्र है कि—वेताल, पिशाच, राक्षस, सरीसृप शिवकी आज्ञासे सब इस वृक्षसे दूर हों ॥ ३२ ॥

ततो नमस्कारः

ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यविर्वाद्धिनि ।

बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः ॥ ३३ ॥

फिर नमस्कार करके यह मन्त्र पढ़े—अमृतसे उत्पन्न, ब्रह्म-वीर्यकी बढ़ानेवाली ! बल और आयु मुझे दो और दूरसेही पापोंसे मेरी रक्षा करो ॥ ३३ ॥

ततः खननम्

येन त्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः ।

येन हीन्द्रोऽथ वरुणो येन त्वामपचक्रमे ॥ ३४ ॥

यह कहकर खोदे—जिस कारण कि, तुमको ब्रह्मा और भृगुजीने खोदा है, जिस कारण कि, तुमको इन्द्र और वरुणने खोदा है ॥ ३४ ॥

तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना ।

मा पातेमानि पतिते मां ते तेजोन्यथा भवेत् ॥ ३५ ॥

इसी कारण मन्त्रसे पवित्र हाथोंसे मैं तुमको खनन करता हूँ, खोदने और उखाड़नेमें तुम्हारा तेज अन्यथा न हो ॥ ३५ ॥

अत्रैव तिष्ठ कल्याणि मम कार्यकरी भव ।

मम कार्ये कृते सिद्धे ततः स्वर्गं गमिष्यसि ॥ ३६ ॥

हे, कल्याणि ! यहीं स्थित होकर तुम हमारा कार्य करो । मेरे कार्यकी सिद्धि होनेसे फिर तुम्हारा स्वर्गमें गमन होगा ॥ ३६ ॥

“ॐ ह्रीं चण्डे हूं फट्स्वाहा,, अनेन मन्त्रेणा-

दित्यवारे पुण्यनक्षत्रे वा पुण्यार्कयोगे वा सर्वा

(१०)

कामरत्न

प्रथम-

औषधीरूपाटयेत् ॥ “ॐ ह्रीं क्षौं फट् स्वाहा” ॥

अनेन मूलिकां छेदयेत् ॥ इति मूलिकाग्रहणविधिः ॥

“ओं ह्रीं चण्डे हूं फट् स्वाहा” इस मन्त्रसे रविवारके दिन, पुष्य नक्षत्र वा पुष्य अर्क योगमें सम्पूर्ण औषधी उखाड़े ॥ “ओं ह्रीं क्षौं फट् स्वाहा” इस मन्त्रसे मूलिका छेदन करे ॥ इति मूलिकाग्रहणकी विधि ।

ॐ वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा ॥ ॐ शूद्री

(सूत्री) कपालमालिनी स्वाहा ॥ प्रत्येकं

सप्तधा जप्त्वा वन्दा ग्राह्या ॥ ततः कार्यसिद्धिः ॥

इति विन्दाग्रहणविधिः ।

“ओं वनदण्डे महादण्डाय स्वाहा । ओं शूद्री कपालमालिनी स्वाहा ” यह प्रत्येक सात बार जपकर वन्दा ग्रहण करे तो कार्यकी सिद्धि होती है ॥ इति वन्दाग्रहणमन्त्र ॥

इत्येवं सर्वविद्यानां सिद्धये कालनिर्णयः ।

कथितं चात्र यत्नेन मूलिकाग्रहणादिकम् ॥ ३७ ॥

इस प्रकार सब विद्याओंकी सिद्धिमें ऋतुआदिकाल निर्णय है । यह यत्नपूर्वक मूलग्रहणादिकी विधि कही है ॥ ३७ ॥

अथ वशीकरणम्

तत्र सर्वजनवशीकरणम्

वर्णानामुत्तमं वर्णं मन्त्रस्थानं तथैव च ।

ओङ्कारशिरसं चापि ओङ्कारशिरसं ततः ॥ ३८ ॥

अधोभागे च रेफञ्च दत्त्वा मन्त्रं समुद्धरेत् ।

निरामिषान्नभोक्ता च जप्तव्यो मन्त्र एव च ॥ ३९ ॥

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(११)

प्रथम सम्पूर्ण जनोंको वश करनेकी विधि—जो वर्णोंमें उत्तम वर्ण है वह मंत्रका स्थान है । ओंकार शिरके स्थानमें और दूसरे क प व लिखकर अधोभागमें रेफ देकर उद्धार करे । मांसरहित अन्न खाकर मन्त्र को जपे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

“क्रों प्रों व्रों” अनेन मन्त्रेण—

असाध्याश्चापि राजानः पुत्रमित्राश्च बान्धवाः ।

ये मे गोत्रसमुत्पन्नाः पशवो ये च सर्वतः ॥ ४० ॥

ते सर्वे वशतां यान्ति सहस्राद्धस्य जापनात् ।

पृष्ठ्वा दृष्ट्वा च ये साध्या गृहीत्वा नाम तत्र वै ॥ ४१ ॥

“क्रों प्रों व्रों” इस मंत्रसे असाध्य राजा, पुत्र, मित्र, बांधव जो अपने गोत्रमें हैं और जो पशुप्राय है वे सब ५०० बार मन्त्र जप करनेसे वशीभूत हो जाते हैं । उन साध्योंसे पूछकर देखकर उनके नाम लेकर सिद्ध करे (क्रों प्रों के बदले कहींपर ओं डों ऐसा पाठ है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

(“ओं ह्रीं क्लीं कलिकुण्डस्वामिनी अमृतवक्त्र अमुकं जृम्भय मोहय स्वाहा” यह मंत्र इक्कीस बार जपनेसे सिद्धि होती है ॥ १ ॥

उद्भ्रान्त पत्र, मँजीठ, कुंकुम, तगर यह समान ले खान पान और स्पर्शमें देनेसे वशी करता है । पुष्यनक्षत्रमें सिंहकी मूल लाय कमरमें बांधनेसे जगत्प्रिय होता है ॥ २ ॥ कृष्णचतुर्दशीमें श्मशानसे महानील लावे उसे उखाड नरतेलसे अंजन करे तो लोक वशीभूत होता है अथवा इसीकी मूल अपने वीर्यसे अंजन करे तो लोक वशमें होता है ॥ ३ ॥ अथवा इसीकी मूल हाथमें बांधनेसे सर्व प्रिय होता है ॥ ४ ॥ चंद्रवार पुष्यनक्षत्रमें ब्रह्मदण्डीकी मूल लाय अञ्जनसे करनेसे सब जीववशमें होते हैं ॥ ५ ॥ उल्लूके नेत्र, घीकुवार, वंश-लोचन इसके अञ्जनसे लोक वशीभूत होते हैं ॥ ६ ॥ “ओं नमो महा-यक्षिणी अमुकं वशमानय स्वाहा, ” इस मन्त्रका दशसहस्र जपनेसे सब सिद्ध होती है ॥)

इत्यादिकाः सर्वमन्त्रा ग्राह्या भक्त्या गुरोस्तदा ।

सिद्धयन्ति सर्वकार्याणिनान्यथा सिद्धिभागभवेत् ॥४२॥

सम्पूर्ण मन्त्र भक्तिपूर्वक गुरुसे ग्रहण करनेसे इससे तो सब कार्य सिद्ध होजाते हैं, अन्यथा कार्यसिद्धि नहीं होती ॥ ४२ ॥

“ॐ नमः कटविकटघोररूपिणीस्वाहा ॥” अनेन मन्त्रेण सप्ताभिमन्त्रितं भक्त पिंडं यस्य नाम्ना सप्ताहं खाद्यते स ध्रुवमेव वश्यो भवति ॥

“ओंनमः कट विकट घोररूपिणी स्वाहा” इस मन्त्रसे सात बार अभिमन्त्रित कर भोजन पिण्डको जिसका नाम लेकर बराबर सात दिनतक खाय वह अवश्य वशमें होजाता है ॥

“ॐ वश्यमुखी राजमुखी स्वाहा ॥” अनेन मुखप्रक्षालनात्सर्वे वश्या भवन्ति ॥

“वश्यमुखी राजमुखी स्वाहा” इस मन्त्रको पढ सात बार मुख धोनेसे सब वशमें होजाते हैं ।

“ॐ शृराजमुखि वश्यमुखि स्वाहा ॥” वामहस्तेतैलं संस्थाप्य अनामिकया त्रिधा आमन्त्र्य पुनर्मूलमन्त्रं त्रिधा पठित्वा प्रातःकाले शय्यायां स्थित्वा मुखकेशादौ विलेपयेत् । तदा सर्वजना वश्या भवन्ति, व्याघ्रोपि न खादति ॥

“ॐ राजमुखिवश्यमुखि स्वाहा” इससे बायें हाथमें तेल लेकर कान्गुलीसे तीन बार अभिमन्त्रित कर फिर मूलिकाको तीन बार पढका प्रातःकाल शय्यामें स्थित होकर मुख और केशादिमें लगावे, तब सब मनुष्य वशमें होते हैं, व्याघ्रभी उसको नहीं खाता ।

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(१३)

“ॐ चामुण्डे जय २ स्तम्भय २ जंभय २ मोहय २
सर्वसत्त्वान्नमः स्वाहा” अनेन पुष्पाण्यभिमन्त्र्य
यस्मै दीयते स वश्यो भवति ॥

“ॐ चामुण्डे जय २ स्तम्भय २ जंभय २ मोहय २ सर्वसत्त्वा-
न्नमः स्वाहा” इस मन्त्रसे पुष्प अभिमन्त्रित करके जिसको दियाजाय
वह वशीभूत हो जाता है ॥

एकचित्तस्थितो मन्त्रीमन्त्र जप्त्वायुतत्रयम् ।

ततः क्षोभयते लोकान् दर्शनादेव साधकः ॥ ४३ ॥

मन्त्र जपनेवाला स्थिरचित्त होकर तीस सहस्र मन्त्र जप करके
अपने दर्शनसेही लोकोंको क्षुभित कर सकता है ॥ ४३ ॥

भूताख्यवटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् ।

विभूत्या संयुतं मन्त्रं तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ ४४ ॥

शाखोटवृक्षकी जड़ यत्नसे घिसकर विभूतिके साथ तिलक लगावे
तो लोक वशीभूत होजाते हैं ॥ ४४ ॥

पुण्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभिमन्त्रितम् ॥ बद्ध्वा

सर्वत्र पूज्यः स्यान्मन्त्रस्तवत्रैव कथ्यते ॥ “ऐं रौं डं

क्षोभय भगवति त्वं स्वाहा” । मन्त्रमिममुक्तयोग-

स्य पूर्वमयुतद्वयं जपेत्ततः ॥ ४५ ॥

पुण्य नक्षत्रमें पुनर्नवाकी जड़को उक्तमन्त्रसे सातवार अभिमन्त्रित
कर हाथमें बाँधे तो सर्वत्र पूजित होता है । मन्त्र यह है—“ऐं रौं डं
क्षोभय भगवति त्वं स्वाहा” यह मन्त्र २ ०००० जपनेसे सिद्धि होती
है ॥ ४५ ॥

* कहीं खराफ पाठ है ।

अपामार्गस्य मूलन्तु पेषयेद्रोचनेन च ।

ललाटे तिलकं कुर्याद्विशी कुर्याज्जगत्रयम् ॥ ४६ ॥

अपामार्ग (चिरचिते) की जड़को गोरोचनके साथ पीसले, इसका तिलक अस्तकमें करनेसे त्रिलोकीको अपने वशमें कर सकता है ॥ ४६ ॥

“ॐ नमः कन्दर्पशरविजालिनिमालिनि सर्वलोक-
वशंकरि स्वाहा ॥” इति मन्त्रयुक्तयोगस्याष्टोत्तर-
सहस्रं जपेत्ततः सिद्धिः ॥ ४७ ॥

“नमः कन्दर्पशर” यह मन्त्रको कथितयोगमें १००८ बार जपनेसे सिद्धि होती है ॥ ४७ ॥

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामष्टम्यां बाह्युपोषितः ।

बलिं दत्त्वा समुद्धृत्य सहदेवीं सचूर्णयेत् ॥

ताम्बूलेन तु तच्चूर्णं दत्तं वश्यकरं ध्रुवम् ।

स्नाने लेपे च तच्चूर्णं योज्यं वश्यकरं भवेत् ॥ ४८ ॥

कृष्णपक्षकी चौदस और अष्टमीका व्रत रहकर बलि देकर सहदे-
ईकी जड़को उखाड़के चूर्ण करे । उस चूर्णको पानमें रखकर जिसको
दीजाय वह अवश्य वशीभूत होजाता है तथा इसीका चूर्ण स्नानीयक
जलमें मिलाकर नहानेसे अथवा शरीरमें लेपन करनेसे वश्यता
होती है ॥ ४८ ॥

रोचनासहदेवीभ्यां तिलकं लोकवश्यकृत् ।

शिरसा धारेत्तच्च चूर्णं सर्वत्र वश्यकृत् ॥ ४९ ॥

गोरोचन और सहदेई मिलाकर तिलक करनेसे लोक वशीभूत

उपदेशः १,

हिन्दीटीकासहित

(१५)

होते हैं और उसका चूर्ण शिरपर धारण करनेसे भी लोक वशीभूत होते हैं ॥ ४९ ॥

मुखे क्षिप्त्वा च तन्मूलं कट्यां बध्ना च कामयेत् ।

यां नारीं सा भवेद्वश्या मन्त्रयोगेन कथ्यते ॥

“ॐ नमो भगवति मातङ्गेश्वरी सर्वमुखरञ्जिनि सर्वेषां
महामाये मातङ्गि कुमारिके लहलहजिह्वे सर्वलोकवशं-
करि स्वाहा ॥ सहस्रं जप्त्वा उक्तयोगानां सिद्धिः ॥ ५० ॥

उस सहदेईमूलको अन्यस्त्रियोंके द्वारा जिसके मुखमें डालदे या कमरमें उक्त मन्त्रयोगसे बाँधदे तो वह स्त्री वशमें होजाती है । मन्त्र यह है—“ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुखरञ्जिनि सर्वेषां महामाये मातंगि कुमारिके लहलहजिह्वे सर्वलोकवशंकरि स्वाहा” इसको सहस्र जप करनेसे ऊपर कहे योगकी सिद्धि होती है ॥ ५० ॥

श्वेतपराजितामूलं × चन्द्रग्रस्ते समुद्धृतम् ।

रञ्जिताक्षो नरस्तेन वशीकुर्याज्जगत्रयम् ।

तन्मूलं रोचनायुक्तं तिलकेन जगद्वशम् ॥ ५१ ॥

श्वेतविष्णुकान्ताकी जड चन्द्रग्रहणमें उखाडकर लावे उसको पीस-
कर आंखोंमें आंजनेसे त्रिलोकी वशमें होती है और इसकी जडका
गोरोचनके साथ तिलक लगानेसे जगत् वशमें होता है ॥ ५१ ॥

+ ग्राह्यं कृष्णत्रयोदश्यां श्वेतगुञ्जीयमूलकम् ।

ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥ ५२ ॥

कृष्णपक्षकी त्रयोदशीके दिन सफेद चौंटलीकी जडको लावे,
उसको ताम्बूलके साथ देनेसे सब लोक वशीभूत होते हैं ॥ ५२ ॥

* हल हल । × मृगश्रक्ष । + ग्राह्यं शुक्लचतुर्दश्यां । इति च पाठान्तरम्

शिलारोचनाताम्बूलं वारिणा तिलके कृते ।

संभाषणेन सर्वेषां वशीकरणमुत्तमम् ।

स्वर्णेन वेष्टितं कृत्वा तेनैव तिलके कृते ॥ ५३ ॥

दृष्टमात्रे वशं याति नारी वा पुरुषोऽपि वा ।

“ॐ वज्रकिरणेशिवेरक्षभवेममाद्यमृतंकुरुस्वाहा ।

इमं मंत्रमुक्तयोगेन सहस्रं जपेत्ततः सिद्धिः ॥ ५४ ॥

मनसिल और गोरोचन ताम्बूलजलके साथ घिसकर तिलक लगानेसे जिसके साथ संभाषण करे वह वशमें होसकता है तथा स्वर्णसे वेष्टित कर “ॐ वज्रकिरणे शिवे रक्षभवेममाद्यमृतं कुरु कुरु स्वाहा” इसको एक हजार बार जप कर तिलक करनेसे नारी या पुरुष कोई हो देखतेही वशीभूत होजाता है इससे अवश्य सिद्ध होती है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

हृत्पादचक्षुर्नासानां मूलं पूगे प्रदापयेत् ।

तत्पूगं खाद्यते येन यावज्जीवं वशीभवेत् ॥ ५५ ॥

हृदय, चरण नेत्र नासिकाका मूल इनको पूग (सुपारी) से किंचित्भी देनेसे खानेवाला जीवनपर्यंत उसके वशमें होजाता है ॥ ५५ ॥

मंत्राभिमंत्रितं कृत्वा दण्डेन्दीवरमूलकम् ।

रोचनाभिस्ताम्रपात्रे मृष्ट्वा नेत्रद्वयाञ्जनात् ॥

प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टमात्रे न संशयः ॥ ५६ ॥

नीलकमलकी जड़को पूर्वोक्तमंत्रसे अभिमंत्रित करके गोरोचन ताम्रपत्रमें पीसकर दोनों नेत्रोंमें आंजनेसे देखतेही वह मनुष्य सबकुछ प्यारा होजाता है. इसमें सन्देह ॥ ५६ ॥

१ श्रौवक्रकिरणे शिवेरक्षभये ममाद्यामृतं कुरुकुरुस्वाहा इति वा पाठः ।

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(१७)

तन्मूलं मधुसंयुक्तं ललाटे तिलके कृते ।

ताम्बूले वा प्रदातव्यं वशीकरणमुत्तमम् ॥ ५७ ॥

इसीकी (नीलकमलकी) जड़का सहतके साथ तिलक लगानेसे वा ताम्बूलके साथ देनेसे उत्तम वशीकरण होजाता है ॥ ५७ ॥

तन्मूलं रञ्जनोत्थं वा मूलं पिष्ट्वा प्रयोजयेत् ।

ताम्बूलेन तु तद्भुक्ते ध्रुवं वश्यं समानयेत् ।

‘ॐ पिङ्गलायै नमः’ अनेनमंत्रेणाभिमन्त्र्योक्तयो-

गान् साधयेत् ॥ ५८ ॥

तथा नीलकमलकी जड़, तिरिच्छकी जड़ पीसकर ‘ओम् पिङ्गलायै नमः’ इस मंत्रसे अभिमन्त्रितकर पानकेसाथ प्रयोग करे । ताम्बूल खाते-ही वह मनुष्य वशमें होजायगा ॥ ५८ ॥

रक्तगृध्रोभयं नेत्रनेत्रं वा कृष्णपेचकम् ।

कृष्णपेचिकमाहृत्य तत्तैलेन प्रदीपकम् ॥ ५९ ॥

कृत्वा च मधुना लिप्त्वा वर्ति कज्जलपातने ।

तेन नेत्राञ्जनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ ६० ॥

लाल गृध्रके दोनों नेत्र और कालेउल्लूका नेत्र लेकर या काले उल्लूको लाकर उसे तेल से प्रदीप्त करके और सब प्रकार सावधानी करके उसको सहतसे लपेटकर बत्ती बनाय काजर पारे, उस काजरको नेत्रोंमें लगानेसे त्रिलोकीको वशमें करसकता है ॥ ५९ ॥ ६० ॥

देवदाली च सिद्धार्थ गुटिकां कारयेद्बुधः ।

मुखे निःक्षिप्य सर्वेषां प्रियो भवति नान्यथा ॥ ६१ ॥

देवदाली (घघरबेल) सरसों इनका गुटिका बनाकर मुखमें रख-नेसे सबका प्रिय होता है इसमें संदेह नहीं । कहीं देवदानव सिद्धचर्थ पाठहै कि, देव दानवकी सिद्धि के निमित्त गुटिका करे ॥ ६१ ॥

(१८)

कामरत्न

भृङ्गमूलं मुखे क्षिप्त्वा सर्वैः संपूजितो भवेत् ।

रोहिण्यां वटवन्दाकं सङ्ग्राह्य धारयेत्करे ।

वश्यं करोति सकलं विश्वामित्रेण भाषितम् ॥ ६२ ॥

भांगेरकी जड़ मुखमें डालकर सर्वत्र पूजित होता है । रोहिणीनक्षत्र-
में वटके वन्देको संग्रहकर हाथमें धारण करे तो वह सबको वशीभूत
कर सकता है, ऐसा विश्वामित्रने कहा है ॥ ६२ ॥

कुङ्कुमं तगरं कुष्ठं हरितालं समं त्रयम् ।

अनामिकाया रक्तेन तिलकं लोकवश्यकृत् ॥ ६३ ॥

केशर (काश्मीरमें उत्पन्न) तगर, कूठ, हरिताल इनको बराबर
लेकर कनउंगलीके रक्तके साथ तिलक करनेसे सब लोक वशीभूत
होजाते हैं ॥ ६३ ॥

विष्णुकान्ता शुभा भृङ्गी श्वद्रंष्ट्रा मूलरोचनाम् ।

पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा तिलकं वश्यकृत्परम् ॥ ६४ ॥

विष्णु कांता, भांगरा, गोखरूकी जड़, गोरोचन इन सबको पीसकर
गोली बनाले इनका तिलक करनेसे लोक वशीभूत होजाते हैं ॥ ६४ ॥

पुष्योद्धृतं श्वेतभानुमूलं मूत्रैरजाभवैः ।

वटिकां कारयेत्प्राज्ञस्तिलकेन जगद्वशम् ॥ ६५ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेतमन्दारकी जड़ (सफेद आककी जड़) लेकर
अजामूत्रसे पीस वटी बनाकर उसका तिलक करनेसे सब जगत
वशीभूत हो जाता है ॥ ६५ ॥

अजारक्तेन तन्मूलं पुष्यार्कं पेषयेद्वधुः ।

कज्जलं पातयित्वा तु चक्षुषी रञ्जयन्नरः ॥

त्रैलोक्यं वशतां यांति दृष्टमात्रे न संशयः ॥ ६६ ॥

उपदेशः१.

हिन्दीटीकासहित

(१९)

भेडके रुधिरके साथ मन्दारकी जड पुष्यनक्षत्रमें पीसे और उसमें काजर डालकर जो मनुष्य नेत्रोंमें लगावे तो देखतेही त्रिलोकी वशमें होजाती है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ६६ ॥

मूलन्तु श्रवणाऋक्षे पिण्डीतगरसंभवम् ।

संग्राह्य धारयेद्वश्यं कुरुते सकलं जगत् ॥ ६७ ॥

श्रवण नक्षत्रमें पुहकरमूलकी जड लेकर तगर मिलाकर धारण करे तो सम्पूर्ण जगत् वशमें हो जाता है ॥ ६७ ॥

कृष्णापराजितामूलं पुष्येणोद्धृत्य चूर्णयेत् ।

गोधृतेन समालोड्य कजलं धारयेद्बुधः॥

तेनैवाञ्जितमात्रेण वशीकुर्याज्जगत्रयम् ॥ ६८ ॥

कृष्णक्रान्ता (कोयल) कीजड पुष्यनक्षत्रमें लाकर चूर्ण करे, उसमें गौका घृत मिलाकर कज्जल धारण करे (कहीं गोमूत्र लिखा है) उसके आंजनेमात्रसे ही त्रिलोकी वशमें होजाती है ॥ ६८ ॥

पुत्रजीवकपत्रं च तिलकं रोचनायुतम् ।

प्रियो भवति सर्वेषां नरः कृत्वा ललाटके ॥ ६९ ॥

जियेपोते वृक्षके कोमल पत्तोंको पीसकर उसमें गोरोचन मिलाकर तिलक करे । इस मस्तकके तिलकके दर्शन करतेही सब मनुष्य इसको प्यार करने लगते हैं ॥ ६९ ॥

श्वेतापराजितामूलं तथा श्वेतजवाग्रजा ।

नासाग्रे तिलकं कृत्वा वशीकुर्यान्नि संशयः ॥ ७० ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड तथा श्वेत गुड इन दोनोंको पीसकर नासके अग्रभागमें तिलक लगानेसे वशीकरण होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ७० ॥

मञ्जिष्ठयदवचाशितसूर्यमूलैः

स्वीयाङ्गशोणितयुतैः समकुष्ठकैश्च ।

कृत्वा ललाटफलके तिलकं कृतज्ञो

लोकत्रयं वशयति क्षणमात्रकेण ॥ ७१ ॥

मंजीठ, मोथा, वच, श्वेतआककी जड़, अपने शरीरका रुधिर, इनका बराबर कूट लेकर इनका तिलक मस्तकपर करनेसे क्षणमात्र त्रिलोकी वशमें होती है ॥ ७१ ॥

१ शम्भोज्ज्वलं च मधुकं च कृताञ्जलिञ्च

हव्यं समं निजशरीरमलेन २ मिश्रम् ।

आलेपभक्षणविधौ तिलके कृते वा

योगोऽयमेव भुवनानि वशीकरोति । ७२ ॥

शुद्ध पारा, सहत, लज्जावन्ती, हव्य और अपने शरीरका मल इनका लेपन भक्षण वा तिलक सब भुवनोंको वशीभूत कर सकता है ॥ ७२ ॥

मूलं जटा तगरमेषविषाणिकानां

पञ्चाङ्गजं निजशरीरमलं तथैव ।

एकीकृतानि मधुना दिवसे कुजस्य

कुर्वन्ति वक्रतिलकेन वशं जगन्ति ॥ ७३ ॥

रुद्रजटा, तगर, मेढासिंगीका पंचांग और अपने शरीरका मल सबको एकत्र कर मंगलके दिन टेढ़ा तिलक लगानेसे त्रिलोकी अपने वशमें कर सकता है ॥ ७३ ॥

भृङ्गस्य पक्षयुगलं ३ शुकमांसयुक्तं

स्वानामिकारुधिरकर्णमलं स्वबीजम् ।

१ शम्भोर्धृतं च मधुकं च । २ पिष्टम् । ३ कुशं । इति च पाठान्तरम्

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(२१)

एतानि लेपविधिनाप्यथ भक्षणाद्वा

कुर्वन्ति वश्यमखिलं जगदप्यकस्मात् ॥ ७४ ॥

भौरके दोनों पंख, तोतेका मांस, अनामिका उँगलीका रुधिर कानका मैल, अपना वीर्य इनका लेप वा भक्षण करानेसे तत्काल जगत् वशमें होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ७४ ॥

तालीशकुष्ठतगरेः परिलिप्य वर्ति

सिद्धार्थतैलसहितां दृढपट्टवस्त्राम् ।

पुंसः कपालफलके विनिपातितेन

तेनाञ्जनेन वशतां किल याति लोकः ॥ ७५ ॥

तालीस, कूट, तगर, इसका लेप करके दृढ रेशमी कपड़ेकी बत्ती बनावे, और सरसोंके तेलसे युक्त कर पुरुषके कपालमें कज्जल पार नेत्रोंमें आंजे, तो उससे जन निश्चय वशीभूत होजाते हैं ॥ ७५ ॥

गोरोचना पद्मपत्रं प्रियङ्गु रक्तचन्दनम् ।

एकीकृत्याञ्जयेन्नेत्रं यं पश्यति वशी भवेत् ॥ ७६ ॥

गोरोचन, पद्मपत्र, प्रियंगु, लालचन्दन इनको एकत्र कर नेत्रोंमें आंज कर जिसे देखे वह वशमें होजाता है ॥ ७६ ॥

सर्वजनवशीकरणयन्त्राणि

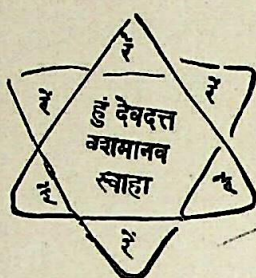
रुं तुं रुं	रुं तुं रुं	रुं तुं रुं
रुं तुं रुं	देवदत्त वशमानय रवाहा	रुं तुं रुं
रुं तुं रुं	रुं तुं रुं	रुं तुं रुं

इस यन्त्रको भोजपत्रपर लाल चन्दनसे लिखे, देवदत्तस्थानमें साध्य नामको लिखकर घी और शहतमें तीन रात्रि स्थापन करे, वह वशी भूत होता है.

(२२)

कामरत्न

प्रथम- उप



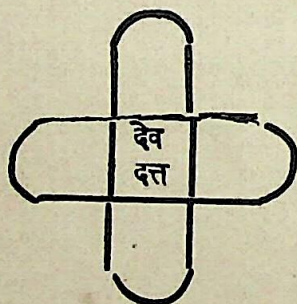
गोरोचनसे भोजपत्रपर (जिसका नाम लिखकर सदाफूलोंके वृक्षके नीचे स्थापन करे। इससे रातको प्लावित करे तो वह वशमें होता है।

ह्रीं देवदत्त
वशमानव
स्वाहा

अनामिका अंगुलीके रक्त और गोरोचनसे जिसका नाम लिखकर मधु स्थापन करे तो वह वशमें होता है।

स्वन २ देवदत्त वशंकुह
स्वाहा

इसका गोरोचनसे भोजपत्र पर लिखलाल सूत्रसे बांध मुखमें डाल कर जिसे देखे वह वशमें हाता है।



फल कंटक द्वारा जिसका नाम लिख जन्तुके विवरमें स्थापन करे, वह वशमें होता है; केवल इतनाही नहीं किन्तु त्रिभुवनको भी वशीभूत कर सकता है।

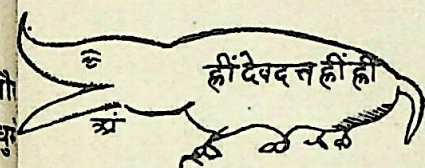
उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

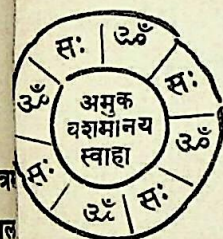
(२३)



गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख
मधुमें स्थापन करे वह वशीभूत होता है.



लाल चन्दनसे जिसका
नाम लिख पानमें स्थापन
कर तो वह वशमें
होजाता है.



चमेलीके फूल और आकके दूधसे
भोजपत्र पर इस यंत्रको लिखकर भुजामें
धारण करे, वह वशमें होता है.

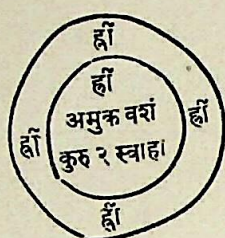


गोरोचन और कुंकुमसे भूर्जपत्रपर
जिसका नाम लिख सूत्रसे लपेट रखे तो
सबदुष्ट वशमें होते हैं.

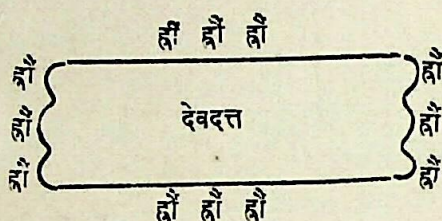
(२४)

कामरत्न

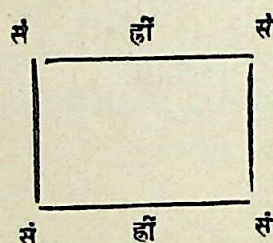
प्रथम उप



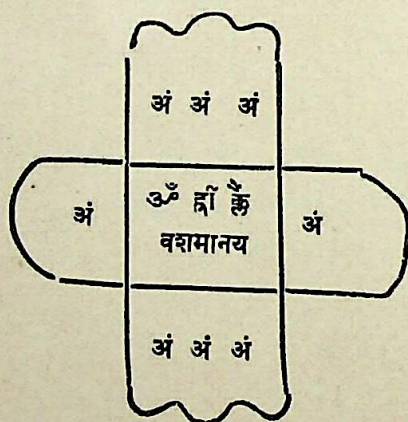
गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका
लिख मधुमें स्थापन करे वह वशमें होता



इसको गोरोचनसे भोज
पत्रपर जिसका नाम
देवतास्थानमें स्थ
करे, वह वशमें होता



अनामिका रक्तसे भोजपत्रपर
यंत्रको साध्य नाम सहित लिख बा
कण्ठमें धारण करे, वह वशीभूत होता

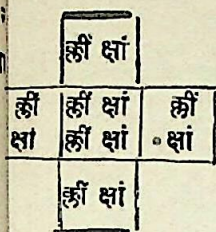


गोरोचनसे भोजप
लिख साध्यका नाम
मधुके मध्यमें स्थापन
वह वशमें होजाता है

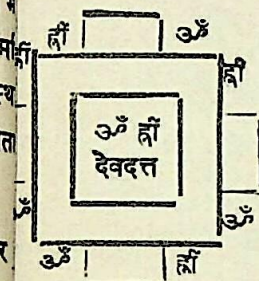
उपदेश: १.

हिन्दीटीकासहित

(२५)



कुंकुम गोरोचनसे अनामिका या अगस्तके कलमसे साध्यके नामको लिख अंगारेसे तापदे तो राजाभी हो वह अवश्य वशमें हो जाता है



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिखकर लाल सूत्रमें वेष्टन कर हाथमें बाँधे तो वह वशीभूत होता है.



जिसके नामसहित गोरोचनसे यह चक्र लिखकर कण्ठ वाहु वा वस्त्रके अंचलमें बाँधे, चाहे शत्रुके समान भी हो वह अवश्य वशीभूत होता है.

अथ राजवशीकरणम्

कुंकुमं चन्दनञ्चैव रोचनं शशिमिश्रितम् ।

गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं ध्रुवम् ॥ ॥ ७७ ॥

कुंकुम, चन्दन, गोरोचन, इसमें भीमसेनी कपूर मिलाकर गौके से युक्त तिलक करनेसे राजा अपने वशमें होजाता है ॥ ७७ ॥

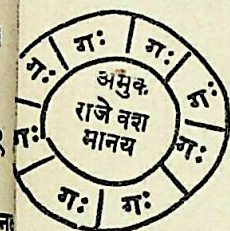
उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(२७)

ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे	ॐ तारे	ॐ तारे
ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा	ॐ तारे स्वाहा

गोरोचन कुंकुम कर्पूरसे
भोजपत्र पर जिसका नाम
होसो लिखकर घृत मधुमें
स्थापन कर तीन दिन लाल
फूलसे पूजन करे तो
राजा वशमें हो.



गोरोचन कुंकुम कर्पूर अर्कदूधमें साध्यका-
नाम लिखकर घृत मधुमें स्थापन कर तीन
दिन लाल फूलसे पूजन करे तो वह राजा
वशमें होता है, इति राजवशीकरणम् ॥

अथ स्त्रीवशीकरणम्

पुष्पे पुष्पं च संगृह्य भरण्यां तु फलं तथा ।
शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च ॥ ८० ॥
मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात् ।
पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम् ॥
तिलाकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती ॥ ८१ ॥
पुष्पनक्षत्रमें काले धतूरेके फूल, भरणीमें फल, विशाखोंमें शाखा,
में पत्ते, मूलमें जड़ लावे, यह क्रमसे ग्रहण कर कपूर मिलाकर पीसे
कुंकुम और गोरोचन मिलावे इसका तिलक करनेसे कैसीभी स्त्री
वशमें हो जाती है चाहे साक्षात् अरुन्धती क्यों न हो ॥ ८० ॥ ८१ ॥

(२८)

कामरत्न

प्रथम उप

काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम् ।

तद्वत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिनि सदा ।

“ॐ नमो भवते रुद्राय ? चामुण्डे अमुकीं मे

वशमानय स्वाहा ॥” उक्तयोगानामयमेव मंत्रः ॥ ८१ ॥

काकजङ्घा (चौटली,) वचा, कुष्ठ, अपना वीर्य और रुधिर मिला

“ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकीं मे वशमानय स्वाहा” इस मंत्रसे अभिमंत्रितकर खवादेनेसे वह स्त्री सदा श्मशानमें रोट करती है अर्थात् जीतेजी साथ न छोड़कर मरनेपर भी श्मशान सदा रोती है ॥ ८२ ॥

प्रातर्मुखन्तु प्रक्षाल्य सप्तावाराभिमंत्रितम् ।

यस्या नाम्ना पिबेत्तोयं सा स्त्री वश्या भवेद्ध्रुवम् ॥ ८३ ॥

“ॐ नमः क्षिप्रकामिनि अमुकीं मे वशमानय स्वाहा

“ॐ नमः क्षिप्रकामिनि अमुकीं मे वशमानय स्वाहा” इस मंत्रसे

प्रातःकाल सातवार पढ़ अपना मुख सातवार धोकर जिस स्त्रीका नाम लेकर उक्तमंत्रसे जलको सातवार अभिमंत्रितकर पीवे, तो वह अवश्य वशमें होजाती है ॥ ८३ ॥

कृष्णापराजितामूलं ताम्बूलेन समायुतम् ।

अवश्यायै स्त्रियै दद्याद्वश्या भवति नान्यथा ॥

“ॐ हूं स्वाहा” । अनेनाभिमन्त्र्य दद्यात् ॥ ८४ ॥

काली विष्णुक्रांताकी जड़ पानके साथ जो अवश्या स्त्रीको वह अवश्या स्त्री वशमें हो जाती है । “ओं हूं स्वाहा” इस मंत्रसे शोक्त औषधि अभिमंत्रित कर दे ॥ ८४ ॥

* तद्वस्ते-ऐसाभी पाठ है-उसके हाथसे खाने से जीते जी साथ न मरनेपर भी श्मशानमें सदा रोती है यह अर्थ है

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(२९)

साध्यसाधकनाम्ना तु कृत्वा सप्ताभिमन्त्रितम् ।

दीयते कुसुमं यस्यै सा वश्या भवति ध्रुवम् ॥ ८५ ॥

साध्य-साधक (अपना और स्त्री) का नाम लेकर "ओं हूं स्वाहा" मंत्रसे सातवार अभिमन्त्रित कर जिसको फूल दिये जाय वह अवश्या लामें होजाती है ॥ ८५ ॥

सुसाधितो ह्ययं मंत्र अवश्यं फलदायकः ।

तस्मादिमं प्रयत्नेन साधयेमन्त्रमुत्तमम् ॥ ८६ ॥

"ॐ हूं स्वाहा" ॥

"ॐ हूं स्वाहा" यह मंत्र साधन करनेसे अवश्य फलका देनेवाला ता है. इस कारण इस मंत्रको यत्नसे साधे ॥ ८६ ॥

विशाखायान्तु वन्दाकं मङ्गले च समाहरेत् ।

हस्ते बद्ध्वा तु कुरुते वशगां वरयोषितम् ॥ ८७ ॥

विशाखा नक्षत्रमें और मंगलवारमें दारु हलदीकी जड लाकर उसे हथमें बांधकर श्रेष्ठ स्त्रियोंको अपने वशमें करता है ॥ ८७ ॥



इस यन्त्रको गोरचन कुंकुमसे लिखकर देवदत्त के स्थान में गाड़ दे अर्थात् जिसे वशीभूत करना हो उसके स्थानमें गाड़े या घृतमधुमें रखे तो वह वशमें हो जाती है ॥

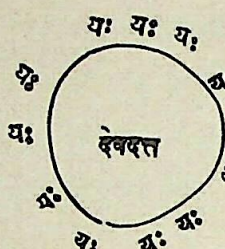
देवदत्त सः

इस यन्त्रको कुंकुम, रक्त और गोरोचनसे भोज पत्रपर लिखकर वशमें होनेवालीका नाम लिखकर सदा पुष्पवाले वृक्षके नीचे या घृतमें स्थापन करे वह सात रात्रिमें वशमें होजाती है ॥

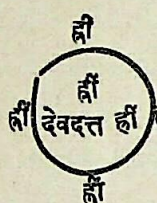
(३०)

कामरत्न

प्रथम



इस, यन्त्रको भोजपत्रपर गोरोचन र
चन्दनसे लिखकर, और वशमें होने वाल
यः नाम बीचमें लिखकर घीके बीचमें या जम
तीन रात्रितक स्थापन करनेसे, वशीभूत
जाती है ॥



इस यन्त्रको और वशमें होने वालीके ना
कनिष्ठिका उँगलीके रुधिरसे तथा गोरो
लिखकरसहतके बीचमें स्थापन करे वह अ
वशीभूत होजाती है ॥

—इन यंत्रोंको स्थापन करती बार “ॐ पाते वज्राय स्वाहा”
मन्त्रसे अभिमंत्रण करना चाहिये ॥

कृष्णोत्पलं मधुकरस्य च पक्षयुग्मं

मूलं तथा तगरजं सितकाकजङ्घा ।

यस्याः शिरोगतमिदं विहितं विचूर्णं

दासी भवेज्जटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥ ८८ ॥

काले कमल, भौंरेके दोनों पंख, पुष्करमूल, तगर, श्वेतकाक
इन सबका चूर्ण कर जिसके शिरपर डाले वह स्त्री शट दासी हो
है इसमें सन्देह नहीं (कहीं मोरपंख लिखा है) ॥ ८८ ॥

सव्येन पाणिकमलेन रतावसाने यः रेतसा निज-

भवेन विलासिनीनाम् । वामं विलिम्पति पदं सा

यस्या वश्यैव सा भवन्ति नात्र विकल्पभावः ॥ ८९ ॥

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(३१)

जो मनुष्य रतिके अन्तमें सव्य (बायें) हाथसे अपना वीर्य स्त्रीके वामचरणके तलुएमें मलता है वह स्त्री उसके वशमें होजाती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ८९ ॥

सिन्धूत्थमाक्षिककपोत्तमलानि पिष्ट्वा लिङ्गं विलिप्य तरुणीं रमते नवोढाम् । साऽन्यं न याति पुरुषं मनसापि नूनं दासी भवेदिति मनोहरदिव्यमूर्तिः ॥ ९० ॥

जो मनुष्य संधानोन सहित, कबूतरकी बीटको पीसकर मदनांकुशमें लेप कर तरुणीसे रमण करता है वह स्त्री मनसेभी दूसरे पुरुषके पास नहीं जाती और सदैव काल उस पुरुषकी दासी होजाती है और मनोहर दिव्य मूर्ति मानती है ॥ ९० ॥

गोरोचनाशिशिरदीधितिशंभुबीजैः काश्मीरचन्द नयुतैः कनकद्रवैश्च । लिप्त्वा ध्वजं परिरमत्यबलां नरो यां तस्या स एव हृदये मुकुटत्वमेति ॥ ९१ ॥

गोरोचन, कुम्ह, पारा, केशर, चन्दन और धतूरेका रस इनको मदनांकुशपर लेप कर जो रमण करे वह उसको हृदयसे क्षणमात्र भी पृथक् नहीं होता ॥ ९१ ॥

पुष्ये रुद्रजटामूलं मुखस्थं कारयेद्बुधः ।

ताम्बूलादौ प्रदातव्यं वश्या भवति निश्चितम् ॥ ९२ ॥

पुष्य नक्षत्रमें रुद्रजटा (शंकरजटा) की जड़ मुखमें धारण कर ताम्बूलादिमें जिसको दे वह वशमें होजाती है ॥ ९२ ॥

तथैव पाटलामूलं ताम्बूलेन तु वश्यकृत् ।

त्रिपत्रभण्टिकामूलं पिष्ट्वा गात्रे तु संक्षिपेत् ॥

यस्याः सा वशतां याति बिन्दुमात्रेण तत्क्षणात् ॥ ९३ ॥

पादलकी जड ताम्बूलके साथ देनेसे बशीभूत करती है । बेल तथा मँजीठकी जड पीसकर एक कणभी जिसके शरीरपर डाले वा अवश्य बशमें होजाती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ९३ ॥

स्वकीयकाममादाय कामदेवं स्मरेत्पुनः ।

तरुण्या हृदये दत्तं तत्क्षणात्स्त्री वशा भवेत् ॥ ९४ ॥

अपने वीर्य को लेकर और कामदेवका स्मरण कर तरुणीके हृदय रखनेसे तत्काल स्त्री बशमें हो जाती है ॥ ९४ ॥

गिलित्वा पारदं किञ्चिद्रम्यते नायिका यदि ।

प्राणान्तेऽपि च सा नारी तं नरं न विमुञ्चति ॥ ९५ ॥

कुछेक शोधे पारको निगलकर यदि स्त्रीके साथ रमण करे तो प्राणान्त पर्यंत वह स्त्री पुरुषको नहीं छोडती है ॥ ९५ ॥

कामाक्रान्तेन चित्तेन मासाद्धं जपते निशि ।

अवश्यं कुरुते वश्यं प्रसन्नो विश्वचेटकः ॥

“ऐं पिं स्यां क्लीं कामपिशाचिनी शीघ्रं

अमुकीं ग्राह्य २ कामेन मम रूपेण नखैर्विदारय २

विद्रावय २ स्नेहने बंधय २ श्रीं फट्” । अयुत

द्वयेन सिद्धिः ॥ ९६ ॥

कामयुक्त चित्त होकर रात्रिके समय जो पन्द्रह दिनतक “ऐं पिं स्यां क्लीं कामपिशाचिनी शीघ्रं अमुकीं ग्राह्य २ कामेन मम रूपेण नखैर्विदारय विदारय विद्रावय २ स्नेहने बंधय २ श्रीं फट्” इस मंत्रको बीस हजार जप करता है तो यह साधक विश्वभरके निश्चयही अपने बशीभूत कर सकता है ॥ ९६ ॥

नागपुष्पं प्रियङ्गुञ्च तगरं पद्मकेशरम् ।

जटामांसीं समं निम्बं चूर्णयेन्मंत्रवित्तमः ॥ ९७ ॥

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(३३)

नागपुष्प, प्रियंगु, तगर, पञ्चकेशर, जटामांसी इनके समान नीमका
चूर्ण लेना चाहिये ॥ ९७ ॥

स्वाङ्गं तु धूपयेत्तेन भजते कामवत्स्त्रियः ।

धूपमन्त्रः—“ॐ मूली मूली महामूली सर्व संक्षोभय २
एभ्य उपद्रवेभ्यः स्वाहा” । इति ॥

पानीयस्याञ्जलीन् सप्त कृत्वा विद्यामिमां जपेत् ।

शालङ्कारां नरः कन्यां लभते मासमात्रतः ॥ ९८ ॥

इस मंत्रसे अपने अंगको धूपित करे तो स्त्री कामदेवके समान अपने
पतिको मानती है । मन्त्र यह है —“ॐ मूली मूली महामूली सर्व संक्षो
भय २ एभ्य उपद्रवेभ्यः स्वाहा” । अंजलीमें जल लेकर इस विद्याको
जपे तो एक मासमें अलंकारयुक्त स्त्री प्राप्त होती है ॥ ९८ ॥

“ॐ विश्वावसुर्नामगन्धर्वः कन्यानामधिपतिस्सुरूपां
सालंकृतां कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ”

कन्या गृहे शालकाष्ठं क्षिपेदेकादशांगुलम् ।

ऋक्षे च पूर्वफाल्गुन्यां यस्तां कन्यां प्रयच्छति ॥ ९९ ॥

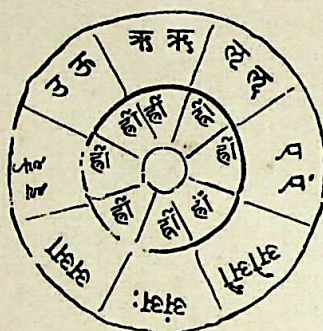
“ॐ विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिः सुरूपां सालंकृतां
कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ।” इस मंत्रसे कन्याके घरमें
ग्यारह अंगुलका शालकाष्ठ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें डाल दे तो कन्या-
उसको स्वीकार करेगी ॥ ९९ ॥

(३४)

कामरत्न

प्रथम-

स्त्रीवशीकरणयन्त्रे



कुंकुम गोरोचनसे भोजपत्रपर इ
यंत्रको साध्या नामसहित लिख भुजा
धारण करे तो स्त्री वशमें होती
और इससे सौभाग्य भी होता है.



गोरोचनसे भोजपत्रपर पूर्वक
लिखकर खैरके अंगारेसे तो
संध्याओंमें तपावे तो उर्वशी भ
बलपूर्वक वशीभूत होजाती है. इति
स्त्रीवशीकरणम् ॥

अथ पतिवशीकरणम्

खञ्जरीटस्य मांसं तु मधुना सह पेषयेत् ।
अनेन योनिलेपेन पतिर्दासो भवेद्ध्रुवम् ॥ १०० ॥
पञ्चाङ्गं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेत सर्षपसंयुतम् ।
योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा ॥ १ ॥
कर्पूरं देवदारुं च सक्षौद्रं पूर्ववत्फलम् ।
“ॐ कामकाममालिनि पतिं मे वशमानय ठः ठः ।”
उक्त योगानां सप्ताभिमंत्रिते सिद्धिः ॥ २ ॥

उपदेशः १.

हिन्दीटीकासहित

(३५)

खंजरीटका मांस शहदके साथ पीस जो स्त्री अपनी योनिमें लेपनकरे तो उसका पति दासकी तरह वशमें हो जाता है । श्वेत सरसोंके सहित दाडिमका पंचांग पीसकर योनिमें लेपन करनेसे दुर्भागिनीभी पतिको अपना दास करती है । इसी प्रकार कर्पूर, देवदारु, सहत यह पूर्ववत् देनेवाले हैं । “ओं कामकाममालिनि पति मे वशमानय ठः ठः” सात बार उपरोक्त औषधियोंको अभिमन्त्रित कर प्रयोग करे ॥ १००-१०२ ॥

रोचनां मत्स्यपित्तं च पिष्ट्वापि तिलके कृते ।

वामहस्तकनिष्ठायां पतिर्दासो भवेद् ध्रुवम् ।

स्वशोणितं रोचनया तिलकं पतिवश्यकृत् ॥ ३ ॥

गोरोचनको मच्छीके पित्तासे पीसकर तिलक करनेसे अर्थात् बायें हाथकी कनिष्ठिका उँगलीसे तिलक लगानेसे निश्चय पति अपना दास हो जाता है । अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाय तिलक करनेसे पति वशमें हो जाता है ॥ ३ ॥

चित्रकस्य तु पुष्पाणि मधुयुक्तानि कारयेत् ।

खाने पाने प्रदातव्यं पतिवश्यकरं भवेत् ॥

भूर्जपत्रं च मधुना योनिलेपे पतिर्वशः ॥ ४ ॥

चीतेके फल सहतके साथ मिलाकर अन्न वा पानमें देनेसे अवश्य पति अपने वशमें हो जाता है । अथवा सहतमें भोजपत्र मिलाकर योनिमें लेप करनेसे पति अपने वशमें हो जाता है ॥ ४ ॥

जलौकसां मुखे देयं शम्बूशंखादिचूर्णकम् ।

तच्चूर्णं तु समागृह्य ताम्बूलेन समायुतम् ।

दातव्यं स्वामिने भोक्तुं वश्यो भवति नान्यथा ॥ ५ ॥

(३६)

कामरत्न

प्रथम-

शुद्ध पारा और शंखका चूर्ण लेकर जलजीवोंके चूर्णको ताम्बूलमें मिलाकर स्वामीको भोजनके निमित्त दे तो अवश्य पति वश में हो जाता है ॥ १०५ ॥

गोरोचनानलदकुंकुमभावितायास्तस्याः सदैव कुरुते तिलकं वशित्वम् । वात्स्यायनेन बहुधा प्रमदाजनानां सौभाग्यकृत्यसमये प्रकटीकृतोऽसौ ॥ ९ ॥

गोरोचन, नलद (खस) कुंकुम इनको मिलाकर तिलक करनेसे वशीकरण होता है । यह वात्स्यायन ऋषिने स्त्रियोंकी सौभाग्यवृद्धि के निमित्त प्रगट किया है ॥ १०६ ॥

सम्भोगशेषसमये निजकान्तमेढं या कामिनी स्पृशति वामपदाम्बुजेन । तस्याः पतिस्सपदि विन्दति दास- भावं गोणीसुतेन कथितः किल योगराजः ॥ १०७ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने वशीकरणं नाम प्रथमोपदेशः ॥ १ ॥

सम्भोगके समय जो स्त्री अपने पतिकी घवजाको वामचरण छूती है उसका पति सदैव दास होजाता है यह योगराज गोणीपुत्र कहा है ॥ १०७ ॥ इति पतिवशीकरणम् ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत- भाषाटीकायां वशीकरणं नाम प्रथमोपदेशः ॥ १ ॥

उपदेशः २.

हिन्दीटीकासहित

(३७)

द्वितीयोपदेशः

अथाकर्षणम्

चतुर्थवर्णमाकृष्य द्वितीयवर्गसंस्थितम् ।

कृत्वा त्रिविधहांहांतं तदन्तं हे द्वितीयकम् ॥ १ ॥

अंकारशिरसं कृत्वा प्रत्यक्षरप्रजापनम् ॥

मन्त्रम्—झां झां झां हां हां हां हैं हैं ॥

सहस्राद्धस्य जापेन फलं भवति शाश्वतम् ॥ २२ ॥

द्वितीय वर्गमें होनेवाला चौथा वर्णसे तीन संयुक्तकर अर्थात् झकार त्रय इनमें आकार अघ्रे आकार सहित तीन हकार योजना कर पश्चात् एकारसहित दो हकार मिला सबके ऊपर अनुस्वार लगाकर ओंकार प्रथम लगाकर “झां झां झां हां, हां हां हैं हैं” इस मंत्रको पांचसौ बार जप करनेसे पूर्ण फल होता है ॥ १ ॥ २ ॥

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।

स्थावरा जङ्गमाश्चैव आकृष्टास्ते वराङ्गने ॥ ३ ॥

उत्तम अंगवाली हे पार्वति ! मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, उरग राक्षस, स्थावर, जंगम यह सब इससे आकर्षित होते हैं ॥ ३ ॥

हान्ते रेफं समादाय यकारस्तु विशेषतः ।

अक्षरत्रितयं तच्च द्विधा कृत्वा प्रजापयेत् ।

भक्ष्यं द्रव्यं स्वहस्तेन कृत्वा मंत्रविभावनम् ॥ ४ ॥

दीयते यस्य भक्ष्यं तत्सर्वेषां प्राणिनां शृभे ।

ते सर्वे यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति तत्क्षणात् ॥ ५ ॥

(२२) उपदेशः
द्वितीयोपदेशः
अथाकर्षणम्
१
२
३
४
५

(३८)

कामरत्न

द्वितीय

हे शुभे ! हंकारके अन्तमें रेफ लगाकर और यकार संयुक्त करके दोप्रकार कर (हरय हरय इस मंत्रको) जप कर जा भक्ष्यद्रव्यको अपने हाथसे बनाकर उसमें मंत्रकी भावना कर उसके भक्षण करानेसे सब प्राणी जहां लेजाओ वही तत्काल गम करने लगते हैं ॥ ५ ॥

ह्रींकारे मन्त्रयेत्पाशं हंकारेणाङ्कुशं तथा ।

त्रिफलं वामगं पाशं दक्षिणे ज्वलिताङ्कुशम् ।

संधार्य स्वकरे मंत्री ततो मन्त्रमिमं जपेत् ॥ ६ ॥

ह्रीं से पाशको अभिमंत्रित कर, हूं से अंकुशको अभिमंत्रित कर त्रिफल वाम और पाशको, दक्षिण और प्रज्वलित अंकुशको मंत्रवा अपने हाथमें धारण कर, फिर इस मंत्रको जपे ॥ ६ ॥

मंत्रः—“ॐ ह्रीं रक्ष २ चामुण्डे तुरु २ अमुकीमाकर्षय ह्रीं” अस्य मंत्रस्य पूर्वमेवायुतं जपेत्ततः सिद्धि

“चामुण्डे ज्वल २ प्रज्वल २ स्वाहा ।” मंत्रं स्त्रियं दृष्ट्वा जपेत्तत्क्षणात् सा स्त्री पृष्ठ समागच्छति पूर्वमयुतं जपेत्ततस्सिद्धिः ॥ ७ ॥

मंत्र—“ॐ रक्ष २ चामुण्डे तुरु २, अमुकीमाकर्षय २ ह्रीं” प्रय यह मंत्र १०००० बार जपनेसे पश्चात् सिद्धि होती है । इस मंत्रको स्त्रीको देखकर जपे तो तत्काल स्त्री उसके पीछे पीछे आती है । मंत्र यह है—“ॐ चामुण्डे ज्वल २ प्रज्वल २ स्वाहा” मंत्रभी प्रथम १०००० जपनेसे सिद्धि होती है ॥ ७ ॥

आश्लेषायां समादाय अर्जुनस्य तु बृन्धकम् ।

अजामूत्रेण संपिष्यस्त्रीणां शिरसि दापयेत् ।

पुरुषस्य पशूनां वा क्षिपेदाकर्षणं भवेत् ॥ ८ ॥

उपदेशः २.

हिन्दीटीकासहित

(३९)

आश्लेषा नक्षत्रमें अर्जुनवृक्षसे वन्देकोलावे, बकरीके मूत्रसे पीसकर जिस स्त्रीके शिरपर डाले अथवा जिस पुरुष वा पशुके ऊपर डाले वह तत्काल आकर्षित होजाता है ॥ ९ ॥

साध्यावामपदस्थां तां मृत्तिकामाहरेत्ततः ।

कृकलास्य रक्तेन प्रतिमां कारयेत्ततः ॥ ९ ॥

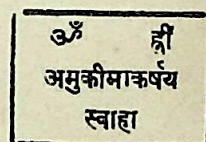
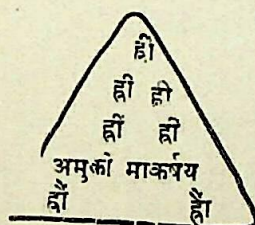
साध्यानामाक्षरं तस्यास्तद्रक्तैर्विलिखेद्धृदि ॥ १० ॥

मूत्रस्थाने च निखनेत्सदा तत्रैव मूत्रयेत् ।

आकर्षयेत्तु तां नारीं शतयोजनसंस्थिताम् ॥ ११ ॥

जिसका आकर्षण करना है उसके वामचरणसे नीचेकी मृत्तिका लाकर गिरगिटके रुधिरसे उस मिट्टीका पुतला बनावे और हृदयमें उसके रुधिरसे आकर्षणवाले प्राणीका नाम लिखे और मूत्रस्थान पर गाड़कर सदा उसी स्थानमें मूत्र करे, सौ योजनपर स्थित भी स्त्री आकर्षित होजाती है ॥ ९-११ ॥

युवत्याकर्षणयंत्राणि



गोरोचन कुमकुमसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख मोम धीमे स्था- नाम लिखकर धीमें स्थापन करे पनकरपावैवह स्त्री आकर्षित हो० वह स्त्री दूरसे आकर्षित होती है.

(४०)

कामरत्न

द्वितीय-

ह्रीं ह्रीं वं ह्रीं

ॐ	देवदत्तमाक	ॐ
ॐ	षयस्त्राहा ह्री	ॐ
ॐ	ह्रीं व ह्रीं ह्री	ॐ
ॐ	ह्रीं वं ह्री	ॐ

धतूरेके पत्तेके रससे और गोरो-
चनसे भोजपत्रपर जिसका नाम
लिखे करबीरका नलिकामें स्थापन
करे खैरके अंगारसे तपावे तो सौ
योजनेसे भी आकर्षित होती है.

ह्रीं ह्रीं वं ह्रीं

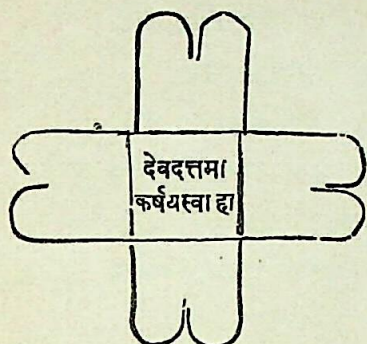


गोरोचनसे लिखकर खैरके अनामिकाके रक्तसे वाम
अंगारोंपर तपाय तीनों कालमें जपे हाथमें लिख रात्रिमें मनमें जप
तो उर्वशी भी आकर्षित होती है. करे तो आकर्षित होती है.

उपदेश: २.

हिन्दीटीकासहित

(४१)



गोरोचन चन्दनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख शहतमें डाल नलिकामें रख पृथ्वीमें गाडदे तो स्त्री शीघ्रआकर्षित होती है.

अनामिका उंगलीके रक्तसे वाम हाथमें लिख हृदयमें रखकर जपे तो रात्रिमें शय्यापर आजाय

सूर्यावर्तस्य मूलं तु पञ्चम्यां ग्राहयेद्बुधः ।

ताम्बूलेन समं दद्यात्स्वयमायाति तत्क्षणात् ॥ १२ ॥

बुद्धिमान् पंचमीके दिन सूर्यावर्त (शाकविशेष क्षुप हुडहुडिया) की जड ला वे जिसको पानमें मिलाकर दे वह तत्काल पीछे पीछे स्वयम् आजाती है । १२ ॥

रतिकर्मकरौ ग्राह्यौ भ्रमरौ यत्नतो बुधैः ।

भिन्नौ कृत्वा दहेत्तौ तु चिताकाष्ठैस्तयोः पुनः ॥ १३ ॥

वस्त्रेण बन्धयेद्भूस्म पृथग्वै पुट्टलीद्वयम् ।

तयोरेकामजाभृङ्गे दृढं बद्ध्वा परीक्षयेत् ॥ १४ ॥

जिस समय भौंरा भौंरी रति करते हों उस समय उनको ग्रहण कर अलग करके चिताकाष्ठमें उनको जलादे और उनकी भस्म पृथक् पृथक् वस्त्रमें ग्रहण कर पोटली बनाले । उनमेंसे एकको बकरी के सींगमें दृढ बांधकर परीक्षा करे ॥ १३ ॥ १४ ॥

(४२)

कामरत्न

द्वितीय-

यां यां याति च सा मेषी सा पृथग्गृह्यते बुधैः ।

तद्भस्म शिरसि न्यस्तं क्षणादाकर्षयेत्त्रयः ।

अपरं रक्षयेद्वस्त्रे नोचेन्नायाति कामिनी ॥ १५ ॥

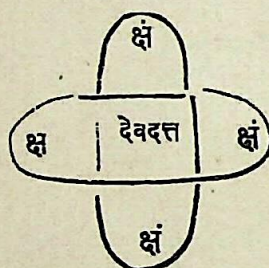
“ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा ।” इमं मन्त्रं पूर्वमेकायुतं

जपेत् तत उक्तयोगमभिमन्त्र्य सिद्धिः ॥ १६ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने आकर्षणं नाम

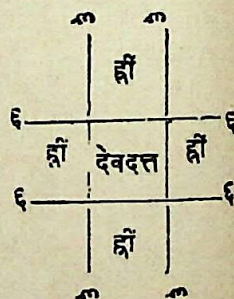
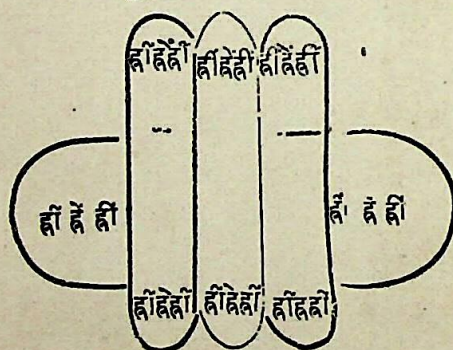
द्वितीयोपदेशः ॥ २ ॥

जिस जिसको वह स्पर्श करे उसकी पृथक् आकर्षित होती है, उस भस्मको शिरपर डालनेसे तत्काल स्त्री आकर्षित होती है और दूसरीको वस्त्रमें रक्षा करे नहीं तो स्त्री कदाचित् नहीं आवेगी “ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा” इस मन्त्रको १०००० जपनेसे उक्तयोगकी सिद्धि होती है ॥ १५ ॥ १६ ॥



आकर्षणयंत्राणि

गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख मधुमें स्थापन करे दूरसे भी आकर्षण होता है.

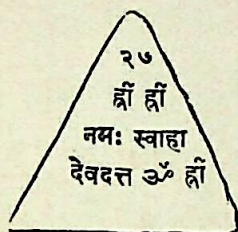


उपदेश: २.

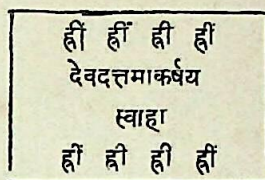
हिन्दीटीकासहित

(४३)

गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिखकर मधुमें स्थापन करे आकर्षण होता है.

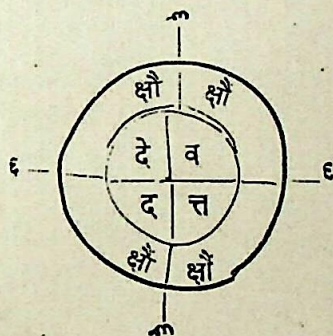
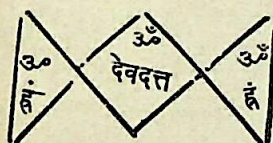


अनामिकाके रक्तसे भोजपत्र में लिख अग्निमें तपावे आकर्षण होता है



अनामिका रक्तसे हाथमें लिख रात्रिमें जपे संध्यामें आकर्षण होता है.

लाल चन्दन और अपने रुधिरसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घरमें स्थापन करे वह आकर्षण होता है.



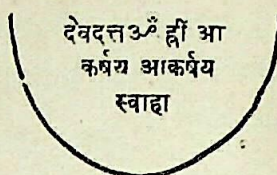
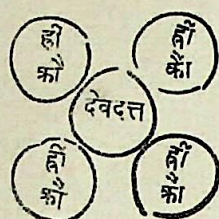
अपने रुधिरसे जिसका नाम लिखकर कागमें बांधकर छोड दे वह शीघ्र आकर्षित होता है.

गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमें स्थापन करे सौ योजनसे आकर्षित होता है.

(४४)

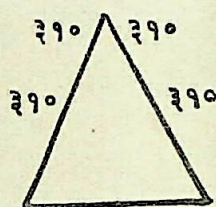
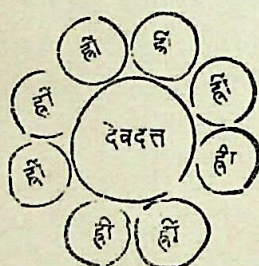
कामरत्न

द्वितीय-



कुंमकुम गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख मोमसे लपेट खैरके अंगारेसे तपावे वह शीघ्र आकर्षित होता है।

गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख मधुमध्यमें स्थापन करे उसे सौ योजनसे आकर्षित करता है।



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख घृतमें स्थापन करे वह आकर्षित होता है।

गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख पत्नीमें स्थापित करे वह आकर्षित होता है।

इति कामरत्ने पं. ज्वालाप्रसादकृत भा. टी. आकर्षणं नाम द्वितीयोपदेशः॥ २ ॥

उपदेशः ३.

हिन्दीटीकासहित

(४५)

तृतीयोपदेशः

अथ जयः

हकारं स्वरसंयुक्तमुकारेण सुपूजितम् ।

ओंकारेण च संपूज्य अग्रे फट् विनियोयेत् । ,ॐ हुंफट्'

जेयाग्रे शतजापेन जितो भवति नान्यथा ॥ १ ॥

हकार स्वर संयुक्त उकारसे पूजित और ॐ कार युक्त कर अन्तमें फट् लगावे । ॐ हुंफट्' जेय अर्थात् जिसके जीतनेकी इच्छा हो उस पुरुषके आगे सौ बार जपनेसे जीता जाता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १ ॥

जेयनाम हृदि न्यस्य चक्षुषा तन्निमील्य च ।

स्पृष्ट्वा च मन्त्रजापेन तत्क्षणाज्जितवानसौ ॥ २ ॥

जो कोई हो उसके नामको हृदयमें रखकर नेत्रसे उसको निरीक्षण और स्पर्श कर मन्त्र जपनेसे वह तत्काल जीतलिया जाता है ॥ २ ॥

गोजिह्वाशिखिमूली वा मुखे शिरशि संस्थिता ।

कुरुते सर्ववादेषु जयं पुण्ये समुद्धृता ॥ ३ ॥

गाजुवां चीता, पुष्करमूल शिरपर रखनेसे और पुण्यनक्षत्रमें उखाडकर लानेसे सब वादमें जय करते हैं । ॥ ३ ॥

मार्गशीर्षस्य पूर्णायां शिखिमूलं समुद्धरेत् ।

बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयो भवेत् ॥ ४ ॥

मार्गशीर्षकी पूर्णमासीको शिखीकी मूल उखाडकर लावे । भुजामें और शिरपर धारण करनेसे सब विवादमें जय प्राप्त करता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥

गिरिकर्णौ शमीं गुञ्जां श्वेतवर्णां समाहरेत् ।

चन्दनेनान्वितं सर्वं तिलकेन जयी भवेत् ॥ ५ ॥

गिरिकर्णो (कोयल) शमी (झंड) श्वेत चौटली इनको लेकर
चन्दनसे युक्त कर तिलक लगानेसे युद्धमें जयी होता है ॥ ५ ॥

कनकार्कवटो वह्निविद्रुमः पञ्चमस्तथा ।

तिलकं कुरुते यस्तु पश्येत्तं पञ्चधा रिपुः ॥ ६ ॥

धतूरा, आक, बड, चीता, मूंगा इनका जो तिलक लगाता है उसको
शत्रु पांच प्रकारसे देखता है यानी अपनेसे पचगुना जानता है ॥ ६ ॥

कृष्णसर्पकपाले तु वसामृत्तिकयान्विते ।

सितगुञ्जां वपेत्तत्र तस्या मूलं समाहरेत् ॥ ७ ॥

कृततिलकं तदा दृष्ट्या पश्येत्स्वं सम्भृतं रिपुः ॥ ८ ॥

काले सांपकी खोपडीमें चर्बी व मृत्तिका युक्त कर श्वेत चौटली
बोवे, उसकी जड लेकर तिलक करनेसे शत्रुको सब प्रकारसे रक्षित
दिखाई देता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

❀ १ श्वगणैर्भक्ष्यमाणं च पतितं च ततो भुवि ।

औषधी सिंहिकानाम तथा घृष्टो महारसः ॥ ९ ॥

सिंहिकपर्पटिकाममध्ये क्षेप्यस्तन्मूलसंयुतः ।

पिधाय वदनं तस्या सिक्थकेन समन्वितः ॥ १० ॥

तस्यां वक्रस्थितायां तु सिंहवज्जायते नरः ।

रणे राजकुले द्यूते विवादे चापराजितः ॥

मदोन्मत्तो गजस्तस्य दर्शनेन पराङ्मुखः ॥ ११ ॥

श्वगणोंके भक्षण करनेसे जो पृथ्वीपर गिरी सिंहिका नाम औषधी
का महारस घिसे उस सिंहिका (कटेरी) को कौडीके बीचमें रख ले
कटेरीकी जडके सहित उसका मुख मोमसे बन्द करे । उसके मुखमें रख

*१ स्वगणैः । स्वगतैः इति च पाठः ।

उपदेशः ३.

हिन्दीटीकासहित

(४७)

लेनेसे यह मनुष्य सिंहके समान होजाता है । युद्धमें, राजकुलमें जुए अथवा वादमें कहींभी पराजित नहीं होता है । उसे देखकर मदो-न्मत हाथीभी पराङ्मुख होजाता है ॥ ९-११ ॥

व्याघ्रीरसेन संघृष्टः पारदो मूलसंयुतः ।

पूर्ववत्साधयेद्व्याघ्रीफलं चैव तथाविधम् ॥ १२ ॥

व्याघ्री (कटेरी) के फलमें मूल सहित पारा धिसनेसे यह कटेरी पूर्ववत् जयकी प्राप्ति करती है इसमें सन्देह नहीं ॥ १२ ॥

करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वा राजकुले जयी ।

जयामूलं राजकुले मुखे संस्थं जयप्रदम् ॥ १३ ॥

सुदर्शनाकी जड हाथमें बांधनेसे राजकुलमें मुकदमेमें जय प्राप्त होता है । जया (जयन्ती) की जड मुखमें रखनेसे राजकुलमें जय प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

आर्द्रायां वटवन्दाकं हस्ते बद्ध्वापराजितः ।

तदृक्षे चूतवन्दाकं गृहीत्वा धारयेत्करे ॥

संग्रामे जयमाप्नोति जयां स्मृत्वा जयी भवेत् ॥ १४ ॥

आर्द्रा नक्षत्रमें वटके वन्देको हाथमें बांधनेसे जयी होता है इसी प्रकार आर्द्रामें आमका वन्दा हाथमें धारण करनेसे जहां जाय जय प्राप्त होता है तथा जयन्तीको स्मरण करनेसे (रणमें) जय प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

कोकाया नयनं वामं गुडलोहेन वेष्टयेत् ।

मुखे प्रक्षिप्य च नरः सर्ववादे जयी भवेत् ॥ १५ ॥

कोकाका बायां नेत्र गुड और लोहेमें लपेटकर उसको मुखपर लेप करनेसे मनुष्य संपूर्ण वादोंमें जय प्राप्त करता है ॥ १५ ॥

कृत्तिका च विशाखा च भौमवारेण संयुता ।

तद्दिने घटितं शस्त्रं संग्रामे जयदायकम् ॥ १६ ॥

जब कृत्तिका और विशाखा नक्षत्रसे युक्त भौम वार हो तो २ दिनमें बनाहुआ शस्त्र संग्राममें जयदायक होता है ॥ १६ ॥

अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लिप्यते ।

जायन्ते तानि संग्रामे वज्रसाराणि निश्चितम् ॥ १७ ॥

पूर्वोक्तमन्त्रराजेन तानि सर्वाणि मन्त्रयेत् ।

सर्वेषामुक्त योगानां सिद्धिर्भवति ते ध्रुवम् ॥ १८ ॥

चिरचिटेके रसमें जितने शस्त्र लिप्त किये जायँ वे संग्राममें वार सारकी समान होजाते हैं, इसमें सन्देह नहीं । पूर्वोक्त मन्त्रराज द्वारा सम्पूर्ण अस्त्रोंको अभिमन्त्रित करेतो सम्पूर्ण योगोंकी सिद्धि होती है ॥ १८ ॥

हस्तेऽर्कलाङ्गलीमूलं मूलमन्त्राभिमन्त्रितम् ।

तच्चूर्णोद्वर्त्तनान्मल्लो मल्लान्मोहयते बहून् ॥

मन्त्रः— ॐ नमो महाबलपराक्रम शस्त्रविद्याविशारद

शारद अमुकस्य भुजबलं बन्धय बन्धय दृष्टि

स्तम्भय स्तम्भय अङ्गानि धूनय २ पातय २

महीतले हं" ॥ १९ ॥

हस्त नक्षत्रमें लांगली (कलिहारी) की जड़को इस मूलमन्त्र अभिमन्त्रित करके उसके चूर्णको छोटा पहलवान शरीरमें मल दूसरे पहलवानको पछाड़ सकता है । मन्त्र यह है—“ॐ नमो महाबलपराक्रम शस्त्रविद्याविशारद अमुकस्य भुजबलं बन्धय बन्धय दृष्टि स्तम्भय स्तम्भय अङ्गानि धूनय २ पातय २ महीतलेहं” इति ॥ १९ ॥

उपदेश: ३.

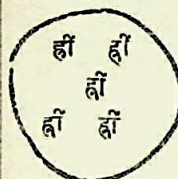
हिन्दोटीकासहित

(४९)

विजयकरयंत्राणि

५३
देवदत्त

गोरोचनसे भोजपत्रमें जिसका नाम लिख शिखा में धारण करे जय होती है, और सौभाग्य होता है



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका नाम लिख भुजा वा कण्ठमें धारण करे संग्राममें जय होती है यह महामाहेश्वरी विद्या है



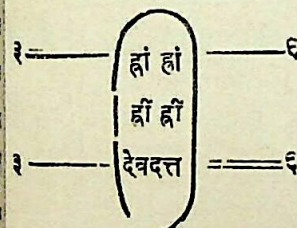
भोजपत्रपर गोरोचनसे जिसका नाम लिख भुजा कंठ, शिखामें धारण करे तो संग्राममें जय होती है.

अभिजित् अपराजित्
देवदत्तस्य जयो भवेत्

शिलापट्टमें हरतालसे लिखकर जिसका नाम लिख नीचेकी ओर मुखपर रख दे, वह जयी होता है.

१	२६	१	२४
८	२७	२०	१५
२४			
२९			

गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख भुजामें बांधे संग्राममें जय होती है.



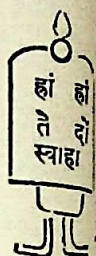
(५०)

कामरत्न

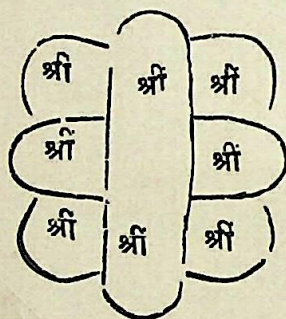
तृतीय

गोरोचनसे भोजपत्रमें लिख गोरोचनसे भोजपत्रमें लि
भोजपत्रमें स्थापन करे तो युद्धमें भुजा और कंठमें धारण क
जय होती है संग्राममें जय होती है

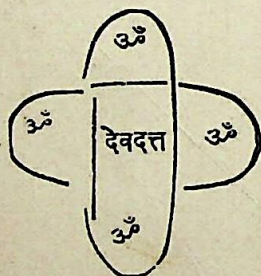
ॐ	क्षः	ॐ
क्षः	ॐ	हाः
	देव	दत्त



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका गोरोचनसे भोजपत्र लि
नाम लिखकर मधुमध्यमें स्थापन भुजामें धारण करे, सर्वत्र
करे, जय होती है होती है



गोरोचनसे भोजपत्रपर जिस
नाम लिखकर धारण करे अ
राजकुलमें देना चाहिये, व्यवहा
जय होती है



गोरोचनसे और कुमकुमसे राज
नाम लिख भुजामें धारण करे, जय होती

उपदेश ३.

हिन्दीटीकासहित

(५१)

अथ सौभाग्यकरणम्

पुण्योद्धृतं सितार्कस्य मूलं वामेतरे भुजे ।

बद्ध्वा सौभाग्यमाप्नोति स्वामिनो दुर्भगापि सा ॥२०॥

रक्त चित्रकमूलन्तु सोमग्रस्ते समुद्धृतम् ।

क्षौद्रैः पिष्ट्वा वटीः कुर्यात्तिलकैस्सुभगाङ्गना ॥२१॥

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ॐ ह्रीं सौख्यं देवदत्त.

वश्यं कुरु २ स्वाहा

ह्रीं ह्रीं ह्रीं

श्वेत आककी जड़ पुण्य नक्षत्रमें
उखाडकर दहिनी भुजामें बान्ध-
नेसे दुर्भगा स्त्रीभी स्वामीसे
सौभाग्यको प्राप्त होती है.

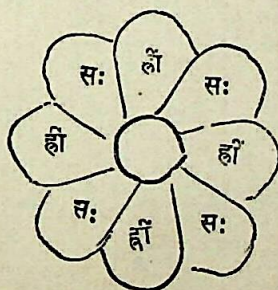
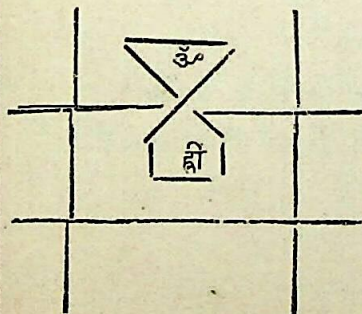
ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ॐ ह्रीं सौख्यं देवदत्त-
स्य वश्यं कुरु २ स्वाहा

ह्रीं ह्रीं ह्रीं

चन्द्रग्रहणमें रक्तचीतेकी जड़ उखा-
डकर शहदसे पीसकर तिलकलगानेसे
सौभाग्य होता है ॥ इन यंत्रोंको गोरो
चनसे भोज पत्रपर (जिसका) नाम
लिखकर कोखमें धारणकरे तो दुर्भगा
सुभगा होती है ॥ २० ॥ २१ ॥

सौभाग्यमंत्राणि



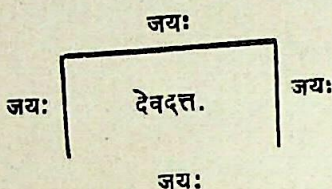
(५२)

कामरत्न

तृतीय

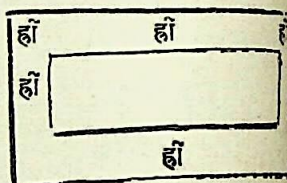
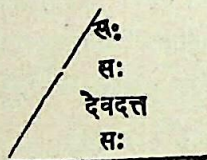
कुंकुम गोरोचनसे भूर्जपत्रमें
जिसको लिखकरदे निश्चय
उसका सौभाग्य होता है।

कुंकुम, रक्त और गोरोचन
भोजपत्रमें लिख भुजा तथा
धारण करे तो सौभाग्य होता है।



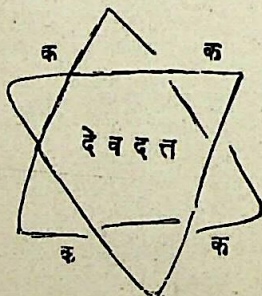
लाखके रससे जिसका नाम
लिख मधुमध्यमें डाले, सौभाग्य
होता है।

गोरोचनसे जिसका
लिख शहतमें स्थापन
सौभाग्य होता है।



कुंकुम गोरोचन और लाखसे
जिसका नाम लिख वाजीकर शरी-
रमें धारण करे सौभाग्य होता है।

गोरोचनसे भोजपत्र
जिसका नाम लिख मधुमें
पन करे, सौभाग्य होता है।



कुंकुम गोरोचन जिसका नाम
मधुमें स्थापन करे तो सौभाग्य होता है।

उपदेशः ३.

हिन्दीटीकासहित

(५३)

अथेश्वारादीनां क्रोधोपशमनम्

“ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्वक्रुद्धोपशमनि स्वाहा”

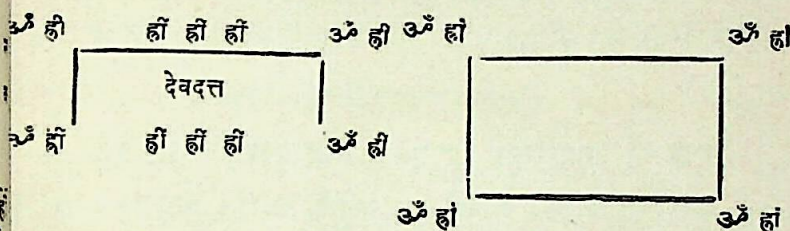
अनेन मन्त्रेण त्रिसप्तधा जप्तेन मुखमार्जनात्

क्रोधोपशमनं भवति । प्रसादपरो भवति ॥ २२ ॥

“ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्वक्रुद्धोपशमनि स्वाहा” इस मंत्रको २१ बार जप

कर मुख धोवे तो क्रोधी शान्त होता है और प्रसाद करने वाला होता है ॥ २२ ॥

क्रोधोपशमनमन्त्रे



ताल पत्रमें कंटकसे लिख कर्द-
यमें स्थापन करे तो क्रोधी पुरुष
प्रसन्न होता है.

गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख
दूधमें स्थापन करे तो क्रोधित हुआ
प्रसन्न होता है.

अथ गजनिवारणम्

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे चूर्णयेत्तां छुछुन्दरीम् ।

तल्लेपेन गजो याति दूरेण खलु सम्मुखम् ॥ २३ ॥

शुभ नक्षत्रमें ग्रहणकर छुछुन्दरको भली प्रकार चूर्ण करे, इसके
प करनेसे देखते ही हाथी भाग जाता है ॥ २३ ॥

बिल्वपुष्पस्य चूर्णं तु छुछुन्दर्याश्च तत्समम् ।

तल्लिप्ताङ्गं नरं दृष्ट्वा दूरे गच्छति कुञ्जरः ॥ २४ ॥

बेलके फूलका चूर्ण छुछुन्दरके साथ शरीरके ऊपर लेप करनेसे
थी दूरसे भाग जाता है ॥ २४ ॥

मूलं मर्कटबल्याश्च बाहौ बद्धं च मूर्द्धनि ।

दुष्टदन्तिहरं दूरं चित्रं संयाति जायते ॥ २५ ॥

कौंचकी जडको बाहु और शिरपर बांधनेसे दुष्ट हाथी दूरसे जाता है, चित्रसा हो जाता है ॥ २५ ॥

श्वेतापराजितामूलं हस्तस्थं वारयेद्गजम् ।

मूलं त्रिशूल्या वक्रस्थं गजवश्यकरं ध्रुवम् ॥ २६ ॥

श्वेतबिष्णुकान्ताकी जड हाथमें रखनेसे हाथी निवारण होता त्रिशूली (बेल) की जड मुखमें रखनेसे हाथी वशमें हो जाता है ॥ २६ ॥

अथ व्याघ्र निवारणम् ॥

मुखस्थं बृहतीमूलं हस्तस्थं व्याघ्रभीतिजित् ॥

कटेरीकी जडको हाथमें वा मुखमें रखनेसे व्याघ्रका भय होजाता है ॥

“ह्रीं ह्रीं श्रीं द्रौं द्रौं हि एति” अथवा “क्रौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥” इत्यष्टाक्षरमन्त्रेणलोष्टं पठित्वा क्षि

तदा मुखं न चालयति गन्तुमशक्ताः ॥

“ह्रीं ह्रीं श्रीं द्रौं द्रौं हि एति” इस अष्टाक्षर मन्त्रसे (ढेला) को पढकर व्याघ्रके ऊपर फेंके तब न वह मुख सकेगा, न चल सकेगा ॥

मूलं कृष्णचतुर्दश्यां ग्राहयेत्लाङ्गुलीभवम् ।

हस्तस्थं व्याघ्रसिंहादिभयहृत्परिकीर्तितम् ॥ २७ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने विजयादिव्याघ्रनिवारण

नाम तृतीयोपदेशः ॥ ३ ॥

उपदेशः ४

हिन्दीटीकासहित

(५५)

कृष्ण पक्षकी चौदशकी कलिहारीकी जड ग्रहण करे, उसको हाथमें
 धरनेसेही सिंहव्याघ्रादिका भय दूर होजाता है ॥ २७ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र-
 कृतभाषाटीकायां विजयादिव्याघ्रनिवारणं नाम तृती-
 योपदेशः ॥ ३ ॥

चतुर्थोपदेशः

अथ शत्रूणां मुखस्तम्भनम्

मेघनादस्य मूलं तु मुखस्थं तारवेष्टितम् ॥

परवादी भवेन्मूकोऽथवा याति दिगन्तरम् ॥ १ ॥

नागरमोथाकी जड़को चांदीमें लपेटकर मुखमें रखनेसे वादी मूक
 जायगा या दिशाओंके अन्तको चला जायगा । १ ॥

इवेतगुञ्जोत्थितं मूलं मुखस्थं पुष्टतुण्डजित् ॥

“ॐ ह्रीं रक्ष चामुण्डेतुरतुरामुकं मे वशमानय स्वाहा ।”

अयं चामुण्डामन्त्र उक्तयोगयोः सिद्धिकरः ॥ २२ ॥

इवेत चौटलीकी जड़ मुखमें इस मंत्रसे रखनेसे शत्रुको जीतता है ।

यह है—“ॐ ह्रीं रक्ष चामुण्डेतुरतुरामुकं मे वशमानय स्वाहा”

चामुण्डका मंत्र पढ़नेसे उक्त योगोंकी सिद्धि होती है ॥ २ ॥

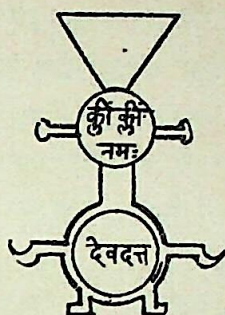
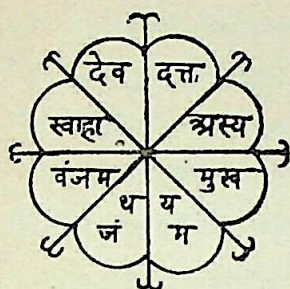
पुण्यार्कं मधुवन्दाकं गृहीत्वा प्रक्षिपेद्बुधः ।

समासध्ये च सर्वेषां मुखस्तम्भः प्रजायते ॥ ३ ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(५७)



किसी भीतपर जिस शत्रुका शिलापट्टमें हलदीसे जिस शत्रुका नाम लिख नीचे मुखकर स्थापन म लिखे उसका मुख बंध होता है। करे उसका मुख बन्धन होता है।

निद्रास्तम्भनम्

मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ।

निद्रास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥ ४ ॥

कटेरीकी जड और मुलैठी इनको पीसकर नाम लेनेसे निद्रा दूर जाती है यह मूलदेवने कहा है ॥ ४ ॥

नौकास्तम्भनम्

भरण्यां क्षीरिकाष्ठस्य कीलं पञ्चाङ्गुलं क्षिपेत् ।

नौकामध्ये तदा नौकास्तम्भनं जायते ध्रुवम् ॥ * ॥

भरणी नक्षत्रमें क्षीरी काष्ठकी पांच अंगुलकी कील नौकामें डाल-नौकाकी गति स्तम्भित होती है ॥ * ॥

अथ शस्त्रस्तम्भनम्

अङ्कुरी च जटा पाठा विष्णुकान्ता च पाटली ।

श्वेतापराजिता पुंसा स (ह) देवी काकजङ्घिका ॥ ५ ॥

(५८)

कामरत्न

पुष्यक्षेण समुद्धृत्य वक्रे शिरसि संस्थिता ।
एकैकं वारयत्येव शस्त्रसङ्घट्टने नृणाम् ॥ ६ ॥

अंकुली वा अंकुशी, रुद्रजटा, पाठा, विष्णुकान्ता, पाटल
जयन्ती, सहदेई, काकजंघा इनको पुष्यनक्षत्रमें उखाड़कर
तथा शिरमें रखनेसे युद्धमें एक एक मनुष्यको निवारण
सकता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

बद्ध्वा तु व्याघ्रभूपालचौरशत्रुभयं जयेत् ।

जातीमूलं मुखे क्षिप्तं शत्रुस्तम्भनमुत्तमम् ॥ ७ ॥

चमेलीकी जड़को बांधनेसे व्याघ्र राजा चोर और शत्रुका
होकर जय होती है । (कहीं "बल्लचम्बु" पाठ है—जल अग्नि
भय दूर करती है) चमेलीकी जड़को मुखमें रखनेसे
स्तम्भन होता है ॥ ७ ॥

सूर्यस्य ग्रहणे चेन्दोर्मूलं चोत्तरगो हरेत् ।

पुङ्गवाया पाटलाया वा मुखस्थं काण्डशस्त्रहृत् ॥

सूर्यके ग्रहणमें अथवा चन्द्रके ग्रहणमें उत्तरकी ओर जाकर
तासे शरफोंका अथवा लाल लोधकी जड़को ग्रहण करे, उसको
रखनेसे सम्पूर्ण शस्त्रसमूहको स्तम्भन करसकता है ॥ ८ ॥

कपित्थस्य च वन्दाकं कृत्तिकायां समुद्धरेत् ।

वक्रसंस्थं तदेव स्यात्खड्गस्तम्भकरं परम् ॥ ९ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें कैथके वन्दाको ग्रहण करके मुखमें रखनेसे
स्तम्भन होता है ॥ ९ ॥

करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वास्त्रस्तम्भनं भवेत् ।

केतकीमस्तकं नेत्रे तालमूलं मुखे स्थितम् ॥

खज्जूरं च रणे हस्ते खड्गस्तम्भः प्रजायते ॥

पदेशः ४.

हिन्दुटीकासहित

(५९)

हाथमें सुदर्शनाकी जड बांधनेसे शस्त्रोंका स्तंभन हो जाता है ।
की मस्तक नेत्रमें, तालमूल मुखमें, खर्जुरको हाथमें रखनेसे रणमें
स्तंभित हो जाता है ॥ १० ॥

एतानि त्रीणि मूलानि चूर्णितानि घृतैः पिबेत् ।

अथ रात्रौ ततस्सर्वैर्यावज्जीवं न बाध्यते ॥ ११ ॥

ऊपर कहे हुए इन तीनोंका मूल चूर्ण कर घीके साथ तीन दिन
में पिये तो जीवन पर्यन्त सब इन शस्त्रोंसे बाधित नहीं होता
॥ ११ ॥

सर्वेषामुक्तयोगानां कुम्भकर्णः प्रसीदति ।

आयान्तं सैन्यकं शस्त्रसमूहं विनिवारयेत् ॥

“ॐ अहो ? कुम्भकर्ण महाराक्षस कैकसीगर्भ-

संभूत परसैन्यं स्तम्भय महाभगवान् रुद्रः प्राज्ञा-

पयति स्वाहा ।” सर्वयोगानामष्टोत्तरशतं जपे-

त्सिद्धिः ॥ १२ ॥

ऊक्त योगोंसे कुम्भकर्ण प्रसन्न हो जाय तो आती हुई शस्त्र
को निवारण करसकता है । मंत्र यह है—“ॐ अहो कुम्भकर्ण महा-
सकैकसी (निष्ठा) गर्भसंभूत परसैन्यं स्तम्भय महाभगवान् रुद्रः
पयति स्वाहा” सब योगोंमें यह मंत्र एकसौ आठ बार जपनेसे
होती है ॥ १२ ॥

क्री चक्री तथा वज्री त्रिशूली मुशली तथा ।

हस्था समरे पुंसां सर्वायुधनिवारिणी ॥ १३ ॥

क्री, चक्री, वज्री, त्रिशूली, मुशली ये नाम देहमें स्थित हों तो

पुरुषके सम्पूर्णयुध निवारण करनेवाले हैं ॥ १३ ॥

(६०)

कामरत्न

चतुर्थ

गृहीतं शुभनक्षत्रे ह्यपामार्गस्य मूलकम् ।

लेपमात्रेण वीराणां सर्वशस्त्रनिवारणम् ॥ १४ ॥

चिरचिटेकी जड अच्छे नक्षत्रमें ग्रहण करनेसे इसके लेप वीरोंके सब शस्त्र निवारण होते हैं ॥ १४ ॥

खर्जुरी मुखमध्यस्था कट्यां बद्ध्वा च केतकीम्

भुजदण्ड स्थितश्चार्कस्सर्वशस्त्रनिवारणः ॥ १५ ॥

खर्जुरी मुखमें स्थित करनेसे, कमरके मध्यमें केतकी, भुजनि स्थित आक यह सब शस्त्रोंका निवारण करनेवाला है ॥ १५ ॥

पुण्यर्क्षे श्वेतगुञ्जा या मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।

हस्ते काण्डं भयं नास्ति संग्रामे च कदाचन ॥ १६ ॥

पुण्य नक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड को हाथमें धारण करे तो चित् शस्त्रका भय न हो ॥ १६ ॥

त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा रसं वज्राभ्रसंयुतम् ।

वक्रस्थञ्चकरस्थञ्च सर्वायुधनिवारणम् ॥ १७ ॥

सोना चांदी तांबेके सहित रस वज्राभ्र (पारा अभ्रक) करके मुखमें स्थित वा हाथमें स्थित हो तो संपूर्ण आयुधोंको नि करनेवाला है ॥ १७ ॥

ब्रह्मदण्डी च कौमारी ईश्वरी वैष्णवी तथा ।

वाराही वज्रिणी चान्द्री महालक्ष्मीस्तथैव च ॥ १८ ॥

एताश्चौषधयो दिव्या स्तथैता मातरः स्मृताः ।

स्मृत्वा चैव करे बद्ध्वा सर्वशस्त्र निवारणी ॥ १९ ॥

ब्रह्मदण्डी, कौमारी, ईश्वरी, वैष्णवी, वाराही, वज्रिणी, महालक्ष्मी यह दिव्य औषधी माताओंको स्मरण कर हाथमें

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(६१)

शस्त्रोंको निवारण करनेवाली है ॥ १८ ॥ १९ ॥ इति शस्त्र-
म्भनम् ॥

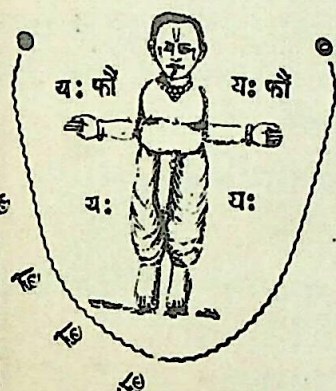
अथाग्निस्तम्भनम्

“ॐ शङ्कर हरहर अग्नि स्तंभय स्तंभय”
अनेनाग्नौ फूत्कारं दत्त्वा अग्नि स्तंभयति ॥

“ओं शंकर हरहर अग्नि स्तम्भय २” इस मंत्रसे फूंक मारनेसे
जल तम जाती है ॥

जप्त्वा जटों नरो देवीं तारां महिषमर्दिनीम् ।

खदिराङ्गारमध्ये तु प्रविष्टोऽसौ न दह्यते ॥ २० ॥



जटी, तारा, महिषमर्दिनी
मंत्रसे १०००० जप करके फिर
खैरके अंगारोंमें घुस जानेसे भी
मनुष्य नहीं जलता है ॥ २० ॥
इस यंत्रको भोजपत्रपर पीत-
द्रव्यसे लिख पीत सूत्र तथा
मोमसे लपेटे जलसे पूर्ण घटमें
स्थापन करे तो अग्निस्तंभन करे
(अग्निस्तंभनं पूर्णपात्रपतितम्) ॥

“ॐ मत्कर्ति तच्छयघनेशेकटीयमनीयश्रीअलि-
प्यप्रायम्बुदीये वशनरकीर्यमन्त्री क्रींफट् ॥”

“ॐ क्रींमहिषवाहिनी जम्भजम्भय मोहय २ भेदय
२ अग्निस्तंभय २ ठः ठः” एतन्मन्त्रद्वयं पूर्वमेवायुतं
जपेत्तेन सिद्धिः ॥ अथवा—मत्तकटीटच्छयघने सेक-

(६२)

कामरत्न

चतु

द्वितीयमूलीयसी आलिप्याग्नायमुदीयतेशनकवीज्जे
मन्दीह्रींफट् । ॐ ह्रीं महिषवाहिनीस्तंभयमोहयभे
दय अग्निस्तंभय ठः ठः इतिः पाठः ॥

“ॐ मत्कर्ति तच्छय घनेशे कटीय मनीय श्री अलिप्य प्रायम
वशतरकीर्य मंत्री क्रींफट् ॥ ॐ क्रीं महिषवाहिनी जम्भय २ भे
मोहय २ अग्नि स्तम्भय २ ठः ठः” इन दोनों मन्त्रोंके प्रथम १
जप करनेसे सिद्धि हो जाती है ॥

कुमारीशूरणं पिष्ट्वा लिप्तहस्तो नरो भवेत् ।
दीप्ताङ्गरैस्ततो लोहमन्त्रयुक्तेन दह्यते ॥२१॥
जो मनुष्य घीकुवार और जमीकंदको हाथमें लपेट ले तो वह
अंगार और जलते हुए लोहेको हाथमें उठासकता है ॥ कहीं “
रीरसकं” पाठ है अर्थ यह कि—घीकुआर ॥ २१ ॥

करे सुदर्शनामूलं बद्ध्वाग्निस्तंभनं भवेत् ॥

अत्रमंत्रलेखनं पूर्ववत् ॥

पूर्व लिखा मंत्रभी पढ़ हाथमें सुदर्शनाकी जड़ बांधनेसे
स्तंभित होती है ॥ इति अग्निस्तंभनम् ॥

अथ जलस्तम्भनम्

पद्मकं नाम यद्द्रव्यं सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत् ।

वापीकूपतडागेषु निःक्षिपेद्वन्धयेज्जलम् ॥ २२ ॥

जो पद्मक (पदमाख) नाम द्रव्य है उसको चूर्ण करके
बावडी कूप तडागमें डालनेसे जल थाम जाता है ॥ २२ ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय जलं स्तंभयस्तंभय ठः ठः

क्षणाद्धेन घटं भिक्षाज्जलं तत्रैव तिष्ठति ॥ २३ ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(६३)

“ओं नमो भगवते रुद्राय जलं स्तंभय २ ठःठःठः” यह मंत्र पढ़कर
अगार्षमें घट भेदित होनेसे भी जल उसमें स्थित रहता है ॥ २३ ॥

देवदालीयमूलं तु मण्डूकरसयोजितम् ।

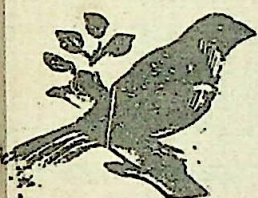
लेपयेद्धस्तपादौ तु जलस्तम्भनमुत्तमम् ॥ २४ ॥

घवरबेलकी जड़ (मंडकके) मेढासिंगीके रसमें युक्त कर हाथ
रमें लेपकरनेसे जलका स्तंभन हो जाता है ॥ २४ ॥



जलस्तम्भनयंत्र

पीतद्रव्यसे कर्पटपर इस यन्त्रको लिख मोमसे
लपेट पूजे तो जलस्तंभन होता है ।



हां हां हां हां हां
हां हां हां हां हां
हां हां हां हां हां
हां हां हां हां हां

इसको पीत द्रव्यसे
पटपर लिख मोमसे
वेष्टितकर जलमें
स्थापित करे तो
उससे जल स्तंभन
होता है.

इसको लिखते समय रविवार के दिन शिरसकी जड़ लाय जलसे
घसकर माथेपर तिलक करे.

श्लेष्मान्तकस्य पिष्टेन कर्तव्यं पादुकाद्वयम् ।

गोधाचर्ममयं बद्धं कृत्वारूढो भवेज्जले ॥ २५ ॥

दोनों खड़ाऊं पर लसोडेको पीस लपेटकर गोहूके चर्मका बन्धन
पर जलमें चल सकता है ॥ २५ ॥

श्लेष्मान्तकफलं चूर्णं मर्दयित्वा लिपेद्घटम् ।

घनमङ्गुलमात्रं तु शोषयेत्पूरयेज्जलैः ॥ २६ ॥ क

लसोडेके फलको चूर्ण कर घडेपर एक अंगुल मात्र मोटा लेप
सुखा लेवे, फिर जलसे पूर्ण करे ॥ २६ ॥

शिरीषमूलमादाय रविवारे तु पूर्वजम् ।

उदकेन सहाघृष्टं ललाटे तिलके कृते ॥ २७ ॥

इतवारके दिन शिरसकी जड़ लाकर जलके संग पोसा
माथेपर तिलक करनेसे (देखनेसेही जल) स्तंभित होजाता है ॥ २७ ॥

अथदिव्यस्तम्भनम्

तप्तदिव्ये तथा सर्वकृतदोषो विमुच्यते ।

उत्तराभिमुखं ग्राह्यं मेघनादस्य मूलकम् ।

भक्षयेद्द्वारयेद्वस्त्रैर्दिव्यस्तम्भकरं परम् ॥ २८ ॥

तप्त दिव्यमें सब दोष छूट जाते हैं। उत्तरकी ओर मुख नि
ढाककी जड़ ग्रहण करे अर्थात् तत्ती वस्तु गरम नहीं लगती। उसै भ
कर वस्त्रद्वारा धारण करे तो दिव्यपदार्थ स्तंभित होजाते हैं ॥ २८ ॥

ह्रींमः	ह्रींसः	ह्रींसः	
ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींमः
ह्रींसः	ह्रींसः	ह्रींसः	

गोरोचनसे कुमकुम और ला

भोजपत्रमें इस यंत्रको लिख

सरैयामें बन्द करे तो रिख

स्तंभन होजाता है ॥

श्वेतगुञ्जजोत्थितं मूलमृक्षे उत्तरभाद्रके ।

उत्तराभिमुखं ग्राह्यं दिव्यस्तंभकरं मुखे ॥ २९ ॥

उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें श्वेत चौंटलीकी जड़ उत्तरकी ओर मुख
ग्रहण करे और मुखमें धारण करनेसे दिव्यस्तंभन होता है ॥ २९ ॥

भृङ्गीमूलं रोचनां च पिष्ट्वा पाणौ प्रलेपयेत् ।

ललाटे तिलकं कृत्वा तप्तदिव्यजयी भवेत् ॥ ३० ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(६५)

भांगरेकी जड गोरोचनके साथ पीस हाथमें लपेट मस्तकमें तिलक करनेसे तप्त दिव्यपदार्थका जीतनेवाला होता है ॥ ३० ॥



इस यंत्रको गोरोचन कुंकुमसे टेसूके फूलके रसिके सहित भोजपत्रपर लिख दूधके घड़ेमें रक्खे तो सब दिव्यस्तंभ होते हैं.

मरीचं मागधी चैला चर्विता गिलिता सती ।

रवितण्डुलजैदिव्यैः कृतदोषो विमुच्यते ॥ ३१ ॥

कालीमिर्च, पीपल, इलायची, आक और तन्दुल यह चाबने या निगलनेसे सब प्रकारके दिव्य दोषोंसे छुटजाता है ॥ ३१ ॥

आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वित्वा नागरं वचाम् ।

तप्तलोहं लिहेत्पश्चात्कृतदोषो विमुच्यते ॥ ३२ ॥

घी और बूरा मिलाकर पीनेसे और सोंठ वच मिलाकर मुखमें लिखनेसे तत्ते लोहेको चाटनेसेभी उसका दोष नहीं लगता ॥ ३२ ॥

मण्डूकरससंपिष्टैर्लज्जामूलैर्वनक्तकैः ।

लिप्तपाणिर्नरः सत्ये तप्तदिव्ये विशुद्ध्यति ॥ ३३ ॥

सोनापाठाके रसमें लज्जावन्तीकी जड पीस उसे हाथमें लगाने से शत्रुघ्न दिव्यपदार्थके तापसे शुद्ध होता है अर्थात् शरीर जलता नहीं ॥ ३३ ॥

लोहदिव्यस्तम्भनमंत्रः

“ॐ अग्नीदहंतीकोधरैर्मैधरोजातीनाभावाच्छुचि
निददोदिव्यपतितस्तंभे ईश्वरो महेशः ॥” एतेन
स्तम्भनम् । श्रीमहादेवकी आज्ञा । अमुं मन्त्र-
मयुतं जपेद्विव्यसिद्धिर्भवति ॥

“ॐ लोहा प्रज्वल कोइलाके भानुहौचण्डके-
दारकापडी लोहापडौतुषार ॥”

मंत्र-ॐ अग्नीदहंतीकोधरैर्मैधरोजातीनाभावाच्छुचिनिददो दि-
पति तरतंभे ईश्वरोमहेशः । एतेन स्तम्भनम् । श्रीमहादेवकी आज्ञा
इस मन्त्रको १०००० जपनेसे सिद्धि होती है ॥ “ॐ लोहा प्रज
कोइलाकेभानुहौ चण्डकेदारकापडीलोहापडौतुषार” ॥ यह लो
दिव्यके स्तम्भनका मंत्र है ॥

अथ गजगोमहिष्यादिस्तम्भनम्

उष्ट्रास्यस्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ।

गोवाजिमेषीमहिषीः स्तंभयेत्करिणीमपि ॥ ३४ ॥

ऊंटकी हड्डी चारों ओर
भतलमें गाडनेसे गौ, भैंस,
भेड़, घोड़ा हाथीतकका
स्तंभन होता है। इस हाथी
यंत्रको तालपाटमें लिख
हाथीका दांत उखाड मट्टीका
हाथी बनावे, इससे हाथी
आदि सब स्तंभित होते
हैं ॥ ३४ ॥

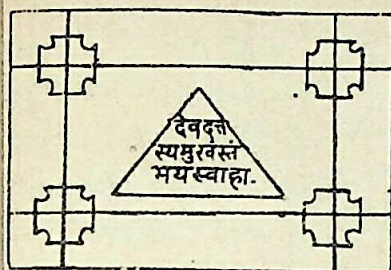


या

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(६७)



इस यंत्रको हलदीसे भोज-
पत्रपर जिसका नाम लिखकर
दुमके नीचे स्थापित करे वह
स्तंभित होता है.

इतिगजगोमहिष्यादिस्त-
भनम्

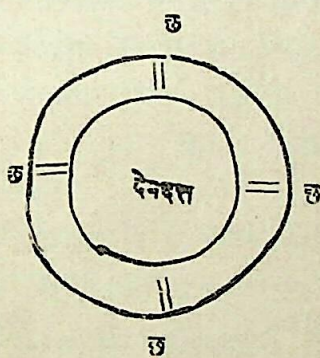
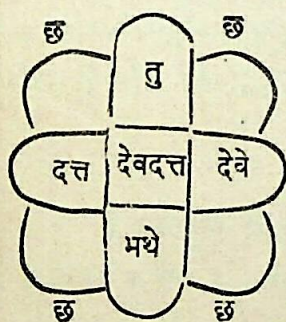
अथ मनुष्यस्तंभनम्

“काली कराली अमुकं स्तंभय स्वाहा ॥”

अनेन मंत्रेण साध्यनाम हृदि धृत्वा स्पृष्ट्वा वा
दर्शनाज्जपतः स्तंभितो भवति क्षिप्रम् ॥ ३५ ॥

“काली कराली अमुकं स्तंभय स्वाहा” इस मंत्रसे साध्यका नाम
हृदयमें धारण कर उसको छूकर वा देखकर जपे तो स्तंभन
होता है ॥ ३५ ॥

मनुष्यस्तंभनयंत्राणि

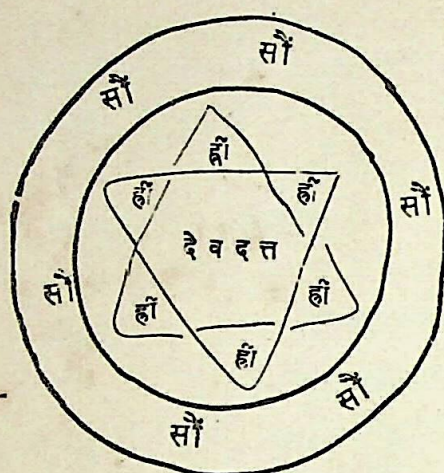


इन यंत्रोंको गोरोचनसे भोजपत्रपर जिसका, नाम लिख शिकोरेमें
थापन करे उसका स्तंभन होता है

(६८)

कामरत्न

चतुर्थं



इसको गोरी च...
 नाम लिखे और कंपावे ।
 स्तंभित होता है "काली"
 काली अमुकंस्तंभयस्वाप...
 इस मंत्रसे साध्यकानाम्...
 यमें रखकर छूकर वा क...
 कर जपे शीघ्रस्ती...
 होता है.

इति मनुष्यस्तम्भनम्

अथ मनःस्तम्भनम्

चर्मकारस्य कुण्डानि रजकस्य तथैव च ।

कुण्डान्मलं समुद्धृत्य चाण्डाल्या ऋतुवाससम् ॥

बन्धयेत्पोटलीं प्राज्ञो यस्याग्रे तां विनिःक्षिपेत् ।

तस्योत्थाने भवेत्स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ ३६ ॥

चमार और धोबीकी नांदका मैल लेकर चाण्डालीका ऋतुका...
 लेकर इसकी पोटली बांधकर आगे फेंकदे वह उठनेमें...
 होजायगा । सिद्धयोग है ॥ ३६ ॥

आसनस्तम्भनम्

श्वेतगुञ्जाफलं वाप्यं नृकपालेऽपि मृत्सह ।

निशि कृष्ण चतुर्दश्यां त्रिदिने तत्र जागरेत् ॥ ३७ ॥

नित्यं सिञ्चेज्जलेनैव मन्त्र पूजां च कारयेत् ।

तस्याः शाखा लता ग्राह्या शुभऋक्षे स्वमन्त्रतः ॥ ३८ ॥

क्षिपेद्यस्यासने तां तं स्तम्भयेत्तत्क्षणाद्ध्रुवम् ॥ ३९ ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(६९)

“ॐ रुद्रेभ्यो नमः । ॐ वज्ररूपाय वज्रकिरणाय शिवे
रक्षभवे समामृतं कुरु २ स्वाहा ॥ ” अयं पूजामंत्रः ॥
श्वेत चौटलीको मनुष्यकी खोपडीमें मट्टी डालकर बोवे, कृष्ण-
पाषाणकी चौदसको यह कार्य कर तीन राततक जागे और तीन दिन
बारबर उस पर जल छिडके ॥ मन्त्रपूर्वक पूजा करे और शुभ नक्षत्रमें
उसकी शाखाको ग्रहण करे जिसके आसनपर फेंके वह उसी समय
स्तंभित होजाता है । पूजामंत्र—“ॐ रुद्रेभ्यो नमः । ॐ वज्ररूपाय वज्र-
किरणाय शिवे रक्ष भवे समामृतं कुरु २ स्वाहा” ॥ इति आसन-
स्तंभन इति मनुष्यस्तम्भनम् । ॥ ३७-३९ ॥

सर्वभूतबुद्धिस्तम्भनम्

भृङ्गराजो ह्यपामार्गसिद्धार्थं सहदेविकाम् ।
तुल्यं तुल्यं वचाश्वेताद्रव्यभेषां समाहरेत् ॥ ४० ॥
लोहपात्रे विनिक्षिप्य द्विदिनान्तं समुद्धरेत् ।
तिलकैः सर्वभूतानां बुद्धिस्तम्भकरो भवेत् ॥ ४१ ॥
भांगरा, चिरचिटा, सरसों, सरदेई इनकी बारबर, बच्च, श्वेतकटेरी
बब लोहपात्रमें डालकर इनका रस निकाले, इसके तिलक करनेसे सब
भूतोंकी बुद्धि स्तंभित होजाती है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

शत्रुबुद्धिस्तंभनम्

“ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नमः । सर्वमुखी-
भ्यां विश्वामित्राय विश्वामित्र आज्ञापयति शक्त्या
आगच्छ २ स्वाहा ॥ ” उक्तयोगस्यायं मन्त्रः ।
“अङ्गुलीलात्रिधा आशय आगल स्वाहा ।” अनेन
मन्त्रेण नदीं प्रविश्य अष्टोत्तरशताञ्जलींस्तर्पयेत् ।
शत्रूणां बुद्धिस्तम्भो भवति ॥ कर्पूरेण चिताङ्गारे

(७०)

कामरत्न

नाम लिखित्वा तदुपरि मृत्तिकां दद्यात् त-
 शत्रोर्मुखबन्धो भवति ॥ इति शत्रुबुद्धिस्तम्भनम् ॥

मन्त्र—“ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नमः सर्वमुखीभ्यां विश्व-
 त्राय विश्वामित्र आज्ञापयति शक्त्या आगच्छ स्वहा ॥” यह
 रोक्त योगका मंत्र है ॥ “अंगुलीलात्रिधा आशय आगल स्वाहा”
 मन्त्रसे नदीमें प्रवेश कर १०८ अंजलिसे तर्पण करे तो शत्रुओंकी बु-
 द्धि स्तम्भित होजाती है ॥ कपूरसे चिताके अंगारेपर शत्रुका नाम लिख
 उसके ऊपर मिट्टी डालनेसे शत्रुका मुख बंध होजाता है ।
 शत्रुबुद्धिस्तम्भनम् ॥

अथ चौरगतिस्तम्भनम्

“ॐ नमो * ब्रह्मद्वेषिणी शिवे रक्षरक्ष ठः ठः ।” अ-
 मन्त्रेण सप्तपाषाणखण्डानि श्मशानाद् गृहीत्वा
 त्रीणि कट्यां बद्ध्वा पराणि मुष्टिभ्यां धारयेच्चौरा-
 गतिस्तम्भो भवति । इति ॥

“ॐ नमो ब्रह्मद्वेषिणी शिवे रक्षरक्ष ठः ठः” इस मन्त्रसे सात का-
 श्मशानस्थाने लेकर कमरमें बांधे, शेष मुठ्ठीमें धारण करे
 चोरोंकी गति स्तम्भित होती है ॥ (कहीं पाशोंका धारण करना
 है) इति चोरणां गतिस्तम्भनम् ॥

अथ गर्भस्तम्भनम्

गृह्य कृष्ण चतुर्दश्यां धत्तूरस्य तु मूलकम् ।
 कट्यां बद्ध्वा रमेत्कान्तां न गर्भं धारयेत्क्वचित् ॥
 मुक्तेन लभते गर्भं पुरा नागाज्जुनोदितम् ।
 तन्मूलचूर्णं योनिस्थं न गर्भं सम्भवेत्क्वचित् ॥ ४२ ॥

* ब्रह्मवशिनी इत्यादि पाठः ।

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(७१)

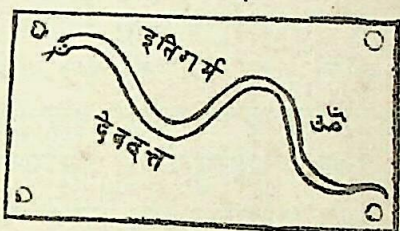
कृष्णपक्षकी चौदसके दिन धतूरेकीजड ग्रहणकर कमरमें बांधकर स्त्री पतिसे रमण करे तो कभी गर्भकी स्थिति नहीं होती है, इसके खोलनेसे गर्भकी स्थिति होती है ऐसा पहले नागार्जुनने कहा है। अथवा धतूरेकी जडका चूर्णकर योनिमें धारण करनेसे कभी गर्भकी स्थिति नहीं होती है ॥ ४२ ॥

सिद्धार्थमूलं शिरसि बद्ध्वा कान्तं रमेत्तु या ।

नगर्भं धारयेत्सा स्त्री सुक्तेन लभते पुनः ॥ ४३ ॥

अनेन गर्भो न भवति ॥ इति गर्भस्तम्भनम् ॥

सरसोंकी जड शिरपर बांधकर जो अपने कान्तसे रमण करती है वह स्त्री कभी गर्भधारण नहीं करती, उसके खोल रखनेसे फिर गर्भकी



स्थिति होती है ॥ ४३ ॥ इस

अन्नको आनमिकाके रक्तसे या मार्जार (बिलाव) का मल अनामिकासे ग्रहण कर रक्तसे देवदत्तके स्थानपर गर्भवतीके नामके साथ भोजपत्रपर लिख भूमिमें गाडे तो गर्भस्तम्भन होगा ॥ इति गर्भस्तम्भनम् ।

अथ शुक्रस्तम्भनम्

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्ये नग्नः समुद्धरेत् ।

कटुत्रयैर्गवां क्षीरैः सम्मिश्र्य गोलकीकृतम् ।

छायाशुष्कं स्थितं चास्ये वीर्यस्तम्भकरं नृणाम् ॥ ४४ ॥

नग्न होकर पुष्यनक्षत्रमें इन्द्रायणकी जड उखाडकर उसे सोंठ, मिरच, पीपलके साथ पीस गौके दूधमें गोली बांधे और उसको छायामें सुखाले एक गोली मुखमें रखनेसे वीर्यस्तम्भन होता है ॥ ४४ ॥

(७२)

कामरत्न

चतुर्थ-

नीलीमूलं श्मशानस्थं कट्यां बद्ध्वा तु वीर्यधृक् ॥४५॥
 श्मशानमें उत्पन्न हुई नीलकी जड कमरमें बांधकर रमें तो वीर्य
 स्तंभित होता है ॥ ४५ ॥

कृष्णोन्मत्तवचामूलं मधुपिष्टं प्रलेपयेत् ।

लिङ्गे तदा रमेत्कान्तां स्वभावाद्द्विगुणं नरः ॥ ४६ ॥
 काले धूतरे और वचकी जड शहतमें पीसकर मदनध्वजपर लेप-
 कर स्त्रीके साथ रमण करनेसे दुगुना पराक्रम दिखाता है ॥ ४६ ॥

भृङ्गीविषं पारदं च प्रत्येकं तु द्विगुञ्जकम् ।

वराटाक्षं क्षिपेद्विन्दुः स्थिरः स्याच्छिरसा धृतम् ।
 अभ्रक, विष, पारा यह वस्तु शोधी हुई ले और प्रमाणमें दो दो
 चोटली भरले इनके प्रयोगसे शुक्रस्तंभन होता है ॥ ४७ ॥

रक्तापामार्गमूलं तु सोमवारे निमन्त्रयेत् ।

भौमे प्रातःसमुद्धृत्य कट्यां बद्ध्वा तु वीर्यधृक् ॥४८॥
 लाल अपामार्ग (चिरचिटे) की जडको सोमवारके दिन निमन्त्रण
 देकर मंगलके दिन प्रातःकाल उखाडकर लावे, उसके कमरमें बांधनेसे
 वीर्य स्तंभित होता है ॥ ४८ ॥

दुन्दुभीनामकं सर्पं कृष्णवर्णं समाहरेत् ।

तस्यास्थि धारयेत्कट्यां नरो वीर्यं न मुञ्चति ।
 विमुञ्चति विमुक्तेन सिद्धियोग उदाहृतः ॥ ४९ ॥
 काले वर्णके दुन्दुभी नाम सर्पको लावे, उसकी हड्डी कमरमें धारण
 करनेसे मनुष्यका वीर्य स्तंभित होता है और उसको खोल रखनेसे
 वीर्य मुक्त होता है ॥ ४९ ॥

नखास्थीनि समादाय मार्जारस्य सितस्य च ।

कृकलासस्य पुच्छाग्रमुद्रिकाप्रेततन्तुभिः ॥ ५० ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(७३)

वेष्टया कनिष्ठिका धार्या नरो वीर्यं न मुञ्चति ॥ ५१ ॥

श्वेत मार्जारके नख और अस्थि लेकर कृकलास (गिरगट) की पूँछके अग्रभागकी बनी अँगूठीको मृतकस्थानके सूतसे लपेटकर कनऊंगलीमें धारण करके मनुष्य वीर्यको नहीं त्याग करसकता है ॥ ५० ॥ ५१ ॥

पुष्योद्धृतं श्वेतपिकाक्षबीजं कटीतटे लोहितसूत्र-

बद्धम् । बीजच्युतिं धारयति प्रसङ्गे ख्यातः

सदायं किल योगराजः ॥ ५२ ॥

पुष्य नक्षत्रमें उखाड़ा हुवा श्वेतपिकाक्षका बीज लाल सूतमें कमरमें बांधनेसे बीजकी स्थलितता नहीं होती । यह योगराज कथन किया है ॥ ५२ ॥

श्वेतान्यपुष्टाख्यतरोः फलानि क्षीरेण पिट्वा वटपा-

दपस्य । करञ्जबीजोदरमध्यगानि स्तम्भन्ति

वीर्यं वदने धृतानि ॥ आदित्यवारोद्धृतसप्तपर्ण-

वृक्षस्य बीजं विनिधाय वक्रे । जयेदकाण्डं सुर-

तावतारे पुमान् पुरन्ध्रीः स्मरतीव्रवेगाः ॥ ५३ ॥

श्वेतकोयल वृक्षके फल लेकर उन्हें बडके दूधके साथ पीसे । उसमें करंज बीजका मध्यांश डालकर मुखमें धरनेसे वीर्य स्तम्भित होता है । रविवारके दिन सप्तपर्ण वृक्षके बीज ला करके मुखमें रखनेसे सुरतके समय पुरुष स्त्रीका जय करता है ॥ ५३ ॥

नागकेशरकर्षं तु गोघृते पातयेद्बुधः ।

भुक्त्वा रमेच्च रमणीं तदा बिन्दुः स्थिरो भवेत् ॥ ५४ ॥

नागकेशर एक कर्ष गौके घीमें डाले उसे भोजन कर जो स्त्रीसे रमण करे तो वीर्य स्थिर होता है ॥ ५४ ॥

(७८)

कामरत्न

चतुर्थ-

श्वेतेषु पुष्पाचरणं गृहीत्वा पुष्पार्कयोगे पुरुषस्य
कट्याम् । कुसारिकाकर्तितसूत्रकेण बद्धं जय-
त्याशु मनोजबीजम् ॥ ५५ ॥

श्वेत शरफोंकेकी जडको पुष्प नक्षत्रयुक्त रविवारमें ग्रहण करके
बवारी कन्याके काते सूतसे पुरुषकी कमरमें बांधनेसे कामको जय
करता है ॥ ५५ ॥

बीजमीश्वरलिङ्गस्य सूतं वृश्चिककण्टकम् ।

क्षीपेत्पूगफलं चास्मिन्त्रिलोहैस्तं च वेष्टयेत् ॥

जिह्वोपरि स्थिते तस्मिन्नरो वीर्यं न मुञ्चति ॥ ५६ ॥

धतूरेके बीज, पारा, मैनफल यह सुपारीके साथ मिलाकर तीन
लोहसे उसको वेष्टित करे । इसको जिह्वापर रखनेसे मनुष्य वीर्यको
नहीं छोड़ता है ॥ ५६ ॥

सहदेवीबीजमूलं संमिश्र्यं पद्मकेसरैः ।

मध्वाज्यसहिताल्लेपान्नरो वीर्यं न मुञ्चति ॥ ५७ ॥

सहदेवीके बीज और जड पद्मकेसर इसमें घी और शहद मिलाकर
लेप करे तो मनुष्यका वीर्य स्थलित नहीं होता है ॥ ५७ ॥

नीलोत्पलसिताम्भोजकेसरं मधुशर्करम् ॥ ५८ ॥

अमीभिर्नाभिलेपेन चिरं रमति कामुकः ॥ ५९ ॥

नील कमल श्वेत कमलकी केसरमें शहद शर्करा मिलाय इसका
नाभिपर लेप करनेसे बहुत देरतक कामी पुरुष रमण कर सकता
है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

आदाय कृष्णेतरकाकजङ्गममूलं सिताम्भोरुह-

केसरञ्च । क्षौद्रेण पिष्ट्वा परिलिप्य नाभिं स्तम्भं

प्रपद्येत् पुरुषस्य बीजम् ॥ ६० ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(७५)

श्वेत काकजंघाकी जड, श्वेत कमलकी केसर यह लेकर शहदके साथ पीस नाभिपर लेप करनेसे पुरुषका वीर्यस्तंभित नहीं होता है ॥६०॥

छाग्येडकादुग्धपिष्टं लज्जामूलं प्रलेपयेत् ।

हृदये पादयोर्वीर्यं द्रवते न कदाचन ॥ ६१ ॥

बकरी और भेडीके दूधमें लज्जावन्तीकी जड पीसकर हृदय और चरणोंमें लेप करनेसे पुरुषका वीर्य पतित नहीं होता है ॥ ६१ ॥

मूलं वा श्वेतपुङ्खायाः सक्षौद्रं नाभिलेपनात् ।

मधुना पद्मबीजस्य तद्वत्लेपेन वीर्यधृक् ॥ ६२ ॥

श्वेत शरफोंकेकी जडमें शहद मिलकर नाभिमें लेप करे तो वीर्य स्तंभित होता है । अथवा शहदमें कमलका बीज मिलाकर लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ६२ ॥

इन्द्रवारणिकामूलमुन्मत्ताजस्य मूत्रतः ।

भावयेत्सप्तवारं तं लिङ्गलेपेन वीर्यधृक् ॥ ६३ ॥

इन्द्रायणकी जडको उन्मत्त बकरेके मूत्रमें सात बार भावना देकर लिङ्गपर लेप करनेसे वीर्य स्तम्भित होता है ॥ ६३ ॥

उन्मत्ताजस्य मूत्रेण पेपयेद्वानरीशिकाम् ।

लिप्त्वा लिङ्गं नरो वीर्यं चिरकालं न मुञ्चति ॥ ६४ ॥

उन्मत्त बकरेके मूत्रसे जटामांसीको पीसकर ध्वजपर लेप करनेसे मनुष्यका वीर्य चिरकालतक स्खलित नहीं होता है ॥ ६४ ॥

कर्पूरं टङ्कणं सूतं तुल्यं मुनिरसं मधु ।

मर्दयित्वा लिपेल्लिङ्गं स्थित्वा यामं तथैव च ॥ ६५ ॥

ततः प्रक्षालयेत्लिङ्गं रमेद्रामां यथोचितम् ।

वीर्यस्तम्भकरं पुंसां सम्यङ्नागार्जुनोदितम् ॥ ६६ ॥

कपूर, सुहागा, पारा यह सब बराबर ले अगस्त्यके रस और शहदमें इनको मिलाकर लिंगपर लेप कर एक पहरतक स्थित रहे, फिर अपने ध्वजको धोकर कान्ताके साथ रमण करे तो पुरुषका वीर्य स्तंभित होता है, यह नागार्जुनने कहा है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

कौसुम्भतैलेन विलिप्य पादौ यदृच्छया दीव्यति
वृद्धवीर्यः । पुनर्नवाचूर्णविलेपनाच्च जहाति बीजं
न कदाचिदेतत् ॥ ६७ ॥

कुसुम्भका तेल पैरोंमें मलनेसे स्वेच्छासेही वीर्यकी वृद्धि होती है और पुनर्नवाके चूर्णके विलेपन करनेसे कदाचित्भी वीर्य स्वलित नहीं होता है ॥ ६७ ॥

कर्पूरसंपाकमहेशबीजैः * सार्धं तु बीजं पुरुषस्य
नाभौ । विलिप्य कान्ताजघने च कान्ते न
लभ्यते शुक्रमधः कदापि ॥ ६८ ॥

कपूर, संपाक और पारा यह नरवीर्यके साथ पुरुषकी नाभिमें लेप करनेसे वा स्त्रीकी जंघामें लेप करनेसे कभी वीर्य स्वलित नहीं होता है ॥ ६८ ॥

भूलतासिक्थकं चैव कुसुम्भस्य च तैलकम् ।

वीर्यधृक्पादलेपेन तटिकाण्डस्य लेपनात् ॥ ६९ ॥

भूलता और मोम और कुसुम्भका तेल पैरमें लेपनेसे वीर्य स्तंभित होता है अथवा चटिकाके अंडेका पैरमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ६९ ॥

नवनीतेन युक्ताभ्यां शय्यां पद्भ्यांच न स्पृशेत् ।

श्लेष्मान्तस्य कुरण्टस्य बीजं कारञ्जकस्य च ।

* चाद्धेन्दुबीजम् इति कुत्रचित् पाठः ।

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(७७)

भेडीक्षीरेण तं पिष्ट्वा कर्षं भुक्त्वा तु वीर्यधृक् ॥ ७० ॥
 पैरोमें मक्खन मलकर चरणोंसे सेजको स्पर्श न करे, लहसोडा,
 कुरुंठ (पीली कटसरैया) और करंजके बीज भेडीके दूधमें पीसकर
 एक कर्षमात्र भक्षण करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७० ॥

सुदर्शनाभवं मूलं ताम्बूलैस्सह पेषयेत् ।

भक्षत्याज्यं प्रयत्नेन शुक्रस्तम्भनमुत्तमम् ॥ ७१ ॥

सुदर्शनाकी जड़ ताम्बूलके साथ पीसकर घृतके साथ यत्नसे
 सेवन करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७१ ॥

श्वेतार्कतूलकैर्वर्तीदीपः सूकरमेदसा ।

यावज्ज्वलति दीपोऽयं तावद्वीर्यं न मुञ्चति ॥ ७२ ॥

श्वेत आकके तूल (रुई) की बत्ती करके सूकरकी चरबीसे दीपक
 बालनेसे जबतक दीपक बलता रहेगा तबतक वीर्यपात नहीं होगा ७२ ॥

मूलं बराहकान्तिाया अजाक्षीरेण पेषयेत् ।

लिङ्गलेपेन चानेन वीर्यस्तम्भकरं भवेत् ॥ ७३ ॥

बाराहीकन्दकी जड़ बकरीके दूधसे पीसकर ध्वजपर लेप करनेसे
 वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७३ ॥

पुष्योद्धृतं श्वेतहयमारमूलं कटीतटे ।

बद्धं बिन्दुस्थिरकरं मुक्ते तु च्यवते पुनः ॥ ७४ ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत हयमार अर्थात् कनेरकी जड़ ला कमरके बांध-
 नेसे वीर्यपात नहीं होता है ॥ ७४ ॥

वक्कीरसं तूद्धर्वागेन पात्रेण ग्राह्ययेद्रवौ ।

संपिष्य वटिकां कृत्वा संशोष्य च विनिक्षिपेत् ॥

आत्ममूत्रेण तल्लिप्यं लिङ्गमूलं तु वीर्यधृक् ॥ ७५ ॥

पपंटीको लेकर उसका रस रविवारके दिन ग्रहण कर इसको भली प्रकार पीस इसकी गोली बनाय सुखाकर रख छोड़े, अपने मूत्रसे उसको घिसकर मदन ध्वजके मूलस्थानमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७५ ॥

पूतीकरञ्जबीजं च श्वेतबन्धूकमण्डयोः ।

मूलं पिष्ट्वा तु लिङ्गाग्रे लेपयेच्चन्दनैस्सह ॥ ७६ ॥

तथा करतले दद्याद्दामे बिन्दुः स्थिरो भवेत् ॥ ७७ ॥

पूतीकरंजके, बीज, श्वेतबन्धूक और मंड, सोनापाठा इनकी जड़ चन्दनके साथ मदनध्वजपर लेप करनेसे तथा बाँये हथेलीमें लेप करनेसे वीर्य स्तंभित होता है ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

लज्जालुमूलं भटिकां पिष्ट्वा ताम्रस्य भाजने ।

कृत्वाञ्जनं च तेनाञ्जज्यादर्द्धरात्रं स्थिरो भवेत् ॥ ७८ ॥

लज्जावन्तीकी जड़ और भटिकाको पीसकर ताम्रपात्रमें घिस अंजन करे तो आधी राततक वीर्य स्थिर होता है ॥ ७८ ॥

कृष्णधूर्त्तं महाकालं शनिवारं निमन्त्रयेत् ।

रविवारं समानीय चादत्तारमणीकृतैः ॥ ७९ ॥

सूत्रैर्गुणत्रयैर्बद्धं करे वामे प्रयत्नतः ।

उपविश्यासौ खण्डत्रयैर्मित्रयं ततः ।

बिन्दुः स्थिरत्वमाप्नोति मुक्ते स्खलति तत्क्षणात् ॥ ८० ॥

काले धतूरे तथा महाकाललताको शनिवारके दिन निमन्त्रण दे और रविवारके दिन लाकर और कन्यासे सूत कतवाकर तिगुने उस सूत्र तीन खंड कर वाम हाथमें यत्नसे बांधकर आसनपर तीन पहरतक बैठ तो बराबर वीर्य स्थिर होता है, इसके खोलनेसे मुक्त होता है ॥ ८० ॥

हेमह्वालोचनं तुल्यं कृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ ८१ ॥

उपदेशः ४.

हिन्दीटीकासहित

(७९)

वटक्षीरेण संमर्द्य कुबेराक्षस्य बीजकैः

क्षिप्त्वा तद्धारयेद्वक्त्रे वीर्यस्तम्भकरं भवेत् ॥ ८२ ॥

इति श्रीनित्यनाथ० कामरत्ने शत्रुमुखस्तम्भनादिवर्णनं
नामचतुर्थोपदेशः ॥ ४ ॥

(चोक) नागकेशर वंशलोचन और

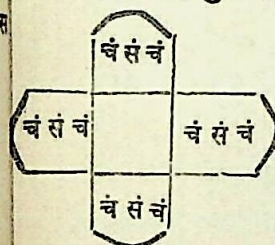
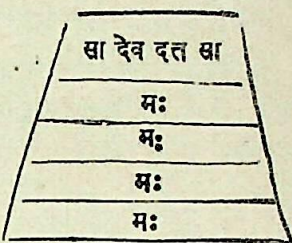
काले धतूरेके बीज बडके दूधके सहित
करञ्जके बीज यह सब एकत्र कर मुखमें
धारण करनेसे वीर्य स्तम्भित होता है ॥

८१ ॥ ८२ इस यंत्रको मिष्ट रसपान
रससे भूर्जपत्रपर लिख कपोलमध्यमें

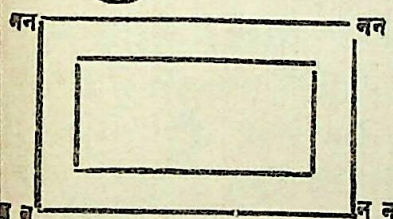
जबतक रखे तबतक निश्चय वीर्य स्तम्भन होता है ॥

तीनों लोकोंको भी स्तम्भनेवाले दो यंत्र हैं ।

इनसे सब कुछ स्तम्भन हो जाता है ।



इस यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्रमें
लिख निर्जन स्थानमें स्थापन करे
तो त्रिभुवन स्तम्भन हो जाता है



इस यंत्रको हलदी और हर-
तालसे भोजपत्रपर लिख
निर्जनमें स्थापन करे
तो त्रिभुवन स्तम्भन हो सकता है.

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकायां चतुर्थोपदेशः ॥ ४ ॥

पञ्चमोपदेशः

अथ मोहनम्

कन्यावरे युवतिसंगमने नराणामालोकने नरपतेः
क्रयविक्रयादौ । प्रज्ञाविधौ सकलकर्मणि कौतुके
वा धूपः सदैव कृतिभिर्विनियोजनीयः ॥ १ ॥

कन्याके विषयमें, स्त्रीप्रसंगमें, राजाके देखनेमें प्रज्ञाविधि, सम्पत्ति
कर्म और कौतुक इन्होंमें विद्वानोंको धूपका प्रयोग सदा करना
चाहिये ॥ १ ॥

धूपविधिः

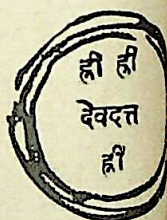
शृङ्गीवचानलदसर्जरसं समानं कृत्वा त्रुटिं मल-
यजे च षडेव नित्यम् । या धूपयेन्निजगृहं वसनं
शरीरं तस्यास्तु दास इव मोहमुपैति लोकः ॥ २ ॥

काकडासींगी, वच, उशीर, राल (त्रुटि), छोटी इलायची
समान भाग लेकर मलयागिरी चन्दनको मिलाकर जो स्त्री अपने
घर-वस्त्र और शरीरमें धूप दे तो लोक मोहको प्राप्त हो उसके दास
समान होजाता है ॥ २ ॥

भृङ्गराजः केशराजो लज्जा च सहदेविका ।

एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ३ ॥

भांगरा, दूसरा भांगरा, लज्जावन्ती, सहदेई
इनका तिलक लगाकर मनुष्य त्रिलोकी को
मोहित कर सकता है ॥ ३ ॥ कुंकुम
गोरोचनसे भूर्जपत्रपर अनामिका रक्तसे इस



यंत्रको लिख, देवदत्तके स्थानमें साध्य नाम सहित स्थापनको
भुजामें बांधे तो वह मोहित होजाता है ॥

त्रिदलं कुसुमं यस्य धत्तूरस्य कृताञ्जलिः ।

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(८१)

भृङ्गराजेन साज्येन तिलकं मोहयेन्नरः ॥ ४ ॥

त्रिदल (हंसपदी) के तथा धतूरेके फूल लज्जावन्ती और भृङ्गराज इन सबोंको घृत मिलाकर तिलक करनेसे मनुष्य त्रिलोकीको मोह सकता है ॥ ४ ॥

इस यंत्रको लाल द्रव्यसे साध्य नामसहित



लिख मधुमें स्थापन करे तो दुष्ट भी मोहित होजाता है.

तालकं कुन्टीं चैव भृङ्गपक्षं समंसमम् ।

कृष्णोन्मत्तस्य कुसुमं वटिकां कारयेद्बुधः ।

तेनैव तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥ ५ ॥

हरताल, मनशिल और भौरेके पख यह समान भाग लेकर तथा धतूरेके फूल लेकर बनावे, उसीसे तिलक करके मनुष्य त्रिलोकीको मोहित कर सकता है ॥ ५ ॥

आदौ सप्तस्वरा ग्राह्यो अन्ते हुंकारसंयुताः

ॐकारं शिरसि कृत्वा हूं अन्ते फडिति न्यसेत् ॥ ६ ॥

मन्त्रः—“ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं हूं फट् ॥”

अनेनैव तु मन्त्रेण कृत्वा ताम्बूलभावनम् ।

मुखे साध्यस्य निःक्षिप्ते मोहमायाति तत्क्षणात् ॥ ७ ॥

प्रथम सात स्वर उच्चारण कर

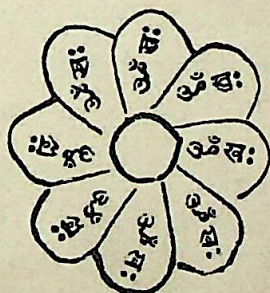
अन्तमें हुंकार मिलावे । ॐ कार प्रथम

लगाकर अन्तपदमें फट् लगावे अर्थात्

यह मन्त्र है—“ॐ अं आं इं ईं उं ऊं

ऋं हूं फट्” इस मन्त्रसे तांबूलको

भावना देकर साध्यके मुखमें खवावे



(८२)

कामरत्न

पञ्चम-

तो मोहको प्राप्त होता है देर नहीं लगती ॥ ६ ॥ ७ ॥
यंत्रको गोरोचनसे नामसहित भोजपत्रमें लिख पुष्पादिखंडसे पूजनका
स्थापन करे तो वह अवश्य मोहित होजाता है

“ॐ भीं क्षां भीं मोहय २ ॥ ॐ नमो

भगवतीपादपंकजपरागेभ्यः ॥ ” अस्य मंत्रस्य

वारत्रयजपान्मोहमाप्नुवन्ति जनाः ॥ ८ ॥

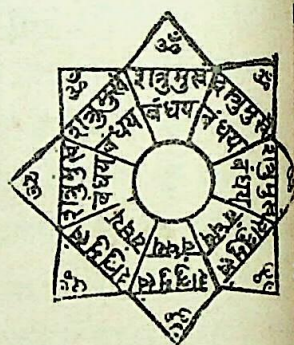
“ॐ भीं क्षां भीं मोहय २ । ॐ नमोभगवतीपादपंकजपरा
गेभ्यः ।” इस मन्त्रको तीन बार जपनेसे मनुष्य मोहको प्राप्त
होता है ॥ ८ ॥

शुभामूलं तथा बीजं रक्तचन्दनसंभवम् ।

त्रुटिबीजं समं पिष्ट्वा ताम्बूलादौ प्रयोजयेत् ॥ ९ ॥

भोक्तुं देयं स्वहस्तेन मोहमाप्नोति चेश्वरः ॥ १० ॥

प्रियंगुकी जड़ तथा बीज लाल-
चन्दन इलायचीके बीज इनको
समान पीसकर ताम्बूलमें दे और
अपने हाथसे खानेको दे तो ईश्वर
भी मोहको प्राप्त होजाता है ॥ ९ ॥
॥ १० ॥ भोजपत्रमें गोरोचनसे
साध्यनाम सहित इस यंत्रको
लिखकर भुजामें बांधे तो उसको
मोह होता है.



*वृश्चिकोद्भवचूर्णेन धूपो मोहयते नृणाम् ॥ ११ ॥

मैतफलके चूर्णकी धूप मनुष्योंको मोहित करदेती है ॥ ११ ॥

* दुश्चिकयोद्भव ।

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(८३)

गरलं धूर्तपञ्चाङ्गं महिषीशोणितं कणा ।

* निशायां कुरुते मोहं धूपो गुग्गुलुसंयुतः ॥ १२ ॥

विष, धूतरेका पञ्चांग, भेंसका रुधिर, श्वेत जीरा, गुग्गुलुसंयुक्त
नकी धूप देनेसे मनुष्यको मोहित करती है तथा शिलाकोभी मोहित
करती है ॥ १२ ॥

होलनी विषधत्तूरशिखिविष्ठाभिरन्वितम् ।

तथा धूपः समं भागं मोहयत्येव निश्चितम् ॥ १३ ॥

कलिहारी, विष, धतूरा, मोरकी बीट यह समान भाग ले धूप देनेसे
सी क्षण मनुष्यको मोहित करती है ॥ १३ ॥

छुछुन्दरी सर्पमुण्डं वृश्चिकस्य तु कण्टकम् ॥

हरितालं समं धूपो मोहयेत् सकलान्नराम् ॥ १४ ॥

छछुन्दर, सांपका मुंड, बीछूका कांटा और हरिताल यह सब समान
भाग ले इनकी धूप देनेसे मनुष्योंको मोहित करती है ॥ १४ ॥

अथ शत्रुमोहनम्

* अधः पुष्पीशिखा चैव श्वेतं च गिरिकर्णिका ।

गोरोचनसमायोगे तिलकं शत्रुमोहनम् ॥ १५ ॥

गोभी, कलहारी, श्वेत कितहीवृक्ष और गोरोचन इनका तिलक
रनेसे शत्रुको मोहकर सकता है ॥ १५ ॥

तालकोन्मत्तबीजानि पाने शत्रोश्च दापयेत् ।

तत्क्षणान्मोहमाप्नोति चोन्मत्तो जायते नरः ॥ १६ ॥

हरताल धतूरेके बीज पानमें शत्रुको देनेसे शत्रु उसी क्षणमें मोहको
प्राप्त हो जाता है और उन्मत्त हो जाता है ॥ १६ ॥

* शिलायां । * अविपीतशिखा इति च पाठः ॥

४

(८४)

कामरत्न

पञ्चम उ

मोहशमनम्

समाक्षिकैः सिताम्भोजैः स्वस्थः पानाद्भुवेन्नरः ॥ १७

शहद मिला श्वेत कमलका पान करनेसे मनुष्य स
होता है ॥ १७ ॥

अथ रञ्जनम्

तत्र देहरञ्जनम्

अत्राङ्गरागः पुरुषेण कार्यः स्त्रियाश्च संभोगसुखाय

गात्रे । तस्मादहं गन्धविधानमादौ विलासिनः

मुदीरयामि ॥ १८ ॥

प्रथम देहरंजन कहते हैं—प्रायः स्त्रियोंके सुखके निमित्त पुरुष
तथा पतियोंके निमित्त स्त्रियोंको अपना देहरंजन करना चाहि
इस कारण विलासीजनोंके निमित्त गंधादिकार्य कथन करता हूं ॥

हरीतकीलोध्र मरिष्टपत्रं सप्तच्छदं डाडिमवल्कलं

च । एषोऽङ्गनायाः कथितः कवीन्द्रैः शरीरदौर्ग-

न्ध्यहरः प्रलेपः ॥ १९ ॥

हरड, लोध और नीमके पत्ते, सतौना, डाडिमका, छिलका
सबका लेप करनेसे शरीरकी दुर्गन्ध दूर होती है । यह प्रयोग विद्वान्
कहा है ॥ १९ ॥

हरीतकी श्रीफलमुस्तचिञ्चाफलत्रिकं पूतिकर

ञ्जबीजम् । कक्षादिदौर्गन्ध्यमपि प्रभूतं विनाशय-

त्याशु निदाघकाले ॥ २० ॥

हरड, नारियलकी जड, मोथा, चिञ्चाफल, त्रिफला, पूतिकर
बीज इनका लेप करनेसे गरमीके दिनोंमें बगलमें होनेवाली मह
न्धको दूर करता है ॥ २० ॥

उपदेशः ५.)

हिन्दीटीकासहित

(८५)

हरीतकीचन्दनमुस्तनागैरुशीरलोध्रामयरत्रितुल्यैः ।

स्त्रीपुंसयोर्धर्मजगात्रगन्धं विनाशयत्याशुविलेपनेन ॥ २१ ॥

हरड, लालचन्दन, नागरमोथा, नागकेशर, खस, लोध, कुष्ठ, हलदी
यह बराबर लेकर स्त्रीपुरुषोंके शरीरपर मलनेसे पसीनेकी दुर्गन्ध
दूर हो जाती है ॥ २१ ॥

कदम्बपत्रं लोध्रं च अर्जुनस्य तु पुष्पकम् ॥ २२ ॥

पिष्ट्वा गात्रोद्वर्तनाच्च दुर्गन्धचविनाशनम् ॥ २३ ॥

कदम्बके पत्ते, लोध, अर्जुनके फूल पीसकर शरीरमें मलनेसे शरी-
की दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ २२ ॥ २३ ॥

सचन्दनोशीरकरञ्जपत्रैः * कोलाक्षमज्जागुरुनागयुक्तैः ।

लिप्त्वा शरीरं प्रमदा तु तेन चिरप्रसूतं विनिहन्ति

गन्धम् ॥ २४ ॥

चन्दन, उशीर, करंजके पत्ते, कोल, बहेडेकी मींगी, अगुरु, नाग
केशर यह सब पीसकर शरीरपर मलनेसे बहुत कालकी दुर्गन्धको दूर
करते हैं ॥ २४ ॥

सदाडिमत्वङ्मधुलोध्रपद्मैः पिष्टस्समानैः पिचुमर्द-

पुत्रः । विलिप्य गात्रं तरुणी निदाघे दुर्गन्धधर्मा-

म्बुचयं निहन्ति ॥ २५ ॥

दाडिमीका वक्कल और मधु लोध पद्म इनको समान भाग लेकर
मके पत्तोंको शरीरमें मलनेसे स्त्रीके पसीनेकी दुर्गन्ध दूर
होती है ॥ २५ ॥

सकेशरोशीरशिरीषलोध्रैश्चूर्णैकृतैरङ्गविलेपनेन ।

* बालपत्रैः—ऐसा पाठ है, अर्थ नेत्रवाला ।

ग्रीष्मे नराणां न कदापि देहे घस्मच्युतिः स्या-
दिति भोजराजः ॥ २६ ॥

केशर, उशीर, शिरस, लोध इनका चूर्ण कर शरीरपर लेप का
गरमीमें शरीरसे बहुत पसीना नहीं निकलता है ऐसा भोजराज
कहा है ॥ २६ ॥

तिलसर्षपरजनीद्वयदूर्वागोरोचनकुष्ठैः ॥

अजमूत्रतक्रपिष्टैरुद्वर्तितमङ्गमनुपमं भवति ॥ २७ ॥

तिल, सरसों, दोनों हलदी, दूर्वा, गोरोचन, कूठ इनको बकरेके
और मट्ठेके साथ शरीरपर लेप करनेसे मनोहरता
है ॥ २७ ॥

हरीतकीतोयदतुल्यभागैर्वनरुहंस्यापि चतुर्थभागः ।

तदर्धभागः कथितो नखस्य स्यादेष गन्धो मदन-

प्रकाशः ॥ २८ ॥

हरड और मोथा यह तुल्य भाग लेकर बनरुहका चौथाई भा
और इनसे आधा भाग तालमखाना यह मिलाकर लेप करनेसे
स्थानकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ २८ ॥

एलाशटीपत्रकचन्दनानि तोयाभयाशिग्रुघनाम-

यानि । ससौरभोऽयं सुरराजयोग्यः ख्यातः स

गन्धो नरमोह नाख्यः ॥ २९ ॥

इलायची, कचूर, पत्रज, चन्दन, मोथा, हरड, सैजना, कपूर
यह नरमोहन नामक योग सब प्रकारकी दुर्गन्धको दूर
वाला है ॥ २९ ॥

धतूरकाश्मीरघनाम्बुलोहनिशाकरोशीरसमानि

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(८७)

पिष्ट्वा । लेपः प्रियोऽयं सुरमानवानामुदीरितः
पूर्वकवीन्द्रधीरैः । ३० ॥

धतूरा, केशर, मोथा, नेत्रवाला, लोह, कपूर, उशीर यह सब
मान पीसकर इनका लेप करनेसे सबोंकी प्रियता होती है । यह
तुष्य और देवताओंको प्रिय है पूर्व विद्वानोंने कहा है ॥ ३० ॥

उशीरकृष्णागुरुचन्दनानि पत्राम्बुतुल्यानि समानि
पिष्ट्वा । एतानि गात्रेषु विलासिनीनां श्रीखण्ड
तुल्यं प्रकरोति गन्धम् ॥ ३१ ॥

उशीर, काला अगर, चन्दन, तेजपात, नेत्रवाला यह सब समान
सकर अंगोंमें लेप करनेसे विलासवती स्त्रियोंके अंगोंमें चन्दनकेसी
गन्ध होजाती है ॥ ३१ ॥

अथ मुखरंजनम्

रसालजम्बूफलगर्भसारः सकर्कटो माक्षिकसंयुतश्च ।

स्थितो मुखान्ते पुरुषस्य रात्रौ करोति पुंसां मुख-
समिष्टम् ॥ ३२ ॥

आम और जामुन दोनोंकी गुठली लेकर काकडासींगी शहद
लाकर यह रात्रिके समय मुखमें रखे तो बड़ी दुर्गन्ध नष्ट होकर
गन्धि होती है ॥ ३२ ॥

गुडत्वगेलानखजातिशिल्लैः स्वर्णान्वितैः क्षुद्रवटी
विधेया । ताम्बूलगर्भा दिवसे च रात्रौ करोति
पुंसां मुखवासमिष्टम् ॥ ३३ ॥

गुड, दालचीनी, इलायची, नख (गन्धद्रव्य) जायफल, नागकेशर
होंमें सुवर्ण वरक मिलाकर इनकी क्षुद्रवटी करके रात्रिमें ताम्बूलके
थ खानेसे पुरुषोंके मुखमें सुगन्धि होती है ॥ ३३ ॥

चूर्णं मुराकेशरकुष्ठकानां प्रातर्दिनान्ते परिलेढि
या स्त्री । अप्यर्द्धमासेन मुखस्य गन्धः कर्पूरतुल्यो
भवति प्रकामम् ॥ ३४ ॥

जो स्त्री प्रातःकाल और सन्ध्यामें जटामासी, केशर, कूठ तो
पीस इनका चूर्ण चाटती है तो पन्द्रह दिनमें उसके मुखकी
कर्पूरके तुल्य होजाती है ॥ ३४ ॥

यः कुष्ठचूर्णं मधुना घृतेन पिकाक्षबीजान्वितमति
नित्यम् । मासैकमात्रेण मुखं तदीयं गन्धायते
केतकगन्धतुल्यम् ॥ ३५ ॥

जो कोई तालमखाने सहित कूठका चूर्ण मधु और घृतके
नित्य सेवन करता है उसका मुख एक महीनेमें केतकीके गन्धके
होजाता है ॥ ३५ ॥

गोजलैः क्वथिता पथ्या मिशिकुष्ठकणान्विता ।

वदनस्य दुरामोदं निहन्ति परिशीलिता ॥ ३६ ॥

गोमूत्रमें हरड पकाकर उसमें सौंफ, कूठ, पीपल डालकर
सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध दूर होती है ॥ ३६ ॥

तिलं जातीफलं पूगं भक्षयित्वा पिबेदनु ।

शीततोयं पलाद्धं तु आस्यदुर्गन्धनाशनम् ॥ ३७ ॥

तिल, जायफल, सुपारी भक्षण करनेसे इसके पीछे ठंडा
आधा पल पीनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ ३७ ॥

घृतकाञ्जिकगण्डूषं परितो भक्षयेच्छटीम् ।

तथाकृते भवेदास्ये दुरामोदविनाशनम् ॥ ३८ ॥

घी, कांजी यह दोनोंका गंडूष (कुल्ला) करे इनके अति
मध्यमें कचूरका भक्षण करे तो मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है ॥ ३८ ॥

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(८९)

गोमूत्रैः क्वाथयेत्कुष्ठं बालकं सहरीतकीम् ।

सर्वं पिष्ट्वा वटीं कुर्यान्मुखदुर्गन्धनाशनम् ॥ ३९ ॥

गोमूत्रमें कूठ, सुगन्धवाला और हरड डालकर क्वाथ बनावे, छे सब पीसकर गोली बना मुखमें रखनेसे मुखकी दुर्गन्धकाश होता है ॥ ३९ ॥

कटुतिक्तकषायेण दन्तकाष्ठेन नित्यशः ।

दुर्गन्धं हन्ति नो चित्रं क्षौद्रैर्वा कुष्ठचूर्णकम् ॥ ४० ॥

कड़वे और तीखे काढे करके अथवा नित्य दतौन करनेसे अथवा दूधके साथ कूठका चूर्ण सेवन करनेसे मुखकी दुर्गन्ध नष्ट होती है मैं आश्चर्य नहीं है ॥ ४० ॥

सिन्धूत्थसिद्धार्थकसारिवानांत्वचा युतानां परि-

लेपनेन । स्त्रीपुंसयोर्द्यौवनयोर्हठेन विनाशमा-

याति मुखस्थगन्धः ॥ ४१ ॥

सेंधा, सरसों, सारिवन, दालचीनी इनको चूर्ण कर लेप करनेसे स्त्री पुरुषोंके युवावस्थामें उठा हुआ मुखका दुर्गन्ध दूर हो जाता है ॥ ४१ ॥

पिष्ट्वा मसूरं घनसावरेण मुहुर्मुहुस्तेन विलिप्य

वक्त्रम् । नश्यन्ति गण्डाः पिटकाः प्ररूढा मासार्द्धमात्रेण

विलासिनीनाम् ॥ ४२ ॥

मसूरको कपूर सरिवनके साथ पीसकर बारंवार उसको स्त्रियोंके मुखपर लेप करनेसे गंड, पिटक (मुहांसे) यह पन्द्रह दिनमेंही नष्ट जाते हैं ॥ ४२ ॥

यः कण्टकान् शाल्मलिपादपस्य क्षीरेण पिष्ट्वाष्ट-

दिनं विलिप्य । गण्डप्रदेहाः पिटकास्त्र्यहेण

प्रयान्ति नाशं पुरुषस्य तन्व्याः ॥ ४३ ॥

जो सेमलकेवृक्षके कांटे दूधमें पीसकर स्त्री वा पुरुषके मुँह पर प्राठ दिन लेप करे तो उस स्त्री पुरुषके मुखकी झाँई मुँहासे तीन दिनमें नष्ट होजाते हैं ॥ ४३ ॥

धान्यं वचा * सावरतुल्यभागं पिष्ट्वा लिपेत्तेन मुनितान्तम् । मुखोद्भूवा यौवनजा नराणां नश्यन्ति नूनं पिटकाः क्रमेण ॥ ४४ ॥

धनियां, वचा, सरिवन यह बराबर भाग लेकर इन्हें पीस नि मुखपर लेप करनेसे निश्चयही मनुष्योंके जवानीके मुँहासे दूर हो जाते हैं ॥ ४४ ॥

१ "शैलज लोघ्रतुल्यम्" भी पाठ है । अर्थ—मनसिल और लोघ है । सिद्धार्थबीजद्वितयं तिलं च क्षारेण पिष्ट्वा परिलिख्य वक्रम् । सप्ताहमात्रेण मुखस्थनीलीं निहन्ति कृष्णामिति रन्तिदेवः ॥ ४५ ॥

सरसों और तिल इनको जवाखारके साथ पीसकर मुखपर करनेसे सात दिनमें मुखकी नीलिका—फुन्सी—मुँहासे आदि नष्ट हैं, यह रन्तिदेवने कहा है ॥ ४५ ॥

निशाद्वयं गैरिकशोणयष्टिरम्भाम्बुमाहेन्द्रयवोत्तमानि । निघ्नन्ति नीलिं त्रयवारमात्रान्तुल्यं वदनं भवेच्च ॥ ४६ ॥

दोनों हलदी, गेरू, सोनापाठा, कदली, नेत्रवाला इन्द्रजौ वार मुखपर लगानेसे मुखकी फुन्सी दूर होती है और मुख चमकतुल्य हो जाता है ॥ ४६ ॥

मरिचं रोचनायुक्तं संपेय्य मुखमालिपेत् ।

तरुण्याः पिटकाः सर्वा नश्यन्ति मुखसंभवाः ॥ ४७ ॥

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(६१)

काली मिरच और गोरोचन पीसकर मुखपर लगानेसे स्त्रीके
 मुखके जवानोके मुहांसे आदि दूर हो जाते हैं ॥ ४७ ॥

व्यङ्गेषु चार्जुनत्वग्वा मञ्जिष्ठा वा समाक्षिका ।

एता लिप्तास्त्र्यहं यावद्भुवेत्पद्मोपमं मुखम् ॥ ४८ ॥

अर्जुनकी छाल और मञ्जीठका चूर्ण इनको शहदमें मिलाय तीन
 त मुखपर लेप करनेसे मुख कमलसदृश निर्मल हो जाता है ॥ ४८ ॥

मातुलिङ्गजटा सर्पिः शिला गोशकृतो रसः ।

मुखकान्तिकरो लेपः पिटकातिलकालजित् ॥ ४९ ॥

बिजौरेकी जड़, घी, मनसिल, गौके गोबरका रस इनके लेप करनेसे
 पर कान्ति होती है, पिटिका तिल आदि दूर होते हैं ॥ ४९ ॥

रक्तचन्दनमञ्जिष्ठाकुष्ठलोध्रप्रियङ्गवः ।

वटाङ्कुरमसूरारच व्यङ्गघ्ना मुखकान्तिदाः ॥ ५० ॥

रक्तचंदन, मँजीठ, कूठ, लोध, प्रियंगु वटके अंकुर, मसूर इनका
 मसूरिका व्यंगादिको दूर कर मुखपर गन्ध और कान्ति कर-
 ला है ॥ ५० ॥

मञ्जिष्ठा सधुकं द्राक्षा मातुलिङ्गं सपिष्टकम् ।

कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं पचेत् ॥ ५१ ॥

अजापयस्तद्विगुणं शनैर्मुद्वग्निना पचेत् ॥ ५२ ॥

जीठ, मुलैठी, लाख, बिजौरेकी जड़को पीस यह एक एक कर्ष
 ण लेकर एक कुडव तेलमें पकावे उससे दूना बकरीका दूध लेकर
 अग्निमें इन सबको पकावे ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

नीलिका पिटिका व्यङ्गा अभ्यङ्गादेव नाशयेत् ।

मुखप्रसन्नेषि हितं नीलकर्कशवर्जितम् ॥ ५३ ॥

नीलिका, छोटी फुन्सी, व्यंग, (मुहांसे आदि) सब इसके म
दूर होते हैं, मुख निर्मल होजाता है, कंठकादि नहीं रहते हैं, खु
जाता रहता है ॥ ५३ ॥

सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्काञ्चनसंनिभम् ।

अत्र द्विरुक्तत्वाद्यष्टीमधुकर्षद्वयं तथा ॥ ५४ ॥

सात रातके प्रयोगसे मुख सुवर्णके तुल्य होजाता है मधु
वार कहनेसे शहद दो वर्ष लेना चाहिये ॥ ५४ ॥

मनःशिला तथा लोध्रं द्विनिशासर्षपाः समाः ।

वारिपिण्डो हितो लेपो वदने श्यामिकां हरेत् ॥ ५५ ॥

मनशिल, लोध, दोनों हलदी, सरसों ये बारबर लेकर जल
लेप करनेसे मुखकी श्यामता छूट जाती है ॥ ५५ ॥

महिषीक्षीरसंयुक्तं रजनीरक्तचन्दनम् ।

कृते लेपे निहंत्याशु श्यामिकां वदनाश्रिताम् ॥ ५६ ॥

भैंसके क्षीरसे युक्त दोनों हलदी, लालचन्दन मिलाकर मुख
करनेसे मुखकी झाँई दूर होती है स्याहीभी जाती रहती है ॥ ५६ ॥

उभे हरिद्रे मञ्जिष्ठा घृतं गौराश्च सर्षपाः

पेष्यं गौरिकसंयुक्तमजाक्षीरेण पाचितम् ॥ ५७ ॥

एतेनैव भवेद्वक्रमुदयादित्यवर्चसम् ।

वचा लोध्रमुशीरं च सर्पिस्सर्जरसः पयः ॥ ५८ ॥

पीतानि वटपत्राणि रजन्या सह पेषयेत् ।

लेपोऽयं मुखपादाभ्यां पद्मवत्कुरुते भृशम् ॥ ५९ ॥

दोनों हलदी, मंजीठ, गौका घी, सफेद सरसों, गेरूके साथ
पीस कर बकरीके दूधके साथ पकावे, इसके मुखपर सूर्यके समान
होती है । वच, लोध, उशीर, घृत, राल, दूध, पीले बदर

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(६३)

हृदीके साथ पीसकर मुखपर लेप करनेसे कमलके समान मुख
नाशित होता है ॥ ५७-५९ ॥

मसूरान् मधुना सार्धं पिष्ट्वा तैर्मर्दयेन्मुखम् ।

सप्तरात्रप्रयोगेण पुण्डरीकदलप्रभम् ॥ ६० ॥

मसूर शहदके साथ पीसकर मुखपर मलनेसे सात रात्रिको प्रयोगमें
मलके समान मुख होजाता है ॥ ६० ॥ इति मुखरञ्जनम् ॥

अथ केशरञ्जनम्

स्रग्गन्धधूपाम्बरभूषणानां न शोभतेशुक्लशिरो-
रुहाणाम् । यस्मादतो मूर्द्धजरागसेवां कुर्याद्यथै-
वाञ्जनभूषणानाम् ॥ ६१ ॥

माला, गन्ध, धूप, वस्त्र, भूषण ये श्वेत बालवाले पुरुषको शोभित
पों होते हैं, इस कारण बालोंकी सेवा अवश्य करे जिससे वह अंजन
र भौरेको समान हो जाते हैं ॥ ६१ ॥

आम्राण्डेनोत्थितं तैलं कान्तपाषाणचूर्णितम् ।

काकतुण्डीफलं कृष्णं चूर्णयित्वा प्रयत्नतः ॥ ६२ ॥

धान्यराशौ विनिःक्षिप्य मासोद्ध्वं शिरसि क्षिपेत् ।

नस्यं दिनत्रयं तेन केशरञ्जनकं भवेत् ॥

वर्षाद्धं तिष्ठते कृष्णभ्रमराञ्जनसन्निभम् ॥ ६३ ॥

आमकी गुठलीका तेल और कान्तापाषाणका चूर्ण, काकादनोका
लोहचूर्ण यह सब यत्नपूर्वक चूर्ण करके वा अंकोलका तेल
य्यराशिमें दाबकर एक महीनेके उपरान्त निकाल शिरमें डाले, तीन
दिन लेप करनेसे केश काले होजाते हैं । वे बाल छः महीनेतक काले
टहरेके समान रहते हैं ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

(६४)

कामरत्न

पञ्चम उ

त्रिफलालोहचूर्णं तु नीली भृङ्गीसमूलकम् ॥ ६४ ॥

एतच्चूर्णमिडामूत्रे दिनमेकं विभावयेत् ।

तेनैव मर्दयेच्छीर्षे रञ्जते भ्रमरोपमम् ॥ ६५ ॥

त्रिफला, लोहचूर्ण नीलेके पत्ते, भांगरामूल इन सबका चूर्ण पीस
रीके मूत्रमें एक दिन भावना देकर फिर शिरपर मलनेसे भा
समान बाल होजाते हैं ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

गुञ्जाबीजस्य चूर्णन्तु कुष्ठैला देवदारुकम् ।

तुल्यांशं भावयेच्चूर्णं दिनैकं भृङ्गजद्रवैः ॥ ६६ ॥

चूर्णाच्चतुर्गुणे तैले पाचयेन्मृदुवह्निना ।

तेनाभ्युज्जादधनाः केशा रञ्जनं भ्रमरोपमम् ॥ ६७ ॥

चौटलीके बीजोंका चूर्ण, कूठ, एला, देवदारु यह सब
लेकर इनके चूर्णकी एक दिन भांगरेके रसमें भावना दे,
चौगुने तेलमें कोमल अग्निसे पकावे । उसके लगानेसे बाल भा
समान होजाते हैं ॥ ६६-६७ ॥

हस्तिदन्तस्य दग्धस्य समांशेन रसं समम् ।

आक्षीरेण तं पिष्ट्वा लेपनात्केशरञ्जनम् ॥ ६८ ॥

हाथीका दांत जलाकर और इसके समान रस ले बकरीके
उसे पीसकर लेप करनेसे बाल काले होते हैं ॥ ६८ ॥

त्रिफलालोहचूर्णन्तु इक्षुभृङ्गरसस्तथा ।

कृष्णमृत्तिकया सार्धं भाण्डे मासं निरोधयेत् ।

तत्लेपाद्रञ्जयेत्केशश्चतुर्मासं स्थिरो भवेत् ॥ ६९ ॥

त्रिफला, लोहचूर्ण, ईखका रस, भांगरेका रस इनके आधी
भिट्टी एक बर्तनमें एक महीने तक बन्द कर रखे उसके लेप क
काले बाल होकर चार महीनेतक स्थिर रहते हैं ॥ ६९ ॥

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(६५)

लोहकिट्टं जपापुष्पं पिष्ट्वा धात्रीफलं समम् ।

त्रिदिनं लेपयेच्छीर्षं द्विमासं केशरञ्जनम् ॥ ७० ॥

लोहकिट्ट, जपा (गुडहर) के फूल, आमले यह समान भाग ले इनको
तीन दिन लेप करनेसे दो महिनेतक बाल काले रहते हैं ॥ ७० ॥

भृङ्गराजरसप्रस्थं तैलं कृष्णतिलात्समम् ॥ ७१ ॥

मर्दयेत्प्रहरैकं तु तैलाप्तं नीलिकारसम् ।

तल्लेपं त्रिदिनं कुर्यात्केशरञ्जनकं भवेत् ॥ ७२ ॥

भांगेरका रस एक सेर और इसीकी बराबर काले तिल के एक
हरतक इसमें तैलयुक्त नीलीका रस लिप्त करे । इसके तीन दिन
लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

चूर्णं सर्जयवक्षारं सिद्धार्थं चारनालकैः ।

नागपुष्पं दिने मध्ये तल्लेपात्केशरञ्जनम् ॥ ७३ ॥

सज्जीखार, जवारखार, सरसों, कांजी और नागकेशर इनको
मिसकर केशोंमें लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ७३ ॥

काकमाचीयबीजानि समं कृष्णतिलांस्ततः ।

तत्तैलं ग्राहयेद्यन्त्रे तस्यस्येत्केशरञ्जनम् ॥ ७४ ॥

काकमाचीके बीज इसके बराबर काले तिल के यन्त्रमें इनका तेल
नेकालकर बालोंमें लगानेसे बाल काले होजाते हैं ॥ ७४ ॥

गोधृतं भृङ्गजद्रावं मयूरशिखया सह ।

अग्निना मृदुना पाच्यं तं न्यस्येत्केशरञ्जनम् ॥ ७५ ॥

गौका घी, भांगरेका रस, मोरशिखाके साथ मृदु अग्निसे पका ले ।
इसके लगानेसे बाल काले होजाते हैं यह प्रयोग उत्तम है ॥ ७५ ॥

काकमाचीयबीजानि समं कृष्णतिलांस्ततः ।

जपापुष्परसं क्षौद्रं कर्षकं न्यस्यमाचरेत् ॥

सप्ताहं रञ्जयेत्केशान् सर्वन्यस्ये त्वयं विधिः ॥ ७६

काकमाचीके बीजोंके समान काले तिलके उसमें गुडहरके फूलों
रस शहद एक कर्ष डाले, यह एकत्र करके सात दिनतक लगावे
बालोंको काला रखता है । यह सब न्यस्यकी विधि है ॥ ७५ ॥ ७६

त्रिफलालोहचूर्णं तु वारिणा पेषयेत्समम् ।

द्वयोस्तुल्येन तैलेन पचेन्मृद्वग्निना क्षणम् ॥ ७७ ॥

तैलतुल्यं भृङ्गरसं यावत्तैलं च पाचयेत् ।

स्निग्धं भाण्डगतं भूमौ स्थितं मासात्समुद्धरेत् ॥ ७८

सप्ताहं लेपयेल्लिप्त्वा कदल्याश्च दले शिरः ।

निर्वर्ति क्षीरभोजी स्यात्क्षालयेत्त्रिफलाजलेः ॥ ७९

नित्यमेवं हि कर्त्तव्यं सप्ताहे रञ्जनं भवेत् ।

यावज्जीवं न सन्देहः केशाः स्युर्धर्मरोपमाः ॥ ८० ॥

त्रिफला और लोहचूर्ण यह समान ले जलसे पीसे, इन दोनों
समान तेल लेकर मृदु अग्निसे पकावे और तेलके बराबर भांगरे
रसभी इसमें डाले जब रस जलजाय तेल मात्र रहजाय तब उसे चि
बर्तनमें भरकर पृथ्वीमें गाडदे । एक महीनेसे निकालकर केलेके पत्ते
लगाय शिरमें सात दिनतक लगावे, निर्वर्तिस्थानमें क्षीरका भोज
पान करे और त्रिफलेके जलसे धोडाले, सात दिन ऐसा करे
सर्वथा बाल काले हो जाते हैं और निःसन्देह जन्मपर्यंत केश
रहते हैं ॥ ७७-८० ॥

महाकालस्य बीजानि वाकुचीबीजतत्समम् ॥ ८१

चूर्णं द्रव्यैश्च निर्गुण्ड्यां भावयेत्तु चतुर्दिनम् ।

उपदेशः ५

हिन्दीटीका सहित

(९७)

जपापुष्पद्रवैरेवं ततः पातालयन्त्रके । ८२ ॥

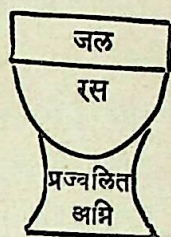
तैलं ग्राह्यं तु तल्लेपे पत्रैरेरण्डजैशिशरः ।

वेष्टयेत्क्षीरभोजी स्याद्वातातपविर्वर्जितः ॥ ८३ ॥

एवं सप्तदिनं लेप्यं तण्डुलान् धारयेन्मुखे ।

कृष्णवर्णाः प्रजायन्ते तथा भवति प्रत्यहम् ॥ ८४ ॥

महाकालके बीज, उसके समान बाकुची,
सोमराजीके बीज उसीके समान ले इनको
चूर्ण कर चार दिनतक गुडहरके रसकी
भावना दे और इस पातालयन्त्रसे इसका तेल
निकालकर उसके लेप करनेसे अर्थात् एरंडके



पत्तोंमें लगाकर शिरपर लेप करनेसे और क्षीर (दूध) पान
करनेसे और वात-धूपका सेवन न करनेसे मुखमें तण्डुल धरके
इस प्रकार सात दिनतक बालों पर लेप करनेसे कृष्णवर्ण
होजाते हैं ॥ ८१-८४ ॥

मोहोश्रं कर्दमे क्षिप्त्वा षण्मासात्तु समुद्धरेत् ।

तद्द्रुतं जायते कृष्णं कर्षेकं शिरसि क्षिपेत् ॥ ८५ ॥

केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते भ्रमरीकुलसन्निभाः ।

कपालरञ्जनं ख्यातं यावज्जीवं न संशयः ॥ ८६ ॥

वायविडंगको कीचडमें डालकर छः महीनेतक पडा रहने दे,
उसका एक कर्ष चूर्ण कर शिरमें डालनेसे बाल काले होजाते हैं यानी
काले भौरेके समान हो जाते हैं और जीवनपर्यन्त वैसेही रह जाते हैं
इसमें सन्देह नहीं, यह कपालरंजन प्रसिद्ध है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

सनीलिकां सैन्धवपिप्पलीभिघृतानुयुक्तैरुपलिप्य
केशम् । क्रमेण शंखोपममाशु कृष्णं शिरोरुहं
मेचकतामुपैति ॥ ८७ ॥

नीलकी जड, सैन्धा, पीपली घृत इनसे बालोंको लेपन करनेसे
बालभी क्रमसे काले वर्णके हो जाते हैं ॥ ८७ ॥

फलान्वितं चूततरोः प्रसूनं पिण्डारकं पाण्डुर-
नीलिके वा । प्रस्थप्रमाणं च तिलस्य तैलं पचे-
दमीभिर्विदितोपदेशः ॥ ८८ ॥ तस्मिंश्च मध्ये
यदि हंसपक्षः क्षिप्तो भवेन्मेचकवर्णयुक्तः । पाक-
स्तदैवास्य नरैर्विधेयः ख्यातं पृथिव्यामपि
नीलतैलम् ॥ ८९ ॥

फूलसहित आमके फल, पिंडार, धवईके फूल, नील ये सब ले
और एक सेर तिलोंका तेल लेकर इसमें यह सब पकावे उसके मध
राजहंसके बाल डालकर देखे जो वह डालतेही कृष्णवर्णके
जायें तो उसका पाक यथार्थ जाने और यह पृथ्वीमें नीलतेल नाम
विख्यात है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

एतन्निलिप्तं पलितं नराणां शंखावदातं सकलं
त्रिरात्रम् । पुष्पं न श्रेयांसि समानयुक्तं चिरं-
भवेदृष्ट इति प्रयोगः ॥ ९० ॥

इसको बालोंपर लगानेसे तीन रात्रिमें श्वेत बाल भौरेके सम
काले हो जाते हैं । यह प्रयोग अच्छी प्रकार देखा हुआ है
सिद्ध है ॥ ९० ॥

शतावरी कृष्णतिलेन युक्ता गोरोचना काकमुखा-

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(९९)

भिधा च । अम्भीभिरालिप्य पुनः सुकेशान् करोति
शुक्लानपि कृष्णवर्णान् ॥ ९१ ॥

शतावरी, काले तिल, गोरोचन, काकमुखा इनको पीस बालोंपर
लेप करनेसे शुक्ल बाल काले हो जाते हैं ॥ ९१ ॥

मदन्तिकाया रसकल्कसिद्धं तिलोद्भवं तैलमिदं
नराणाम् । अकालजातं पलितं सरौक्ष्यं केशस्य
कारुण्यमलं निहन्ति ॥ ९२ ॥

नवमल्लिकाका रस निकालकर तिलका तेल डाल कल्क लगानेसे
मनुष्योंके अकालमें श्वेत हुए बाल श्याम हो जाते हैं । बालोंके सब
प्रकारके रोग और मल दूर होते हैं ॥ ९२ ॥

मुत्थं च सर्षपं चैव ह्युशीरं च तथैव च ।

हरीतक्याश्च क्वाथेन आमलक्यास्समं ततः ॥ ९३ ॥

केशमूलं समालेप्य मेघतुल्यो भवेत्कचः ॥ ९४ ॥

मोथा, सरसों, उशीर, हरड, आमला इनका क्वाथ करके केशोंकी
जड़में लेपन करनेसे बाल मेघके समान काले हो जाते हैं ॥ ९३ ॥ ९४ ॥

इति केशरंजनम्

स्नानीयसुगन्धिद्रव्यम्

सूक्ष्मैलाजीमूतनखैः सचूतैः स्वर्णमिसीपत्रकसं-

युतैश्च । सौरभ्यकान्ती किल मूर्द्धजानां स्नात्वा

नरो विन्दति सर्वदैव ॥ ९५ ॥

छोटी इलायची, मोथा, उंशीर नख (सुगन्धद्रव्य), आम, नागकेशर,
गोफालिका, तेजपात, ढाक इनका चूर्ण करके इनको बालोंमें लगाकर
स्नान करनेसे बालोंमें सुगन्ध और कांति होजाती है ॥ ९५ ॥

(१००)

कामरत्न

पञ्चम-

स्वर्णाम्बुदोशीरनखीयुतानां पथ्याम्बितानां च
विलेपने च । स्नात्वा नरः सौरभमर्द्धमासं वैकल्प-
माप्नोति शिरोरुहस्य ॥ ९६ ॥

नागकेशर, मोथा, उशीर, नखी (सुगन्धद्रव्य), हरड इनका लेप
कर स्नान करनेसे मनुष्योंके शिरमें पन्द्रह दिनतक सुगन्धि
आती है ॥ ९६ ॥

पथ्यावसानामलकीफलानामजस्तु जीमूतरसाम-
यानाम् । मांसीयुतानां परिलेपनेन स्नात्वा
नरः सौरभकान्तिमेति ॥ ९७ ॥

हरडेकी बकली, आमला, मेंढासींगी, मोथेका रस, कूठ जटा
सीके सहित लेप कर स्नान करे तो सुगन्धि होजाती है ॥ ९७ ॥

विडङ्गगन्धोत्पलकल्कयोगाद्गोमूत्रसिद्धं कटुतै-
न्मेतत् । अभ्यङ्गयोगेन शिरोरुहाणां यूकादि-
लिक्षाप्रचयं निहन्ति ॥ ९८ ॥

वार्याविडंग, गन्धक, कमल इनको पीस गोमूत्रसे सिद्ध करके
तेलमें पकाकर बालोंमें मलनेसे सम्पूर्ण लीखें भरजाती हैं ॥ ९८ ॥

गोमूत्रसारिवामूलं लेपाद्यूकानिवारणम् ।

पारदं मर्दयेन्निष्कं कृष्णधतूरजैर्द्रवैः ॥ ९९ ॥

नागवल्लीद्रवैर्वापि वस्त्रखण्डं विलेपयेत् ।

तद्वस्त्रं वेष्टयेन्मौलौ धार्यं यामत्रयं तथा ।

यूकाः पतन्ति निश्शेषं मस्तकान्नात्र संशयः ॥ १०० ॥

गोमूत्र, सरवनकी जड इनका लेप लीखोंको निवारण करता
काले धतूरेके रसमें एक निष्क (१०८ रत्ती) पोरेको खरल करे

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(१०१)

पानके रसमें मिलाकर वस्त्रपर लपेटकर वह वस्त्र शिरपर लपेटकर
तीन पहर शिरपर रखनेसे शिरसे सब लीखें गिर जाती हैं । इसमें
सन्देह नहीं ॥ ९९ ॥ १०० ॥

द्विनिशानवनीतेन लेपान्मौलेः प्रकण्डुनुत् ॥ १०१ ॥

दोनों हलदी मक्खनके साथ मिलाकर मलनेसे शिरकी खुजली
नष्ट हो जाती है ॥ १०१ ॥

नीलोत्पलं तिलं यष्टिसर्षपा नागकेशरम् ।

धात्रीफलं समं पिष्ट्वा लेपो यूकाविनाशकः * ॥ १०२ ॥

नीलकमल, तिल, सुलैठी, सरसों, नागकेशर, आमलेके साथ पीस-
कर लेप करनेसे यह लेप लीखका नाश करनेवाला है ॥ १०२ ॥

निशागन्धकगोमूत्रं विडङ्गं कटुतैलकम् ।

पारदेन समं मर्द्य लेपो यूकाविनाशकः ॥ १०३ ॥

हलदी, गंधक, गोमूत्र, वार्याङ्ग, कडवा तेल, पोरेके साथ पीस
कर लेप करनेसे लीखोंको दूर करता है ॥ १०३ ॥

लाक्षा भल्लातकं मुस्ता कूटगुलसर्षपाः ।

विडङ्गेन समं लेपाद्धूमो यूकानिवारकः ॥ १०४ ॥

लाख, भिलावा, नागरमोथा, कूठ, गुगल, सरसा, वार्याङ्ग इनके
साथ लेप करनेसे लीखें निवारण होजाती हैं ॥ १०४ ॥

बिल्वमूलं सगोमूत्रं लेपाद्यूकाविनाशनम् ॥ १०५ ॥

बेलकी जड़ गोमूत्र इनका लेप लीखोंका निवारण करनेवाला
है ॥ १०५ ॥

* तिलप्रमाणसंस्थानवर्णाः केशाम्बराश्रयाः । बहुपादा अपादाश्च यूका
लक्षाश्च नामतः ॥

(१०२)

कामरत्न

पंचम-

अथ केशस्येन्द्रलुप्तादिनिवारणम् ।

गुञ्जाफलैः क्षौद्रयुतैर्विलिप्य शिरःप्रदेशे सकलेन्द्रलुप्तम् । अनेन योगेन सदैव केशा रोहन्ति कृष्णाः कुटिला विशालाः ॥ १०६ ॥

शिरके बाल गिरने लगें इसको इन्द्रलुप्त कहते हैं । चौटली और शहद पीसकर शिरपर लगानेसे सब प्रकारका इन्द्रलुप्तरोग होजाता है इस योगसे बाल जमकर बड़े और कुटिल होजाते हैं ॥ १०६ ॥

मातङ्गदन्तस्य मसीं विधाय श्वेताञ्जनंतुल्यतया सुपिष्टम् । लिप्येदनेनैव महेन्द्रलुप्तं केशाः प्ररोहन्त्यपि हस्तमध्ये ॥ १०७ ॥

हाथीके दांत जलाय उसकी राख कर इसकी बराबर रसौत बकरीके दूधमें पीस इसका लेप करनेसे हाथोंकी हथेलीमें भी बाल जमसकते हैं और जगहकी तो क्या कहें ॥ १०७ ॥

कुङ्कुमं भरिचैस्सार्द्धं पिष्ट्वा तैलेन लेपयेत् ।

इन्द्रलुप्तं निहन्त्याशु किंवा जम्बीरजद्रवैः ॥ १०८ ॥

कुङ्कुम और कालीमिर्च किंवा जम्बीरीके बीजोंका रस इनको तेल साथ पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्तरोग शीघ्र नष्ट होजाता है ॥ १०८ ॥

सुदग्धं हस्तिदन्तं तु छागदुग्धं रसाञ्जनम् ।

पिष्ट्वा लेपात्प्रजायन्ते केशाः करतलेष्वपि ॥ १०९ ॥

दग्ध हुआ हाथीका दांत, बकरीका दूध, रसौत इनको पीस हाथमें लेप करनेसे भी बाल जम आते हैं ॥ १०९ ॥

उपदेशः ५.

हिन्दीटीकासहित

(१०३)

जातीपुष्पं दलं मूलं कृष्णागोमूत्रपेषितम् ।

लेपोऽयं सप्तरात्रेण दृढकेशकरः परः ॥ ११० ॥

चमेलीके फूल, दल, मूल, काली गौके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सात रात्रिमें दृढ बाल कर देता है ॥ ११० ॥

शृङ्गाट*त्रिफलाभृङ्गीनीलोत्पलमयोरजः ।

सूक्ष्मं चूर्णं समं कृत्वा पचेत्तैले चतुर्गुणे ।

तल्लेपेन दृढाः केशाः कुटिलाः सरला अपि ॥ १११ ॥

सिंघाडा, त्रिफला, भांगरा, नीलकमल, लोहचूर्ण इन सबका चूर्ण कर इसके चौगुना तेल डालकर पकाले, इसका लेप करनेसे बाल कुटिल और सरल होजाते हैं ॥ १११ ॥

कीटभक्षितकेशं तु स्थानं स्वर्णेन घर्षयेत् ॥

यावत्सुतप्ततां याति तावल्लेपमिमं कुरु ॥ ११२ ॥

यदि बालोंको कीटा खागया हो तो सुवर्णको वहां घिसे । जबतक वह तप्तताको प्राप्त न होजाय तबतक बराबर लेप करता रहे ॥ ११२ ॥

भल्लातकं च बृहती गुञ्जामूलफलं तथा ।

मधुना सह लेपेन वायुक्षीरोटकप्रणुत् ॥ ११३ ॥

भिलावा, कटेरी, चौंटलीकी जड़ और फल इनको शहदके साथ पीसकर लेप करे तो इन्द्रलुप्त दूर करता है ॥ ११३ ॥

भल्लातकं कृष्णातिलं कण्टकारीफलं समम् ।

पिष्टं तण्डुलतोयेन लेपोऽयं तं विनाशयेत् ॥ ११४ ॥

* भृङ्गाटम् पाठ है । उसका अर्थ—भांगरा है ।

(१०४)

कामरत्न

पञ्चम-

भिलावा, काले तिल, कटेरीके फल यह समान भाग के चावल जलसे पीसकर लेप करनेसे इन्द्रलुप्त रोग दूर करता है ॥ ११४ ॥

जपापुष्पैश्च तं हन्यात्कृष्णागोमूत्रलेपनात् ॥ ११५ ॥

काली गौके मूत्रमें जवाके फूल पीसकर लेपन करे तो भी इन्द्रलुप्त दूर होता है ॥ ११५ ॥

तिलप्रसूनं सह गोक्षुरेण सलावणं गव्यघृतेन

पिष्टम् । सप्ताहमात्रेण शिरः प्रलेपाद्भवन्ति दीर्घाः

प्रचुराश्च केशाः ॥ ११६ ॥

तिलके फूल, गोखरू, लवण, गौके घीसे पीसकर सात दिन लेप करनेसे बाल दीर्घ और बहुत होजाते हैं ॥ ११६ ॥

शाल्मलीतालमूयोश्च मूलं पद्मसमुद्भवम् ।

छागदुग्धे समं पिष्टं लेपयेन्मुण्डितं शिरः ॥

त्रिदिनं भक्षयेत्तच्च केशवर्धनमुत्तमम् ॥ ११७ ॥

सेमल, तालमूली, कमलमूल यह बराबर लेकर बकरीके दूधके साथ पीनेसे यह लेप शिरमुंडित बालोंको हितकारी है और तीन दिन लेप करनेसे उत्तम केशवृद्धि होजाती है ॥ ११७ ॥

अथ केशशुक्लीकरणम्

वज्रीक्षीरेण सप्ताहं तच्छेषं भावयेत्तिलम् ।

तत्तैललिप्ताः केशाश्च शुक्लाः स्युर्नात्र संशयः ॥ ११८ ॥

थूहरके दूधमें काले तिलोंको सात दिन भावना दे, फिर उस तेलके बालों पर लेप करनेसे निःसन्देह बाल श्वेत होजाते हैं ॥ ११८ ॥

रोगामलकचूर्णं तु वज्रीक्षीरेण सप्तधा ।

भावयेत्तस्य लेपेन शुक्लतां यान्ति मूर्द्धजाः ॥ ११९ ॥

उपदेशः ६.

हिन्दीटीकासहित

(१०५)

कूठ और आमलेके चूर्णको थूहरके दूधसे सात बार भावित कर-
वेसे इसका लेप बालोंको श्वेत करता है ॥ ११६ ॥

अजाक्षीरेण सप्ताहं भावयेदभयाफलम् ।

तच्चूर्णं सह तैलेन लेपाच्छुक्ला भवन्ति हि ॥ १२० ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने मोहनादिवर्णनं
नाम पंचमोपदेशः ॥ ५ ॥

हरडोंको सात दिन बकरीके दूधमें भावना दे उसका चूर्ण कर
तेलमें मिलाय बालोंमें लकावे तो बाल श्वेत हों ॥ १२० ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्रकृत
भाषाटीकायां मोहनादिवर्णनं नाम पंचमोपदेशः ॥ ५ ॥

षष्ठ उपदेशः

अथ वाजीकरणम्

बलेन नारी परितोषमेति न हीनवीर्यस्य कदापि
सौख्यम् । अतो बलार्थं रतिलम्पटस्य वाजीवि-
धानं प्रथमं विदध्ये ॥ १ ॥

बलीसे स्त्री संतुष्ट होती है, परन्तु हीनवीर्य पुरुषसे कभी स्त्री
संतुष्ट नहीं होती है, इस कारण उन लम्पट पुरुषोंके बलके निमित्त
वाजी (पुष्ट) प्रकरण लिखा जाता है ॥ १ ॥

अश्विन्यां वटवृन्दाकं क्षीरैः पीत्वा महाबलः ।

पुष्योद्धृतं पिबेन्मूलं श्वेतार्कस्य प्रयत्नतः ।

स चरात्रं तु गोक्षीरैर्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ २ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें बडका बंदा दूधके साथ पीसकर पीनेसे बलवान

होता है । पुष्यनक्षत्रमें उखाड़ी हुई श्वेत आककी जड़ सात दिनतक
गौके दूधके साथ यत्नसे पिये तो वृद्धभी तरुण होजाता है ॥ २ ॥

चूर्ण विदार्याः स्वरसेन तस्या विभावितं भास्कर-
रश्मिजालैः । मध्वाज्यसंमिश्रितमेव लीढ्वा दश
स्त्रियो गच्छति निविशङ्कः ॥ ३ ॥

विदारिकन्दका चूर्ण कर उसीके स्वरसमें भावना दे घूपमें
सुखानेसे शहद और घृत मिलाय सेवन कर निःशङ्क हो दश स्त्रियोंको
तृप्त कर सकता है ॥ ३ ॥

भूयो विभाव्यामलकस्य चूर्णं रसेन तस्यैव
सिताज्यमिश्रम् । सक्षौद्रमालेढि निशामुखे यो
नूनं स वृद्धस्तरुणत्वमेति ॥ ४ ॥

आमलेके रसमें आमलोंको भावना देकर उसमें मिश्री और
घृत मिलावे, इसे शहदके साथ रात्रिमें पान करनेसे वृद्ध पुरुषभी
तरुण होजाता है ॥ ४ ॥

कर्षप्रमाणं मधुकस्य चूर्णं क्षौद्राज्यसंमिश्रितमेव
लीढ्वा । क्षीरानुपानाद्रमते तु तावद्यावन्नराणा-
मुदरस्थमेतत् ॥ ५ ॥

मुलहठीका चूर्ण एक कर्ष लेकर इसमें घृत और शहद मिलाकर
वाटनेसे और पीछे दूध पीनेसे मनुष्यमें अधिक सामर्थ्य होजाती है
अर्थात् यह जबतक न पचे तबतक रमण कर सकता है ॥ ५ ॥

सितपिकतरुबीजं तण्डुला यष्टिकानां सघृतमधु-
समेतं प्रत्यहं योऽबलेढि । जठरकुहरमध्ये याति
पाकं न यावद्रमयति कृशदेहोप्यङ्गानां समहम् ॥ ६ ॥

उपदेशः ६

हिन्दीटीकासहित

(१०७)

कौंचके बीज, सांठीके चावल, मुलहठी, न्यूनाधिक घृत और शहद मिलाकर चाटनेसे जबतक यह न पचे तबतक कृश मनुष्य भी स्त्री-योंके साथ रमण करसकता है ॥ ६ ॥

बृद्धशाल्मलिमूलस्य रसं शर्करया पिबेत् ।

एतत्प्रयोगात्सप्ताहाज्जायते रेतसोऽम्बुद्धिः ॥ ७ ॥

बृद्ध सेमलकी जड़का रस शर्कराके सहित पान करे । इसप्रयोगसे सात दिनमें मनुष्य वीर्यवान् हो जाता है ॥ ७ ॥

लघुशाल्मलिमूलेन तालमूलीसर्चणितम् ।

सर्पिषा पयसा पीत्वा रतौ चटकवद्भवेत् ॥ ८ ॥

लघु सेमलकी जड़ और तामूलीका चूर्ण घृतके साथ पान करनेसे रतिमें चटकके तुल्य होजाता है ॥ ८ ॥

घृतेन मांसं मसृतानि भूयो सुभावयित्वा रविशो-
षितानि । क्षीरेण संसाध्य च भक्षयित्वा स याति
नारीशतमुग्ररेताः ॥ ९ ॥

फिर घृतके साथ एक महीना इसीको प्लावित करके सुखाय दूधसे संभावित कर भक्षण करे तो रतिमें चटकतुल्य हो जाता है सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ९ ॥

यो वर्त्तकीलावकपिञ्जलानां मांसं तथा वेश्मविह-
ङ्गमस्य । हव्येन सिद्धं सह सैन्धवेन महाबलः
स्यादुपयुज्यमानः ॥ १० ॥

जो वर्त्तक लवा कबूतर (जंगली चिडिया) पक्षीका मांस में (हव्य) घृत डालकर सेंधेके साथ भक्षण करता है उसका बल अधिक बढ़जाता है ॥ १० ॥

(१०८)

कामरत्न

षष्ठ

विदारीकन्दकल्कं तु घृतेन पयसा नरः ।

उदुम्बरसमं खादेद्वद्धोऽपि तरुणायते ॥ ११ ॥

विदारीकन्दके कल्ककी घी मिले दूधके साथ एक तोला पान करनेसे वृद्ध पुरुष भी तरुण हो जाता है ॥ ११ ॥

पिप्पलीनां रसोपेतौ बस्ताण्डौ क्षीरसर्पिषा ।

साधितौ भक्षयेद्यस्तु स गच्छेत्प्रमदाशतम् ॥ १२ ॥

बकरेके दोनों अंडकोशोंको प्रथम जलमें उबालकर फिर दूधमें निकाले हुए घीमें भूनकर अनुपानके अनुसार उसमें सेंधानिमित्त और पीपलका चूर्ण मिलाय भक्षण करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ १२ ॥

बस्ताण्डसिद्धे पयसि भावितानसकृत्तिलान् ।

यः खादेत्स नरो गच्छेत्स्त्रीणां शतमपूर्ववत् ॥ १३ ॥

बकरेके अण्डकोशको दूधमें औटाकर उस दूधकी तिलोंमें बार बार भावना दे इनको छायामें सुखाय सेवन करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ १३ ॥

गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरिनागबलातिबला च ।

चूर्णसिद्धं पयसा निशि पेयं यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ॥ १४ ॥

गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंचके बीज, नागबला, खैर इनका चूर्ण दूधके साथ रात्रिमें पान करनेसे, करनेसे सौ स्त्रियोंको तृप्त कर सकता है ॥ १४ ॥

अश्वत्थफलमूलत्वक् छुङ्गासिद्धं पयो नरः ।

स पीत्वा शर्कराक्षौद्रं कलिङ्ग इव हृष्यते ॥ १५ ॥

पीपलके फल जड़, छाल और कली इनको अनुमानके अनुसार दूधमें डाल औटावे । शीतल होनेपर मिश्री, शहब मिलाय तब बुरा डालकर पीवे तो कलिङ्ग (चिडे) के समान प्रसन्न होता है ॥ १५ ॥

उपदेशः ६.)

हिन्दीटीकासहित

(१०९)

घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे चतुर्गुणे पचेत् ।

शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तं तद्वृष्य मुच्यते ॥ १६ ॥

घृतमें शतावरीका स्वरस मिलाय चौगुने दूधके साथ पकाय उसमें मिश्री, पीपल, शतावरका कल्क डालकर खाय तो पुष्टता होती है ॥ १६ ॥

नृसिंहचूर्णम्

शतावरीरजःप्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च ।

वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पञ्चविंशतिः ॥ १७ ॥

भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकाणां दशैव तु ।

तिलानां निस्तुषाणां तु प्रस्थं दद्यात्सुचूर्णितम् ॥ १८ ॥

त्रिफलस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्ततिः ।

माक्षिकं शर्करार्द्धेन माक्षिकार्द्धेन वै घृतम् ॥ १९ ॥

शतावरीसमं देयं विदारीकन्दजं रजः ।

एतदेकीकृतं चूर्णं स्निग्धभाण्डे निधापयेत् ॥ २० ॥

शतावरका चूर्ण एक सेर, दक्षिणी गोखरूका चूर्ण एक सेर, वाराहीकंदका चूर्ण एक सेर, सतगिलोय एक सेर नौ छटांक, शुद्ध किये भिलाबे दो सेर, चीतेकी छाल ढाई पाव, धोए तिल एक सेर, सोंठ, मिरच, पीपलका चूर्ण आध सेर, मिश्री साढे चार सेर इनसे आधा शहद और एक सेर दो छटांक घी, शतावरीके समान विदारीकन्दका चूर्ण यह सब बारीक कर मिलाय चिकने बर्तनमें रख छोडे ॥ १७-२० ॥

पलार्द्धमुपमुञ्जीत यथेष्टं चास्य भोजनम् ।

मासैकमुपयोगेन जरां हन्ति रुजामपि ॥ २१ ॥

बलीपलितखालित्यहेमपाण्ड्वाद्यपीनसान् ।

हन्त्यष्टादशकुष्ठानि तथाष्टावुदराणि च ॥ २२ ॥

भगन्दरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसीं सहलीमकम् ।

क्षये चैव महाव्याधिं पंचकासान् सुदारुणान् ॥ २३ ॥

अशीतिवातजान्नागांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् ।

विंशतिसूक्ष्मरोगांश्च संसृष्टान्सन्निपातिकान् ॥ २४ ॥

सर्वानशौगदान्हन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥ २५ ॥

प्रतिदिन दो तोले सेवन कर यथेष्ट भोजन करे तो एक महीने जरा और हीनवीर्यता नष्ट होती है, बली, शिरके बालोंका श्वेत होना, मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी, हलीमकी रोग, क्षय, महाव्याधि, पांच प्रकार के दारुण खांसी, अस्ती वातरोग चालीस पित्तके रोग, बीस सूक्ष्म रोग, सन्निपातके रोग, बवासीर यह सब ऐसे दूर होजाते हैं कि इन्द्रके वज्रसे वृक्ष नष्ट हो जाते हैं ॥ २१-२५ ॥

सकाञ्चनाभो भृगराजविक्रमस्तुरङ्गमं चाप्यनुयाति

देगतः । स्त्रीणां शतं गच्छति सातिरेकं प्रहृष्टपु

त्रं यथा विहङ्गम् ॥ २६ ॥

तथा सूवर्णके समान शरीर होकर सिंहके समान पराक्रमी, घोड़े के समान कामदेव प्राप्त होता है और यह सौ स्त्रियोंके संग गमन कर सकता है तथा विहंग (पक्षी) के समान हृष्ट पुष्ट होता है ॥ २६ ॥

पुत्रान्संजनयेद्धीमान्नरसिंहनिभांस्तथा ॥

नारसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं नृणाम् ॥ २७ ॥

यह चूर्ण खानेसे मनुष्य नृसिंहके समान कान्तिमान् पुत्रको जन्मा देता है । यह नृसिंहचूर्ण मनुष्योंके सब रोग दूर करता है ॥ २७ ॥

उपदेशः ६.

हिन्दीटीकासहित

(१११)

मदनमोदकः

त्रैलोक्यविजयापत्रं सबीजं घृतभर्जितम् ।

त्रिकटु त्रिफला कुष्ठंभृङ्गी संधवधान्यकम् ॥ २८ ॥

चव्यं तालीशपत्रं च कट्फलं नागकेशरम् ।

अजमोदा यवान्नी च यष्टी मधुकमेव च ॥ २९ ॥

मेथी जीरकयुग्मंच गृहीत्वा समभागतः ।

च्यवन्त्येतानि चूर्णानि तावदेव तदौषधम् ॥ ३० ॥

सम शिलातले पिष्ट्वा चूर्णयेदतिचिक्कणम् ।

तावदेव सिता देया यावदायाति बन्धनम् ॥ ३१ ॥

घृतेन मधुना मिश्रं मोदकं परिकल्पयेत् ।

घृतभर्जिततिलचूर्णं मोदकोपरि विन्यसेत् ॥

त्रिसुगंधिसमायुक्तं कर्पूरेणाधिवासितम् ।

स्थापयेद्घृतभाण्डे तु श्रीमन्मदनमोदकम् ॥ ३२ ॥

त्रिलोकविजया (भंग) के पत्ते और बीज घृतसे भूनकर उसमें त्रिकटु (सोंठ, मिरच, पीपल), हरडा, बहेडा, अमला, कूठ, भांगरा धनिया, वच, तालीसकी छाल, कट्फल, नागकेशर, अजमोदा, अजवायन, मुलहठी, मधुक, मेथी, कालाजीरा, श्वेतजीरा, ये सब समान भाग लेकर यह सम्पूर्ण औषधी समान शिलापर पीसकर महीन चूर्ण करे । इतनी इसमें मिश्रीकी चासनी करे जिससे वह बँध जाय तथा इसमें घी और शहद मिलाकर लड्डु बांधे । मोदकके ऊपर घीमें भुने हुए तिलोंका चूर्ण डाले तथा पत्रज, तज, इलायची, कपूरसे अधिवासित करे एवं घृतके बर्तनमें स्थापन करके रखछोडे । २८-३२।

भक्षयेत्प्रातरुत्थाय वातश्लेष्मभयापहम् ।

प्रवृद्धमग्निं कुरुते मन्दमग्निं प्रदीपयेत् ॥ ३३ ॥

कृशानामतिरूक्षाणां स्नेहनं स्थौल्यकारणम् ॥ ३४ ॥

कासघ्नं सर्वशूलघ्नमामवातविनाशनम्

सर्वरोगहरं होतत्संग्रहग्रहणीहरम् ॥ ३५ ॥

एतस्य सतताभ्यासाद्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ३६ ॥

यह मदनमोदक प्रातःकालमें उठकर खानेसे श्लेष्माका भय होता है । बढीहुई अग्निको सम और मन्दाग्निको बढाता है । अत्यन्त रूखे पुरुषोंके स्थूल और स्नेहन करता है । कास, आमवातका नाशक है । सम्पूर्ण रोग तथा संग्रहणी रोगको यह हटा करता है । निरन्तर इसके सेवन करनेसे वृद्धभी तरुण होता है ॥ ३३-३६ ॥

ब्रह्मणश्च मुखाच्छुत्वा वासुदेवे जगत्पतौ ।

एष कामस्य वृद्धार्थं नारदेन प्रकाशितः ।

येन लक्षैर्वरस्त्रीणामरंस्त यदुनन्दनः ॥ ३७ ॥

ब्रह्माके मुखसे श्रवण कर वासुदेव जगत्पतिसे यह कामकी वृत्ति अर्थ नादरजीने कथन किया है; जिसके कारण यदुनन्दन सैस्त्रियोंसे रमण करते थे ॥ ३७ ॥

कामकलारसः

मृतसूताभ्रकं स्वर्णवाजिगन्धावचारसैः ।

मुशली कदलीकन्दद्रवैश्च मर्दयेद्दिनम् ॥ ३८ ॥

लाक्षालघुपुटैः पच्यान्मर्दयेत्पूर्ववद्द्रवैः ।

पुटं देयं पुनर्मर्द्यमेवमष्टपुटैः पचेत् ॥ ३९ ॥

उपदेशः ६.

हिन्दीटीकासहित

(११३)

शाल्मलीजातनिर्यामैश्चतुर्भासांस्तु भक्षयेत् ।

गोदुग्धं मर्कटीबीजैः पलाद्धं पाचयेदनु ॥ ४० ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध सुवर्ण, असगंध, वचके रसमें खरल कर इसमें मुशली, कदलीकन्दका चूर्ण डालकर एक दिन खरल करे । लाखकी लघुपुट देकर इसको फिर खरल करता रहे और लाक्षा जलके आठ पुट देकर इसको पकावे । सेमलके उत्पन्न हुए गोंदसे चार महिने भक्षण करे और गौका दूध, कौंचके बीज आधे पल डालकर पकावे ॥ ३८ - ४० ॥

रसः कामकलाख्योऽयं रमते स्त्रीसहस्रकैः ।

सर्वाङ्गोद्वर्त्तनं कुर्यात्स्वरसैः शाल्मलीरसैः ॥ ४१ ॥

यह कामकलानामक रस है । इसके सेवनके मनुष्य सहस्र स्त्रियोंसे रमण कर सकता है । सर्वांगमें सेमलके स्वरसको मले तो पुरुषके कामबल बढ़ जाता है ॥ ४१ ॥

शुद्धसूतसमं गन्धं त्र्यहं कल्लारजैर्द्रवैः ।

मर्दितं वालुकायन्त्रे यामं संपुटगं पचेत् ॥ ४२ ॥

रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यं दिनमेकमिव द्रुतम् ।

यथेष्टं भक्षयेच्चान्नं कामयेत्कामिनीशतम् ॥ ४३ ॥

शुद्ध पारा उसके बराबर शोधी गन्धक तीन दिन श्वेतकमलके साथ खरल करके वालुकायन्त्रमें एक पहर संपुट कर भांच दे और फिर निकालकर एक दिन लाल रक्तगस्त्यके रसकी भावना दे, इसको सेवनकर यथेष्ट भक्षण करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण कर सकता है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥



(११४)

कामरत्न

अनङ्गसुन्दरीवटिका

पलद्वयं द्वयं शुद्धं पारदं गन्धकं तथा ।

मृतहेम्नस्तु कर्षकं पलैकं च मृताभ्रकम् ॥ ४४ ॥

मृत्तताम्रं चतुर्निष्कं सर्वं पंचामृतौदनम् ।

रुद्रैर्गजपुटैः पच्याद्दिनैकान्ते समुद्धरेत् ॥ ४५ ॥

पिष्ट्वा पंचामृतैः कुर्याद्वटिकां बदराकृतिम् ।

अनङ्गसुन्दरीं खादेद्रमेष्ट्वामाशतत्रयम् ॥ ४६ ॥

दो पल शुद्ध पारा, दो पल शुद्ध गन्धक, शुद्ध सोना एक कण, अश्रक एक पल, फूँका हुआ तांबा चार निष्क (६४ भासे) इन सबको पंचामृतसे खरल करके ग्यारह दिन पीछे * गजपुटमें रखकर दिनकी आंच देकर फिर इसको फूँकी दे, इसको निकालकर पंचामृतीसे बेरकी बराबर इसकी गोली बनावे, यह अनङ्गसुन्दरी नामकी सेवन करनेसे तीन सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ४४-४६ ॥

शात्मलीमूल चूर्णं तु भृङ्गराजस्य मूलकम् ।

पलैकं सितया चात्र भक्षयेत्कामयेच्छतम् ॥ ४७ ॥

सेमलकी जड़का चूर्ण, भांगरेकी जड़ इनका चूर्ण कर इसमें पल मिश्री डालकर खाय तो सौ स्त्रियोंके गमन कर सकता है ॥ ४७ ॥

महाकामेश्वररसः

सूतपादं ताम्रचूर्णं खल्वे पिष्टं प्रकारयेत्

निक्षिप्य कदलीकन्दे पुनर्लेप्यं च गोमयैः ॥ ४८ ॥

पारा चौथाई भाग और तांबा इनको ले चूर्णकर केलेकी खरल करे फिर इनका गोला कर गोबरसे लपेट सुखाले ॥ ४८ ॥

* सवा हाथके बराबर चौकोर गढ़में पांच सौ अरने उपलोंकी अग्नि देना ।

प्रदेशः ६

हिन्दीटीकासहित

(११५)

शुष्कं गजपुटैः पच्यात्तथा कन्दे पुनः क्षिपेत् ।

एवं सप्तपुटैः पच्यात्कन्दैः कन्दं पृथक्पृथक् ॥ ४९ ॥

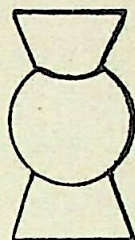
दत्त्वा तत्र घृतं चूर्णं वस्त्रे बद्ध्वा तु पाचयेत् ।

दोलायन्त्रे च संयुक्तं छागीदुग्धे पुनः पचेत् ॥ ५० ॥

सुखाकर गजपुटसे फूंकदे फिर निकाल केलेकी दोलायन्त्र

न्दमें भावना देकर फूंकदे, इस प्रकार सातवार पृथक्
पृथक् भावना दे और घृत मिलाय फिर वस्त्रकी कप-
टी लगा सुखाय फिर कपरौटी चढावे, फिर दोला-
यन्त्रमें विद्ध कर बकरीके दूधसे पाक करे ॥ ४९

५० ॥



गुडूच्याथ शतावर्या वानर्या गोक्षुरैस्तथा ।

गजपिप्पलिका लाजा कदल्या कोकिलाक्षकैः ॥ ५१ ॥

सितय पाचयेदेव द्विगुणं लघुवह्निना ।

उद्धृत्य चूर्णयेत्स्वच्छं भक्षेद्गुञ्जाचतुष्टयम् ॥ ५२ ॥

सितायुक्तं सदा सेव्यं महाकामेश्वरो रसः ।

कामिनीनां सहस्रैकं क्षोभयेन्निमिषान्तरे ॥ ६३ ॥

गुडूची शतावरी, कौंचके बीज, गोखरु, गजपीपल, लाजा
(बील), केलाकन्द, तालमखाना इन सबको बराबर ले बारीक
करके इनसे दूनी मिश्रीका चासनी कर लघु आंचसे पकावे, उपरोक्त
औषधी उसमें डालदे और ऊपरके रसभी इसमें डाल दे इस
रसको चार चौंटली प्रमाण भक्षण करे, मिश्रीके साथ यह महाका-
मेश्वर रस सदा सेवन करे तो एक क्षणमें सहस्र स्त्रियोंको क्षुभित
कर सकता है ॥ ५१-५३ ॥ इति महाकामेश्वररस ॥

(११६)

कामरत्न

गोक्षुरं वानरं बीजं गुडूची गजपिप्पली
 कोकिलाक्षस्य बीजानि फलं गुणशतावरी ॥ ५४ ॥
 कर्कशाबीजमज्जा च सर्वं तुल्यं विचूर्णयेत् ।
 चूर्णतुल्या सिता योज्या मधुना पिण्डितं लिहेत् ।
 पलाद्धमनुपानं स्यात्किञ्चित्पेयं गवां पयः ॥ ५५ ॥
 गोखरु, कौंचके बीज, गुडूची, गजपीपल, तामलखानेके बीज
 फल, शतावरी, कर्कशाके बीज और मींगी यह सब बराबर ले
 करे और चूर्णके तुल्य बराबर मिश्री डालकर शहदके साथ
 बटी बनाकर सेवन करे । इसका अनुपान यह है कि इस पा
 पल की कुछ गौका दूध पीना चाहिये ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

मदनोदयरसः

शुद्धसूतसमं गन्धं रक्तोत्पलदलद्रवैः ।
 याममेकं पुनर्गन्धं पूर्वादद्धं विनिक्षिपेत् ॥ ५६ ॥
 तद्रवैर्मर्दयेच्चाङ्गं पूर्वगन्धं च मर्दनम् ।
 पूर्वद्रावैर्दिनैकं तु काचकुप्या निरुध्य च । ५७ ॥
 दिनैकं बालुकायन्त्रं पक्वमुद्धृत्य भक्षयेत् ।
 पञ्चगुञ्जासितासाद्धं रसोऽयं मदनोदयः ॥ ५८ ॥
 कोकिलाक्षस्य बीजं च मुसली शर्करासमम् ।
 गवां क्षीरेण तत्पेयः पलाद्धमनुपानकम् ॥ ५९ ॥
 शोधा पारा, शोधी गंधक, लाल कमलके दलके रसमें ए
 तक खरल करे और इस रसको सुखाकर बारंबार खरल क
 जब पारा और गंधक सब प्रकारसे एकरूप हो जायँ तब इ
 कांचकी शीशीमें भरकर एक दिनतक बालुकायन्त्रमें चढादे; कि
 उतार इसे प्रयोग करे । यह मदनोदय रस पांच चौंटली प्रमाण

उपदेशः ६.

हिन्दीटीकासहित

(११७)

हित खाना उचित है । तालमखानेके बीज और मुसली, शर्करा ये
समान भाग ले, आधे पल गौके दूधके साथ इसको पान करे तो पुष्टि
ती है, यह मदनोदय रस है ॥ ५६-५९ ॥

कामाङ्गनायकचूर्णम्

वानरीकोकिलाक्षस्य बीजं श्यामतिलं समम् ।

मूलं गोक्षुरमासाभ्यां शुष्कचूर्णं प्रकल्पयेत् ॥ ६० ॥

चूर्णं तुल्यं मृतं चाभ्रं सर्वतुल्या सिता भवेत् ।

कर्षमेकं गवां क्षीरैः पेयं कामाङ्गनायकम् ॥ ६१ ॥

कौंचके बीज, तालमखानेके बीज और काले तिल यह समान भाग
र गोखरू, उरद इनको पीसकर चूर्ण करले, इस चूर्णमें अनुमा-
शोधा अश्रक डाले इन सबकी तुल्य मिश्री डाले एक कर्ष
सोलहमासे) गौके दूधसे इस कामाङ्गनायक चूर्णका पान
॥ ६० ॥ ६१ ॥

तैलेन पक्वं चटकं खादेद्भोजनपूर्वतः ।

भोजनान्ते पिबेत्क्षीरं राभाः कामयते शतम् ॥ ६२ ॥

अनुपान-चटक (चिडिया) के मांसको तेलमें पकाय भोजनसे
ले तथा भोजनके अन्तमें दूध पीवे तो सौ स्त्रियोंसे रमण
सकता है ॥ ६२ ॥

कामामृतयोगः

अश्वगन्धा वह्निमूलं शाल्मली च शतावरी ।

विदारी मुशलीकन्दं कोकिलाक्षस्य बीजकम् ॥ ६३ ॥

तत्तुल्यं वानरीबीजं सुष्टु चूर्णं तु कारयेत् ।

चूर्णतुल्यं मृतं चाभ्रं सर्वतुल्या सिता भवेत् ॥

गवां क्षीरैः पिबेत्कर्षं रमयेत् कामिनीशतम् ॥ ६४ ॥

अश्वकर्कटमांसं तु भक्षयेच्च पिबेत्पयः ।

योगः कामामृतः ख्यातो बलायुर्वीर्यवर्द्धकः ॥ ६५ ॥

असगंध, चीतेकी जड़, सेमल, शतावरी, विदारीकंद, मुशली, तामलखाने और कौंचके बीज इनका चूर्ण करे और चूर्णके अनुशुद्ध अश्वक डाले सबकी बराबर मिश्री देवे इन सबको एक कर्ष दूधके साथ लेनेसे सौ स्त्रियोंसे रमण करसकता है । अश्व और डेका मांस भक्षण कर ऊपरसे दूध पीवे यह कामामृतनामक अत्यन्त बल-आयु-वीर्यका बढ़ानेवाला है ॥ ६३-६५ ॥

धात्रीलोहम्

धात्रीफलस्य चूर्णं तु भावयेत्तत्फलद्रवैः ॥ ६६ ॥

एकविंशतिवारं तु शोष्यं पेप्यं पुनः पुनः ।

चूर्णपादं मृतं लोहं मध्वाज्ये शर्करान्वितम् ॥ ६७ ॥

पलैकं भक्षयेन्नित्यं सिताक्षीरं पिबेदनु ।

कामयेत्स्त्रीशतं नित्यं धात्रीलोहप्रभावतः ॥ ६८ ॥

आंवलेका चूर्ण कर उसमें उसीके फलोंके रसकी भावना सुखावे, ऐसे इक्कीस बार भावना देकर सुखाय चूर्ण करे इस चौथाई लोहभस्म डाले इसमें शहद, घृत, मिश्री डाले इसको प्रति एक पल खाय मिश्रीसहित ऊपरसे दूध पीवे । इस धात्रीलोहप्रभावसे सौ स्त्रियोंकी नित्य इच्छा करसकता है ॥ ६६ - ६८ धात्रीलोह ॥

वानरीबीजचूर्णं तु निस्तुषं माषचूर्णितम् ।

नारिकेलोदकैर्भाव्यं यामान्तं पेपयेत्समम् ॥ ६९ ॥

पिष्टस्य विंशद्विशेन मृतमभ्रं नियोजयेत् ।

तद्वत्तैर्वटिका कार्या मध्वाज्याभ्यां तु भक्षयेत् ॥ ७० ॥

उपदेशः ६

हिन्दीटीकासहित

(११९)

पीत्वा क्षीरं सितायुक्तं रम्या रामा रमेच्छतम् ।
 सताम्बूलं शतामूलमनुपानं निरन्तरम् ॥ ७१ ॥
 कौंचके बीजोंका चूर्ण, छिलके रहित उडदोंका चूर्ण लेकर
 गारियलके रसकी भावना देकर एक प्रहरके उपरान्त उसको पीसले
 अच्छे प्रकार उसको पीसकर शुद्ध अभ्रक उसमें डाले इस प्रकार उनकी
 टिका करके शहद और घृतके साथ भक्षण करे । इसके ऊपर मिश्री
 मलकर दूध पीवे तो अनेक स्त्रियोंके साथ रमण कर सकता है इसके
 पर निरन्तर शतामूलयुक्त ताम्बूल भक्षण करे ॥ ६९-७१ ॥

ऊर्णनाभिभवं बीजं मधुना वह पेषयेत् ।
 तेन नाभिप्रलेपेन बन्धः सद्यो विमुञ्चति ॥ ७२ ॥
 मकड़ीके बीजको शहदके साथ नाभिपर लेप करनेसे स्त्रीसे बद्ध
 मा पुरुष शीघ्र मुक्त होता है अर्थात् मैथुनमें समर्थ होता है ॥ ७२ ॥
 अन्तरिक्षेण संग्राह्य यत्नाद्वा गुटिकामलम् ।
 तेन लिङ्गप्रलेपेन रमेद्रामाशतं नरः ॥ ७३ ॥
 अन्तरिक्षमसे गुटिका मल ले इसका ध्वजापर लेपकरे तो मनुष्य सौ
 त्रियोंसे रमण करसकता है ॥ ७३ ॥

कामेश्वररसः

सम्यङ्मारितमभ्रकं कटफलं कुष्ठाश्वगन्धामृता
 मेथी मोचरसं विदारमुशली गोक्षूरमिक्षूरकम्
 रंभाकन्दशतावरी ह्यजमुदा माषस्तिला धान्यकं
 यष्टी नागबला कचूरमदनं जातीफलं सैन्धवम् ॥ ७४ ॥
 मार्गीकर्कटशृङ्गभृङ्गकटुकं जीरद्वयं चित्रकं
 चातुर्जातिपुनर्नवा गजकणा ब्राह्मी निशा वासकम् ।

(१२०)

कामरत्न

बीजं मर्कटिशाल्मलं फलत्रिकं चूर्णं समं कल्पये-

चूर्णसंविजयासिताद्विगुणिता मध्वाज्ययोः पिंडितम् ॥

अच्छी प्रकार शोधा अभ्रक, शोधा हुआ कट्फल, कूठ, अजोय, गिलोय, मेथी, मोचरस, विदरीकंद, मुशली, गोखरू, कोकिला, बीज, कदलीकंद, शतावरी, अतिबला, उडद, तिल, धनियां, अस्सी खिरेंटी, मुलहठी और नागबला, कचूर, मैनफल, जायफल, कस्तूरी, काकडासिंगी, भांगरा, त्रिकटु, दोनों जीरे, तज, प इलायची, दालचीनी, नागकेशर, पुनर्नवा, गजपीपल, ब्राह्मी, अडूसा, कौंचके बीज, सेमल, त्रिफला इनको बराबर लेकर चूर्ण उस चूर्णके सान भंग, दूनी मिश्री ले इसमें घृत और मधु डाल इसको बटिका बनाले ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

कर्षार्द्धं बटिका विलेह्यमथवा सेव्यं मुदा सर्वदा

पेयं क्षीरसितानुवीर्यकरणे स्तम्भेप्ययं कामिनीम् ॥

वामावश्यकरं परं च सुखदं प्रौढाङ्गनाद्रावकं

क्षीणे पुष्टिकरं गदक्षयकरं हन्त्याशु सर्वाभयम् ॥ ७६ ॥

इसकी आधे कर्षकी बटिका बनावे उसको चाटे अथवा के सेवन करे इसके ऊपर मिश्री डालकर दूध पीवे तो यह स्त्रीको स्त कर सकता है, यह स्त्रीको वशमें करनेवाला, सुखदायक, प्रौढ स्त्री प्रेरणा करनेवाला है, क्षीणवीर्यमें पुष्टिका करनेवाली, रोगक्ष शीघ्र सब रोगोंका नाशक है ॥ ७६ ॥

कासश्वासमहातिसारशमनं मन्दाग्निसंदीपनं

अर्शःसंग्रहणीप्रमेहनिचय श्लेष्मातिरक्तप्रणुत् ।

नित्यानन्दकरं विशेषकविता वाचां विलासोत्तमं

धत्ते सर्वगुणं हठात्स्ववदशाध्यानप्रधानं पुनः ॥ ७७ ॥

पुनर्पदेशः ६

हिन्दीटीकासहित

(१२१)

कास श्वास मसाअतिसारका शमन करनेवाला, मन्दाग्निको प्रदीप्त करनेवाला, बवासरौर संग्रहणी सब प्रकारसे प्रमेह कफके रोग, रक्त रोगको दूर करता है, नित्य आनन्द करनेवाला, विशेषकर विशेष लक्ष्मि आदिके गुण देता है, सम्पूर्णगुण इसके प्रभावसे प्राप्त होते जाते हैं ॥ ७७ ॥

अभ्यासेन निहन्ति मृत्युपलितं कामेश्वरो वत्सरात्
सर्वेषां हितकारको निगदितः श्रीनित्यनाथेन सः ।
वृद्धानां मदनोदयोदयकरः प्रौढाङ्गनासंगमे
सिद्धोयं समदृष्टप्रत्ययकरी राज्ञा सदा सेव्यताम् ॥ ७८ ॥

इसके अभ्याससे मृत्यु जीती जाती है, बालोंका अकालमें पकना होता है, यह सबका हितकारक कामेश्वररस नित्यनाथने कहा है, वृद्धोंको काम उदय करनेवाला, प्रौढ अंगनाके संगममें सुख देनेवाला यह विद्वराजोंको सदा विश्वासकर सेवन करना चाहिये ॥ ७८ ॥

यत्किञ्चिन्मधुरस्निग्धं जीवनं बृंहणं गुरु ।
हर्षणं मनसश्चैव तत्सर्वं वृष्यभुच्यते ।
नरो वीर्यकरान्योगान्सम्यक् शुद्धो निरामयः ॥ ७९ ॥

जो कुछ वस्तु मधुर चिकनी है वह जीवनकारक और भारी मनको हर्षण करनेवाली जो वस्तुमात्र है वह सब वृष्य कहाती है, वीर्य गरी पदार्थोंको शुद्ध रोगरहित होकर सेवन करना चाहिये ॥ ७९ ॥

वाजीकरणकालः

आसप्ततेः प्रकुर्वीत वर्षाद्विध्वं च षोडशात् ।
न पूर्वं षोडशाद्वर्षात्सप्तत्याः परतो न च ॥ ८० ॥

(१२२)

कामरत्न

सोलह वर्षसे ऊपर ७० वर्षतक इन योगोंको सेवन करे, हसे न्यून और सत्तर वर्षसे अधिक इन योगोंको सेवन न करे॥

वाजीकरणफलम्

आयुःकामो नरः स्त्रीभिःसंयोगं कर्तुमर्हति ।

कल्पेनादग्धवयसो वाजीकरणसेवितः ॥ ८१ ॥

आयुष्मन्तो मन्दजरावपुर्वीर्यबलान्विताः ।

स्थिरोपचितमांसाश्च भवन्ति स्त्रीषु संयुताः ॥ ८२ ॥

आयुकी कामना करनेवाला मनुष्य स्त्रियोंसे इस प्रकार संयोग वाजीकरणकल्पसे शरीर पुष्ट होजाता है और इसके होनेसे उत्तम और इष्ट विद्ध होता है, पूर्ण आयुवाले मन्दजर वीर्य बलसे युक्त वे स्थिर आरोग्य बलसे युक्त हो स्त्रियोंमें आसक्त होते हैं ॥ ८१ ॥

स्त्रीसंगमकालः

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रसदां नरः

सर्वर्तुषु च ग्रीष्मेषु पक्षात्पक्षाद्ब्रजेद्बुधः ॥ ८३ ॥

संपूर्ण ऋतुओंमें तीन तीन दिनमें स्त्रीको सेवन करे अर्थात् तीन दिन स्त्रीका संगम करना उचित है और सबसे अधिक आवश्यकता हो तो ग्रीष्ममें न्यून प्रसंग करे अर्थात् एक पक्षमें करे ॥ ८३ ॥

योगं कृत्वा सुसेव्यं सुभृतमपि पयः शीतलं च

पीत्वा गच्छेन्नारी सुरूपां स्मशरवशगां कामुकः

कामलीलः । रत्या हृष्टः प्रहृष्टो व्यपगतसुरतः

सन्धये नित्यनित्यं कान्तासंगाद्दिवापि ह्यसकृदपि

नरो धातु बैषम्यमेति ॥ ८४ ॥

पदेशः ६

हिन्दीटीकासहित

(१२३)

जो बलवर्धक औषधियोंको सेवन नहीं करता वह दुर्बल यह योग
 बन करे, शीतल जलपान करके वा औटायी दूध पीकर कामोजन
 पवती स्त्रीसे गमन करे, यत्नपूर्वक रातके समय प्रेम और धीरतासे
 बन करे । ग्रीष्मकालकी यह विधि है कि, अतिप्रसंग वर्जित करना
 न में एकतार भी स्त्रीसंग करे तो धातुओंकी वैषम्यता
 जाती है ॥ ८४ ॥

अन्यथास्त्रीसङ्गमे दोषाः

ग्लानिः कम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।

क्षयवृद्धचुपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयाः ॥

अकालमरणं चैव भजतः स्त्रियमन्यथा ॥ ८५ ॥

जो इससे अन्यथा स्त्रियोंको सेवन करते हैं उनको ग्लानि, कम्प,
 लता, धातु इन्द्रियोंका बलक्षय होता है तथा क्षय, अंडवृद्धि, उप-
 ण्दि दुर्जय रोग होते हैं और अकालमें मरण भी होता है ॥ ८५ ॥

शोषकासज्वराशांसि श्वासकाश्यातिपाण्डुता ।

अतिव्यवायाज्जायन्ते रोगाश्च क्षयकादयः ॥ ८६ ॥

असेवनान्मोहमदौ ग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम् ।

त्यर्जेच्चिताद्यशुचितां शोकाध्यक्षं च मैथुनम् ।

जरायाश्चित्तया शुक्रं व्याधिभिः कर्मकर्षणात् ॥ ८७ ॥

क्षयं गच्छत्यनशनात्स्त्रीणां चैवातिसेवनात् ।

क्षयाद्भूयादविश्वासाच्छोकस्त्रीदोषदर्शनात् ।

नारीणामवसन्नत्वादभिघातादसेवनात् ॥ ८८ ॥

शोषरोग, कास, श्वास, ज्वर, बवासीर आदि पाण्डुरोग होता है ।

रति करनेसे क्षयादि रोग होजाते हैं, बिना सेवनसे मोह, मद,
 थ आदि तथा अग्निकी मन्दता होती है । मनुष्य चिन्ता, मैथुनका

(१२४)

कामरत्न

ध्यान त्याग दे, जराकी चिन्तासे वीर्य क्षीण होता है, व्याधियोंसे अतिकर्मसे भोजन न करनेसे और स्त्रीके अति सेवन करनेसे क्षय, और अविश्वास तथा शोक स्त्रीदोष देखनेसे क्षीणता होती है स्त्रियोंको समीपमें रखनेसे, अभिघातसे असेवनसे, क्षय ॥ ८६-८८ ॥

वाजीकरणयोग्या स्त्री

रूपयौवनसौन्दर्यलक्षणैर्या विभूषिता ।

या वश्या शिक्षिता या च सा स्त्री बृष्यतमा मता ॥ ८९

जो यौवनसम्पन्न और सौंदर्य लक्षणोंसे विभूषित है, जो स्त्री क भूत व शिक्षित है, वह अपने वशमें होनेसे वाजीकरणके योग्या है ॥ ८९ ॥

वाजीकरणयोग्या:

स्त्रीषु क्षयं गतवतां वृद्धानां चरितश्रिताम् ।

क्षीणानामल्पशुक्राणां स्त्री क्षीणाश्च ये नराः ॥ ९०

विलासिनामर्थवतां यौवने बलशालिनाम् ।

बहुपत्नीवतां नृणां योगा वाजिकरा हिताः ॥ ९१ ॥

स्त्रीजनोंमें जिसका वीर्य अल्प होगया है, तथा जो वृद्ध हैं अति यायी हैं क्षीण हैं अल्पवीर्य हैं तथा जो मनुष्य स्त्रीमें क्षीण विलासी, अर्थवाले, यौवनवाले पुरुष, बहुत, स्त्रीजनोंके पति पुरुषोंको वाजीकरणयोग इतकारक हैं ॥ ९० ॥ ९१ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डि ज्वालाप्रसादमिश्र

भाषाटीकायां मोहनादिवर्णनं नाम षष्ठोपदेशः ॥ ६ ॥

१ मृगयताम् इति पाठान्तरम् ।

पदेशः ७

हिन्दीटीकासहित

(१२५)

सप्तमोपदेश

अथ गाढीकरणम्

तत्र भक्ष्यनिषेध

अत्यन्तमूलकटुतिक्तकषायमम्लं
क्षारं च शाकखदिरं लवणाधिकं च ।
कामी सदैव रतिनान्वनिताभिलाषी
नो भक्षयेदिति समस्तजनप्रसिद्धः ॥ १ ॥

अथ वीर्यगाढीकरण । तहां भक्ष्यनिषेध-अत्यन्त मूल, कडवी,
सैली, अम्ल, खारी, शाक, खैर, अत्यन्त नमकीन वस्तु इतनी वस्तु-
को रतिकी अभिलाषा करनेवाला पुरुष सेवन न करे ॥ १ ॥

प्रौढाङ्गनाया नवसूतिकायाः श्लथं वराङ्गं न
सुखाय यूनाम् । तस्मान्नरैर्भेषजतो विधेया गाढी
क्रिया मन्मथमन्दिरस्य ॥ २ ॥

प्रौढा स्त्री, नवीन प्रसूता स्त्री इनका वरांग शिथिल होजानेके
कारण युवा पुरुषोंको सुखदायक नहीं होता इस कारण मदनमंदिरका
कोच करना चाहिये ॥ २ ॥

निशाद्वयं पङ्कजकेशरञ्च निष्पीड्य देवद्रुमतुल्य-
भागम् । अनेन लिप्तं मदनातपत्रं प्रयाति संकोच-
मलं युवत्याः ॥ ३ ॥

दोनों हलदी, कमल, केशर, देवदारु इनको तुल्य भाग लेकर
ममंदिरमें लेप करनेसे संकोच होकर निर्मलता होती है ॥ ३ ॥

(१२६)

कामरत्न

सप्तमः पर्वः

सधातकीपुष्पफलत्रिकेण जम्बूत्वचा साररसं
घृतेन । लिप्त्वा वराङ्गं मधुकेन तुल्यं वृद्धापि
कन्येव भवेत् पुरन्ध्री ॥ ४ ॥

घायके फूल, हरड, बहेडा, आमला, जामुनकी त्वचा, लोह
घृत और मुलहठी इनका लेप बारंवार करनेसे वृद्धा स्त्रीभी कन्या
समान होजाती है ॥ ४ ॥

पिकाक्षबीजेन मनोजगेहं विलिप्य योषा नियमं
चरन्ती । हठेन गाढं लभते तदङ्गं दृष्टं नरैरेष
हठेन योगः ॥ ५ ॥

शिलारस और रुद्राक्षके बीजोंसे काममंदिरपर लेप कर
नियमको करनेसे अवश्य मदनमंदिर संकुचित हो जाता
यह योग श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥

मृणालपद्मं पयसा सुषिष्य दृढा समाङ्गी गुटिका
विधेया । यस्या वराङ्गे निहिता क्षणेन कन्यात्व-
मेत्याह स मूलदेवः ॥ ६ ॥

कमलको जडसहित जलसे पीसके और उसकी गुटिका बना
जिसके काममंदिरमें क्षणमात्रको रखदे वह कन्यावत हो जाती
ऐसा मूलदेवने कहा है ॥ ६ ॥

इक्ष्वाकुबीजं स्नुहिसारवेण पिष्ट्वा वराङ्गं परि-
लिप्य तेन । नवप्रसूतापि हठेन नारी कन्या भवेत्
संयमतो न चित्रम् ॥ ७ ॥

कडवी तुम्बीके बीज, सेहुंडी, सारिवाके साथ पीसकर योनि
लेप करनेसे नवप्रसूता स्त्रीकाभी कामभवन कन्याके स
हो जाता है ॥ ७ ॥

पदेशः ७

हिन्दीटीकासहित

(१२७)

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानां तुरङ्गमारासनयामिनी-
नाम् । लेपेन नार्याः स्मरसद्भरन्ध्रं संकोचयत्याशु
हठेन योगः ॥ ८ ॥

नीलकमल, कटेरी, वच, काली मिरच, कनेर, असन, हलदी
सब वस्तु लेप करनेसे तत्काल स्त्रीका काममन्दिर संकुचित
जाता है ॥ ८ ॥

या शक्रगोपं स्वयमेव पिष्ट्वा विलिपति स्त्री च
वराङ्गदेशम् । आहत्य तस्याः कठिनं च गाढं
भवेन्न चात्रास्ति विचारचर्या ॥ ९ ॥

वीरबहूटीको पीसकर जो स्त्री रतिमंदिरपर लेप करती है
सका मदनमंदिर मनोहर और संकुचित हो जाता है इसमें
आश्चर्य नहीं ॥ ९ ॥

मदनकथन सारः क्षौद्रतुल्यैर्वराङ्गः

शिथिलितमपि यस्याः पूरितं भूय एव ।

भवति कठिनमुच्चैः कर्कशं कामिनीना-

मिति निगदति योगं रन्तिदेवो नरेन्द्रः ॥ १० ॥

मैमफल, कथानसार यह बराबर शहद डालकर जो काममंदिरमें
लेप करे तो वह स्थान कर्कश और कठोर होजाता है, यह योग रंति-
देव नरेन्द्रने कहा है ॥ १० ॥

अश्वगन्धैर्लिपैद्योनिं गाढीकरणमुत्तमम् ॥

असगंधका योनिपर लेप करे तो योनि गाढी होती है ॥

अथ स्त्रीद्रावणम्

यद्यप्यष्टगुणाधिको निगदितः कामोऽङ्गनानां
सदा नो याति द्रवतां तथापि झटितिस्त्री कामिनां

(१२८)

कामरत्न

सफा उ

संगमे । तस्माद्भूषजसंप्रयोगविधिना संक्षेपतो
द्रावणं किञ्चित्पल्लवयामि नीरजदृशां प्रीत्या परं
कामिनाम् ॥ ११ ॥

यद्यपि स्त्रियोंको कामदेव आठ गुणा अधिक कहा है तब
संगममें द्रवीभूत नहीं होती हैं इस कारण संक्षेपसे द्रवीभूत हो
औषधी कहते हैं, जिसके होनेसे कामिनियोंको परम प्रीति
होती है ॥ ११ ॥

सिन्दूरचिचाफलमाक्षिकाणि तुल्यानि यस्या मद-
नातपत्रे । प्रलिप्य तासां पुरुषप्रसङ्गात्प्रागेव वीर्यं
च्युतिमातनोति ॥ १२ ॥

सिन्दूर, इमलीका फल, शहद इनको बराबर ले कामध्वजपर
कर स्त्रीसे रति करे तो शीघ्रही स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ १२ ॥

व्योषं रजः क्षौद्रसमन्वितं वा क्षिप्तं यदि स्यात्स्मर-
यंत्रगेहे । द्रुता भवेत्सा सहसैव नारी दृष्टः सदायं
किल योगराजः ॥ १३ ॥

त्रिकुट्टेका चूर्ण शहदके साथ रतिस्थानमें डालनेसे पुरुषके प्रसंग
स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत हो जाती है । यह योगराज देखा
है ॥ १३ ॥

सुपक्वचिञ्चाफलघोषमूली गुडं तथा साक्षिक-
तुल्यभागम् । अमीभिरालिप्य पुनः सुलिङ्गं बीजं
करोत्याशु नितम्बिनीनाम् ॥ १४ ॥

पक्के इमलीके फल, मूली, गुड, शहद ये सब वस्तु कामध्वज
लेप कर रति करनेसे स्त्री शीघ्र द्रवीभूत होती है ॥ १४ ॥

सटी कणा क्षौद्रमहेशबीजैः कर्पूरतुल्यैरुपलिप्य
लिंगम् । शतं नरो यः सविलासिनीनां रेतः प्रपातं
कुरुते हठेन ॥ १५ ॥

कचूर पीपल, शहद, पारा, कपूर ये सब कामध्वजपर
लेपन करजो पुरुष रति करता है वह सौ स्त्रियोंको द्रवीभूत
करसकता है ॥ १५ ॥

पारावतपुरीषं च मधुना सैन्धवैर्युतम् ।

लिंगस्य लेपनात्तेन स्त्रीणां द्रावणमुत्तमम् ॥ १६ ॥

कबूतरकी बीट, शहद, सेंधा ये कामध्वजपर लेपकर रति
करनेसे स्त्री द्रवीभूत हो जाती है ॥ १६ ॥

गोक्षुवातक्यपामार्गरसेन लिंगलेपनात् ।

तत्क्षणाद्भवते नारी पद्मपत्रे यथा पयः ॥ १७ ॥

गोखरू, बैंगन और अपामार्गके रसका कामध्वजपर लेप करनेसे
सौ क्षण स्त्री ऐसी द्रवीभूत हो जाती है जैसे कमलपत्र-
पर जल ॥ १७ ॥

पिप्पली चन्दनं चैव बृहती पक्वातन्तिडी ।

एतैर्लिङ्गप्रलेपेन द्रवेन्नारी न संशयः ॥ १८ ॥

पीपली, लालचन्दन, कटेहरी, पक्की इमली इनका कामध्वजपर
लेप करनेसे स्त्री द्रवीभूत होजाती है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १८ ॥

अगस्तिपत्रद्रवसंयुतेन मध्वाज्यसंमिश्रितकंटकणेन ।

लिप्त्वा ध्वजं यो रमतेऽङ्गनानां स शुक्रमाकर्षात
शीघ्रमेव ॥ १९ ॥

अगस्तिके पत्तोंके रसके सहित उसमें मधु घृत और सुहागा मि
कर जो स्त्रियोंसे रमण करते हैं उनसे बहुत शीघ्र स्त्री द्रवी
होती है ॥ १९ ॥

सलोध्रधतूरकपिप्पलीनां क्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम् ।
लेपेन लिंगस्य करोति रेतश्च्युतिं विपक्षप्रमदाजनस्य ॥ २० ॥

लोध, धतूरा, पीपली, कटेहरी, पीपलामूल इनमें शहद मि
लेप कर जो रति करता है उससे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवी
होजाती है ॥ २० ॥

तुरगसलिलमध्ये भावितं क्षेत्रमाषं
मरिचमधुकतुल्यां पिप्पलीं पेषयित्वा ।
परिरमति विलिप्य स्वीयलिङ्गं नरो यः

प्रभवति वनितानां कामकल्लोल मानः ॥ २१ ॥

असगंध जलके मध्यमें क्षेत्रमाष (उडद) मिरच मुसह
समान पीपलको पीसकर इसको कामपताकापर लेप कर स्त्री
विहार करनेसे स्त्री बहुत शीघ्र द्रवीभूत होती है ॥ २१ ॥

बिल्वपुष्पं सुकर्पूरं मुण्डीपुष्पं च पेषितम् ।

लिंगलेपेन रामाणां द्रावो भवति संगमे ॥ २२ ॥

बेलका फूल, कपूर, मुंडीके पुष्प इनको पीसकर कामध्वजपर
रनेसे शीघ्र स्त्री द्रवीभूत होती है ॥ २२ ॥

बृहतीफलमूलानि पिप्पल्यो मरिचानि च ।

मधु रोचनया सार्द्धं लिङ्गलेपे द्रवन्ति ताः ॥ २३ ॥

कटेहरीके फल और जड, पीपल, काली मिर्च, शहद, गोरोच
मिलाय कामध्वजपर लेप कर रमण करनेसे स्त्री द्रवी
होती हैं ॥ २३ ॥

क्षौद्रगंधकलेपेन शिलायुक्तेन तत्फलम् ।

उपहारपशो रक्तं गृह्णीयादन्तरिक्षतः ॥ २४ ॥

तच्छुष्कं चूर्णितं स्थाप्यं पुष्पे रक्ताश्वमारजे ।

तत्पुष्पं धारयेद्वस्त्रे तज्जर्जन्यङ्गुष्ठयोगतः ।

आर्वत्यं सम्मुखं स्त्रीणां दृष्टमात्रे द्रवन्ति ताः ॥ २५ ॥

शहद, गंधकम नशिलके लेपसे भी कार्य सिद्ध होता है, भेटके पशुका रक्त अन्तरिक्षसे ग्रहण कर उसको सुखाय चूर्ण कर लाल कनेरके फूलमें धारणकर उसको वस्त्रमें बांध तर्जनी (अँगूठेके निकटकी अँगुली) और अँगूठेसे उसको धारण अरे, स्त्रीके सम्मुख होतेही वह अवश्य द्रवीभूत होजाती है ॥ २४ ॥ २५ ॥

जम्बीरफलमध्ये तु मूलं वृश्चिककण्टकम् ।

क्षिप्त्वा बद्ध्वा स्त्रियै दद्याद्घ्राणमात्रे द्रवन्ति ताः ॥ २६ ॥

जम्बरी नींबूके बीचमें श्वेतपुनर्नवाकी जड रखकर बांधकर स्त्रीको दे तो सूंघनेमात्रसे द्रवीभूत होती है ॥ २६ ॥

आहरेद्वामजङ्घां तु टिट्ठिभस्य तु दक्षिणः ॥ २७ ॥

तन्मध्ये प्रक्षिपेद्भूज्जपत्रमोङ्कारलेपितम् ।

रक्ताश्वमारपुष्पेण मुखं तस्य निरोधयेत् ।

कर्णोपरि स्थितं तेन दृष्ट्वा स्त्री द्रवति ध्रुवम् ॥ २८ ॥

टिट्ठिभकी बाई जंघा लाकर शुद्ध करके फिर उसके बीचमें ओंकार लिखाभोजपत्र डाल चारों ओर लेप कर रखे और लाल कनेरके फूलसे इसका मुख बंद कर दे । उसे चतुरपुरुष कानपर रख लेवे तो देखतेही स्त्री द्रवीभूत होजाती है ॥ २७ ॥ २८ ॥

जलेन लाङ्गलीमूलं पिष्ट्वा हस्ते प्रलेपयेत् ।

हस्तेन स्त्रीकरस्पर्शं द्रवत्यग्नौ घृतं यथा ॥ २९ ॥

(१३२)

कामरत्न

सप्तम-

कलिहारीकी जड़को जलसे पीसकर हाथमें लेप कर उसका धूल
छूतेही इस प्रकार स्त्री द्रवीभूत हो जाती है जैसे अग्निसे घृत ॥ २९ ॥

मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रयुक्तै-
विमलमधुविमिश्रैर्मनवो लिप्तलिङ्गः।

स्मरति रतिविलासे कष्टसाध्यां च नारी
समुचितरतिरागां संविदध्यादवश्यम् ॥ ३० ॥

कालीमिरच, धतूरेके बीज, पीपल, लोध ये सब पीस शहदमें
मिलाकर कामध्वजपर लेप करनेसे रतियुद्धमें कठिन स्त्रीभीमवश्य
पराजित होजाती है ॥ ३० ॥

सर्वेषां द्रवयोगानां मन्त्रराजं शिवोदितम् ।

जपेदष्टोत्तरशतं तत्र योगस्य सिद्धये ॥ ३१ ॥

इन सब द्रवीभूत होनेके योगोंका एक मंत्र शिवजीने कहा है जिससे
ये योग सिद्ध होते हैं । इस योगकी सिद्धिके निमित्त एक सौ आठ बार
मन्त्र जपना चाहिये ॥ ३१ ॥

मन्त्र—“ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय

द्रावयस्त्रीणां मदं पातयस्वाहा ठः ठः” ॥ इति ॥ ३२ ॥

मन्त्र यह है कि—“ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय द्रावय
स्त्रीणां मदं पातयस्वाहा ठः ठः” ॥ इति ॥ ३२ ॥

अथ कामध्वजस्थूलीकरणम्

दृढीकरणं च

संकुष्ठमातङ्गबलाबलानां वचा श्वगन्धागजपिप्पलीनाम्
तुरङ्गशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेन लिङ्गं मुसलत्वमेति ॥ ३३ ॥

उपदेशः ७

हिन्दीटीकासहित

(१३३)

कूठ, पीपल, दोनों खरेटी, वच, असगन्धा, गजपीपल, कनेर, इनका मक्खनके साथ लेप करनेसे ध्वजा मूसलके समान कठोर होती है ॥ ३३ ॥

दिनेदिने यदा ह्येवं सुधीः कुर्यात्प्रयत्नतः ।

तदास्थूलं भवेल्लिङ्गं निश्चितं नात्र संशयः ॥ ३४ ॥

जो बुद्धिमान् दिन दिन यत्नपूर्वक यह प्रयोग करता है तब उसकी ध्वजा स्थूल होजाती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३४ ॥

सलोध्रकाश्मीरतुङ्गगन्धा मातङ्गगन्धापरिपाचि-

तेन । तैलेन वृद्धिं खलु याति लिङ्गं वाराङ्गनालो-
कमनोहरं तत् ॥ ३५ ॥

लोध, केशर, असगंध, पीपल, शालपर्णी इनको तेलमें पकाकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि होती है । यह वैश्याओंको मनोहर है ।

भल्लातकास्थिजलशूकमथाजपत्रमन्तविदाह्य

मतिमान् सह सैन्धवेन । एतद्विरूढबृहती-

फलतोयपिष्टमालेपनं महिषवद्विमलीकृतेऽङ्गे ॥

स्थूलं महत्तरतुरङ्गमतुल्यमाशु शेफः करोत्यभिमतं

न हि संशयोऽस्ति ॥ ३६ ॥

भिलावेकी मींगी, शेवाल, कमलपत्र इन तीनोंको जलाकर सेंधा-
निमक मिलाय और बड़ी कटेहरीके साथ जलसे पीसकरके आलेपन
करे तो महिषकी सदृश ध्वजा होती है और तुरंगके समान ध्वजा हो
जाती है और दृढ होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ३६ ॥

सूतकं मरिचं कुष्ठं नागरं कण्टकारिका ॥

अश्वगन्धा तिलं क्षौद्रं सैन्धवं श्वेतसर्षपाः ॥ ३७ ॥

अपामार्गो यवा माषाः पिप्पलीं पेषयेज्ज

लेपोऽयं कुरुते वृद्धिं लिङ्गस्य दृढतां ध्रुवम् ।

मासमात्रं सदा लिप्त्वा मर्दयेच्च दिवानिशम् ॥ ३८ ॥

पारा, कालीमिर्च, कूट, सोंठ, कटेहरी, असगंध, तिल, शहद, सेंधा श्वेतसरसों, चिरचिटा, जौ, उडद, पीपल इनको जलके साथ पीसकर लेप करनेसे ध्वजाकी वृद्धि और दृढता होती है, एक महीनेमात्र इसका लेप और मालिश दिन रात करना चाहिये ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

वराहवसया लिङ्गं मधुना सह लेपयेत् ।

स्थूल दृढं च दीर्घं च मासाल्लिङ्गं प्रजायते ॥ ३९ ॥

सूकरकी चरबी शहदसे मिलाय लेप करनेसे एक महीनेमें ध्वज स्थूल और दृढ होजाती है ॥ ३९ ॥

अश्वगन्धा वचा कुष्ठं बृहती च शतावरी ।

तिलं तैलेन संपक्वं तल्लेपः स्थूललिङ्गकृत् ॥ ४० ॥

असगंध, वच, कूठ, कटेरी, शतावरी, इनको तिलके तेलसे पकाकर लेप करनेसे लिंग स्थूल होता है ॥ ४० ॥

अश्वगंधा वरी कुष्ठं मांसी सिंहोफलान्वितम् ।

चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत् ।

स्तनलिङ्गकर्णपाणिवर्द्धनं भक्षणादितः ॥ ४१ ॥

असगंध, शतावरी, कूट, जटामांसी, कटेरीके फल इनको चौगुने दूध और तिलके तेलसे पकावे । इसके सेवनसे स्तन, ध्वज, कर्ण पाणि आदिकी वृद्धि हो जाती है ॥ ४१ ॥

टङ्कणं च महाराष्ट्री जम्बूसूकरतैलकम् ।

मधुना सह लेपेन लिङ्गं स्यान्मुसलोपमम् ॥ ४२ ॥

उपदेशः ७

हिन्दीटीकासहित

(१३५)

सुहागा, जलपीपल, जामुन, सूकरका तेल इनको शहदके साथ लेप करनेसे ध्वजा मूसलके समान होजाती है ॥ ४२ ॥

महिषीनवनीतं च मुशलीचूर्णमिश्रितम् ॥ ४३ ॥

धान्यराशिस्थितं भाण्डे सप्ताहाच्च समुद्धरेत् ।

तेन प्रलेपयेत्लिङ्गं मासैकाद्वर्द्धते ध्रुवम् ॥ ४४ ॥

भैंसके मक्खनमें मूशलीका चूर्ण मिलाकर बर्तनमें डाल धान्यमें रख दे, फिर सात दिनमें उधारकर लिंगपर एक महीने लेप करनेसे अवश्य ध्वजकी वृद्धि होती है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

मुशली शीतला भक्ष्या लिङ्गवृद्धिकरी मता ।

मार*णोत्थं कृमि चैव कण्टकारीफलं जलैः ॥ ४५ ॥

पिष्ट्वा लिंगप्रलेपेन स्थूलं भवति निश्चितम् ।

तद्वच्च मुशली साज्या लेपाल्लिंगस्य दाढ्यकृत् ॥ ४६ ॥

मुशली, आरामशीतला खानेसे लिंगकी वृद्धि करनेवाली है । घतूरा, लाख, कृमि, कटेहरीके फल इनको जलसे पीसकर लेप करनेसे कामध्वजा अवश्य स्थूल होजाती है । इसी प्रकार मुशली घृतका लेप ध्वजाकी दृढ करता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

पिप्पलीलवणक्षीरसितालेपोपि दीर्घकृत् ।

मांसी वाक्षफलं कुष्ठमश्वगंधा शतावरी ।

तैले पक्त्वा प्रलेपेन लिङ्गस्थौल्यकरं ध्रुवम् ॥ ४७ ॥

पीपल, सैंधालवण, दूध, मिश्री इनका लेप करनेसे ध्वजा दृढ होती है । अथवा जटामांसी, बहेडा, कूठ, असगंध, शतावरी इनको तेलमें पकाकर लेप करनेसे ध्वजा स्थूल होजाती है। इसमें सन्देह नहीं ॥ ४७ ॥

* वमनोत्थं इति वा पाठः ।

रोहितामत्स्यपित्तं तु जलौका लाङ्गली सदा ।

अनेन मर्दयेल्लिङ्गं वर्द्धते मुसलोपमम् ॥ ४८ ॥

रोहू मछलीका पित्ता, जोंक और कलिहारीको ध्वजाकी जड
मर्दन करनेसे ध्वजा मूसलके समान वृद्धिको प्राप्त होती है ॥ ४८ ॥

सूतको ह्यश्वगन्धा च रजनी गजपिप्पली ।

सितायुक्तं जलैः पिष्ट्वा मासैकं लेपयेत्तदा ॥ ४९ ॥

अद्भुतं वर्द्धयेल्लिङ्गं योनिकर्णस्तनानि च ॥ ५० ॥

पारा, असगंध, हलदी, गजपीपल, मिश्री ये सब वस्तु जल
साथ पीसकर एक महीने पर्यंत लेप करनेसे ध्वजा अद्भुत प्रकार
बढती है तथा योनि, कान स्तन, बढते हैं ॥ ४९ ॥ ५० ॥

यो मर्कटीमूलमजाजलेन व्यालुप्तकोशः शयने
निशायाम् । पिष्ट्वा ध्वजं लिम्पति तस्य कामं
भवेदयोदण्डमिव क्षणेन ॥ ५१ ॥

जो कौंचकी जडको अजा (मेढासिंगी) औषधीके साथ (य
बकरीके मूत्रके साथ) पीसकर शयनके समय रात्रिमें लेप करत
है उसका मदनध्वज लोहदण्डके समान होजाता है ॥ ५१ ॥

ह्यारिपत्नीनवनीतमध्ये वचाबलाभागरसामयैश्च ।

लेपेन लिङ्गं सहसैव पुंसां लोहोपमं स्यादिति दृष्टमेतत् ५२

जो मनुष्य भैंसीके मक्खनमें वच, खरेंटी और पारा मिलाय लेप
करे तो तत्काल मदनध्वज लोहदण्डके समान हो जाता है । यह
देखा हुआ योग है ॥ ५२ ॥

कृष्णापराजितामूलं ग्राह्यं खदिरकीलकैः ।

कृष्णसूत्रैः कटिं बद्ध्वा उर्द्धलिङ्गं करोति च ॥ ५३ ॥

उपदेशः ७

हिन्दीटीकासहित

(१३७)

कृष्णा, विष्णुकान्ताकी जड़, खदिर की कीलकसे ग्रहण कर काले तागेसे कमरमें बांधे तो रतिध्वजको दृढ़ करती है ॥ ५३ ॥

देवदालीरसं धात्री क्षीरपानत्स्थिरो ध्वजः ।

इत्येवं सर्वयागानां मन्त्रराजः शिवोदितः ।

अनेन मंत्रितं कृत्वा मासैकं लेपयेत्ततः ॥ ५४ ॥

वन्दालीका रस, आमला और दूध पीनेसे ध्वजा स्थिर होती है इस प्रकार इन सब योगोंमें शिवजीका कहा हुआ मन्त्रराज है, इस मंत्रसे अभिमंत्रित कर एक मास पर्यन्त लेपन करे ॥ ५४ ॥

मन्त्रराज :-“ॐ नमो भगवते उड्डामहेश्वराय सव
सव प्रसव कुरु स्वाहा ठः ठः” ॥

मन्त्रराज :-“! ॐ नमो भगवते उड्डामहेश्वराय सव सव प्रसव
प्रसव कुरु कुरु स्वाहा ठः ठः” ॥

दृढीकरणं तु विनामन्त्रेण कार्यम् ॥ इति लिङ्ग-

स्थूली कारणम् (दृढीकरणम्) ॥

दृढीकरण तो विना मन्त्रसेही करे ॥

इतिलिङ्गस्थूलीकरणम्

अथ स्तनवर्द्धनम्

उत्थापनंच

मातङ्गकृष्णाप्यधवाजगन्धावचायुता पर्युषिताम्बुमिश्रा ।

ह्यारिपत्नीनवनीतयोगात्कुर्वन्ति पीनं कुचकुम्भयुग्मम् ॥ ५५ ॥

गजपीपल, असगंध, वचाइन सबोंको मिलाकर भैंसके मक्खनके साथ कुचोंमें लगानेसे ये शीघ्र दोनों स्तनोंको कुम्भके समान दृढ़ करते हैं ॥ ५५ ॥

(१३८)

कामरत्न

सप्तमः

तैलं वचादाडिमकल्कसिद्धं सिद्धार्थजं लेपनतो
नितान्तम् । नारीकुचौ चारुतरौ च पीनौ कुर्या-
दसौ योगवरः प्रदिष्टः ॥ ५६ ॥

वच, दाडिम इनको सरसोंके तेलमें पकाय इनका लेप करनेसे
स्त्रीके स्तन अत्यन्त सुन्दर पुष्ट होते हैं, यह प्रयोग बहुत
श्रेष्ठ कहा है ॥ ५६ ॥

श्रीर्पाणिकाया रसकं तु सिद्धं तिलोद्भवं तैलवरं
प्रदिष्टम् । लेपेन वक्षोजयुगे च शीघ्रं वृद्धिं प्रयातः
पतिते रमण्याः ॥ ५७ ॥

श्रीपर्णी (कम्भारीके) रसमें सिद्ध कर तेल बनाले इसको दोनों
उरोजोंपर लगानेसे गिरे हुए भी स्त्रीके कुच उठ आते हैं ॥ ५७ ॥

प्रथमकुसुमकाले नस्ययोगेन पीतं
सनियममथवा स्यात्तन्दुलाभो युवत्याः ।
कुचयुगलसपीनंक्वापि नो याति पातं
कथित इति पुरैवं चक्रदत्तेन योगः ॥ ५८ ॥
शालितन्दुलोदकं कर्षमात्रं वामदक्षिणा नासाभ्यां
नस्यं देयम् ॥

अथवा प्रथम रजोदर्शनके समय युवती चावलोंका जल नस्य योगसे
नियमपूर्वक सेवन करे तो किसी समयमेंभी उसके कुचोंका पतन नहीं
होता है यह योग चक्रदत्तेन कहा है । शालितण्डुलका जल एक
कर्ष बाई दाहिनी नासिकाके छिद्रसे नासलेना चाहिये ॥ ५८ ॥

*मुण्डीचूर्णं दशपलं तोयैश्चतुर्गुणैः पचेत् ।

अर्द्धशेषं हरेत्क्वाथं क्वाथार्द्धं तिलतैलकम् ॥ ५९ ॥

तैलशेषं पचेत्तेन नस्यं पानं च कारयेत् ।

पतितं यौवनं स्त्रीणां मासादुत्तिष्ठते ध्रुवम् ॥ ६० ॥

दश पल मुण्डी वा सोंठका चूर्ण लेकर उसे चौगुने जलमें पकावे आधा रहजाय तब इसमें तिलका तेल डालदे जब क्वाथ जलजाय तेलमात्र रसजाय तब उसको नस्य और काममें लावे, इसके गिरे हुये स्त्रीके कुच एक महीनेसे फिर उठ आते हैं ॥ ५९-६० ॥

श्यामा निशा बला लाजा लवणं क्वाथयेत्समम् ।

तोये चतुर्गुणे पाच्यं पादशेषं समाहरेत् ॥ ६१ ॥

तिलतैलं क्वाथपादं तैलार्द्धं महिषीघृतम् ।

स्नेहशेषं पचेत्तैलं नस्येन मासमात्रतः ॥ ६२ ॥

बालास्त्रीवृद्धनारीणां यौवनं कुरुतेऽद्भुतम् ॥ ६३ ॥

प्रियंगु, हलदी, खिरंटी, खील, सैध इनका क्वाथ करके चौगुने पानीमें पकावे जब चौथाई रहजाय तब तिलका तेल उसमें डालकर क्वाथ करे तेलसे आधा भैंसका घी ले और जब रस जल जाय तेलमात्र रह जाय तब एक मासेभर नस्य लेय तो बाला स्त्री और वृद्ध स्त्रियोंके यौवन अद्भुत होजाते हैं ॥ ६१-६३ ॥

एरण्डतैलं शकुलस्य तैलं तथामबिल्वस्य रसं गृहीत्वा ।

संमर्दयेद्धूर्ध्वगहस्तकेन तदा स्तनं स्यात्पतितं नवं वै ॥ ६४ ॥

एरण्डका तेल, शीलमत्स्यका तेल और बेलका रस इनको ग्रहण कर ऊपर किये हुए हाथसे कुचोंपर मर्दन करनेसे गिरे हुये स्तनभी नवीन होजाते हैं ॥ ६४ ॥

* शण्डी चूर्ण इति वा पाठः ।

श्रीपर्णीरसकर्काभ्यां तैलं सिद्धं तिलोद्भवम् ।

तत्तैलं तिलके नापि स्तनस्योपरि दापयेत् ॥ ६५ ॥

काठिन्यं वृद्धतां यातः पतितौ चोत्थितौ च तौ ।

वृद्धायाः कन्यकाया वा ह्यबलायाः पयोधरौ ॥ ६६ ॥

श्रीपर्णी (गंभारी) का, रस ककट वृक्ष और तिलका तेल लेकर पकावे और उसे स्तनपर लगावे तो स्तन कठिन और वृद्धको प्राप्त होते हैं और वृद्ध वा कन्याके पयोधर पतित होजाय तो भी वे उत्थित आते हैं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

श्वेतोद्बदकुसुमं नित्यं कृष्णधेनुपयोयुतम् ।

पिष्ट्वा स्तनयुगे देयं भवेत्पीनपयोधरा ॥ ६७ ॥

श्वेत मोथेके फूलको काली गौके दूधके साथ पीसकर दोनों स्तनों पर लेप करनेसे पुष्ट होजाते हैं ॥ ६७ ॥

वचाश्वगन्धासंयुक्ता चाश्वारिपत्रकं तथा ।

गजपिप्पलिकायुक्तं सद्योभिन्नजलेन च ॥ ६८ ॥

पेषयित्वा विधानेन लेपयेत्स्तनमण्डले ।

नयत्ते तु कदाचिद्वै ताम्रतालफलं तथा ॥ ६९ ॥

वच, असगन्ध, असगन्धके पत्ते, गजपीपलके सहित जलसे पीस कर स्तनमण्डलमें लेप करनेसे स्तन पके हुए ताल फलके समान उन्नत होजाते हैं ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

गंभारिपत्रसुरसं तत्समं तिलतैलकम् ।

समानं जलभागं च दत्त्वा पाकं समाचरेत् ॥ ७० ॥

तैलशेषं परिज्ञाय वस्त्रेण शोधयेत्कुचौ ।

दिवाप्रलेपनादेव लोहत्वं जायतेऽचिरात् ॥ ७१ ॥

उपदेशः ७.

हिन्दीटीकासहित

(१४१)

गंभारीके पत्रका रस, तिलका तेल इनके बराबर जल लेकर पाक करे तब तेलमात्र शेष रहजाय तब वस्त्रसे छानकर स्तनपर लेप करनेसे स्तन लोहके समान कठोर हो जाते हैं ॥७०-७१॥
इति स्तनवर्द्धनं स्तनोत्थापनम् ॥

अथ योनिःसंस्कारः

प्रक्षालयेन्निम्बकषायतोयैर्निशाज्यकृष्णागुरु-
गुग्गुलूनाम् । धूपेन योनिं निशि धूपयित्वा
नारी प्रमोदं विदधाति भर्तुः ॥ ७२ ॥

नीमके काढेसे योनिको धोना चाहिये अथवा नीम, हलदी, धूत, काला अगुरु, गुग्गुल इनकी धूप योनिमें देनेसे स्त्री अपने भर्ताको प्रमोद प्राप्त करती है ॥ ७२ ॥

प्रक्षाल्य निम्बस्य जलेन भूयस्तस्यैव वल्केन
विलेपयेच्च । त्यजेच्च रत्याश्चिरकालभूतं गन्धं वरा-
ङ्गस्य न संशयोऽत्र ॥ ७३ ॥

नीमके जलसे प्रक्षालन करके और नीमके छालका लेप करनेसे चिरकाल योनिकी दुर्गन्ध नष्ट होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ ७३ ॥

लोमशातनविधिः

पलाशभस्मान्विततालचूर्णे रम्भाम्बुमिश्रैरुप-
लिप्य भूयः । कन्दर्पगेहं मृगलोचनानां रोमाणि
रोहन्ति कदापि नैव ॥ ७४ ॥

ढाककी भस्म, हरतालकी भस्म इन दोनोंको केलेके जलसे पीस लेप करनेसे स्त्रियोंके मदनमंदिरके रोम कदापि नहीं जमते हैं ॥ ७४ ॥

एकः प्रदेयो हरितालभागः पञ्च प्रदेया जलजस्य

भागाः । सवस्तरोर्भस्म एव पञ्च प्रोक्ताश्च भागाः
कदलीजलार्द्राः ॥ ७५ ॥ संसिद्धपात्रेषु च सप्त-
घस्रं कृत्वा स्मरागारविलेपनं च । रोमाणि सर्वाणि
विलासिनीनां पुनर्न रोहन्ति कदाचिदेव ॥ ७६ ॥

हरिताल एक भाग, शंखकीभस्म पांच भाग, सवस्तरु (पिलखन
की भस्म पांच भाग इनको केलेके जलमें अच्छे पात्रमें छानकर उसमें
सात दिन लेप करने स्त्रियोंके मदनस्थानमें कभी रोम नहीं जम
हैं ॥ ७५-७६ ॥

रम्भाजलैस्सप्तदिनं विभाव्य भस्मानि कम्बोर्म-
सृणानि पश्चात् । नलेन युक्तानि विलेपनेन रोमाणि
निर्मूलयति क्षणेन ॥ ७७ ॥

केलेके जलमें सात दिनतक शंखकी भस्मको भावना दे और न
(खस) तृणसे युक्त कर लेप करनेसे फिर रोम कभी नहीं जमते और
क्षणमात्रमें निर्मूल होजाते हैं ॥ ७७ ॥

तालकं शङ्खचूर्णं तु मंजिष्ठाभस्म किंशुकम् ।
समभागप्रलेपेन रोमखण्डनमुत्तमम् ॥ ७८ ॥

हरताल, शंखका चूर्ण, मंजीठ, टेसूकी भस्म इनको समान भा
लेकर जलसे लेप करनेसे रोम दूर हो जाते हैं ॥ ७८ ॥

तालकं शंखचूर्णं तु पिष्ट्वा च क्षारतोयकैः ।
तेन लिप्त्वा कचा घर्मे स्थिते गच्छन्ति तत्क्षणात् ॥ ७९ ॥

हरताल, शंखका चूर्ण इनको खारी जलसे साथ पीसकर लेप कर
धूपमें स्थित होनेसे बाल उखड जाते हैं ॥ ७९ ॥

उपदेशः ७.

हिन्दीटीकासहित

(१४३)

पूगवृक्षस्य पत्रोत्थद्रवैः पिष्ट्वा तु गन्धकम् ।

तेन लिप्त्वा स्थिते घर्मे रोमखण्डनमुत्तमम् ॥ ८० ॥

मुपारीके पेडके पत्तोंके रसमें गंधक पीसकर लेप कर धूपमें स्थित होनेसे रोम उड जाते हैं ॥ ८० ॥

नराणां खण्डकेशानां छुच्छुन्दर्याश्च तैलतः ।

न निर्यान्ति पुनर्लोपात्रिसप्ताहे कृते सति ॥ ८१ ॥

जिनके खण्डकेश होगये हों उनको छुछुंदरके तेलको तीन सप्ताहतक लगानेसे बाल नहीं जमते हैं ॥ ८१ ॥

कुसुंभतैलतप्तानां सप्तवारं तथा गुणम् ॥ ८२ ॥

कुसुम्भके तेलको तप्त करके सातवार लगानेसे भी यही गुण है ॥ ८२ ॥

सद्योजातस्य महिषीवत्सस्य मलमाहरेत् ।

तल्लिप्त्वा वेष्टयेद्रात्रौ केशान्वातारिपत्रताः ॥

प्रातस्तप्तोदकैः शष्पाः पतंत्यामूलतोत्थिताः ॥ ८३ ॥

तत्कालमें उत्पन्न हुए भैंसके बच्चेका गोबर लावे रात्रिमें इसको बालोंपर लेपकर एरण्डके पत्तोंसे ढक देवे फिर प्रातःकाल गरम पानीसे धोनेसे बाल जडसे गिरजाते हैं ॥ ८३ ॥

पिपीलिकानां कृष्णानां स्थूलानां भूगृहं हरेत् ।

छायाशुष्कं च तच्चूर्णं पञ्चाहं लेपयेत्सदा ॥ ८४ ॥

पूर्ववत्खण्डकेशानां न पुना रोहणं भवेत् ॥ ८५ ॥

बड़ी काली चैंटीके रहनेके स्थानकी मट्टी लाय छायामें सुखावे उसका चूर्ण करले फिर पांच दिन लेप करे तो पूर्वमें खण्ड हुए बाल फिर नहीं जमते हैं । ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

(१४४)

कामरत्न

अष्टम-

शंखं तालं यवं गुञ्जां काञ्जिकैः पेषयेत्सदा ।

लेपात्पतन्तिरोमाणि पक्वपत्रमिव द्रुमात् ।

लेपानाद्धन्ति केशांश्च कटुतैलैर्मनश्शिला ॥ ८६ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने गाढीकरणादिवर्णनं नाम
सप्तमोपदेशः ॥

शंखकीभस्म, हरताल, इन्द्रजौ, गुंजा इनको कांचीके साथ सब
पीस इसके लेपसे तथा बालोंपर कड़वा तेल और मनशिलाका लेप
करनेसे बाल गिरजाते हैं । इति लोमशातन ॥ ८६ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकायां गाढीकरणादि वर्णनं नाम सप्तमोपदेशः ॥ १ ॥

अष्टमोपदेशः

अथ षण्डीकरणम्

तच्छमनं च

नरो मूत्रयते यत्र कृष्णं तत्र तु वृश्चिकम् ।

निखन्याज्जायते षण्ढ उद्धृते तु पुनः सुखी ॥ १ ॥

जहां मनुष्य मूत्र करता है वहां काला बिच्छू गाड़ देनेसे नपुंसक
हो जाता है फिर उखाड़नेसे सुखी होता है ॥ १ ॥

अजामूत्रेण संभाव्यं निशि षड्बिन्दुचूर्णितम् ।

खानपानप्रयोगेण षण्ढत्वं जायते नृणाम् ॥ २ ॥

षड्बिन्दुका चूर्ण बकरीके मूत्रमें भावना देकर रात्रिमें खान पान
प्रयोग करनेसे मनुष्यको नपुंसकता होती है ॥ २ ॥

तिलगोक्षुरयोश्चूर्णं छागदुग्धेन पाचितम् ।

शीतलं मधुना युक्तं पिबेत् षण्ढत्वशान्तये ॥ ३ ॥

तिल, गोखरूका चूर्ण, बकरीके दूधमें पकाय शीतल कर शहदके साथ पिये तो षण्ढपन शांत हो जाता है ॥ ३ ॥

जलौकादग्धचूर्णं तु नवनीतेन भक्षितम् ।

यावज्जीवं न सन्देहः षण्ढत्वं प्राप्नुयान्नरः ॥ ४ ॥

जलौका और कत्तूणका चूर्ण मक्खनके साथ भक्षण करनेसे मनुष्य जीवनपर्यन्त षण्ढ हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ४ ॥

धत्तूरपुष्पभक्ष्येण पुनः संपद्यते सुखम् ॥ ५ ॥

फिर धतूरेके फूलोंका भक्षण करनेसे सुखी होता है ॥ ५ ॥

यो गोविषाणं पतितं च घृष्ट्वा लिपेद्रतौ स्वस्थ

मनोभवास्त्रे । एकान्तकं तत्कुरुतेऽन्यपत्न्या

नोत्तिष्ठते तामपहाय पत्नीम् ॥ ६ ॥

गिरेहुए गौके सींगको घिसकर रति करनेके समय कामास्त्र (शिशु) पर लेप करनेसे फिर वह उस स्त्रीको छोडकर कभी दूसरेसे रति नहीं कर सकता है ॥ ६ ॥

अत्युन्नतं चापरगोविषाणं घृष्ट्वा पुनस्तेन विलिप्य

लिङ्गम् । प्रयाति भूयः प्रकृतं तदङ्गदृष्टो नरैरेष

सदा प्रयोगः ॥ ७ ॥

फिर उससे बडे दूसरे सींगको घिसकर कामास्त्रपर लेप करनेसे फिर अपनी प्रकृतिको प्राप्त होता है, यह प्रयोग देखा हुआ है ॥ ७ ॥

निशाविचूर्णं घनसारचूर्णं समीकृतं बस्तपयो-

वियुक्तम् । भक्तं निपीतं कुरुते निकामं नरस्य

षण्ढत्वमिति प्रसिद्धम् ॥ ८ ॥

हलदीका चूर्ण, कपूरका चूर्ण ये समान भाग लेकर दूधसे पान करने से मनुष्यको षण्ड अर्थात् हिजडा कर देता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ८ ॥

तिलस्य दण्डावितपस्य चूर्णं प्रसाधि रम्भापयसो
ऽर्द्धमासम् । सयावकं शर्करयान्वितं च पीत्वा
हरेत् षण्डकतामवाप्य ॥ ९ ॥

तिल और नागबलाका चूर्ण करके केलेके रसमें लाक्षा रसके सहित भावित करे, यह आधे महीनेकेतक शर्कराके साथ पीनेसे षण्डपन दूर होजाता है ॥ ९ ॥ इति षण्डीकरणं तच्छमनश्च ॥

अथ दुष्टस्त्रीकृतध्वजपातोत्थापनम्

भूमिचम्पकमूलं च सगुवाकं समं तथा ।

तद्भूक्षणाद्भवेत्सद्यो लिङ्गेत्थानं न संशयः ॥ १० ॥

रक्तशाल्मलिमूलं तु शिवं दुर्गा विनायकम् ।

सम्पूज्य विविधैर्द्रव्यैर्निमंत्र्य निशि संयतः ॥ ११ ॥

प्रातस्त्वचं हरेत्सम्यक् शुष्कं कुर्याच्च चूर्णकम् ।

घृतेन पेषितं कृत्वा सैन्धवेन सदा रुचिः ॥ १२ ॥

प्रातर्भुक्त्वा च किञ्चित्तु भोक्तव्यं प्रहरावधि ।

पतितस्य भवेल्लिङ्गस्योत्थानं नात्र संशयः ।

अयोमयं भवेल्लिङ्गं कोद्रवाग्निं विवर्जयेत् ॥ १३ ॥

भुईचम्पेकी जड़ और सुपारी इनको बराबर लेकर भक्षण करने ध्वजा शीघ्र उत्थित होती है ॥ शिव, दुर्गा और गणेशको विधिपूर्वक पूजनकर जितेन्द्रिय हो लालसेमलकी मूलको रात्रिमें निमंत्रण प्रभातकालमें रक्तसेमलकी छाल लाकर उसे सुखाय चूर्ण कर उसको पीसकर उसमें घी और सेंधा मिलाकर कुछ प्रभातसमय

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१४७)

रभरके पीछे खाय तो पतित हुई ध्वजा उठेगी तथा लोहके समान
जायगी इस प्रयोगमें कोदौ अन्न न खाय, दुष्ट स्त्रीका प्रयोग
होगा ॥ १०-१३ ॥

अथ योनिबन्धनं मोक्षणं च

पूर्वोत्थं लांगलीमूलं वामपादस्य पांसुकम् ।

एकत्र कारयेद्धीमान्द्वयेन शुक्तिसंपुटे ॥

लेपयेद्भगबन्धः स्यात्तत्रैः प्रक्षाल्य मुच्यते ॥ १४ ॥

पूर्वमें उगी हुई लांगलीकी जड़को और (साध्याके) वामचर
की धूरिको एकत्र कर बुद्धिमान् इन दोनोंसे दो सीपीको लेपित
कर, इसके लेप करनेसे योनि बन्धन होती है, फिर मट्ठेसे प्रक्षालन
करनेसे छूटती है ॥ १४ ॥

श्मशानचैलभादाय वामपादस्य पांसुकम् ।

सन्ध्यायां बन्धयेत्तेन पोटली भगबन्धनी ॥ १५ ॥

ॐ अमुकीभगं बध्नामि विस्फुरय रन्ध्रशोणितम् ।

मयाकृतं भगबन्धं नास्ति लोके चिकित्सकाः ।; ॥ १६ ॥

पतिर्वा पतिमन्त्रो वा येचान्ये भगमर्दकाः ।

सर्वे वै विमुखं यान्ति वर्जयेत्कामुकैस्तथा ॥ १७ ॥

ॐ *चिठिचिठिखचिटिखचिटिठःठः प्रयोगद्वयस्यायंमन्त्रः

श्मशानमेंसे वस्त्र लावे उसमें (साध्याके वामचरणके नीचेकी धूरि
लाकर संध्याके समय पोटली बांधनेसे योनि का बन्धन होता है ।

अमुकी भगंबध्नामि विस्फुरय रन्ध्रशोणितम् ॥ मयाकृत भगबन्धनं
लोके चिकित्सकाः" इत्यादि ऊपर लिखा मन्त्र पढ़े कि, मैंने

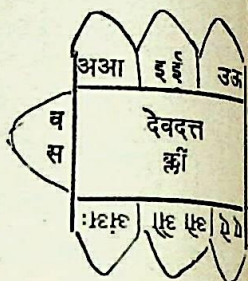
* ॐ चिटि २ खचिटि ठः ठः इति च पाठः ।

(१४८)

कामरत्न

अष्ट

अमुक स्त्रीकी योनिबन्धन की है इससे रन्ध्रशोणित स्फुरना होगा, इस मेरे किये बन्धनका लोकमें कोई चित्कित्सा करने नहीं है, पति वा पतिके मंत्र वा और भगमर्दक चिकित्सा ये संपूर्ण विमुख हो जायंगे, इस कारण कामुक इसमें मौन हैं "। चिठिचिठि खचिठि २ ठः ठः" यह दोनों प्रयोगोंका मन्त्र है ॥१५-१७॥ इस मंत्रको कुंकुम गोरचनसे लिख कटिमें बांधे तो बन्धन होगा, खोल देनेसे मोक्षण होगा ।



वचैलाचन्दनक्षीरैः प्रक्षाल्यामर्दयेद्भुगम् ।

यन्त्रमन्त्रादितन्त्रेण यत्किञ्चिच्छत्रुणा कृतम् ॥ १५ ॥

तत्तस्यैव भवेद्येन सिद्धिमन्त्रस्स उच्यते ॥

सप्तभिर्मन्त्रितं तोयं शुद्धं पूतं पिबेत्तु यः ।

तस्य शत्रुकृतो दोषः शत्रुगेहे भविष्यति ॥ १६ ॥

वच, इलाची, चन्दन इनको पीस दूधमें मिलाय यो प्रक्षालन मर्दन करे तो यन्त्र मन्त्र तन्त्र जो कुछ शत्रुने किया वह सब इस सिद्ध प्रयोगको मन्त्रसहित करनेसे दूर होता है । लिखे मन्त्रको सात बार अभिमन्त्रित कर जो जल पिये शत्रुका किया हुआ दोष शत्रुकेही मंदिरमें होगा ॥ १८ ॥ १९ ॥

मंत्रः—“ॐ वज्रमुष्टि वज्रकीबाडी वज्रबान्धौ
द्वार वज्रपाणीपिबेच्चाङ्गे डाकिनी डापिनी
सर्वाङ्गे मंत्रजयो शत्रुभयो डाकिनीबावों
वायौ कालि कालि शामनते ब्रह्माकी धीमहि
डाकिनी मिलिकरि वरेयो मोरो जीडुभा

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

० (१४९)

पत्ने पानीकरे गुआ करे याने करे सूते करे परि-
हासेकर नयन कटाक्षि करे आपोन हाथे परहाते
जियति संचारे किलनी पोतनि अनित्तुषवरीकरे
एते विज्ञान अहिननगेयो मोहिकरेत्साराकुठिति-
त्स्केमसरूपद्रे । “ॐ मोसिद्धि गुरुरपायस्वीलिंगं
महादेवकी आज्ञा ॥”

मंत्र—“! वज्रमुष्टि वज्रकिवाडी वज्रबांधे दश द्वार वज्रपाणी
बेत् चांगे डाकिनी डापिनी रक्षोव सर्वांगे मन्त्रजयो शत्रु भयो डापिनी
बों जानुवायो कालिकालि शामनते ब्रह्माके धीशु साशु डाकिनी ।
ली करिवरे योमा रोजीडुभातेकरेती पत्नेपानी करे गुआकरे याने-
र सूतेकरे परिहासेकरे नयन कटाक्षिकरे आपोन हाथेपर हाथे जयति
वारे किलनी पोतनी अनितु षवरी करे एते विज्ञान अहिननगे
मोहि करेत्साराकुठि तित्स्के मसरूपद्रे । “! मोसिद्धि गुरुरपाय
लिंगं महादेवकी आज्ञा ॥”

एलाफलं वासवगोपचूर्णं गुप्तं क्षिपेद्योषिदुस्यस्थ-
मार्गे । तस्यैव लिंगस्य वरप्रवेशं स्यात्तत्र नान्पस्य
कदाचिदेव ॥ २० ॥

पूर्वी इलायची, इन्द्रगोप (वीरबहूटी) का चूर्ण जो स्त्रीके मदन-
दरके मार्गमें गुप्त डालदे तो उससे वह डालनेवाला पुरुषही रति
सकता है अन्य कदापि कर नहीं सकता है ॥ २० ॥

गव्येन दध्ना मथितं विधाय प्रक्षालयेत्तेन तदङ्गमुच्चैः ।
विद्वराङ्गं प्रकृतं युवत्या इत्याह कर्त्ता हरमेखलायाः ॥ २१ ॥

गौके दहीको मथकर उससे कामसदनको प्रक्षालन करनेसे पूर्ववत् होजाता है, यह वचन हरमेखलाके कर्तनि कहा है ॥ २१ ॥

आकाशदेशे पतितं गृहीत्वा योषिन्नखं दन्तमलं
सुपिष्ट्वा । लिप्त्वा ध्वजं तेन रमेत्ततो यां तं
विनाशः पुरुषान्तरेण ॥ २२ ॥

आकाश देशमें गिरेहुए स्त्रीके नख, दांतके मैलको ग्रहण कर पीसकर कामध्वजापर लेप करे तो उसको पुरुषान्तरकी इच्छा होती है ॥ २२ ॥

❀ निर्घातिलोहस्य जलेन भूयः प्रक्षालनं कामगृहस्य
कुर्यात् । पुनः समासादयति प्रदृष्टं नारी तदङ्गं
खलु पूर्वरूपम् ॥ २३ ॥

विना घात किये लोहके जलसे कामस्थानका प्रक्षालन करने पतिसंभोगमें स्त्री पूर्ववत् प्राप्त होती है इसमें सन्देह नहीं ॥ २३ ॥

मुहुर्मुहुर्या मथितेन नारी प्रक्षालयेत्सप्तदिनानि
यत्नात् । तस्यास्तदङ्गं पुनरेव भूयात्पूर्वानुरूपं
नहि संशयोस्ति ॥ २४ ॥

वारंवार जो स्त्री मथित (ऊपरकी मलाई निकालकर पानीका बिलोया हुआ छाँछ) से गुप्त स्थानको सात दिनतक प्रक्षालन करे तो उसका गुह्यस्थान पूर्ववत् होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ २४ ॥

* निर्वान्तिलोहस्थेति वा पाठः

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१५१)

इति योनिबंधन और उसका मोक्षण

अथ गृहकोदारकनिवारणम् ।

बधूटनीयमूलं तु तस्या हस्तेन बन्धनात् ।

गृहकोदारकं न स्याद्यावद्धस्ते बन्धनम् ॥ २५ ॥

बधूटनी (गौरीसर) की जड़ हाथमें जबतक बांधे रहे तबतक

गृहकोदारक नहीं रहते हैं ॥ २५ ॥

स यंत्रको गोरोचन कुंकुमसे भूर्जपत्र-

त्रपर लिखकर धान्य राशिमें स्थापन

करनेसे गृहमें कीटादि दोष नहीं होते हैं।

उलु	मुलु
धलु	णलु

अथ नष्टपुष्पायाः पुष्पकरणम् .

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौ भृष्टं-जपायाः कुसुमं

च पिष्टम् । गृहाम्बुना पीतमिदं युवत्याः करोति

पुष्पं स्मरमन्दिरस्य ॥ २६ ॥

ज्योतिष्मती (मालकांगनी) के कोमलपत्तोंको अग्निमें भूने और

पा कुसुमसे पीसकर जी स्त्री पान करती है उसका नष्टराज फिर

वर्तित होता है ॥ २६ ॥

लाङ्गलीकन्दचूर्णं वा अपामार्गस्य मूलकम् ।

इंद्रवारुणिकामूलं योनिस्थं पुष्पबन्धनुत् ॥ २७ ॥

पारावतपुरीषं च मधुना संपिबेत्तु यः ।

रजस्वला भवेन्नारी मूलदेवेन भाषितम् ॥ २८ ॥

तिलमूलकषायं तु ब्रह्मादण्डीयमूलकम् ।

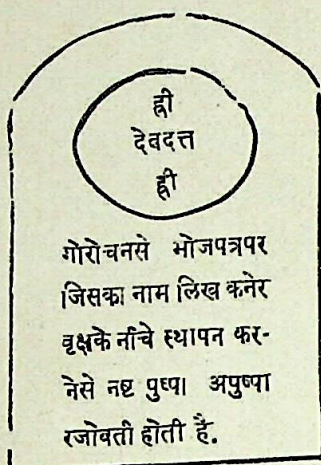
यष्टी त्रिकटुकं चूर्णं क्वाथयुक्तं च पाययेत् ।

पुष्परोधे रक्तगुल्मे स्त्रीणां सद्यः प्रशस्यते ॥ २९ ॥

(१५२)

कामरत्न

अष्ट



कलिहारी औषधीके कन्दका
वा चिरटेकी जड़ वा इन्द्रायणकी
योनिमें रखनेसे रजका बंधन छूटती
है ॥ कबूतरकी बीठ जो शहदमें पिना
कर पीवे वह स्त्री अवश्य रजस्त
होती हैं । ऐसा मूलदेवने कहा
तिलके मूलका काढा वा ब्रह्मदे
जड़, मुलेंठी, त्रिकुटा इनका
क्वाथ करके जो पान करे तो रज

रोध, योनिकी ग्रंथी यह शीघ्र नष्ट होजाती है ॥ २७-२९ ॥

तिलक्वाथे गुडं त्र्यूषं तिलभागयुतं पिबेत् ।

क्वाथं रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पे च योजयेत् ॥ ३० ॥

तिलके क्वाथमें गुड, सोंठ, मिरच, पीपल तिलके भागके साथ
अर्थात् क्वाथ बनाय पिये तो गुल्म, नष्टपुष्प सब दूर होजाते हैं ॥

दूर्वादलं तन्दुलतुल्यभागं निष्पिष्य पिष्टं परि-

पाचितञ्च । तद्भक्षयित्वा वनिता प्रनष्टं पुष्पं

लभेत स्वबलानुरूपम् ॥ ३१ ॥

दूर्वादल और चावल बराबर पीसकर भूने उसे खानेसे स्त्री
हुए पुष्पको अपने बलके अनुरूप प्राप्त कर लेती है यानी रजो
होती है ॥ ३१ ॥ इति रजस्वलाकरणम् ॥

अथ गर्भस्त्रावणम्

तत्राभिनवगर्भस्त्रावणम्

कृते जारे क्षिपेद्योनौ तिलतैलाक्तसैन्धवम् ।

द्रवते तत्क्षणादेव शुक्रपुष्पं स्रवत्यपि ॥ ३२ ॥

उपदेशः ८

हिन्दीटीकासहित

(१५३)

अथ गर्भपातनम्

जो बिधवाके जारसे तत्कालका गर्भ हो तो तिलके तेलमें संधेको माला कर योनिमें धरे तो उसी समय शुक्र पुष्पका मेल पृथक् हो जाव हो जाता है ॥ ३२ ॥

काण्डमेरण्डपत्रस्य योनावष्टाङ्गुलं क्षिपेत् ।

चातुर्मास्यो भवेद्गर्भः स्रवते तत्क्षणादपि ॥ ३३ ॥

अरंडके पत्तोंका मूठा योनिमें अष्ट अंगुल पर्यन्त रखनेसे चार महीनेका गर्भ उसी समय पतित होजाता है ॥ ३३ ॥

देवदालीयचूर्णं तु कर्षेकं तोयपेषितम् ।

पिबेद्गर्भवती नारी गर्भं स्रवति तत्क्षणात् ॥ ३४ ॥

देवदालीका चूर्ण एक कर्ष (सोलह मासे) गर्भवती स्त्री पीवे तो उसी समय गर्भ पतित होजाता है ॥ ३४ ॥

धतूरमूलिका पुष्ये गृहीता कटिसंस्थिता ।

गर्भं निवारयत्येव रण्डावेश्यादियोषिताम् ॥ ३५ ॥

राजिकां तिलतैलञ्च पिष्ट्वा नारी ऋतो पिबेत् ॥

त्रिदिनं तेन गर्भस्य संभवो नैव जायते ॥ ३६ ॥

पुष्य नक्षत्रमें लाई धतूरेकी जड़ कमरमें बांधनेसे रंडा वेश्यादिका गर्भ दूर करती है । राई, तिलका तैल पीसकर स्त्री ऋतुसमयमें तीन दिन पान करे तो फिर गर्भ नहीं रहता ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

बब्बूलस्य तु पुष्पाणि गोदुग्धेन पिबेदृतौ ।

या नारी गर्भसंभूतिः पुनस्तस्या न जायते ॥ ३७ ॥

पिबेत्प्रसूतिसमये काञ्जियुक्तं जयाभवम् ।

पुष्पं न सा प्रसूतिं च धत्ते नो गर्भसंभवः ॥ ३८ ॥

(१५४)

कामरत्न

अष्टम

बबूलके फूल गौके दुग्धसे ऋतुकालमें पीनेसे गर्भ नहीं रहता
प्रसूति समयमें कांजीके सहित नील दुर्वा पीनेसे गर्भ
रहता ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

गृहीतं रेवतीऋक्षे पिप्पलस्य च वन्दकम् ।

गोदुग्धे सोऽपि भोक्तारं महागर्भं निवारयेत् ॥ ३९ ॥

रेवती नक्षत्रमें पीपलका बन्दा लाकर गोदूधके साथ पीनेसे
गर्भ निवारण होता है ॥ ३९ ॥

निर्गुण्डीद्रवसंपिष्टं चित्रमूलं मधुप्लुतम् ॥

कर्षं भुक्त्वा पातयति गर्भं रण्डाकुलोद्भवा ॥ ४० ॥

निर्गुण्डी (सिन्धुवार) के रसमें चीतेकी जड़ पीस शहद मिलाकर
एक कर्ष मात्र खाय तो उसी समय रंडाका गर्भ गिर जाता है ॥ ४० ॥

इति गर्भसावणम् ,

अथ रक्त-निवारणम्

धात्रीं च पथ्यांच रसाञ्जनं च कृत्वा विचूर्णं सजलं
निपीतम् । अत्यन्तरक्तोत्थितमुग्रवेगं निवारयेत्
सेतुनिवाम्बुपूरम् ॥ ४१ ॥

आमले, हरड, रसौत इनका चूर्ण कर जलके साथसे पीने से
रक्त जिसका जाता हो वह निवारण हो जाता है ॥ ४१ ॥

शैलुत्वचा मिश्रिततन्दुलेन विधाय पिष्टं विन-
योजनीयम् । कन्दर्पगेहे मृगलोचनाया रक्तं
न्याशु हठेन योगः ॥ ४२ ॥

शैलु (लहसौडा) वृक्षकी त्वचा और सांठीके मिलाकर मृगलोचन
के योनिमें रखनेसे रक्तका वेग निवारण होता है ॥ ४२ ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१५५)

मूलं तु शरपुङ्खायाः पेषयेत्तन्दुलोदकैः ।

पाययेत्कर्षमात्रं तदतिरक्तप्रशान्तये ॥ ४३ ॥

सरफोंकेकी जड़ चावलके जलके साथ पीसकर कर्षमात्र पीनेसे अधिक रक्त शान्त होजाता है ॥ ४३ ॥

कुशस्य मूलं कदलीदलं वा बला सिंफा वा

बदरीफलं वा । गुडूचिका तण्डुलवारिपीता

स्त्रीणामनेकं रुधिरं जयेच्च ॥ ४४ ॥

कुशकी जड़, केलेका पत्ता, खिरंटी, जटामांसी, गुडूची, बदरीफल इनको चावलके जलके साथ पीनेसे रुधिरका अधिक निकलना मिश्रित होता है ॥ ४४ ॥

कुरण्टकस्य मूलानि मधुकः श्वेतचन्दनम् ।

युक्त्या * पिष्ट्वाक्षमात्रं तु पाययेत्तन्दुलाम्बुना ॥ ४५ ॥

कुरंट (कुटज) की जड़, मुलहटी, श्वेत चन्दन इनको बारीक पीस चावलके जलके साथ अक्षमात्र पीवे ॥ ४५ ॥

सकृत्पीत्वा माषयूषं प्रदरात्परिमुच्यते ।

घृतभृष्टं माषयूषभोजनं श्वेतचन्दनम् ॥ ४६ ॥

चन्दनं क्षी संयुक्तं सघृतं पाययेद्भिषक् ।

शर्करामधुसंयुक्तमसृक्स्त्रबविनाशनम् ॥ ४७ ॥

एक बारही उडदोंका क्वाथ कर उसका रस पीनेसे प्रदरसे छूट जाती है । घीमें भुना हुआ यह उडदोंका यूष और श्वेतचन्दन लेना चाहिये । क्षीरके सहित लालचन्दन और घृत पान करनेसे अथवा शर्करा और मधु पान करनेसे रुधिर पित्तविकार शान्त हो जाते हैं । लोसमें जहां चन्दन है वहां लालचन्दन लेना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

* अक्षमात्रम्—कर्षमात्रम् ।

दावीरसाञ्जनवृषाब्दकिरातबिल्वभल्लातकैरथ
 कृतो मधुना कषायः । पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं
 सशूलं पीतं वितारुणविलोहितनीलकृष्णम् ॥ ४८ ॥
 देवदारु, रसौत, चिरायता, बेल, भिलावा, अडूसा, नागरको
 इनका क्वाथ, कर घृत मधु डालकर पीवे तो कठिन शूल सहित पी
 श्वेत, अरुण, लाल, नील, कृष्ण सब प्रकार प्रदरके उपद्रवकी शा
 हो जाती है ॥ ४८ ॥

अशोकस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं रक्तहरं पिबेत् ।
 पेटारिकायाः पत्रं च माषचूर्णेन संयुतम् ॥ ४९ ॥
 रम्भादलैर्वेष्टयित्वा दाहयेच्च प्रयत्नतः ॥
 तस्य भक्षणमात्रेण ह्यतिरक्तनिवारणम् ॥ ५० ॥
 अशोककी छाल, वच इनसे सिद्ध किया दूध पीनेसे रक्तनाश
 जाता है । पेटारिकाके पत्ते उडदोंके चूर्णके सहित केलेके दलसे वेष्ट
 करके यत्नपूर्वक जलावे, इसके भक्षणमात्रसे अतिरक्तकी निवार
 होती है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

तन्मूलं तन्दुलैः पिष्ट्वा पिष्टकं भर्जयेद्बुधः ।
 तस्य भक्षणमात्रेण रक्तादिविकृतिं हरेत् ॥ ५१ ॥
 इस पेटारिकाकी जड चावलके साथ पीसकर इस पिष्टकी भक्षण
 खाय तो खातेही रक्तादि विकृति दूर होजाती है ॥ ५१ ॥

तस्य बल्कलचूर्णं तु भृष्टतन्दुलचूर्णकम् ।
 भक्षणादेव तद्रक्तं स्त्रीणां शमयति ध्रुवम् ॥ ५२ ॥
 इसीके छालका चूर्ण तथा भूने चावलोंका चूर्ण मिलाकर भक्षण
 करनेसे अवश्यही स्त्रियोंका अतिरुधिर निकलना बन्द होजाता है

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१५७)

शतावर्यस्तु मूलस्य निजद्रावं समाहरेत् ।
 चत्वारिंशत्पलान्येवं वस्त्रपूतं प्रयत्नतः ॥ ५३ ॥
 द्रवतुल्यगवां क्षीरं क्षीरस्य द्विगुणं घृतम् ।
 ❀ जीवंतिकोलमन्दारा अतसी क्षीरकाकुली ॥ ५४ ॥
 मुद्गपर्णी माषपर्णी महामेदा शतावरी ।
 द्राक्षापारशुकोयष्टिजीरकं प्रतिकार्षिकम् ॥ ५५ ॥
 पलाद्धं मधुकं पुष्पं सर्वमेकत्र पाचयेत् ।
 घृतशेषं समुत्तार्य शीते जाते च निक्षिपेत् ॥ ५६ ॥

शतावरीकी जडका स्वरस चालीस पल ले वस्त्रसे छानलेवे, इस
 वक ले तुल्य गौका क्षीर ले दूधसे दूना घृत ले और जीवन्ती, कोलमन्दार,
 अतसी, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, महामेदा, शतावरी, दाख,
 पुनक्का, मुलहठी, जीरा इनको एक एक कर्ष, आधापल महुएके फूल
 सबको एकत्र कर पकावे । जब घृतजाय तब उतार ले ठंडा होने
 पात्रामें रख छोडे ॥ ५३-५६ ॥

पलाष्टकं कणाचूर्णं क्षौद्रं वा पिप्पलाष्टकम् ।
 सितादशपलं योज्यमिदं शतावरीघृतम् ॥ ५७ ॥
 पीपलका चूर्णं आठ पल अथवा शहद आठ पल, मिश्री दश, पल
 समें डाल दे तो यह शतावरी घृत सिद्धि होता है ॥ ५७ ॥
 लेह्यं कर्षं शमेदाशु दुस्साध्यमतिरक्तजम् ।
 दोषं क्षयं च मन्दार्गिण हृद्रोगं ग्रहणीग्रहम् ।
 कामलां वातरोगांश्च अश्मरीं च शिरोग्रहम् ॥ ५८ ॥

१ जीवन्तीशेलुमज्जा च घातकी क्षीरकाकुली इति वा पाठः ।

(१५८)

कामरत्न

अष्टप

इसका एक कर्ष सेवन करे तो रक्तदोष दूर होता है । क्षत
मन्दाग्नि हृद्रोग ग्रहणीरोग दूर होता है तथा कामला वातरोग अस्
रोग दूर होता है ॥ ५८ ॥ इति रक्त निवारण ॥

अथ वन्ध्यानां गर्भधारणम्

जन्मवन्ध्या काकवन्ध्या मृतवत्सा क्वचित्त्रयः ।

तासां पुत्रोदयार्थाय शम्भुना सूचितं पुरा ॥ ५९ ॥

वन्ध्या कई प्रकारकी होती हैं अर्थात् जन्मवन्ध्या काकवन्ध्या
वत्सा (जिसके बालक नहीं जीते हैं) । उनके पुत्र होनेके नि
शिवजीने विधान सूचित किया है ॥ ५९ ॥

तव प्रथमं जन्मवन्ध्याचिकित्सा

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।

एकवर्णगवां क्षीरे कन्या हस्तेन पेषयेत् ॥ ६० ॥

ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलाद्धं तद्दिनेदिने ।

क्षीरशाल्यमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत् ॥ ६१ ॥

एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति गर्भिणी ।

उद्वेगं भयशोकं च दिवानिद्रां विवर्जयेत् ॥ ६२ ॥

पहले जन्मवन्ध्याकी चिकित्सा कहते हैं—जड पत्ते सहित मु
रास्नाको रविवारके दिन उखाडकर लावे, उसको एक रंगवाली न
दूधमें कन्याके हाथसे पिसवावे । ऋतुकालमें वन्ध्या प्रतिदिन दो
पल इसको पान करे । दूध, शालिधान्य, मुंग आदि लघु आहार करे
इस प्रकार सात दिन करनेसे वन्ध्या स्त्री भी गर्भिणी होजाती
औषध सेवनके समय उद्वेग भय शोक और दिनमें सोना न
दे । ६०-६२ ॥

न कर्म कारयेत्किञ्चिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ।

न तथा परमां सेवां कारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ।

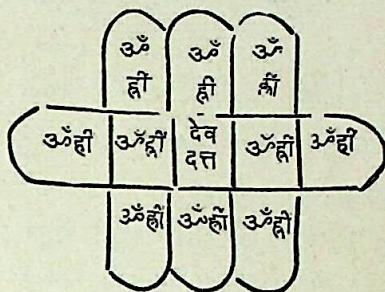
पदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१५९)

पतिसङ्गागदर्भलाभो नात्र कार्या विचारणा ॥६३॥
कोई काम न करे, शीत घामादिको न सहे और न कोई सेवा करावे।

पूर्ववत् फिर दूसरे महीने
कृयाको करे । फिर पतिके
गसे वह गर्भको प्राप्त होती
। इसमें सन्देह नहीं ॥ ६३ ॥
स यन्त्रको गोरोचन कुंकुम
और लाखसे भोजपत्रपर
आध्यानाम सहित लिख पंचा-



तमें स्थापन करे तो वह वन्ध्या गर्भिणी हो, पुत्रवती हो और
भर रक्षा भी होती है, यह सत्य है ॥

एकमेव तु रुद्राक्षं सर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ॥ ६४ ॥

पूर्ववच्च गवां क्षीरैर्ऋतुका ले प्रदापयेत् ।

महागणेशमन्त्रेण रक्षां तस्यानुबन्धयेत् ॥ ६५ ॥

एवं तप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।

ॐ ददन्महागणपते रक्षामृतं मत्सुतं देहि ॥ ६६ ॥

एक रुद्राक्ष और एक कर्ष सुगन्धरास्ना

नीनको पूर्ववत्ऋतुकालमें गौ के दूधसे पीस

दो और महाभागेशके मन्त्रसे रक्षा

करे । इस प्रकार सात दिन करनेसे

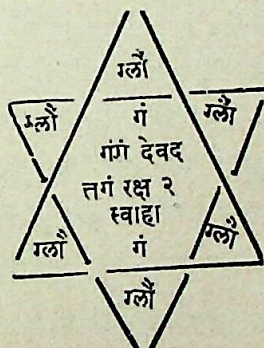
वन्ध्या पुत्रिणी होती है । महा-

गणपति रक्षा देते हैं ॥ ६४-६६ ॥

स यन्त्रको गोरोचन और कुंकुमसे

भोजपत्रपर साध्यानाम सहित लिख कण्ठमें धारण करे तो गर्भकी

रक्षा होती है ॥ यह महागणपति विद्या ।



(१६०)

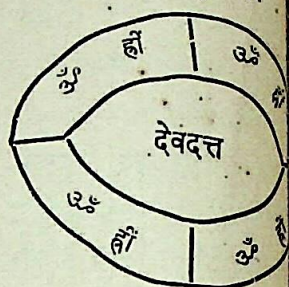
कामरत्न

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ।

पीत्वा च लभते पुत्रं रूपवन्तं न संशयः ।

पथ्यमुक्तं यथापूर्वं तद्वत्सप्तदिनावधि ॥ ६७ ॥

एक कोमल ढाकके पत्रको गर्भिणीके दूधके साथ पीनेसे रूपवान् पुत्रको प्राप्त करती है इसमें सन्देह नहीं । पथ्य—जैसे पूर्वमें कहा है उसी प्रकार सात दिन पर्यन्त करे ॥ ६७ ॥ इस



यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रमें जिस (साध्या) का नामसहित लिख भुजामें धारण करे तो वह बन्ध्या गर्भवती होती है, निश्चय पुत्र होता है ॥

देवदालीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥ ६८ ॥

निष्कत्रयं गवां क्षीरैः पूर्ववत्क्रमयोगतः ।

बन्ध्या च लभते पुत्रं देयं पथ्यं यथापुरा ॥ ६९ ॥

जब पुष्य नक्षत्रमें सूर्य आवे तो देवदाली (बडी तोरई) को ग्रहण करे । उसे गौके दूधसे तीन मासे पिये, पूर्ववत् क्रिया करे तो पूर्ववत् पुत्रको प्राप्त होती है । पथ्य पूर्ववत् दे ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर साध्या-नामसहित लिख बाहु कंठ या कमरमें धारण करनेसे बन्ध्या पुत्रिणी होती है ।

शीततोयेन संपिष्टं शरपुंखीयमूलकम् ।

कर्षं पीत्वा लभेद्गर्भं पूर्ववत्क्रमयोगतः ॥ ७० ॥

शरफोंकेकी जड़ शीतल जलसे पीसे उस पूर्वक्रमसे एक कर्ष बन्ध्या स्त्री पुत्रको पासकती है ॥ ७० ॥

०८	०१	३४	३५
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	२९
३२	३१	०९	१०

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१६१)

मुस्ता प्रियंगुसौवीरं लाक्षाक्षौद्रं समं पिबेत् ।

कर्षं तन्दुलतोयेन वन्ध्या भवति पुत्रिणी ।

पथ्यमुक्तं यथापूर्वं तद्वत्सप्तदिनं पिबेत् ॥ ७१ ॥

मोथा प्रियंगु, सौवीर, लाख, शहद सब समान लेकर चावलके लसें एक कर्ष पीकर सात दिन पथ्यसे रहे तो वंध्या पुत्रवती होती है ॥ ७१ ॥

समूलां सहदेवीं च संगृह्य पुष्यभास्करे ॥ ७२ ॥

छायाशुष्कं च तच्चूर्णमेकवर्णगवां पयः ।

पूर्ववत्पिबते नारी वन्ध्या भवति गुर्विणी ॥ ७३ ॥

जब सूर्य पुष्यनक्षत्रमें हो तब जडसहित सहदेईको ग्रहण कर-
यामें सुखाय चूर्ण करे । उसे गौके दूधसे वंध्या स्त्री पीवे तो
भिणी होती है ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

मूलं शिफा वा किल लक्ष्मणाया ऋतौ निपीय

त्रिदिनं पयोभिः । क्षीरान्नचर्या नियमेन भुंक्ते पुत्रं

प्रसूते वनिता न चित्रम् ॥ ७४ ॥

लक्ष्मणा (श्वेतकटेरी) की जड और जटामांसीके पत्ते इनको ऋतु-
लमें दूधसे तीन दिन स्त्री पान करे और दिनमें भी क्षीरादि लघु
हार करे तो उसके पुत्र होता है, इसमें आश्चर्य नहीं ॥ ७४ ॥

सपिप्पलीकेशरशृङ्गवेरं क्षुद्रोपणं गव्यघृतेन

पीतम् । वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगस्तु सोऽयं

मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ७५ ॥

पीपल, नागकेशर, अदरक, छोटी गोल मिर्च इनको गौके घीसे

पान करनेसे बंध्याभी पुत्रको प्राप्त होती है, यह योग मुनि कहा है ॥ ७५ ॥

तुरङ्गगन्धा घृतवारिसिद्धमाज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा । प्राप्नोति गर्भं नियमं चरन्ती बन्ध्या च नूनं पुरुषप्रसङ्गात् ॥ ७६ ॥

असगन्धको घृतसे भूनकर या जलसे औटाकर घृत और साथ स्नानके दिनमें पान कर नियमसे रहनेसे अवश्य बन्ध्या पुत्रवती होती है । इसको शयनकालमें पीवे ॥ ७६ ॥

पुष्यार्कयोगोद्धृतलक्ष्मणाया मूलं तथा वज्रतरोश्च पिष्ट्वा । अप्येकवर्णापयसा निपीतं स्त्रियः स्मृतं पुत्रकरं मुनीन्द्रैः ॥ ७७ ॥

पुष्य और सूर्यके योगमें लक्ष्मणाकी जड़ और सेहुंड वा यूत जड़ उखाड़कर लावे, इनको पीसकर एकरंगकी गौके दूधके पीनेसे अवश्य पुत्र होता है ॥ ७७ ॥

कन्दमूलं घृतैः पिष्ट्वा ऋतौ सा गर्भिणी भवेत् ॥ ७८ ॥

जो ऋतुमें वाराहीकन्दकी जड़को पीस घीके साथ खाय तो गर्भिणी होती है ॥ ७८ ॥

पुष्योद्धृतं लाक्ष्मणमेव चूर्णं पुंसा निपिष्टं सघृतं निपीतम् । क्षीरोदनं प्राश्य पतिप्रसङ्गाद्गर्भं विदध्यात्तरुणी न चित्रम् ॥ ७९ ॥

पुष्य नक्षत्रमें उखाड़ी हुई लक्ष्मणाका चूर्ण कर उसे घीके पानकर पीछे दूधपान करे तो तरुणी अवश्य गर्भवती होती है सन्देह नहीं ॥ ७९ ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१६३)

कृष्णापराजितामूलं बस्तक्षीरेणसंपिबेत् ।

ऋतुस्नाता त्रिधा या तु बन्ध्या गर्भधरा भवेत् ॥ ८० ॥

काली विष्णुक्रांताकी जड़ दूधसे पीसकर ऋतुसे स्नान कर तीन दिन पिये तो बन्ध्याभी गर्भ धारण करती है ॥ ८० ॥

नागकेशरकं चूर्णं नूतनं गव्यदुग्धतः ।

पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ।

तदृतौ लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ॥ ८१ ॥

नागकेशरका चूर्ण ताजे गायके दूधके साथ सात दिन पर्यन्त पीवे और अधिक घृतयुक्त भोजन करे तो वह स्त्री पतिका संग करके अवश्य पुत्रको प्राप्त होती है ॥ ८१ ॥

पुत्रजीवकपत्रैकं पिबेत्क्षीरैर्ऋतौ च या ॥ ८२ ॥

पतिसङ्गाच्च सा नारी सत्यं पुत्रवती भवेत् ।

तस्य मूलं चैकवर्णाक्षीरैः पीत्वा च पुत्रिणी ॥ ८३ ॥

जो स्त्रीऋतुमें जियेपोतेका एक पत्र दूधके साथ पान करती है वह स्त्री पतिके संगसे अवश्य पुत्रवती होती है अथवा इसकी जड़ एक वर्णवाली गायके दूधसे साथ बहुत महीन पीसकर पीनेसे पुत्रवती होती है ॥ ८२ ॥ ८३ ॥

काकोल्यौ लक्ष्मणामूलं षष्टिकस्य च तन्दुलम् ।

नार्यैकवर्णपियसा पीत्वा गर्भवती ऋतौ ॥ ८४ ॥

क्षीरकाकोली, काकोली, श्वेत कटेरीकी जड़ और सांठीके चावल ऋतु कालमें महीन पीस कर पूर्ववत् दूधके साथ पीनेसे गर्भवती होती है ॥ ८४ ॥

अश्विन्यां बोधिवृक्षस्य वन्दाकं ग्राहयेद्बुधः

गोक्षीरैः पानमात्रेण बन्ध्या पुत्रवती भवेत् ॥ ८५ ॥

(१६४)

कामरत्न

अश्विनी नक्षत्रमें पीपलके वृक्षका वन्दा ग्रहण कर गौके दूधसे
पीवे, इसके पानमात्रसे स्त्री गर्भवती होती है ॥ ८५ ॥

तिलरसगुडकं वै गोपुरीषाग्नियोगात्
तरुणवृषभमूत्रं प्रस्थयुक्तं विपक्वम् ।

ऋतुदिवसविमध्ये सप्तवारैश्च पीतं

जनयति सुतमेकं निश्चितं पुष्पितैव ॥ ८६ ॥ ॥

तिलरस, गुड, तरुण बैलका मूत्र एक सेर इनको गौके गोबरसे
उपलोंकी अग्निमें पकावे इसको ऋतुके दिनोंमें सात बार पीवे तो
अवश्य उत्तम पुत्र होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ८६ ॥

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।

एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ॥ ८७ ॥

त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम् ।

ऋतौ निपीयमाने तु गर्भो भवति निश्चितम् ॥ ८८ ॥

कदम्बपत्र, श्वेतचन्दन, कटेरीकी जड़ इनको बराबर ले बकरीके
दूधसे पीसे इस महौषधिको ऋतुके अन्तमें तीन रात या पांच रात
पीनेसे अवश्य गर्भवती होती है ॥ ८७-८८ ॥

गोक्षुरस्य तु बीजं च पिबेन्निर्गुण्डिकारसैः ।

त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा वन्ध्या भवति पुत्रिणी ॥ ८९ ॥

निर्गुण्डिके रसयुक्त गाखरूके बीज तीन वा सात रात पीनेसे वन्ध्या
अवश्य पुत्रवती होती है ॥ ८९ ॥

कर्कोटबीजचूर्णं तु एकवर्णं गवां पयः ।

ऋतौ निपीयमाने तु गर्भो भवति निश्चितम् ॥ ९० ॥

कर्कोटकके बीजोंका चूर्ण बारीक कर एकरंगकी गौके दूधसे
रात्रिमें पीवे तो अवश्य गर्भवती होती है ॥ ९० ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१६५)

भगाख्ये चैव नक्षत्रे वटवृक्षस्य मूलकम् ।

हस्ते बद्ध्वा लभेत्पुत्रं सुन्दरं कुलवर्द्धनम् ॥ ९१ ॥

भगदेवतावाले नक्षत्र (पूर्वाफाल्गुनी) में वटकी जड़ हाथमें बांध-
नेसे वन्ध्या उत्तम पुत्र पाती है ॥ ९१ ॥

अश्वत्थस्य तु वन्दाकं पूर्वेषुः सुनिमंत्रितम् ।

ऋतुस्नाते तु पीतं स्यादपि वन्ध्या लभेत्सुतम् ॥ ९२ ॥

एकवर्णसवत्साया गोः क्षीरेण सुपेषितम् ।

भावितं वटवन्दाकं पीतं वन्ध्या सुतं लभेत् ॥ ९३ ॥

पपीलके वन्देको पहले दिन निमंत्रण कर दूसरे दिन लाकर ऋतु
स्नानकर पीनेसे वन्ध्या पुत्रवती होती है । एकवर्ण बछड़ेवाली गौके
दूधमें बड़के बन्देको भावना देकर पीवे वन्ध्याके पुत्र होता है ॥ ९२ ॥

॥ ९३ ॥

काकवन्ध्याचिकित्सा

पूर्वं पुत्रवती या सा क्वचिद्वन्ध्या भवेद्यदि ।

काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सास्यास्तु कथ्यते ॥ ९४ ॥

जो पहले पुत्रवती होकर यदि फिर वन्ध्या हो जाय उसको काकवन्ध्या
कहते हैं । उसकी चिकित्सा इस प्रकार कही जाती है ॥ ९४ ॥

विष्णुक्रान्ता समूलां तु पिष्ट्वा दुग्धैस्तु माहिषैः ।

महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भक्षयेत् ॥ ९५ ॥

एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।

गर्भं सा लभते नारी काकवन्ध्या सुशोभनम् ॥ ९६ ॥

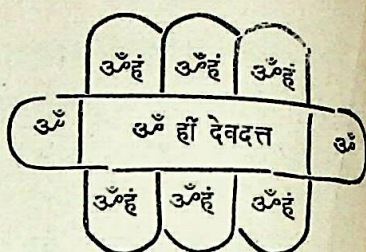
विष्णुक्रान्ताको जड़सहित भैंसके दूधमें पीसकर और भैंसके मक्खन-
नके साथ ऋतुकालमें भक्षण करे इस प्रकार सात दिन करे और
पथ्यसे रहे तो वह काकवन्ध्या अवश्य गर्भवती होती है ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

(१६६)

कामरत्न

अष्टम-

इस यंत्रको गोरोचन,
कुंकुम और लाखसे जिसका
नाम सहित लिख पंचामृतमें
स्थापन करे तो काकवंध्या
प्रसूती गर्भवती होती है ।



अश्वगन्धीयमूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥ ९७ ॥

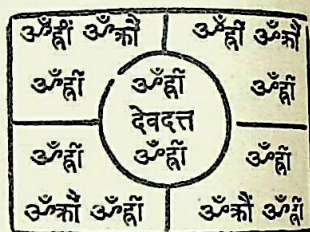
पेषयन्महिषीक्षीरैः पलाढ्यं भक्षयेत्सदा ।

सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या चिरायुषम् ॥ ९८ ॥

पुष्य नक्षत्रमें सूर्य हो तो असगंधकी जड़को ग्रहण करके भस्म

दूधसे पीसकर आधे पल भक्षण
करे तो सात दिनों काकवंध्या
गर्भवती हो चिरायुष्य पुत्रको
उत्पन्न करती है ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्रमें



जिसका नामसहित लिख हाथमें धारण करे तो काकवंध्या प्रसूत
होती है तथा दुर्भगा सुभगा होती है ॥

अथ मृतवत्साचिकित्सा

गर्भं संजातमात्रेण पक्षान्मासाच्च वत्सरात् ।

अभ्रियते द्वित्रिवर्षाद्वा यस्याः सा मृतवत्सका ।

तत्र योगः प्रकर्त्तव्यो यथा शङ्करभाषितम् ॥ ९९ ॥

जिसके बालक उत्पन्न होतेही पक्ष, महीने, वर्ष, दो वर्ष वा तीन
वर्षमें मर जाते हैं वह मृतवत्सा कहलाती है । इसमें शंकरका क
योग करना चाहिये ॥ ९९ ॥

मार्गशीर्षेऽथवा ज्येष्ठे पूर्णायां लेपिते गृहे ॥ १०० ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१६७)

नूतनं कलशं पूर्णं गन्धतोयेन कारयेत् ।

शाखाफलसमायुक्तं नवरत्नसमन्वितम् ॥ १०१ ॥

सुवर्णसूत्रिकायुक्तं षट्कोणमण्डले स्थितम् ।

तन्मध्ये पूजयेद्देवीमेकान्तीं नाम विश्रुताम् ॥ १०२ ॥

गन्धपुष्पाक्षतैर्धूपैर्दीपैर्नैवेद्यसंयुतैः ।

अर्चयेद्भक्तिभावेन मद्यमांसैः समत्स्यकैः ॥ १०३ ॥

मार्गशीर्ष अथवा ज्येष्ठकी पूर्णिमाको अपना घर लीपकर नये कलशमें जल भरकर उसमें सुगन्धित द्रव्य डाले । आम्रशाखा तथा नवरत्न उसमें डाले । सुवर्णसूत्रिका सहित छः कोण मण्डलकी रचना करे । उसके मध्यमें एकांती नाम देवीकी पूजा करे । गन्ध पुष्प अक्षत धूप दीप नैवेद्यसे संयुक्त कर भक्तिभावसे अर्चन करे । मत्स्य भी दे दे ॥ १००-१०३ ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।

वाराही च तथेन्द्राणी षट्सु पत्रेषु मातरः ॥ १०४ ॥

ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी यह छः माता है ॥ १०४ ॥

पूजयेन्मन्त्रबीजैश्च ॐ फैंकारैर्नामविश्रुतैः ।

पूजामंत्रः—“ॐ ह्रीं फैं एकान्तिदेवतायै नमः ।”

अनेन मन्त्रेण पूजा जपश्च कार्यः ॥

दधिभक्तैश्च पिण्डानि सप्तसंख्यानि कारयेत् ॥ १०५ ॥

षट्संख्याः षट्सु पत्रेषु मातृभ्यः कल्पयेत्पृथक् ।

बिल्वाभ्रं सप्तमं पिण्डं शुचिस्थाने बहिःक्षि-
पेत् ॥ १०६ ॥

* ‘ओंकारेण विधि श्रुतः’ इति वा पाठः ।

तद्भुक्त्वा गृहमागच्छेच्चक्राग्रे ॐ यागमाचरेत् ।
 कन्यका योगिनी वामा भोजयेत्सकुटुम्बकैः ॥ १०७
 दक्षिणां दापयेत्तासां देवताग्रे च नान्यथा ।
 विसृज्य देवतां चाथ नद्यांतत्कलशोदकम् ॥ १०८
 सकुलं वीक्षयेद्धीमाञ्छुभेन शुभमादिशेत् ।
 विपरीते पुनः कार्यं यावत्तावत्सुसिद्धिदम् ॥ १०९ ॥
 × प्रतिवर्षमिदं कुर्याद्दीर्घजीवीसुतं लभेत् ॥ ११० ॥

इनको "ॐ ह्रीं फै एकान्तिदेवतायै नमः" इस बीजमंत्रसे पत्रोंमें पूजन कर फैकारका उच्चारण करे और सात पिण्ड दधिभक्त निर्माण कर जप भी करे । छः तो छहों माताओंको पत्रोंमें प्रदान करे और बेलके समान सातवां पिण्ड पवित्र स्थानमें बाहर रखे फिर उसको भक्षण कर घरमें आवे और उस चक्रके आगे याग करे फिर कन्या योगिनी वामा स्त्रियोंको सकुटुम्ब भोजन दे और देवताके आगे उनको दक्षिणा दे फिर देवताको विसर्जनकर उस कलशके जल नदीमें डाल दे और कुटुम्ब सहित बुद्धिमान् उसको देखे । शुभ देखे तो शुभ कहना, विपरीत देखे तो फिर करना । जबतक सिद्धि न तबतक करे । प्रतिवर्ष ऐसा करे तो दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति होती है ॥ १०५-११० ॥ इस यन्त्रको कुंकुमसे भोजपत्रपर साध्या नामसहित लिख उस स्त्रीके हाथमें बांधे तो मृतवत्सा जीव-त्पुत्रिणी होती है ।

ह्रीं क्षः

ह्रीं
क्षः

ह्रीं क्षः

* चक्राङ्गं यावदाचरेत् । इति पाठान्तरम् २ प्रतिमासम् ऐसा पाठ अर्थ-प्रत्येक महीने ऐसा करे ।

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

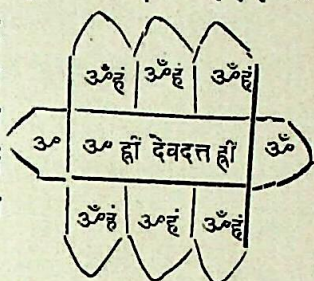
(१६९)

प्राङ्मुखी कृत्तिकाऋक्षे बन्ध्याकर्कोटकीं हरेत् ।

तत्कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिबेत् ।

ऋतुकाले तु सप्ताहं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥ १११ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वदिशाको मुख कर
बन्ध्या स्त्री कर्कोटकीको लावे । उसकी
जड़को जलसे पीसकर एक कर्ष सदा
पीवे इस प्रकार सात दिन ऋतुकालमें
करनेसे दीर्घजीवी पुत्रकी प्राप्ति
होती है ॥ १११ ॥



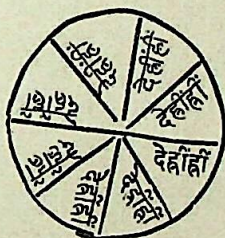
इस यंत्रको गोरोचनसे साध्या नामसहित भोजपत्र पर लिख धारण
करे तो मृतवत्सा जीववत्सा तथा ऋतुमती गर्भवती और सौभाग्यवती
होती है ॥

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा

वमिश्रम् । ऋतो तु पीत्वा सुपतिं प्रयाति दीर्घा-

युषं सा तनयं प्रसूते ॥ ११२ ॥

जो स्त्री बीजपूरकी एक कर्ष जड़को दूधमें सिद्धि कर हविष अन्नमें
मिलाय ऋतुकालमें पान कर पतिके निकट
जाती है वह दीर्घायु पुत्रको उत्पन्न करती
है ॥ ११२ ॥ इस यंत्रको गोरोचन, कुंकुम
और लाख रंगसे जिसका नाम सहित लिख
पंचामृतमें स्थापन करे तो मृतवत्सा पुत्रिणी
होती है ॥



फलघृतम्

मज्जिष्ठा मधुकं कुष्ठं त्रिफला शर्करा बला ।

मेदा * पयस्या काकोली मूलं चैवाश्वगन्धजम् ।

अजमोदा हरिद्रे द्वे हिंगुः कटुकरोहिणी ॥ ११३ ॥

× उत्पलं कुमुदं द्राक्षा काकोल्यौ चन्दनद्वयम् ।

एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ११४ ॥

शतावरीरसं क्षीरं घृतं देयं चतुर्गुणम् ।

सर्पिरेतन्नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते ॥ ११५ ॥

मँजीठ मुलहठी कूठ त्रिफला मिथी खरैटी महामेदा क्षीरकाकोली असगंधकी मूली अजमोदा दोनों हलदी हिंगु कुटकी नीलकमल कुमुदाख काकोली क्षीरकाकोली दोनों चन्दन इन सबको एक कर्ष लेकर एक सेर घी में पकावे, शतावरीका रस दूध घी यह चौगुना डाल करे इस घृतको पान करके मनुष्य रतिमें स्त्रीसे प्रबल होता है ॥ ११३-११५ ॥

पुत्राञ्जनयते नारी मेधाविप्रियदर्शनान् ।

या चैवास्थिरगर्भा स्याद्या नारी जनयेन्मृतम् ॥ ११६ ॥

अल्पायुषं वा जनयेद्या च कन्यां प्रसूयते ।

योनिदोषे रजोदोषे गर्भत्वादे च शस्यते ॥ ११७ ॥

स्त्री इसके सेवनसे बुद्धिमान् पुत्रोंको उत्पन्न करती है जो प्रिय दर्शन होता है । जिस स्त्रीका गर्भ स्थिर न रहता हो वा जिसकी मृतक संतान होती हो वा जिसके अल्पायु संतान होती हो वा जिसकी कन्या ही होती हो वा जिसके योनि और रजमें दोष हो वा जिसके गर्भत्वाव होता हो उन सबके निमित्त यह प्रयोग उत्तम है । वैद्य इसमें लक्ष्मणाकी जड़ भी डालते हैं ॥ ११६ ॥ ११७ ॥

*पयस्या-क्षीरयुक्ता भूमिकूष्माण्डा । ×उत्पलम्-नीलम् ।

उपदेशः८.

हिन्दीटीकासहित

(१७१)

प्रजावर्द्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम् ।

नाम्ना फलघृतं ह्येतद्रहस्यं परिकीर्तितम् ॥ ११८ ॥

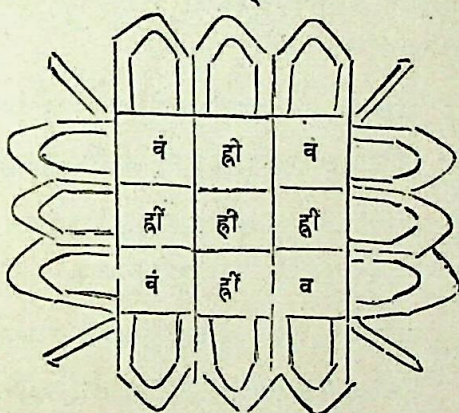
जीवद्वत्सैकवर्णाया घृतमत्र तु दीयते ।

अरण्यगोमयेनात्र वल्लेज्वाला प्रदीयते ॥ ११९ ॥

यह प्रजाका बढानेवाला आयुदाता सब ग्रहका निवारण करनेवाला फलघृत है, अश्विनीकुमारोंका कहा हुआ है । जीते बछड़ेवाली और एक वर्णवाली गौका घी इसमें लेना चाहिये । इसको अरण्य उपलोंकी आंचसे बनावे । घृतपात्र शेष रहनेसे उतार ले, सेवन करे ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

वन्ध्यानां सर्वारिष्टनिवारणयंत्रम्

इस यंत्रको गोरोचन और कुंकुमसे भोजपत्रपर साध्याका नामसहित लिख कंठ या शिरमें धारण करनेसे मृत अपत्या तथा वन्ध्या (अपुत्रिणी) के सब अरिष्ट दूर होते हैं । ज्वर भी नष्ट होता है ॥



अथ गर्भरक्षा

अकस्मात्प्रथमे मासि गर्भे भवति वेदना ।

गोक्षीरैः पेषयेत्तुल्यं पद्मकोशीरचन्दनम् ।

पलमात्रं पिबेन्नारी त्र्यहाद्गर्भः स्थिरो भवेत् ॥ १२० ॥

पहले महीनेमें—अकस्मात् गर्भमें वेदना होती है तो उस समय

पद्माख, खस, लाल चन्दन इनको गौके दूधमें पीसकर एक पलमा
तीन दिन पान करनेसे गर्भ स्थिर हो जाता है ॥ १२० ॥

अथवा मधुकं दारु शाकवृक्षस्य बीजकम् ।

संपिष्य क्षीरकाकोली पिबेत्क्षीरैस्तु गोभवैः ॥ १२१ ॥

अथवा मुलहठी, देवदारु, शाकवृक्षके बीज और क्षीरकाकोली
इनको पीस गौके दूधसे पान करे ॥ १२१ ॥

नीलोत्पलं मृणालं च यष्टीकर्कट शृङ्गिका ।

गोक्षीरैस्तु द्वितीये च पीत्वा शाम्यन्ति वेदनाः ॥ १२२ ॥

दूसरे महीनेमें—नीलकमलकी जड़, मुलहठी, काकडासिंगी इन
बराबर ले गौके दूधके साथ पिये तो दूसरे महीनेकी वेदना शान्त
हो जाती है ॥ १२२ ॥

अथवा श्वत्थवल्कं च तिलं कृष्णं शतावरीम् ।

मञ्जिष्ठासहितां पिष्ट्वा पिबेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ॥ १२३ ॥

अथवा पीपलकी छाल, काले तिल, शतावरी, मंजीठ इनको बराबर
ले पीसकर चाँगुने दूधके साथ पीवे ॥ १२३ ॥

श्रीखण्डं तगरं कुष्ठं मृणालं पद्मकेशरम् ।

पिबेच्छीतोदकैः पिष्टं तृतीये वेदनावती ॥ १२४ ॥

तीसरे महीनेमें—चन्दन, तगर, कूठ, मृणाल (कमलकी जड़),
कमल केशर इनको ठंडे जलके साथ पिये तो तीसरे महीनेकी वेदना
शान्त हो जाती है ॥ १२४ ॥

अथवा क्षीरकाकोलीं बलां पिष्ट्वा पयः पिबेत् ॥ १२५ ॥

अथवा क्षीरकाकोली और सुगंधवाला जलसे पीवे ॥ १२५ ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१७३)

नीलोत्पलं मृणालानि गोक्षुरं च कशेरुकम् ।

तुर्यमासे गवां क्षीरैः पिबेच्छाम्यति वेदना ॥ १२६ ॥

चौथे महीनेमें—नीलोत्पल, कमलकी जड़, गोखरू, कसेरू इनको पीसके गौके दूधके साथ पीनेसे चौथे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है ॥ १२६ ॥

अथवा मधुकं रास्ना श्यामा ब्राह्मणयष्टिकाः ।

अनन्तां पेषयित्वा तु गव्यक्षीरैश्च संपिबेत् ॥ १२७ ॥

अथवा मुलैठी, श्यामाक, ब्राह्मणयष्टि, अनन्तमूल इनको पीसकर गौके दूधके साथ सेवन करे तो चतुर्थमासकी वेदना शान्त हो जाती है ॥ १२७ ॥

पुनर्नवां सकाकोलीं तगरं नीलमुत्पलम् ।

गोक्षुरं पञ्चमे मासे गर्भक्लेशहरं पिबेत् ॥ १२८ ॥

पंचममासमें—पुनर्नवा, काकोली, तगर, नीलोत्पल इनको लेकर गौके दूधसे पिये तो पंचममासकी वेदना दूर होती है ॥ १२८ ॥

अथवा बृहतीयुग्मं यज्ञाङ्गं *कुट्मलं वरम् ।

गोघृतं क्षीरसंयुक्तं पिबेत्पिष्ट्वा च पञ्चमे ॥ १२९ ॥

अथवा दोनों कटेरी, ब्राह्मणयष्टिका, कमलनाल गौके घी और दूधके साथ पंचम मासमें सेवन करे ॥ १२९ ॥

सितां कपित्थमज्जां च शीततोयेन पेषयेत् ।

षष्ठे मासि गवां क्षीरैः पिबेत्क्लेशनिवृत्तये ॥ १३० ॥

छठे महीनेमें—मिश्री, कैथका गूदा, ठंडे जलके साथ पीसकर पिये वा गौके दूधके साथ पीनेसे वेदना शान्त होती है ॥ १३० ॥

* कटक्त्वच भी पाठ है, अर्थात् कुटकी तज ।

अथवा गोकुरं शिशुमधुकं पृश्निपर्णिकाम् ।
 बलायुक्तं पिबेत्पिष्ट्वा गोदुग्धैः पष्ठमासके ॥ १३१ ॥
 अथवा गोखरु, सहिजना, मुलहठी, पृश्निपर्णी, खरेंदी इन
 दूधसे पीस छठे महीनेमें सेवन करे ॥ १३१ ॥
 कशेरुं पौष्करं मूलं शृङ्गाटं नीलमुत्पलम् ।
 पिष्ट्वा च सप्तमे मासिकीरैः पीत्वा प्रशाम्यति ॥ १३२ ॥
 सातवें महीनेमें—कसेरु, पुष्करमूल, सिंघाडा, नीलोफर इन
 पीसकर दूधके साथ पीनेसे सातवें मासकी व्यथा शान्त
 जाती है ॥ १३२ ॥

अथवा मधुकं द्राक्षा शृङ्गाटञ्च कशेरुकम् ।
 मृणालं शर्करायुक्तं क्षीरैः पेयं तु सप्तमे ॥ १३३ ॥
 अथवा मुलैठी, दाख, सिंघाडा कसेरु, कमलकी जड़ इन
 मिश्रीके साथ दूधमें मिलाय पान करे ॥ १३३ ॥
 यष्टी पद्माक्षकं मुस्तं केशरं गजपिप्पलीम् ।
 नीलोत्पलं गवां क्षीरैः पिबेदष्टमासके ॥ १३४ ॥
 आठवें महीनेमें—मुलहठी, पद्माख, मोथा, नागकेशर, गजपीप
 नीलोत्पल इन सबको गौके दूधमें पिये ॥ १३४ ॥

अथवा बिल्वमूलं तु कपित्थं बृहतीफलम् ।
 इक्षुपटोलयोमूलमेभिः क्षीरं प्रसाधयेत् ॥ १३५ ॥
 तत्क्षीरमम्भसा पीत्वा गर्भे शाम्यति वेदना ॥ १३६ ॥
 अथवा बेलकी जड़, कैथ, दोनों कटेरी अर्थात् छोटी बडी, गन्ने
 रस, पटोलकी जड़ इनको दूधमें सिद्ध करे इस दूधको जलके साथ
 पीनेसे आठवें मासकी गर्भकी पीडा शान्त हो जाती है ॥ १३५ ॥ १३६ ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१७५)

विशालाबीजकंकोलं मधुना सह पेषयेत् ।

वेदना नवमे मासि शान्तिमाप्नोति नान्यथा ॥ १३७ ॥

नौवें महीनेमें—इंद्रायनके बीज, क्षीरकाकोली (शीतल चीनी), शहदके साथ पीनेसे नववें महीनेकी व्यथा शान्त होजाती है ॥ १३७ ॥

अथवा मधुकं श्यामा ह्यनन्ता क्षीरकाकुली ॥

एभिःसिद्धं पिबेत्क्षीरं नवमे वेदनावती ॥ १३८ ॥

अथवा मुलैठी, गुडूची, अनन्तमूल, प्रियंगु इनसे सिद्ध किये हुए दूधको पीनेसे नौवें महीनेकी वेदना शान्त होती है ॥ १३८ ॥

शर्करा गोस्तनी द्राक्षा सक्षौद्रं नीलमुत्पलम् ।

पाययेद्दशमे मासि गवां क्षीरैः प्रशान्तये ॥ १३९ ॥

दशवें महीनेमें—मिश्री, मुनक्का, शहद, नीलकमल इनको गौके दूधसे पान करे तो वेदना शान्त होती है ॥ १३९ ॥

अथवा शुण्ठिसंसिद्धं गोक्षीरं दशमे पिबेत् ।

अथवा मधुकं दारु शुण्ठिक्षीरेण संपिबेत् ॥ १४० ॥

अथवा सोंठसे सिद्ध कर गौका दूध दशवें महीनेमें पान करे अथवा मुलैठी, देवदारु, सोंठ गौके दूधसे पिये ॥ १४० ॥

सामान्यचिकित्सा

धात्र्यञ्जनं सावरयष्टिकाक्यं त्र्यहं निपीतं प्रमदा

हठेन । सप्ताहमात्रं विनियोज्य नारी स्तम्भाति

गर्भं चलितं न चित्रम् ॥ १४१ ॥

जो नारी लोध (वा आमला) सौवीरांजन, मुलैठी सात दिन
सावधान होकर पीती है तो उसका गर्भ स्तंभित होता है फिर चलने
मान नहीं होता । वा धनियां, रसौत, लोध, मुलैठी पीवे ॥ १४१ ॥

क्षौद्रं वृषं चन्दनसिन्धुजातं महेन्द्रमाज्यं पयसा
सुपिष्टम् । गर्भं क्षरन्तं प्रतिहन्ति शीघ्रं योगोऽ-
यमुक्तः किल मूलदेवैः ॥ १४२ ॥

शहद अडूसा, चन्दन, सेंधा, इन्द्रजौ, घृत इनको जलसे पीसकर
देनेसे गिरता हुआ गर्भ शीघ्र थम जाता है, यह योग मूलदेवों
कहा है ॥ १४२ ॥

कुलालहस्तोद्भवकर्दमस्य वत्सीपयः क्षौद्रयुतस्य
मात्रम् । गर्भच्युति शूलमयीं निवार्य करोति
गर्भं प्रकृतं हठेन ॥ १४३ ॥

कुम्हारके चाकपर बर्तन बनाते समय जो पतली मिट्टी हाथमें
लगती है उसको ले बकरीके दूधमें डालकर शहदके साथ पिये तो
उससे शूलयुक्त गर्भका गिरना बन्द होकर गर्भस्थापन हो
जाता है ॥ १४३ ॥

कशेरुशृङ्गाटकजीरकाणि पयोघनैरण्डशतावरीभिः ।

सिद्धं पयःशर्करया विमिश्रं संस्थापयेद्गर्भमुदस्य शूलम् ॥ १४४ ॥

कशेरु, सिंघाडा, जीरा, नागरमोथा, एरण्ड और शतावरी इन
सिद्ध किया हुआ जल मिश्री डालकर पीनेसे शूल निवारण करता
है और गर्भको गिरनेसे रोकता है ॥ १४४ ॥

कन्दं कौमुदकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्यमिश्रं पिबेत्
सप्ताहं सितया सुपक्वसबलाशीतीकृतं वायुना ।
गर्भत्नावमरोचकं सपवनं शोकं त्रिदोषं वमि ॥

शूलं सर्वविधं निहन्ति नियमादेवं च यत्तत्स्मृतम् ॥ १४५ ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१७७)

कुमुदके कन्दको शहद, घी दूध मिलाकर पिये अर्थात् इसमें मिश्री डालकर ठण्डा कर इनको नियमसे सात दिन पिये तो गर्भस्त्राव, आरोचक, वातरोग, सूजन, त्रिदोष, चमचमाहट, शूल ये सब नष्ट होजाते हैं ॥ १४५ ॥

ह्रीबेरातिविषामुस्तामरिचैः ॐ संश्रुतं जलम् ।

दद्याद्गर्भे प्रचलिते प्रदरे कुक्षिरुज्यपि ॥ १४६ ॥

ह्रीबेर, अतीस, मोथा, मोचरस, कुटज, जो इनका क्वाथ कर गिरते हुए गर्भमें, प्रदरमें और कोखरोगमें देनेसे शूलादि नष्ट होजाते हैं ॥ १४६ ॥

कुवलयकन्दं सतिलं पीत्वा क्षीरेण मधुसितायुक्तम् ।

गुरुतरदोषैश्चलितं गर्भं संस्थापयेदाशु ॥ १४७ ॥

कमलका कंद, काले तिल इनको शहद मिश्रीयुक्त दूधके साथ पीनेसे भारीदोषसे गिरते हुए गर्भको भी शीघ्र स्तंभन करता है ॥ १४७ ॥

नीलोत्पलमृणालानि मधुकं शर्करातिलाः ।

द्रवमाणेषु गर्भेषु गर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ १४८ ॥

नील कमलकी नाल, मुलहठी, मिश्री, बडी कटेरी ये गिरते हुए

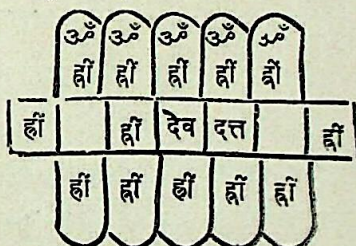
गर्भको स्थापन करती हैं ॥ १४८ ॥

इस यंत्रको गोरोचनसे साध्या-

नामसहित भोजपत्रपर लिख भुजा

या कंठमें धारण करे तो गर्भस्त्रावकी

रक्षा होती है और दुर्भगा सुभगा होती है ॥ इति गर्भस्त्रावरक्षा ॥



* 'मोचशकैः शृतं जलम्' यहभी पाठ है । अर्थ—कदली, कुटजवृक्ष ।

अथ गर्भशुष्कनिवारणम्

गोक्षीरं शर्करायुक्तं गर्भशुष्कप्रशान्तये ।

पिबेद्वा मधुकं चूर्णं गम्भारीफलचूर्णकम् ।

समांशं गव्यदुग्धेन गुविणी तत्प्रशान्तये ॥ १४९ ॥

शर्कराके सहित गौका दूध सेवन करनेसे शुष्कगर्भकी शान्ति होती है । अथवा गम्भारीके फलका चूर्ण वा मुलहठी चूर्ण शहद साथ पान करे । अथवा गर्भिणी स्त्री व जिसका गर्भ सूखता हो कत्त गायका दूध सेवन करे ॥ १४९ ॥

अथ सुखप्रसवविधिः

श्वेतपुनर्नवामूलचूर्णं योनौ प्रवेशयेत् ।

क्षणात्प्रसूयते नारी गर्भेणातिप्रपीडिता ॥ १५० ॥

श्वेत पुनर्नवाकी जडके चूर्णको स्त्रीकी योनिमें प्रवेश करावे तो तत्काल प्रसव होता है और गर्भकी पीडा नहीं होती है ॥ १५० ॥

उत्तराभिमुखं ग्राह्यं श्वेतगुञ्जीयमूलकम् ।

कट्यां बद्ध्वाविमुक्तं च गर्भपुत्रं तु तत्क्षणात् ॥ १५१ ॥

वासकस्य तु मूलं तु चोत्तरस्थः समुद्धरेत् ।

कट्यां बद्ध्वा सप्तसूत्रैः सुखं नारी प्रसूयते ॥ १५२ ॥

उत्तरकी ओर मुख कर श्वेत चौटलीकी जड ग्रहण करके कमर बांधनेसे सन्तान सुखसे प्रसव होती है । अडूसेकी जडको उत्तर मुख ग्रहण करके उसे सात सूतसे कमरमें बांधे तो स्त्री सुखसे प्रसव करती है । यहां उत्तरमुखी जड लेनी ॥ १५१ ॥ १५२ ॥

उत्तरे च समालोड्यं श्वेतगुञ्जाफलं कियत् ।

सुखप्रसवमाप्नोति तत्क्षणान्नात्र संशयः ।

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१७९)

योनिं वा लेपयेत्तेन सा सुखेन प्रसूयते ॥ १५३ ॥

उत्तरकी ओरका श्वेत चौटलीका फल केशोंमें बांधनेसे सुखसे
सब करती है इसमें सन्देह नहीं । योनिमें लेप करनेसे सुखसे सन्तान
उत्पन्न होती है ॥ १५३ ॥

सहदेव्याश्वमूलं वा कटिस्थं प्रसवेत्सुखम् ॥ १५४ ॥
सहदेई या खरेंटीकी जड़ कमरमें बांधनेसे स्त्रीके सुखसे बालक
उत्पन्न होता है ॥ १५४ ॥

अपामार्गस्य मूलं तु ग्राहयेच्चतुरङ्गलम् ।
नारी प्रवेशयेद्योनौ तत्क्षणात्सा प्रसूयते ॥ १५५ ॥
चिरचिटेकी जड़ चार अंगुलकी ग्रहण कर योनिमें रखनेसे स्त्री
सुखसे बालक उत्पन्न करती है ॥ १५५ ॥

तोयेन लाङ्गलीकन्दं घृष्ट्वा योनिं प्रलेपयेत् ।
*नार्भि च लेपयेत्तेन तत्क्षणात्सूयते ध्रुवम् ॥ १५६ ॥
कलिहारीकी जड़को घिसकर प्रलेप करे तो बहुत शीघ्र सन्तान
प्राप्ति होती है । या नारियलकी जड़ जलमें पीस लेप करे ॥ १५६ ॥

गुञ्जाफलाद्धखण्डं च तोयपूगं तथाद्धकम् ।
पिबेद्वा तोयपिष्टं च सा सुखेन प्रसूयते ॥ १५७ ॥
चौटली आधे पल, खांड आधे पल, सुपारी इनको जलके साथ
मिश्रित कर पीनेसे सुखसे स्त्री प्रसव करती है ॥ १५७ ॥

गुञ्जातरोमूलयुगं विधातादुत्पाट्य पुष्ये च रवौ
निबद्धम् । कटीतले मूर्द्धनि नीलसूत्रैः शीघ्रं
प्रसूतिं कुरुतेऽङ्गनायाः ॥ १५८ ॥
चौटलीकी जड़ और चौटली इन्हें विधिपूर्वक रविवारके दिन

* नालिकेरस्य मूलं । इति पाठान्तरम् ।

पुष्य नक्षत्रमें लावे । उनको कमरके नीचे वा शिरमें नीला
बांधनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है ॥ १५८ ॥

अगरधूसं गृहवारिणा वा पीत्वाऽबला शीघ्रतरं
प्रसूते । अलंबुषामूलमथो निबद्धं योगद्वयं भूपति-
रित्यवादीत् ॥ १५९ ॥ समातुलुंगं मधुकस्य चूर्णं
मध्वाज्यमिश्रं प्रमदा निपीय । व्यथाविहीनं प्रसवं
हठेन प्राप्नोति नैवात्र विकल्पबुद्धिः ॥ १६० ॥
अत्र मातुलुङ्गस्य मूलं योज्यम्, न तु फलम्
क्वाथयित्वा पेयम् ॥

गृहके धूसको जलके साथ पीनेसे स्त्री शीघ्र प्रसव करती है अ-
लज्जालुकी जड़-कमरमें बांधनेसे शीघ्र प्रसव होता है । यह रा-
कहा है । मातुलुंग (नींबू) और मुलहठीके चूर्णको शहद और
मिलाकर स्त्री पान करे तो व्यथाके बिनाही सुखसे सन्तान होती
इसमें सन्देह नहीं । इसमें मातुलुंगकी जड़ ग्रहण करनी, फल
क्वाथ करके पीना चाहिये ॥ १५९ ॥ १६० ॥

दशमूलीशृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम् ।

शूलातुरा पिबेन्नारी सा सुखेन प्रसूयते ॥ १६१ ॥

दशमूलका काढा घृत और सैन्धवके सहित पिलानेसे
व्याकुल स्त्री सुखसे प्रसववती होती है ॥ १६१ ॥

सुखप्रसवमन्त्रः

“ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ मन्मथवा-
हिनि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा”

अनेन मन्त्रेण जलं सुतप्तं पातुं प्रदेयं शुचिना

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१८१)

नरेण । तोयाभिपानात् खलु गर्भवत्या प्रसूयते
शीघ्रतरं सुखेन ॥ १६२ ॥

“ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ ॐ मन्मथ मन्मथवाहिनी लम्बोदर मुंच-
मुंच स्वाहा” इस मन्त्रसे पवित्र होकर जल गरम कर स्त्रीको पिलावे
तो इस जलके पान करनेसे स्त्री सुखसे प्रसव करती है ॥ १६२ ॥

ॐकारं च हंकारं च अकारेण सुपूजितम् ।

ॐकारं शिरसं कृत्वा अन्ते नमस्त्रिमूर्तये ॥ १६३ ॥

“अं ॐ हां नमस्त्रिमूर्तये” ।

अनेनैव तु मन्त्रेण जप्तव्यं सूतिकागृहे ।

सुखं प्रसवमाप्नोति सा पुत्रं लभते ध्रुवम् ॥ १६४ ॥

ॐ कार हंकार अकारसे युक्तकर अंकार शिरपर कर अन्तमें
त्रिमूर्तये नमः लगावे । ,अं ॐ हां नमस्त्रिमूर्तये’ यह मन्त्र है । इस
मन्त्रको प्रसूतिकाके घरमें जपे तो सुखसे प्रसव करती है और
पुत्रको प्राप्त होती है ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ इति सुखप्रसवविधि ॥

अथ बालानां सर्वग्रहनिवारणम्

बिल्वमूलं देवदारुं *गोशृङ्गं च प्रियंगु च ।

मार्जारस्य मूलं कुष्ठं वंशत्वग्जमूत्रकैः ॥ १६५ ॥

पिष्ट्वा धूपो निहन्त्याशु ग्रहभूतज्वरादयः ।

ॐद्रावितं तापे ठं ठः स्वाहा” अनेन धूपं दद्यात् ।

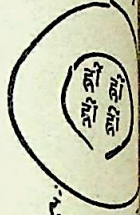
डाकिनी राक्षसाः प्रेता पिशाचा ब्रह्मराक्षसाः ॥

ऐकाहिको द्व्याहिकश्च ज्वरो नश्यति तत्क्षणात् । १६६

* गोः शृङ्गम् इति च पाठः

बेलकी जड़, देवदारु, बबूर, प्रियंगुफूल, रक्तचीतेकी बिल्लीका मल, कूठ और बांसकी छाल इन सबको बकरेके पीसकर ॐ द्रावितं तापे ठंठः स्वाहा, इस मंत्रसे धूप देनेसे भूतज्वर, डाकिनी, राक्षस, प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस दूर होते हैं। एकांतरा तिजारी दूर होते हैं ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ इस यंत्रको गोरोचन कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख (प्रसूताके) बाहु वा कंठमें धारण करे तो डाकिनी प्रेतबाधा और ज्वरादिक नष्ट होजाते हैं। यह अमृतविजया विद्या है ॥

ॐ रं तु



श्रीवासं सर्षपं कुष्ठं वचा तैलं घृतं वसा ।

धूपो बालग्रहे देयो बालानां ग्रहशान्तये ॥ १६७ ॥

चन्दन, सरसों, कूठ, वच, तेल, घी, चरबी इनकी धूप बालके ग्रहशान्तिके निमित्त देना चाहिये ॥ १६७ ॥

शिरीषनिम्बयोः पत्रं गोशृङ्गस्य त्वचा वचः ।

वंशत्वक् शिखिपिच्छं कंगुनाच समं घृतम् ॥ १६८ ॥

धूपो बालग्रहान् हन्ति स्वयं मन्त्रेण मन्त्रयेत् ।

धूपमन्त्रः—“ॐ द्रुतं मुञ्च २ उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा ॥” ॥ १६९ ॥

शिरस, नीमके पत्ते, गौके सींगकी त्वचा, वच, बांसकी मोरपंख, मालकांगनीके समान घृत इन सबको एकत्र कर “ॐ मुञ्च २ उड्डामरेश्वर आज्ञापयति स्वाहा” यह मंत्र पढ़ इनकी देनेसे बालग्रह दूर होते हैं ॥ १६८ ॥ १६९ ॥

पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षपघृतविरचितो धूपः ।

गर्भिण्या बालानां सततं रक्षाकरः कथितः ॥ १७० ॥

उपदेश: ८.

हिन्दीटीकासहित

(१८३)

पुनर्नवा, नीमके पत्ते, सरसों और घी इनकी धूप मंत्र पढ़कर देनेसे गर्भिणी और बालकोंकी रक्षा होती है ॥ १७० ॥

दाडिमस्य तु वन्दाकं ज्येष्ठाऋक्षे समुद्धरेत् ।

द्वारे बद्धं तु बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ॥ १७१ ॥

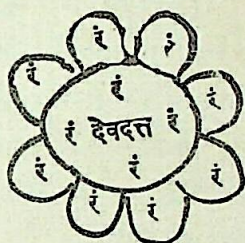
ज्येष्ठा नक्षत्रमें दाडिमका वन्दा लावे, उसको बालकोंके घरके द्वारमें बांधनेसे सब ग्रहोंका निवारण होता है ॥ १७१ ॥

पुण्याकं श्वेतगुञ्जाया मूलमुद्धृत्य धारयेत् ।

बालानां कण्ठदेशे च डाकिनीभयनाशनम् ॥ १७२ ॥

रविवारसहित पुष्यनक्षत्रमें श्वेत चौटलीकी जड़ उखाड़कर धारण करावे, बालकोंके कंठमें बांधनेसे डाकिनीका भय नाश होजाता है ॥ १७२ ॥

यह यंत्र गोरोचनसे लिखकर धारण करनेसे वैश्वानरमुखी रक्षा बालकोंके सब ग्रह नाशिनी है, और बाल ग्रहोंसे तिरस्कृत हुआंको परम रक्षक है ॥



श्वेतापराजितापत्रं जयापत्रं द्वयो रसम् ।

नस्यं कुट्यात्पलायन्ते डाकिनीदानवादयः ॥ १७३ ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताके पत्ते और गुडहर (जयन्ती) के पत्ते इन

दोनोंके रसका हुलास देनेसे डाकिनी दान.

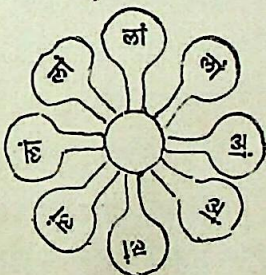
आदि पलायन कर जाते हैं ॥ १७३ ॥

यंत्रको भोजपत्रपर गोरोचनसे लिख

कण्ठमें धारण करे तो पिशाच, डाकिनी,

हूमांड आदि, बालग्रह, ज्वर, अपस्मा

आदिरोग शीघ्र नष्ट होते हैं ।



सर्पत्वक्शिखिजारिष्टपल्लवं रजनी वचा ।

रसोनं हिंगु गोलोमशृङ्गीमरिचमाक्षिकैः ।

धूपः सर्वज्वरघ्नोऽयं कुमाराणां ज्वरापहः ॥ १७४ ॥

सांपकी कंचली, सीसम, नीमके पत्ते, हलदी वच, लहसन, गौके लोम (बाल) काकडासिंगी, काली मिर्चर, शहद इनकी सम्पूर्ण ज्वर तथा कुमारोंका ज्वर हरनेवाली है ॥ १७४ ॥

छुच्छुन्दरी मलं मांसं हरिद्राबिल्वपत्रकम् ॥ १७५ ॥

इन्द्रजं सर्षपं पत्रं धूपयोगेन योजितम् ।

निहन्ति रोदनं रात्रौ बालस्याशु न संशयः ॥ १७६ ॥

छुछुंदरका मल, मांस, हलदी, बेलपत्र, इन्द्रजौ, सरसों, तेजपा इनकी धूप देनेसे रातमें बालकका रोना थम जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ इस यंत्रको गोरोचनसे भोजपत्रपर लिख बालकके कण्ठमें बांधे तो बालकका रोना थम जाता है ॥

०८	०१	२२	१२
१९	२२	००४	०४
७२	०७	१७	१०
२१	२०	०९	०९

मत्स्यराजस्य पित्तेन मरिचे भावयेद्बुधः ।

रविवारे रौद्रशुष्कमञ्जनात्सर्वभूतहृत् ॥ १७७ ॥

मत्स्यराजके पित्तमें कालीमिरचकी भावना दे, रविवारके इसको सुखाय आंजनेसे सब ग्रह दूर होते हैं ॥ १७७ ॥

नरसिंहस्य मन्त्रं तु सकृदुच्चरितं हरेत् ।

डाकिनीग्रहभूतानि तमः सूर्योदये यथा ॥ १७८ ॥

नृसिंहका मंत्र एकवारभी पढ़े तो डाकिनी ग्रह भूतादि ऐसे जाते हैं जैसे सूर्यके उदयमें अंधकार भाग जाता है ॥ १७८ ॥

उपदेश: ८.

हिन्दीटीकासहित

(१८५)

नरसिंहमन्त्रः

“ॐ नरसिंहाय हिरण्यकशिपुत्रवक्षःस्थलविदारणाय
 त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनी-
 कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हर
 हर विसर २ पच २ हन २ कम्पय २ मथ २
 ह्रीं ३ फट् २ ठः ठः ठः एहि २ रुद्र आज्ञापयति
 स्वाहा ॥” “ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं हूं फट् स्वाहा” ।
 अनेन सर्षपमभिमन्त्रितं कृत्वा रोगिणं प्रहारयेत्
 तदा सर्वे ग्रहाः पलायन्ते ॥

“ॐ नरसिंहाय हिरण्यकशिपुत्रवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्याप-
 काय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीकुलोन्मूलनायस्तम्भोद्भवाय समस्तदो-
 षान् हर हर विसर २ पच २ हन २ कम्पय २ मथ मथ ह्रीं ३ फट् २
 ठः ठः ठः एहि एहि रुद्र आज्ञापयति स्वाहा” „ ओं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं
 हूं फट् स्वाहा” इन मंत्रोंसे सरसोंको पढ़कर मारे ताली बजावे तो
 सम्पूर्ण ग्रह भाग जाते हैं ।

बालग्रहाभिभूतानां बलिं यत्नेन कल्पयेत् ।

शुचि पक्त्वा तु सप्ताहं मत्स्यं मांसं सुराफलम् ॥ १७९ ॥

पुष्पधूपाक्षतं गन्धं दीपं च दक्षिणोदिकम् ।

चतुष्पथे क्षिपेदात्रौ शुद्धे नूतनवर्परे ॥

शनौ वा कुजवारे वा बालदोषोपशान्तये ॥ १८० ॥

बलिदानमन्त्रः—“ॐ सर्वभूतेभ्यो बलिं गृह्ण २ स्वाहा ।

जब बालकोंको ग्रह आकर्षित करले तो यत्नसे उनकी बलि कल्पित
 करे । सात दिन पर्यन्त पवित्र हो मत्स्य मांस, सुरा, फल, पुष्प, धूप,
 अक्षत, गंध, दीप, दक्षिणा यह सब वस्तु रात्रिमें शुद्ध और नये

(१८६)

कामरत्न

अष्टमः

सिकोरेमें लेकर शनिवार या मंगलको चौराहेमें "ॐ सर्वभूते
र्बलि गृहाण २ स्वाहा" यह मंत्र पढ़ रख आवे ॥ १७९ ॥ १८० ॥

इति बालानां सर्वग्रहनिवारणम् ।

अथ बालस्याहितुण्डिकादिनिवारणम् ।

चन्द्रग्रस्ते शिखीमूलं विधानेनोद्धरेद्बुधः ।

बद्धं गले च जघने बालोऽहितुण्डिकां जयेत् ॥ १८१ ॥

चन्द्रग्रहण में कलहारीकी जड़को विधिपूर्वक लावे, उसको बाल
के गलेमें या कमरमें बांधनेसे अहितुण्डिका दूर होती है ॥ १८१ ॥

श्वेतार्कमूलं संगृह्य गृहस्तम्भे च बन्धयेत् ।

पुष्पार्के वा रवेर्वारे बालोऽहितुण्डिकां जयेत् ॥ १८२ ॥

पुष्पनक्षत्रयुक्त रविवारमें वा रविवारके दिन श्वेत आककी
लाकर घरके खम्भेमें बांधनेसे बालकका अहितुण्डरोग दूर होता है
॥ १८२ ॥

उदुम्बरभवं मूलं शिशुकट्यां च बन्धयेत् ।

बृहत्कूष्मांडवृत्तं वा तेनाहितुण्डिकां जयेत् ॥ १८३ ॥

गलरकी जड़ लाकर बालककी कमरमें बांधे अथवा बड़े पे
ड़की बांधनेसे अहितुण्डिका रोग दूर होता है ॥ १८३ ॥

अथ स्त्रीणां पुष्परक्षा

पलाशराजादनयोः फलानि पुष्पाण्यथो शाल्मलि-

पादपस्य । आज्येन मासार्द्धदिनं पिबन्ति रक्षा

त्रिशिचतमेव पुष्पे ॥ १८४ ॥

ढाक और क्षीरिणीवृक्षके फल सेमलके फूल यह घीके साथ
दिन पान करनेसे निश्चयही स्त्रीके पुष्पकी रक्षा होती है ॥ १८४ ॥

तुषाम्बुना पावकवृक्षमूलं निःक्वाथयित्वा नियमं

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१८७)

चरन्ती । ऋत्वन्तकाले त्रिदिनं पुरन्ध्री रक्षा भवे-
दामरणान्तमेव ॥ १८५ ॥

चीतेकी जड़ लेकर तुषके जलसे काढा कर नियमसे ऋतुके अन्त
तीन दिन पान करनेसे जन्मपर्यन्त स्त्रीके आर्तवकी रक्षा होती है ।
कहीं ऋतुसमयमें तीन दिन पीना कहा है ॥ १८५ ॥

फलं कदम्बस्य च माक्षिकानि तुषोदकेन त्रिदिनं
सकृद्वा । स्नानावसाने नियमेन पीत्वा रक्षामवश्यं
कुरुते हठेन ॥ १८६ ॥

कदम्बके फल, सोनामक्खी इनको तुषके जलसे पीसकर स्नानके
अन्तमें तीन दिन या एकवार इसे नियमसे सेवन करनेसे ऋतुकी
रक्षा होती है ॥ १८६ ॥

त्रैहायनं वा गुडमत्ति नित्यं पलप्रमाणं वनिताद्ध-
मासम् । जीवान्तिकं निश्चितमेव तस्या बन्ध्यात्व-
मुक्तं कविपुङ्गवेन ॥ १८७ ॥

जो स्त्री पन्द्रह दिन तक नित्य तीन वर्षके पुराना गुडका चार
तोले प्रमाण सेवन करती है वह बन्ध्या होजाती है, ऐसा कवि पुं-
गवेने कहा है ॥ १८७ ॥

कर्षद्वयं राक्षसवृक्षबीजं सप्ताहमात्रं सितशालि-
धान्यम् । ऋतौ निपीतं मृगशावकाक्ष्या रक्षार्थमे-
तन्नियतं प्रदिष्टम् ॥ १८८ ॥

दो कर्ष राक्षसवृक्षके बीज तथा शालिधान्य यह ऋतुके अंतमें
पात दिन तक पान करनेसे अवश्य पुष्पकी रक्षा होती है ॥ १८८ ॥

(१८८)

कामरत्न

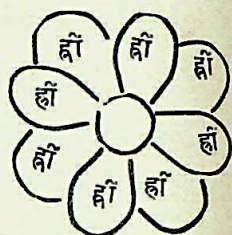
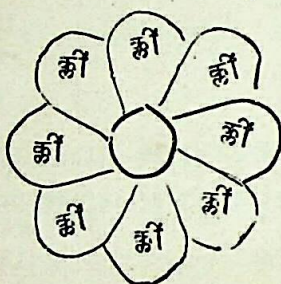
अष्टम

अथ दुर्भगाकरणम्

ज्येष्ठानक्षत्रे निम्बवन्दाकं यस्या अङ्गे दीयते
सा दुर्भगा भवति ॥ १८९ ॥

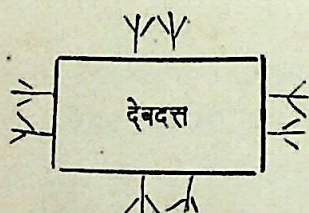
ज्येष्ठानक्षत्रमें नीमका वन्दा जिसके अंगमें डालाजाय वह दुर्भगा
होती है ॥ १८९ ॥ इति दुर्भगाकरणम् ।

दातृशक्तिप्रदयंत्रे



इन यंत्रोंको गारोचन और अनामिका (कनउँगुली) के एक
भोजपत्रपर साध्यनामसहित लिख शहत या घृतमें स्थापन करे
अदातापन छूटकर दाता होजाता है, यदि इनके प्रभावसे सब
अर्थात् बेहद देने लगे तो नीचे लिखे हुए यन्त्रको विधिपूर्वक बांध
दातापन छूट जायगा ॥

दातृशक्तिनिवारणयन्त्रम्



साध्य (दाता) के चरणकी धूलि
हरितालके साथ मिलाय भोजपत्रपर
यन्त्रको लिख पाटल मध्य (देवदत्तस्थान)
में साध्यके दोनों हाथ लिख भांडमें

उसपर मूत्रकर धर देवे तो हस्तस्तंभन होता है यानी कि
कुछ नहीं देता है ॥

उपदेशः ८.

हिन्दीटीकासहित

(१८९)

अथ कलहकरणम्

विभीतकं तु शाखोटमूलपत्रेण संयुतम् ।

स्थापयेद्यद्गृहद्वारे तस्य वै कलहो भवेत् ॥ १९० ॥

बहेडा, सिहोरेकी जड पत्ते सहित जिसके घरके द्वारमें स्थापित करे, उसके यहां सदा कलह होता है ॥ १९० ॥

माजरिमूषिकद्विजदिगम्बराणां लोमभिर्धूपात् ।

आर्द्रायां यत्र गृहे तत्र वै जायते वैरम् ॥ १९१ ॥

बिलाव, चूहा, ब्राह्मण, दिगंबर इनके लोमकी धूप आर्द्रा नक्षत्रमें जिस घरमें दे उस घरमें कलह होता है ॥ १९१ ॥

विशाखा नक्षत्रे निम्बवृक्षस्योत्तरमूलं विवस्त्रो

विमुखीभूय उत्पाट्य मुखेन यस्य च आलये

क्षिपेत्तस्य गृहे प्रत्यहं कलहो भवति ॥ शाखोट-

मूलं पत्रं च एकीकृत्य स्थापयेत् । तथा दूरीकृते तु

तद्गृहे भद्रं भवति । तन्नक्षत्रे शाखोटबदरीबीज-

द्वयमेकीकृत्य यस्य गृहे स्थापयेत्तस्य नित्यं

कलहो भवति ॥ १९२ ॥

विशाखानक्षत्रमें नीमके पेड़की जड उत्तरकी ओर मुखकर नग्न

होकर मुखसे उखाड़े । उसे जिसके यहां फेंक दे तो प्रतिदिन उसके यहां

कलह होता है ॥ सिहोरेकी जड और पत्ते मिलाकर रखनेसे भी कलह

होता है, दूर करनेसे दूर होता है ॥ विशाखानक्षत्रमें शाखोट और

रकी दो गुठली एकत्र कर जिसके घरमें डाले उसके यहां नित्य

लेश होता है ॥ १९२ ॥

(१९०)

कामरत्न

नवम

ब्रह्मदण्डीं समूलां च काकमाचीसमन्विताम् ।

जातीपुष्परसैः पिष्ट्वा सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥ १९३ ॥

एष धूपः प्रदातव्यः शत्रुगोत्रस्य मध्यतः ।

यथागोत्रं समाध्याति पिता पुत्रैः समं कलिः ॥ १९४ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने षण्ठीकरणादिकलहकरणा
वर्णनं नामाष्टमोपदेशः ॥ ८ ॥

बल सहित ब्रह्मदण्डी, काकमाची (मकोया) इनको जा
फूलोंके रसमें सात रात्रितक वारंवार पीसे । यह धूप शत्रुके गोत्र
इस धूपको सूंघनेमात्रसेही पितापुत्रमें भी कलह होजाता है ॥ १९३
॥ १९४ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचितेकामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृतभा
टीकायां षण्ठीकरणादिकलहकरणान्तं नामाष्टमोपदेशः ॥ ८ ॥

नवमोपदेशः

अथसर्वारिष्टनाशार्थं रक्षाविधिः

ईश्वरेण पुरा देव्यै यद्यत्तत्कथितं तथा ।

कादिद्विरवसानं च ह्यक्षरं स्वरसंयुतम् ॥ १ ॥

ईकारेणापि संपूज्य अधो रेफत्रयान्वितम् ।

ॐ कारशिरसं कृत्वा जप्तव्यं सिद्धिमिच्छता ॥ २ ॥

मन्त्रः—“ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं क्रीं स्त्रीं वा”

“ॐ क्रीं स्त्रीं क्ष्रीं ॐ ठ्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं”

स्वसंयमनमन्त्रोऽयं शताब्दं जपमात्रतः ।

अशेषारिष्टनाशः स्यादित्याह पुरसूदनः ॥ ३ ॥

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(१९१)

ईश्वरने पार्वतीके प्रति जो कुछ कहा है वह यह है । आदि हकार
अक्षर और स्वरके सहित वह हकारके सहित और नीचे रेफसे संयुक्त
तथा आदिमें ओंकार लगाकर सिद्धिकी इच्छा करनेवालेको जपना,
चाहिये “ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं क्रीं ख्रीं क्षीं ॐ ठ्रीं श्रीं फ्रीं ह्रीं”
इस मंत्रको ५० बार कहनेसेहि मंत्र सिद्ध होजाता है और सम्पूर्ण
अरिष्टको नाश करता है ऐसा शंकरने कहा है ॥ १-३ ॥

कपरं चपरं चैव ठपरं तपरं तथा ।

पपरं वर्णमाहृत्य इकारेण सुपूजितम् ।

अधोरेफसमायुक्तमोंकारशिरसं तथा ॥ ४ ॥

मन्त्रः—“ॐ खूं छूं ठूं थूं फूं हूं । वा ॐ ख्रीं छ्रीं ठ्रीं श्रीं
फ्रीं ह्रीं” (शुद्धम्)

श्रद्धया तु महामन्त्रं ये पठन्ति सदा मुने ।

सर्वथा तस्य पुंसः स्यात्सर्वारिष्टविनाशनम् ॥ ५ ॥

ककार चकार टकार तकार पकार इनसे पर (द्वितीय) जो खादि
वर्ण हैं उनको और हकारको ईकार व उसके नीचे रेफ लगाय प्रथम
आकार उच्चारण करे । मंत्र यह है—, ॐ ख्रीं ठ्रीं छ्रीं ह्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं
(शुद्ध) हे मुने ! इस महा मंत्रका जो सदा श्रद्धासे उच्चारण करते हैं
उनके सब अरिष्ट नाश हो जाते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

हस्तेन रक्तपुष्पेण ग्रथितया च मालया ।

अभिमन्त्र्य शतेनापि दद्याद्देव्यै सदानघे ॥ ६ ॥

यावज्जीवं शुभं तस्य सर्वलाभो दिनेदिने ।

न गृहेऽनिष्टपातः स्याल्लिखित्वा स्थापनेऽपि च ॥ ७ ॥

(१९२)

कामरत्न

नव

हाथमें लाल फूलकी माला लेकर इस मन्त्रको सौ बार अभिषेक कर देवीको चढ़ाते हैं जन्मपर्यन्त शुभ होता है अर्थात् दिन

अर्थलाभ होता है, इसे लिखकर स्थापन करनेसे घरमें अरिष्ट नहीं होता है ॥६॥

॥ ७ ॥ इस यंत्रको गौरीचनसे भोजपत्रपर लिख धारण करे (या घरमें रखलेवे) तो सब अरिष्टों (उपद्रवों) से रक्षा होती है ॥

ॐ	हं	ॐ
हं	ॐ हं	हं
ॐ	हं	ॐ

अक्षराणामन्त्यवर्णांलिखित्वा पञ्चधाऽनघे
अधोरेफसमायुक्तमोडःकारशिरसं तथा ॥ ८ ॥

हकारेण च सम्पूज्यमन्ते फडक्षरं स्मृतम् ।

ईकारेण च सम्पूज्य अन्ते फडक्षरान्तिम् ।

“ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्” ॥

मन्त्रोऽयं मम रूपस्य ध्यानं जापं तथैव च ।

ममैव हृदयं तस्य सदा तद्गतमानसः ॥ ९ ॥

सदा स्यात्तद्गृहे क्षेमं सहस्रार्द्धस्य जापनात् ।

त्रैलोक्ये तत्समो नास्ति नित्यं फलमवाप्नुयात् ॥ १० ॥

अक्षरोंके अन्त्य वर्णोंको पंचविधिसे करके नीचे रेफ मिलाकर कार सहित उच्चारण करे । ईकार युक्तकर अन्तमें फट् लगावे । क्षी ५ फट् यह मंत्र है । मेरेही रूपका ध्यान करे और जप करे (तद्गतमन हो) मुझमेंही अपना मन लगावे । इस मंत्रका पांच जप करनेसे उसके घरमें सदा आरोग्यता रहती है, इसके सम त्रिलोकीमें कुछ नहीं, यह नित्य फलका देने वाला है ॥ ८११० ॥

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(१९३)

जन्मान्तरे सुखी प्राणी शृणु देवि महाफलम् ।

नित्यं सम्पद्यते राजा पत्न्या पुत्रेण बान्धवैः ॥

ज्ञातिभिः सज्जनैश्चापि शत्रुभिश्च विशेषतः ॥ ११ ॥

हे देवि ! इसका महाफल सुनो-जन्मान्तरमें भी वह सुखी होता है ।

इससे राजा स्त्री पुत्र बांधवोंके सहित नित्य सम्पत्तिमान् होता है ।

ज्ञाति सज्जन शत्रु सबकी दृष्टिमें विशेष होता है ॥ ११ ॥

अन्तद्वयं समागृह्यमधोरेफसमन्वितम् ॥ १२ ॥

ॐकारसंयुतं कृत्वा रेखाबिन्दुसमायुतम् ॥ १३ ॥

“ॐ क्षौं क्षौं” मन्त्रोयम् ।

अनेनैव तु मन्त्रेण ये जपन्ति महाजनाः ।

ते सर्वे *क्षेममायान्ति सततं तस्य जापनात् ॥ १४ ॥

अन्तके दो अक्षर ग्रहण करे। उसको रेफ लगावे, ॐकारसंयुक्त

करके रेखाबिन्दुके सहित मन्त्रोद्धार करे । मन्त्र यह है- ‘ॐ क्षौं क्षौं’

इस मन्त्रको जो महाजन जप करते हैं वे निरन्तर

इस जपके फलसे क्षेम शान्तिको प्राप्त हो जाते

हैं ॥ १२-१४ ॥ इस यन्त्रको गोरोचनसे भोज-

पत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारण करे तो क्षेम,

शांति और रक्षा होती है ॥

श्वेतार्कमूलं पुष्पार्कं समुद्धृत्य विधारयेत्

बाहुभ्यां व्याधयो न स्युस्त्वरिष्टानि विशेषतः ॥ १५ ॥

रविवार युक्त पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड लावे । उसको

भुजामें बांधनेसे व्याधि और अरिष्ट नहीं होता है ॥ १५ ॥

क्षौं ग क्षौं
देवदत्तं पूणिमाया
कुरु कुरु स्वाहा
क्षौं क्षौं क्षौं

* शान्तिमायान्ति । इति पाठान्तरम् ।

(१९४)

कामरत्न

नवम

तद्दर्शनेन नश्यन्ति डाकिनीदानवादयः ।

तद्धूपेन पलायन्ते प्रेताद्या दूरतो ध्रुवम् ॥ १६ ॥

उसके दर्शनसेही डाकिनी अथवा दानव आदि नष्ट होजाते
और इसकी धूपसेही प्रेतादि दूरसे भाग जाते हैं ॥ १६ ॥

पूर्वाभाद्रपदाऋक्षे वन्दाकं तु शिरीषजम् ।

संगृह्य शिरसि क्षिप्ते ह्यभयं भवति ध्रुवम् ॥ १७ ॥

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें शिरसका वन्दा लावे, उसको शिरपर रख
निश्चयसे अभय होता है ॥ १७ ॥

विष्णुक्रान्ताभवं मूलं हस्तस्थं चौरभीतिजित् ।

* नरसिंहस्य मन्त्रेण सकृदुच्चरिते हरेत् ।

डाकिनीग्रहभूतानि तमः सूर्योदये यथा ॥ १८ ॥

विष्णुक्रान्ताकी जड हाथमें स्थित रखनेसे चोरका भय नहीं होता
है और नृसिंहके मन्त्रसे सब दुःख हर जाते हैं, एवं डाकिनी ग्रह
ऐसे नष्ट होजाते हैं जैसे सूर्यके सम्मुख अंधकार नहीं रहता ॥ १८ ॥

भूतप्रेतपिशाचादिभये स्मृत्वा नरोऽभयः ॥ १९ ॥

भैरवीं तु महापूर्वां भवेदेव न संशयः ॥ १९ ॥

प्रेत पिशाचादिके भयमे महाभैरवीको स्मरण कर मनुष्य अभय
जाता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १९ ॥

इस यंत्रको गोरोचनसे भोजन
पत्रपर साध्य नामसहित लिख कंठमें
धारण करे तो उसके अरिष्ट
संबंधी सब ज्वर नाश होते हैं ॥

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्त	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

* नरसिंहमन्त्रः १७२ पृष्ठे लिखितः ।

उपदेशः ९.

हिन्दोटीकासहित

(१९५)

अथ निद्राकरणम्

निगडे चौरिकायां च पठेद्वारत्रयं मनुम् ।

सर्वे प्रहरिका यान्ति निद्राया वशमेव च ॥ २० ॥

चोर बेडीको तीन बार मन्त्रसे अभिमंत्रित करे तो सब पहरा करने-
वाले सो जायेंगे ॥ २० ॥

मन्त्रः—“ॐ कालकालिका महिषासुरनाशिनी योग-

निद्राणी अमुकारपुरियादेवी कालिकामालायोग-

निद्राणी उदयपाना ॥ नंदीकाल मायाधरी नाग-

निद्राणी या अमुकारपुरीदण्डपहरी भूपै लोटै

कालिकार आज्ञा गडागडी पीठे कालिकार आज्ञा ॥”

इति लौकिकमन्त्रः ॥

“ॐ कालकालिका महिषासुरनाशिनी योगनिद्राणी अमुकारपुरिया
देवी कालिकामालायोगनिद्राणी उदयपाना ॥ नन्दीकाल मायाधरी
नागनिद्राणी या अमुकारपुरी दंडपहरी भूपै लोटै आज्ञा गडागडी
पीठे कालिकार आज्ञा ॥” इति लौकिकमन्त्र ॥

अथ निगमोक्तम्

“ॐ ह्रीं चण्डाचण्ड उग्रचण्डारिका कालिका निद्रय

निद्रय । इति मन्त्रेण महानिद्रा भवति ॥ एतन्मन्त्रं

पठित्वा तस्य गृहे वा पठित्वा धूलिकृत्वा क्षिपेत् ।

कालिका विद्या काल मोहै देवासुरनरके हो स्थिर

लहै ॥ कालिका त्रिभुवन जगत कालिकार दासी

पहरि । जागंतालि निद्र गेल महि मन्त्रभे यशी ।

कालिकार आज्ञा निद्राली लागे उदय देषि ।

(१९६)

कामरत्न

नवम-

आनिद्रभागे ॥ गुवाकं खादित्वा तस्यावशिष्टं
कृत्वा संयोज्य तत्र प्रस्त्रावयेत् । तस्मिन् वाटिका-
यामायाति तस्यानेन मन्त्रेण निद्रां करोति ॥ २१ ॥

अथ शास्त्रमंत्र-ॐ 'ह्रीं चण्डांड उग्र चण्डारिका कालिकानिद्रयः
इस मंत्रसे महानिद्रा होती है । यह मंत्र पढ़कर उसके घरमें वि-
निक्षेप करे । वह विद्या यह है—,कालिका विद्या काल मोहै देवा-
नरतकहो स्थिर लहै, कालिका त्रिभुवन जगत कालिकार दासीपहना
जागंतालि निद्र गेल महि संद्रभे यशी कालिकार आज्ञा निद्राली ला
उदय देषि आनिद्र भागे ।' सुपारी खाकर उसके अवशिष्टको वि-
करके संयुक्त कर उसपर (प्रस्त्राव) मूत्र कर उसे वाटिकामें रखदे
जो वहां उस वाटिकामें ऊपर जायेगा उसको निद्रा होगी ॥ २१ ॥

काकजंघाजटा निद्रां जनयेच्छिरांसि स्थिता ।

मूलं वा काकमाच्याश्च कृष्णायास्तद्गुणं स्मृतम् ॥ २२ ॥

घुघुची और रुद्रजटा शिरपर डालनेसे निद्रित कर देती है अथ-
काकमाची (मकोयकी) जड, पीपल शिरपर डालनेका भी
गुण है ॥ २२ ॥

मुनिखण्डकशाकं वा शय्यास्थाने खनेदथ ।

करञ्जमूलं शिरसि बंधनात्कुरुते तथा ॥ २३ ॥

बकवृक्ष (इक्षु विशेषका शाक) शय्यास्थानमें खोदकर अथ-
देनेसे अथवा करंजुएकी जड शिरपर बांधनेसे नींद आजाती है ॥ २३ ॥

निद्राकरणमंत्रः

“ॐ शुद्धे २ महायोगिनि महानिद्रे स्वाहा”

मंत्र—‘ॐ शुद्धे २ महायोगिनि महानिद्रे स्वाहा’ यह महानिद्राय-

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(१९७)

मंत्र है, इसका ३०० जपकर श्मशानकी गोमूत्रसे प्लावित मृत्तिका घरमें डालनेसे निद्रा होती है । यह निद्राकी विद्या संक्षेपसे कही है ॥

नीलोत्पलं समरिचं नागकेशरमूलकम् ।

पिष्ट्वा तद्रज्जयेच्चक्षुर्निद्रामाप्नोत्यसंशयम् ॥ २४ ॥

नीलोफर, कालीमिरच, नागकेशर इन सबको बारीक पीसकर नेत्रोंमें आंजे तो अवश्य नोंद आती है ॥ २४ ॥

निद्रानाशनम्

कूष्माण्डं महिषीशृङ्गं पिष्ट्वा तत्समभागकम् ।

लेपयेद्दक्षिणे पृष्ठे तस्य निद्राक्षयो भवेत् ॥ २५ ॥

पेठा और महिषीशृंग इन दोनोंको बराबर भाग लेकर दहिनी ओर लेप करनेसे निद्राका क्षय होता है ॥ २५ ॥

शोभाञ्जनस्य बीजानि नीलोत्पलसुपुष्पकम् ।

समनागेश्वरं पिष्ट्वा निद्रां मुञ्चति चाञ्जनात् ॥ २६ ॥

सहिजनके बीज, नील कमलका पुष्प और नागकेशर इनको समान भाग ले पीसकर आंजनेसे निद्राको छोड़ देता है ॥ २६ ॥

बृहतीपक्वफलकं पिष्ट्वा च मधुयष्टिभिः ।

यस्य नेत्रेऽञ्जनं दद्यान्निद्रा तस्य विनश्यति ॥ २७ ॥

कटेरीके पक्के फल (मधु) शहद वा मुलैठीसे पीस जिसके नेत्रमें आंजे उसकी निद्रा क्षय होती है ॥ २७ ॥

* कनकधत्तूरमूलं मृताभ्रकेतकीपुष्परजः ।

एतानि पिष्ट्वा कपटनेषेन खादयेन्निद्राभञ्जनं

भवति ॥ २८ ॥

* कृष्णधत्तूरमूलम् ।

(१९८)

कामरत्न

नवम-

कृष्णधतूरेकी जड शोधा अभ्रक केतकीके फूलोंका रस र...
पीसकर श्वेत कटेरीके रसमें खवावे तो नींद नहीं आती है ॥ २८

बन्धनयन्त्रम्

साध्यके पैरोंकी धूलि और हरताल इनसे साध्यका नी नो नी नो
नाम सहित इस यन्त्रको लिख बरतनमें स्थापन करे
श्मशानमें गाडे तो अवश्य वह बंध जाता है ।

देवदत्त
नीनीनी

अथ बन्धमोचनम्

मार्गशीर्षस्य पूर्णमासी शिखिमूलं समुद्धरेत् ।
बन्धनान्मुच्यते तेन शिखाबद्धो न संशयः ॥ २९ ॥
मार्गशीर्ष महीनेकी पूर्णिमाको शिखी (चित्रक) की जड उखा
कर लावे उसे शिखामें बांधनेसे अवश्य बंधनसे छूट जायगा ।
सन्देह नहीं ॥ २९ ॥

बन्धमोचनमन्त्रः

“ॐ नमः कनकपिंगले * रुद्रहृदयांशे रौद्रास्थि-
धारिणि तिष्ठ तिष्ठ सरसर सर्वान्मोहय २ भगवति
शिखिजे तिमिरे महामाये स्वाहा ॥” अष्टोत्तर-
शतं जप्त्वा शिखायां पूर्वोषधं बन्धयेत्ततः सिद्धिः ।
+ प्लक्षांशेन ककारांतं लिखेद्बन्धनमोचनम् ॥ ३०
मन्त्र यह है—, ॐ नमः कनकपिंगले रुद्रहृदयांशे रौद्रास्थिधारि
तिष्ठ तिष्ठ सर सर सर्वान्मोहय २ भगवति शिखिजे तिमिरे महा
स्वाहा ।’ यह मन्त्र एक सौ आठ बार जपकर शिखामें औषधी
नसे सिद्धि होती है ॥ प्लक्षांशसे ककार पर्यन्त मन्त्र लिखनेसे

* रुद्रहृदयाङ्गे वेतालास्थिधारिणि । + लक्षवर्ण ककारं च इत्यपि

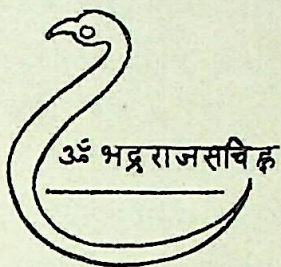
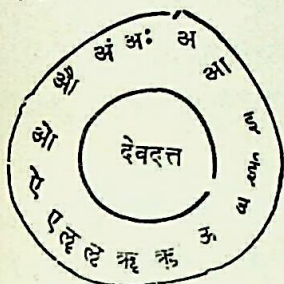
उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(१९९)

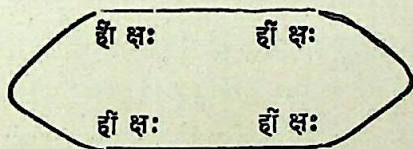
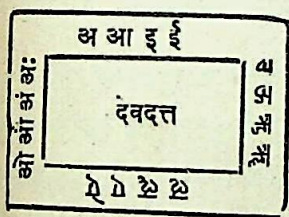
मोचन होता है अथवा कवर्ण एक लाख लिखनेसे बन्धनसे मुक्त होता है ॥ ३० ॥

बन्धमोचनयन्त्राणि ।



इस यन्त्रको हलदी हरतालसे साध्यनामसहित शिलापट्टपर लिख अधोमुख धर दे तो बन्धनसे मुक्त होगा ।

गोरोचनसे भोजपत्रपर साध्य नामसहित इस यन्त्रको लिख, "सुख नामा पिशाची अमुकं हनहन पच पच शीघ्रं वशमानय स्वाहा" इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर संपुटमें स्थापनकर उपरोक्त मंत्र जपे तो बन्धनसे छूट जाता है ।



इस यन्त्रको गोगोचनसे भोजपत्रपर लिख शिखामें बांधे तो बन्धनसे मुक्त होजायगा ।

इस यन्त्रको गोरोचनसे भोजपत्र पर साध्यनामसहित लिख ग्रीवा या शिखामें धारण करे तो निश्चय बन्धनसे मुक्त होजाता है ।

(२००)

कामरत्न

नवम

अथ निगडादिभञ्जनम्

हस्तार्के सेन्दुवारस्य मूलं चोत्तरगं हरेत् ।

स्पर्शनं बन्धविच्छेदं कुरुते शीघ्रं मारुतः ॥ ३१ ॥

हस्तनक्षत्र युक्त रविवारको उत्तर दिशामें जाकर सिन्धु (सिन्हालु) की जड लावे, उसके स्पर्शमात्रसे निगड भंग हो जाता इसमें सन्देह नहीं ॥ ३१ ॥

मांसी रक्तोत्पलं तुल्यं कृकलासे च भोजयेत् ।

तन्मलैर्गुटिकास्पर्शतालयन्त्रं भिनत्यलम् ॥ ३२ ॥

जटामांसी (बालछड) लाल कमल इनको बराबर ले कृकला (घिरघट) को भोजन करावे । उसकी बीटकी गुटिकाके स्पर्श का लगानेसे तालयन्त्र टूटजाता है ॥ ३२ ॥

सुपक्वमिष्टिकां कृष्णवज्री ग्राह्यस्तु योगिभिः ।

सूक्ष्मचूर्णं तु तां कृत्वा लोहकिट्टमथापि वा ॥ ३३ ॥

सूत्रै रज्जुं दृढीकृत्य तिलतैलेन लेपितम् ।

तच्चूर्णं लोडितं कृत्वा महालोहं भिनत्यलम् ॥ ३४ ॥

सुपक्व इष्टिका (ईंट) और थूहरका रस लावे, उसका सूक्ष्म करके अथवा लोहकिट्टको लेकर सूत्रकी रस्सी दृढ करके तिलके तेल में लिप्त करे । उस चूर्णको लगावे तो यह महालोहेको क्षणमें तोड़ देता ऐसा योगिराजोंने कहा है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

निगडभञ्जनमंत्राः

“ॐ नमोभगवते रुद्राय उडुामरेश्वराय बहुरूपाय
नानारूपधराय हस २ नृत्य नृत्य तुद २ नानाकौ-

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(२०१)

तुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा । ” अनेन
सर्वयोगाभिमन्त्रणात् सिद्धिर्भवति ॥ ३५ ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानरूपधराय हस

हस नृत्य नृत्य तुद तुद नाना कौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा'
इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करनेसे सब सिद्धि होती है ॥ ३५ ॥

“बाधवाहिनी सिंहे या कालि २ कत्वामिका
आर्यादेवी मन्त्रितोरदासरणे २ नाहिथिलशतो
इदवीत्रिभुवनमातु चौसष्ठिमि निबन्धन भागि
आपला चण्डाचण्डचामुण्डीचामुण्डविकटका-
लिकामादशन आगे अमुकाबंधनभाङ्गिया आपलां
बांधव २ थायापायेनिश्चलचौसष्ठीबंधनविरकाली
कामाछांडे हुंकारः चौसष्ठीबंधनकाचारंभागीभइ-
लत्या इखमकालिकारआज्ञा । अथवा जाआजा
देविमैचितोवदासरसेवाननाहिविनासन्तोम्बी देवी
त्रिभुवनरणरमापाचौसृष्टिबंधनभागीअम्बेला । चं-
डाचंडचामुण्डाविकट्टकालिकामादनआगेअमुका
रबन्धभागीआंफेलावबाधवाधपायात्रनियन चौ-
सष्ठीबन्धन मैलविरलाकालिकामाछडे हुंकार चौ-
सष्ठिबन्धनकाठारभाद्रिभरलक्षारस्वारकालिका
रआज्ञा । अथवा ॐ अग्निमुखीपिपाचीअमुकंहन
हन पच पच शीघ्रंमेवशमानयस्वाहा” एतन्मन्त्र
द्वयं पूर्वमष्टोत्तरशतं जप्त्वा सप्तवारं जप्ते नानाविध
बन्धनच्छेदो भवति ।

(२०२)

कामरत्न

नवम

“ॐ वाघ वाहिनिः सिद्धे पाकादि लिका लायि । आआ जा हे
चिन्तो वदा सरसे बान नाहि विनाशं तोम्बदेवी त्रिभुवन रणरमा
सृष्टि बन्धन भागी आभूषेला चण्डा चण्ड चामुण्डा विकट कालिका
मादन आगे अमुकार वन धन भायी आफेला व वाघ वाघ पाया
पन चौसठि बन्धनमल विरला कासिका माछडे हंकार चौसठि
कार ठार भाद्रि भाल क्षार स्वार कालिका आज्ञा ॥ यह दोनों
पहले एकसौ आठ वार जपे फिर सातवार जपे तो अनेक प्रकार
बन्धन छेदन होजाते हैं ॥

“ॐ दं हुं ॐ” एतन्मंत्रं पठित्वा करांगुल्या
प्रहारे द्वारि दत्ते द्वारं मुक्तं भवति ॥

‘ॐ दं हुं ॐ’ यह मन्त्र पढ़कर हाथकी अंगुलीके प्रहारमा
द्वार मुक्त होता है ॥

“आय, आय चिञ्चिठिचिठिहांलावज्रनन्दिकाका-
लिका” ॥ अनेन मंत्रेण श्वेतसर्षपं श्वेतोदुम्बर-
पुष्पं त्रिः पठित्वा प्रथमद्वारे क्षिपेत् सर्वद्वाराणि
भञ्जन्ति ॥ ३६ ॥ इति निगडभञ्जनम् ।

‘आय आय चि चिठि चिठि हंल वज्र नन्दिका कालिका’
मन्त्रसे श्वेत सरसों । श्वेत उदुम्बरके
फूल तीन वार पढ़कर पहले द्वारपर
फेंके तो सब द्वार भग्न होजाते हैं
॥ ३६ ॥ इस यंत्रको गोरोचन और
कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख शंख संपुटमें
स्थापनकर त्रिकाल पूजाकर शिरमें धारण करे तो निगड भंजन हो

ता

ॐ देवदत्तस्य निगड स्फोट्य

तुर

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(२०३)

अथं गृहक्लेशनिवारणम्

तक्रपिष्टेन तालेन लेपयेत्पुत्रिकाकृतिम् ।

तामाघ्राय गृहाद्यान्ति मक्षिका नात्र संशयः ॥ ३७ ॥

हरतालको छाछके साथ पीसकर एक पुतली बनाय उस पुतलीके शरीरमें लेपकर रखवे, उसको सूंघनेसे मक्खी नहीं आती, इसमें संदेह नहीं ॥ ३७ ॥

श्वेतार्कदुग्धकुल्माषं तिलचूर्णसमन्वितम् ।

अर्कपत्रेषु विन्यस्तं मूषकान्तकरं गृहे ॥ ३८ ॥

सफेद आकका दूध, कुल्माष (कुल्थी) उडद वा काँजी, तिल इनका चूर्ण कर आकके पत्तेपर रखनेसे मूषे नष्ट होजाते हैं ॥ ३८ ॥

तालकं छागविण्मूत्रं पलाण्डुं सह पेषयेत् ।

आलिप्य मूषिकं तेन जीवितं च विसर्जयेत् ।

तं दृष्ट्वा च गृहं त्यक्त्वा पलायन्ते हि कौतुकम् ॥ ३९ ॥

हरताल, छागकी विष्ठा और मूत्र इसको प्याजके साथ पीसे, उससे मूषिकाको आलेपन करके जीताहुआही छोड़ दे । उसको देखकर घरसे और चूहे कौतुकपूर्वक पलायन कर जाते हैं ॥ ३९ ॥

मार्जारस्य मलं तालं पिष्ट्वा मूषिकमालिपेत् ।

तमाघ्राय गृहं त्यक्त्वा सद्यो निर्यान्ति मूषिकाः ॥ ४० ॥

मार्जारका मल, हरताल इनको पीसकर मूषकपर लपेट छोड़ दे, उसको सूंघकर घर छोड़ चूहे अन्यत्र चले जाते हैं ॥ ४० ॥

गन्धकं हरितालं च ब्राह्मीत्रिकटुसंयुतम् ।

छागलीमूत्रतः पिष्ट्वा पूर्ववन्मूषिकं लिपेत् ॥ ४१ ॥

गन्धक, हरताल, ब्राह्मी, त्रिकुटा छागलीके मूत्रसे पीसकर मूषकपर लपेटकर छोड़ दे तो चूहे भाग जाते हैं ॥ ४१ ॥

मधायां ब्रध्नकं क्षेत्रे स्थापयेन्मधुकोद्भवम् ।

मक्षिकामूषकानां च जायते तुण्डबन्धनम् ॥ ४२ ॥

मघानक्षत्रमें श्वेत आककी जड मुलैठीके साथ शुभक्षेत्रमें स्थापित करे तो मूषक और मधुमक्खीकी तुण्ड बन्धनमें हो जाती है ॥ ४२ ॥

मूषकाकर्षको दीपः सावरीगुडतैलजः ॥ ४३ ॥

गुड, तेल, सावरी पडा हुआ हो उसका दीपक मशक निवारण करता है ॥ ४३ ॥

“पूर्वे ब्रह्मा मे बद्धः पश्चिमे विष्णुर्मे बद्ध उत्तरे मे बद्धः दक्षिणे यमो मे बद्धः पाताले वासुकी मे बद्धः फणिसहस्रे बद्धः हूं अङ्गुष्ठाय नमः” ।

सम्पुटं कृत्वा तालत्रयं दद्यात् । ततो मूषिक-मशकनिवारणं भवति ॥ ४४ ॥

‘पूर्वे ब्रह्मा मे बद्धः पश्चिमे विष्णुर्मे बद्धः उत्तरे रुद्रो मे बद्धः दक्षिणे यमो मे बद्धः पाताले वासुकी मे बद्धः फणिसहस्रे बद्धः अङ्गुष्ठाय नमः’ इस मन्त्रसे करसंपुट कर तीन ताली दे तो मच्छिका निवारण होता है ॥ ४४ ॥

रोहिपतृणपुष्पं तु वर्तिमध्ये निवेशयेत् ।

तद्दीपदर्शनादेव क्षिप्रं नश्यन्ति मत्कुणाः ॥ ४५ ॥

बहेडेका तृण और फूल बत्तीके बीचमें रखके, उसके द्वारा दीप जलावे तो उस दीपकके दर्शनमात्रसे तत्काल खटमल नष्ट होजाते हैं ॥ ४५ ॥

अर्कतूलमयीवर्ति*भविष्येत्तावकेन च ।

* भावयेद्यावकेन च ऐसा पाठ है । अर्थ महावरकी भावना दे ।

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(२०५)

दीपं तत्कटुतैलेन निशोषा यान्ति मत्कुणाः ॥ ४६ ॥

आकके तूलकी बत्तीको कडवे तेलसे संयुक्त कर दीपकमें जलावे तो सब प्रकार खटमल नष्ट हो जाते हैं ॥ ४६ ॥

अर्जुनस्य फलं पुष्पं लाक्षा श्रीवासगुगुलुम् ।

श्वेतापराजितामूलं भल्लातकविडङ्गकम् ॥ ४७ ॥

धूपं सर्जरसोपेतं प्रदेयं गृहमध्यतः ।

सर्पश्च मत्कुणा मूषा गन्धाद्यान्ति दिशो दश ॥ ४८ ॥

अर्जुनवृक्षके फल और पुष्प, लाख, श्वेत, चन्दन, गुगल श्वेत अपरा जिताकी जड़, भिलावा, वायविडंग, सर्जरस (राल) इनका चूर्ण कर घरमें धूप दे इसकी गंधसे सर्प चूहे खटमल सब नष्ट हो जाते हैं ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

गुडश्रीवासभल्लातकविडङ्गं त्रिफलायुतम् ।

लाक्षारसोऽर्कपुष्पं च धूपो वृश्चिकसर्पहृत् ॥ ४९ ॥

गुड, श्वेतचन्दन वा चावल, भिलावा, वायविडंग, त्रिफला, लाखका रस, आकका फूल इनकी धूप देनेसे घरमें सर्प और बिच्छू नहीं रहते हैं ॥ ४९ ॥

मुस्तासिद्धार्थं भल्लातकपिकच्छफलं गुडम् ।

चूर्णं भानुफलोपेतं दहेत्सर्जरसैः समम् ॥ ५० ॥

मत्कुणा मशकाः सर्पा मूषिका विषकीटकाः ।

पलायन्ते गृहं त्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥ ५१ ॥

मोथा, सरसों, भिलावा, करंज, कौछके फल, गुड इनका चूर्ण कर आकके फलसे संयुक्त करे और उसके साथ रालकी भस्म मिलाय धूप दे तो खटमल मच्छर सर्प मूषक विषके कीट ये सब युद्धमें कातर ए मनुष्यके समान घरको छोड़कर भाग जाते हैं ॥ ५० ॥ ५१ ॥

(२०६)

कामरत्न

नवम

सर्ज्जरसः *शक्रमेदोज्जुनमूलमरुबककेतकनखबद्धः
 एतैर्धूपो रचितः कीटभुजगमशकमक्षिकादिहरः ॥ ५२ ॥
 राल, कुडा, मेदा, अर्जुनकी जड़, मरुआ, केतकी, मूल, नखी इत्यादि
 धूप देनेसे कीट, सर्प मशक, मच्छर, शहदकी मक्खी ये नाश
 जाती हैं ॥ ५२ ॥

राजवृक्षफलं बद्धं खट्वायां मत्कुणापहम् ।
 लाक्षासर्ज्जरसोशीरं सर्षपः पत्रकं परम् ॥ ५३ ॥
 खाटमें कर्णिकार वा अमलतासका फल बांधनेसे खटमल
 नहीं पाते । लाख, राल, खश, सरसों यह सब (दुःख)
 करते हैं ॥ ५३ ॥

सोमराजस्य वृक्षस्य पल्लवाग्रेण वर्तिकांम् ।
 कृत्वा दीपं प्रकुर्वीत मत्कुणश्च विनश्यति ॥ ५४ ॥
 सोमराज वृक्षके पत्तेके अग्रभाग द्वारा बत्ती बनाकर उसका दीप
 जलानेसे खटमलोंका नाश होजाता है ॥ ५४ ॥
 भल्लातकविडङ्गानि विश्वकं पुष्करं तथा ।
 जम्बुलो मशकं हन्ति धूपाद्वा गृहमध्यतः ॥ ५५ ॥
 बहेडा, वायविडंग, सोंठ, पुष्करमूल और जम्बु इनकी धूप
 मशक दूर होते हैं ॥ ५५ ॥ इति गृहकलेशनिवारणम् ॥

अथ क्षेत्रोपद्रवनाशनम्

अथ क्षेत्रस्य शस्यानां सर्वोपद्रवनाशनम् ।
 वालुकाश्वेतसिद्धार्थान् प्रक्षिपेत् क्षेत्रमध्यतः ॥ ५६ ॥
 शलभाः सर्पकीटाश्च वराहमृगमूषिकाः ।
 मशकास्तत्र नो यान्ति मन्त्रविद्याप्रभावतः ॥ ५७ ॥

* कत्कमेदः । ऐसा पाठ है अर्थ—मांसरोहिणी ।

उपदेशः ९.

हिन्दीटीकासहित

(२०७)

अब खेतीके सम्पूर्ण उपद्रव नाश करनेवाला विधान कहते हैं—
 वालुका, श्वेतसरसों इनको खेतके बीचमें डालदे तौ शलभ सर्प कीड़े
 बराह मृग मूषक खरगोश ये सब इस मन्त्रविद्याके प्रभावसे वहां
 नहीं आते हैं ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

मन्त्रः—“ॐ नमः सुरेभ्यः बलजः जपपरि परिपरि-
 रजपरिपरिमिलि स्वाहा ॥ ओं सुरेभ्यो नमः ॥” नम-
 स्कृत्य इमां विद्यां प्रयोजयेत् ॥ “विद्यां प्रयोजया-
 प्रीति विद्या मे सिद्धयतु स्वाहा । अखिलजम्बू-
 कानां मृगाणां शशकानामन्येषां प्राणिनां शल-
 भादीनामन्येषां प्राणिनां तुण्डबन्धनं करोमीत्यत्र
 प्राणे कृतघ्नस्य तेन पापेन लिप्यते यत्र मन्त्रं व्य-
 तिक्रमति स्वाहा ॥ एतन्मन्त्रद्वयेन वालुकाभिः
 सह श्वेतसर्षपांस्प्तवारमभिमन्त्र्य क्षेत्रमध्ये क्षिपे-
 त्सर्वोपद्रवो नश्यति ॥

मूषजम्बूककीटानां कुरुते तुण्डवेधनम् ।

‘ॐ नमः सुरेभ्यः बलज जप परि परि परि रज परि परि मिलि
 स्वाहा ॐ सुरेभ्यो नमः’ इस प्रकार देवताओंको नमस्कार कर इस
 विद्याका प्रयोग करे । ‘विद्यांप्रयोजयामीति’ इन दो मन्त्रोंसे वालूके
 साथ श्वेत सरसोंको सात बार अभिमन्त्रित कर क्षेत्रके मध्यमें डालनेसे
 सब उपद्रव शांत होजाते हैं ॥ मूषक गीदड कीटादि जीवोंकी तुण्ड-
 वेधित होजाती है ॥

विद्यामङ्कशनाथस्य मन्त्रं वा भैरवस्य च ॥

“नमोनगरनाथाय हयहरहरशिल २ सर्वेषां प्राणिनां

तुण्डबन्धनं कुरुकुरु ह्रुंफट्स्वाहा उज्जयनीनगरी
भैरबोले महादेवभण्डारफूलबोले हनुमन्तसाक्षी
अस्तिअस्तु” अनेन मन्त्रेण सप्ताथिमत्रितं चन्दनं
वाटिकामध्ये निःक्षिपेत् । पुष्पफलं समस्तं
निरुपद्रवं भवति ॥ ५८ ॥

अंकुशनाथकी विद्या या भैरवका मंत्र पढ़े—ॐ नमो नगरनाथ
हय हरहर शिलशिल तदेवां प्राणिनां तुण्डबन्धनंकुरु २ ह्रुं फट् स्वाहा
उज्जरनीनगरी भैरव बोले महादेव भण्डार फूल बोले हनुमन्त साक्षी
अस्ति अस्तु’ इस मंत्रसे सात बार अभिमंत्रित कर चन्दन बगीचे
मध्यमें डालनेसे पुष्प फल सब निरुपद्रव होते हैं ॥ ५८ ॥

देवदालीं च सिद्धार्थं गुटिकां कारयेद्बुधः ।

क्षेत्रमध्ये तु निक्षिप्य सर्वपक्षिभयं हरेत् ॥ ५९ ॥

देवदाली सरसों इन दोनों वस्तुओंकी गुटिका करे । खेतके मध्यमें
डाल देनेसे सब पक्षियोंका भय बुद्धिमान् दूर कर सकता है ॥ फूल
डीमें भी यह डालनेसे सब उपद्रव शान्त होजाते हैं ॥ ५९ ॥

पूर्वाषाढाख्यऋक्षे तु वन्दां विभीतवृक्षजाम् ।

शस्यमध्ये क्षिपेत्तेन शस्यवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ ६० ॥

पूर्वाषाढा नक्षत्रमें बहेडेका वन्दा लेकर खेतीके मध्यमें डाल
शस्यकी वृद्धि होती है ॥ ६० ॥ इति शस्योंके सर्व उपद्रवनाशनम् ॥

अथ गोमहिष्यादिदुग्धवर्द्धनम्

“ॐ हुंकारिणीप्रसव ॐ शीतलम्” अनेन सप्तवारं

तृणादिकमभिमन्त्र्य भोक्तुं दद्यात् तदा बहुलं
दुग्धं प्रसवति ॥ ६१ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने नवमोपदेशः ॥

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२०९)

,ॐ हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलम्' इस मंत्रसे तृण आदिको सातवार अभिमन्त्रित कर गौ आदिके खानेको दे तो बहुत दूध गौ भंस आदि देवेंगी ॥ ६१ ॥ इति गोमहिषीआदिदुग्धवर्द्धन ॥

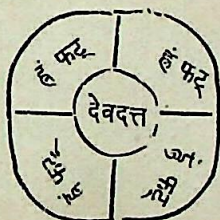
इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्र-
कृतभाषाटीकायां अरिष्टनाशादिशस्योपद्रवनाशनं गोमहिष्या
दिदुग्धवर्द्धनं नाम नवमोपदेशः ॥ ९ ॥

अथ दशमोपदेशः

अथोच्चाटनम्

मङ्गलवारं रात्रौ श्मशानाङ्गारं कृष्णवस्त्रेण कृत्वा
रक्तसूत्रेण संवेष्ट्य यस्य गृहोपरि क्षिपेत्सप्ताहाभ्य-
न्तरे तस्योच्चाटनं भवति ॥ पञ्चाङ्गुलं चित्रकस्य
कीलं ग्राह्यम् पुनर्वसौ सप्ताभिमन्त्रितं गेहे खनेत् ।
उच्चाटनं भवेत् । “ॐ लोहितमुखे स्वाहा” अस्य
अष्टोत्तरसहस्रजपेन पुरश्चरणम् ॥ १ ॥

मंगलके दिन रातको श्मशानसे काले वस्त्रमें अंगार लावे । लाल
सूतमें लपेट जिसके घरमें डाले उसका उच्चाटन सात दिनमें हो ॥
पुनर्वसुनक्षत्रमें चित्रक (अण्ड) की पांच अंगुल कील ग्रहण करे । सात
वार मंत्र पढ़कर जिस घरमें डाले उसे उच्चा-
टन होजायगा ॥ “ॐ लोहितमुखे स्वाहा” इसको
१००८ जप पुरश्चरण करे ॥ १ ॥ श्मशानके
अंगारसे श्मशानके (चैल) वस्त्रपर इसयन्त्रको
लिख शत्रुके स्थान पर रखदे तो एक रात्रिमें
ही उच्चाटन हो जाता है ॥



(२१०)

कामरत्न

दशम-

भरण्यामंगुलैकं तु उलूकस्यास्थिकीलकम् ।
 सप्ताभिमन्त्रितं यस्य खनेदुच्चाटनं भवेत् ।
 मन्त्रः—“ॐ दहदहहलहलस्वाहा ॥ २ ॥

भरणीनक्षत्रे एक अंगुल उल्लूकी अस्थि लेकर सात बार मंत्र पढ़कर जिसके यहां गाडदे उसका उच्चाटन होजाता है । यह मंत्र पढ़े

, ॐ दह दह हल हल स्वाहा ॥ २ ॥

काकोलूकस्य पक्षास्तु हुत्वा ह्यष्टोत्तरं शतम् ।
 यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं
 सपुत्रबान्धवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्रं
 उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा ठः ठः” ॥ ३ ॥

कौए और उल्लूके पंख एकसौ आठ लेकर जिसके नामसे मंत्र पढ़ हवन करे, उसका अवश्य उच्चाटन होगा । मंत्र यह है—“ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्रबान्धवैः सह हन २ दह २ पच २ शीघ्रं उच्चाटय २ हुं फट् स्वाहा ठः ठः” ॥ ३ ॥

विष, राई, धतूरा, लवण और निम्बसे साध्यका नाम उहित श्मशानके वस्त्रपर इस यंत्रको लिख श्मशानमें गाड देनेसे उसका उच्चाटन होता है, इसमें संदेह नहीं है, इसका मंत्र यह है ॐ तारे २ ॐ तुरे स्वाहा” ।

ॐ तारे ॐ तारे तुरे चल २
 शीघ्रगामिनी अमुकमुच्चाट-
 य २ स्वाहा

लेपयेत्काकपित्तेन कीलमंगु लसम्भवम् ।

निखनेद्यस्य भवने तस्यचोच्चाटनं भवेत् ।

“ॐ ह्रीं दंडिन् २ महादण्डिन्नमोस्तुते ठः ठः” ॥ ४ ॥

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

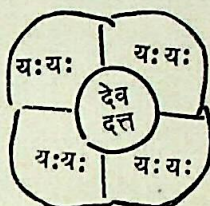
(२११)

कौएके पित्तसे एक अंगुल कीलको लिप्त करे और उसे लिखकर जिसके द्वारपर डालदे उसका उच्चाटन हो जाता है । मन्त्र-ॐ ह्रीं

विज् २ महादण्डिन् नमोस्तु ते ठः ठः ॥ ४ ॥

यंत्रको उलूकके रुधिरसे ध्वजवस्त्रपर पक्ष-
लेखनीसे लिख कागके गलेमें बांध छोड़दे

उच्चाटन होजाता है ॥



नरास्थिकीलकं द्वारे निखन्याच्चतुरंगुलम् ।

मन्त्रयुक्तमरेद्वारि सत्यमुच्चाटनं भवेत् ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय अमुकं गृह्ण २ पच २

त्रासय २ त्रोटय २ नाशय २ पशुपतिराज्ञाप-

यति ठः ठः ” ॥ ५ ॥

मनुष्यकी अस्थि (हड्डी) चार अंगुल मंत्र पदकर जिस शत्रुके

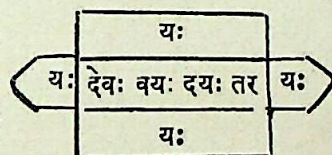
द्वारपर गाड़दे उसका अवश्य उच्चाटन होजायगा । मन्त्र यह है—, ॐ

नमो भगवते रुद्राय अमुकं गृह्ण २ पच २ त्रासय २ त्रोटय २

नाशय २ पशुपतिराज्ञापयति ठः ठः ॥ ५ ॥

यंत्रको बहेडेके पत्तोंके रससे भोज-

द्वारपर जिसका नामसहित खरमूत्रमें



लकर तपा दे तो शीघ्र उसका उच्चाटन होता है ॥

मृतकस्य पुरुषस्य निर्माल्यं चैलमेव च ।

प्रतालयात् समागृह्य यस्य गेहे निधापयेत् ॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां तस्यैवोच्चाटनं भवेत् ।

एष योगो मया ख्यातो विना मन्त्रेण सिद्धयति ।

उद्धृते सति शान्तिर्भवति ॥ ६ ॥

(२१२)

कामरत्न

दशम-

मृतक पुरुषका निर्माल्य और चैलवस्त्र मरघटसे ग्रहण करके वैरोते घरमें डालदे । अष्टमी और चौदसके दिन यह कृत्य करनेसे उसका उच्चाटन होजाता है, यह योग विनाही मन्त्रके सिद्ध होता है । उखाडनेसे शान्ति होती है ॥ ६ ॥

श्वेतलाङ्गलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि ।

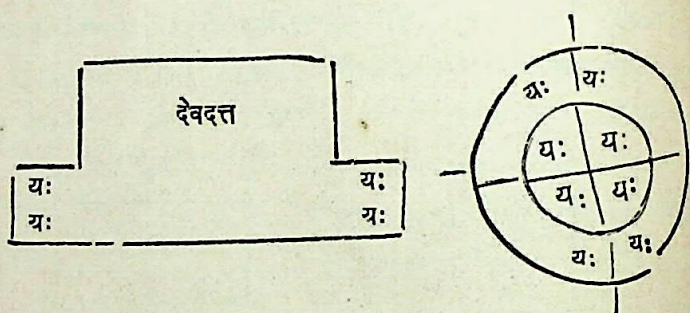
निखनेत्तु भवेत्तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ॥ ७ ॥

श्वेत कलहारीकी जड़को जिसके घरमें डालदे, वा गाडदे उससे उस समय शीघ्र ही उच्चाटन होता है ॥ ७ ॥

सिद्धार्थं शिवनिर्माल्यं यद्गोहे निखनेद्बुधः ।

उच्चाटनं भवेत्तस्य ह्यद्भुते तु पुनः सुखी ॥ ८ ॥

सरसों और शिवका निर्माल्य इनको जिसके घरमें गाडदे उससे उच्चाटन होजाता है और उखाडनेसे सुखी होता है ॥ ८ ॥



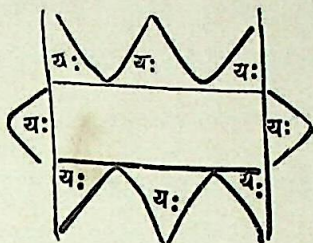
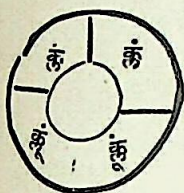
इस यंत्रको रक्तसे ध्वजपीठ-पर लिखकर देवदत्तके स्थानमें साध्य नाम लिखकर, उसे काकके गलेमें बांध काकको छोड दे तो उसका उच्चाटन होजाता है,

इस यन्त्रको बहेडेके पत्तों रससे भोजपत्रमें साध्यनामसहित लिखकर गधेके मूत्रमें डाल तब तो उसका उच्चाटन होजाया

अपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२१३)



आकके पत्तेके रससे भोजपत्र-
साध्यका नाम सहित इस
यंत्रको लिखकर मधुमें स्थापन
कर तो उसका उच्चाटन होगा ।

इस यंत्रको बहेडेके रस व खर-
मूत्रमे भोजपत्रपर साध्यनाम स-
सहित लिखे उसका उच्चाटन
होगा ।

संगृह्य वृक्षात्काकस्य निलयं प्रदहेच्च तम् ।

चिताग्नौ भस्मतः शत्रोर्दत्तं शिरसि सुन्दरी ॥

तमुच्चाटयते देवि शृणु योगमनुत्तमम् ।

उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ९ ॥

वृक्षपरसे कौएका घोंसला लाकर उसे जलादे । उस चिताकी भस्म
के शिरपर डालनेसे अवश्य उच्चाटन हो जाता है । हे देवि ? यह
तम योग है; फिर उसको वहांसे अलग करनेसे
होता है ॥ ९ ॥ हरतालसे पीपलके पत्रपर
यंत्रको लिख रखे तो जिसके नामसे लिखा
उसका उच्चाटन होजाता है ॥

ॐ डं डं डं
देवदत्त
डं डं डं डं

कोलमौदुम्बरं शिन्या मन्त्रितं चतुरङ्गुलम्

तं यस्य निखनेद्गोहे तस्यैवोच्चाटनं भवेत् ॥ १० ॥

‘ॐ शिनी २ स्वाहा’ इस मंत्रसे उदुंबरकी चार अंगुल कील
जिसके घरमें गाड दे उसका उच्चाटन होता है ॥ १० ॥

अथ उच्चाटनप्रकारान्तरमाह

उच्चाटनविधिं वक्ष्ये यथोक्तं श्रीमतोत्तरे ।
निम्बपत्रे लिखेन्नाम महिषाश्वपुरीषकैः ।
काकपक्षस्य लेखन्या लेखनीयमनन्तरम् ।
मन्त्रस्तु—“ॐ काकतुण्डिधवलामुखि देवि अमुक-
मुच्चाटय अमुकमुच्चाटय हूं फट् स्वाहा” ॥ ११ ॥
एतं मन्त्रं महादेवि लिखित्वा पूर्ववस्तुभिः
निम्बवृक्षस्थितं सर्वं काकगेहं खनेदथ ।
श्मशानबह्निमानीय धतूरकाष्ठदीपितम् ।
वर्हि कृत्वा महातैलैरथवा कटुवस्तुभिः ।
पूर्वोक्तमनुना तस्य होमयेद्विधिपूर्वकम् ॥ १२ ॥

अब दूसरी उच्चाटन विधिको कहते हैं । भैंसे और घोडेकी लीक
कौएके पंखकी कलमसे नीमके पत्तेपर शत्रुका नाम लिखे , ॐ काकतु
यह मंत्र पढकर पूर्व वस्तुओंसे लिखकर नीमके पेडपर स्थित कौए
घोसला लाकर धतूरेकी लकड़ियोंमें उसकी श्मशानकी अग्निसे भर
करे । महातेल अथवा कटु वस्तुओंसे ऊपर लिखे मंत्रसे विधिपूर्व
होम करे ॥ ११-१२ ॥

धवलामुखीं च संपूज्य पञ्चोपचारयोगतः ।
तस्माद्भूस्म प्रक्षिपेच्च शत्रोश्च मन्दिरोपरि ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य सपुत्रपशुबान्धवैः ॥ १३ ॥

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२१५)

धवलामुखी देवीका पंचोपचार योगसे पूजन करे, उसमेंसे भस्म
कर शत्रुके मन्दिरपर डाले तो पुत्र पशु बांधव सहित उसका
उच्चाटन होगा ॥ १३ ॥ इस यंत्रको
कौएके रक्तसे सध्यनाम सहित धतूरेके पत्ते
या ध्वजवस्त्रमें लिख कौएके गलेमें बांध
पश्चिम दिशामें प्रेषण अरे तो उस शत्रुका
उच्चाटन हो जाता है ॥

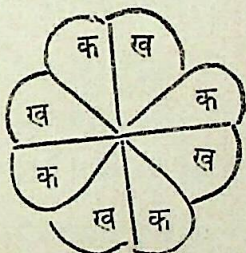


धवलाध्यानम्

धूम्रवर्णा महादेवीं त्रिनेत्रां शशिशेखराम् ।
जटाजूटसमायुक्तां व्याघ्रचर्मपरिच्छदाम् ।
कृशाङ्गीमस्थिमालां च कर्त्रिकां च तथाम्बुजाम् ॥ १४ ॥
कोटाराक्षीं भीमदंष्ट्रां पातालसदृशोदराम् ।
स्वान्ते ध्यात्वा पूजयैद्वै योगध्यानपरो जनः ।
एष योगविधिः ख्यातो वीरतन्त्रे महेश्वरी ॥ १५ ॥

देवीका ध्यान यह है कि, धूम्रवर्णा महादेवी तीन नेत्र, मस्तकपर
जटाजूट, व्याघ्र चर्म धारण किये, कृशशरीर, अस्थि-

पहरे, कतरनी कमल लिये, खखोडलके
नेत्रवाली भयंकर डाढ़े, पातालवत्
उदर है ऐसा ध्यान कर पूजे, हे महे-
श्वरी ? यह योग वीरतन्त्रमें लिखा है
॥ १४ ॥ १५ ॥ बहेडेके पत्तोंमें रससे भोज-



साध्यका नाम सहित इस यंत्रको लिख गधेके मूत्रमें
पूज करे तो उसका उच्चाटन होजाता है ॥ इत्युच्चाटनम् ॥

अथ विद्वेषणम्

कपिरोर्माहिगुदावीखरचर्माणि चूर्णयेत् ।

तच्चूर्णं मन्त्रसंजप्तं नामकर्मविदभिमतम् ।

त्रिसहस्रं पुनस्तेन स्निग्धयोरन्तरात्मनोः ।

धूपैरतीव विद्विष्टौ स्निग्धावपि भविष्यतः ॥ १६ ॥

वानरके रोम, हिंगु, दारुहलदी, गर्दभचर्म इन सबको चूर्ण कर
उस चूर्णको शत्रुके नाम सहित ३००० तीन हजार बार जपकर

धूप देनेसे अति स्नेहयुक्त मित्रोंकाभी परस्पर
द्वेष होजाता है ॥ १६ ॥ इस यंत्रको भोजपत्र-
पर काक उलूकके रुधिर और लाक्षा रससे
जिनदोनोंकानाम लिख विषमें स्थापन करे
उन दोनों का विद्वेषण होगा ।



तालपत्रे लिखेन्मन्त्रं नामकर्मविदभिमतम् ।

कृतप्राणप्रतिष्ठान्तं प्रजप्तं त्रिसहस्रकम् ।

विषालिप्तं द्विधा कृत्वा निखनेतिसन्धुरोधसि ।

स्निग्धयोराशु विद्वेषः स्यादुमेशानयोरपि ॥ १७ ॥

तालपत्र पर मंत्र लिख शत्रुका नाम कर्म लिखे उसकी प्राणप्रतिष्ठा
कर ३००० मंत्र जपे उसे विष लिप्तकर दो खण्ड कर समुद्रके किना
गडा दे तो शिवा-शिवकाभी विद्वेष हो जाय और तो क्या है ? ॥ १७ ॥

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य तथापरे ।

मन्त्रयित्वा मिलित्वाग्रं कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ॥ १८ ॥

अञ्जलिं च जले चैव तर्पयेद्धस्तपक्षकैः ।

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२१७)

एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ।

विद्वेषो जायते तत्र महाकौतुकमद्भुतम् ॥ १९ ॥

एक हाथमें काकपक्ष, दूसरेमें उल्लूका पंख ले मंत्रसे इनके अग्र
भागको मिलाय काले सूत्रसे बांधे फिर उस पक्षसहित हाथसेही जलसे
सप्त दिन तर्पण कर १०८ बार जपे तो विद्वेषण होगा ॥ १८ ॥ १९ ॥

विष और धतू-

को जलसे कौआ

और उल्लूक लिखे

तथा जैसा वैर है

तथा हो 'ॐ देव-



तयज्ञ दत्तयोस्तु स्वाहा' इससे

एक घरमें नित्य जपकर भोजपत्रपर लिखे तो विद्वेषण होगा । तथा
य और बिडालके रुधिरसे श्मशानके अंगारेसे जिनका नाम लिख
कोलूकीये यादृशं वैरं तादृशं वैरं देवदत्तयज्ञत्तयोर्भवतु स्वाहा
मंत्रसे काक उल्लूकको भोजपत्रपर लिखे तो विद्वेषण होगा ॥

मार्जारमृषिकाविष्ठासाध्यपुत्तलिका कृता ।

नीलवस्त्रेण संवेष्ट्य मन्त्रयित्वा शतेन च ।

विद्वेषो जायते तत्र भ्रातरौ तातपुत्रकौ ।

मन्त्रः—“ॐ नमो महाभैरवाय च श्मशानवासिन्यै

अमुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु कुरु कुरु फट्” ॥ २० ॥

विलाव और मूषकी विष्ठासे साध्यकी पुतली बनाय नीले वस्त्रसे

सौ बार मंत्र पढ़े तो भ्राता पिता पुत्रमेंभी विद्वेष हो । मंत्र—

॥ नमो महाभैरवाय च श्मशानवासिन्यै अमुकामुकयोर्विद्वेषं कुरु

फट् ॥ २० ॥

एकहस्तेच काकपक्षमुल्लूकस्य तथापरे ।

(२१८)

कामरत्न

दशम

दर्भेण धारयेद्यत्नात् त्रिसप्ताहं जलाञ्जलिम् ।
 रक्ताश्वमारपुष्पैकं मन्त्रयुक्तं जलाञ्जलिम् ॥ २१ ॥
 नित्यं नित्यं प्रदातव्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ।
 परस्परं भवेद्द्वेषः सिद्धयोग उदाहृतः ॥ २२ ॥

एक हाथमें काक, दूसरेमें उल्लूका पंख ले कुशके साथ धारण कर तीन सप्ताहतक जलकी अंजलि दे । देतीवार लाल कनेल फूल एक लेकर मंत्र पढ़कर हाथमें धारण कर एक सहस्र आठ बार नित्य अंजली दे तो परस्पर द्वेष होजाता है, यह सिद्धयोग कहा है ॥ २१ ॥ २२ ॥

निवापाञ्जलिमन्त्रः

“ॐ नमः कटीटनीप्रमोटनीकी गौरी गौरी अमु-
 कस्यामुकेन सह काकोलूकादिवत्कुरु २ स्वाहा”
 ॐ नमः कटीटनी प्रमोटनीकी गौरी २ अमुकस्यामुकेन सह
 काकोलूकादिवत्कुरुकुरु स्वाहा” । यह जलाञ्जलिका मन्त्र है ॥ इति
 विद्वेषणम् ॥

अथ व्याधिकरणम्

तन्निवारणं च

“ॐ अमुकं हन २ स्वाहा” अनेन मन्त्रेण कटु-
 तैलाक्तं त्रिकटुं जुहुयात्तदा शत्रुर्बधिरो भवति ॥ २३ ॥
 ‘ॐ अमुकं हन हन स्वाहा’ इस मन्त्रसे कडुवे तेलके साथ नि-
 का हवन करनेसे शत्रु बहरा हो जाता है ॥ २३ ॥

भल्लातकरसैर्गुञ्जां कुर्यादितिमुर्चणीताम् ।
क्षिपेद्गात्रे भवेत्कुष्ठं सिताक्षीरं पिबेत्सुखी ॥२४॥
भिलावेका रस और गुंजा इनका बहुत महीन चूर्ण करके जिसके
शरीर पर फेंके वह कुष्ठी होता है, फिर मिश्री
और दूध पीनेसे सुखी होता है ॥ २४ ॥
इस मंत्रको नीमके रससे भोजनपत्रपर लिख
शत्रुके द्वारपर गाडे तो शत्रुका गात्र
कुड़ जाता है ॥



वानरीफलरोमाणि विषं भल्लातचूर्णकम् ।
गुञ्जायुतं क्षिपेद्गात्रे स्याल्लूता वेदनान्विता ॥
उशीरं चन्दनं चैव प्रियंगु रक्तचन्दनम् ।
तगरं पेषयेत्तोर्यैर्लेपाल्लूतादिनाशनम् ॥ २५ ॥
चौंककी फलीके रोम, विष और भिलावेका चूर्ण इनमें चौंटली
करके जिसके शरीर डाल दे उसके गात्रमें महापीडा युक्त
डोके फैलनेकी समान वेदना होती है । खास, चन्दन और प्रियंगु,
चन्दन और तगर यह चलेसे पीसकर लगावे तो लूताकी वेदना
नष्ट होजायगी । २५ ॥

अथ ज्वरानयनम्

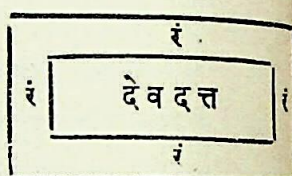
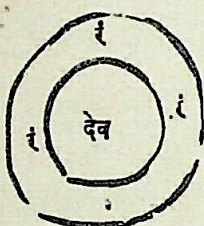
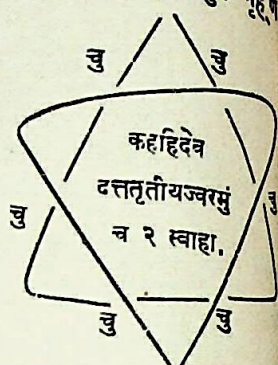
“ॐ चामुण्डे हन हन दह २ पच पच मथ २ चलह २
अमुकं गृह्ण २ स्वाहा” अनेन कटुतैलेनाक्तनि-
म्बपत्राणि यस्य नाम्ना हूयन्ते तस्य शीघ्रं ज्वरो
भवति । चित्रकपुष्पसहस्रं हुनेत् चातुर्थिकज्वरो
भवति । लवणमष्टाधिकसहस्रं हुनेत् दाहज्वरो भवति ॥

(२२०)

कामरत्न

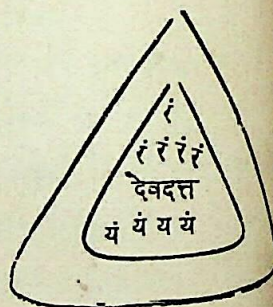
दशम-

‘ॐ चामुंडे हन २ दहदह पच पच मथ २ चलह २ अमुकं गृह्ण गृह्ण स्वाहा’ यह मन्त्र पढ़कर कड़ुवे तेलके साथनीमके पत्तोंसे जिसका नाम लेकर हवन किया जाय उसको तत्काल ज्वर होता है; चीतेके फूल एक सहस्र शत्रुका नाम लेकर सहस्र आठ बार लवण हवन करनेसे दाहज्वरहोता है ॥२६॥ यह यन्त्र कुंकुम गोरोवनसे भूर्जपत्रपर लिखे कंठमें बांधनेसे तिजारी नष्ट होती है ।



इस यन्त्रको चीतेके फूलके रससे भोजपत्रपर जिसका नाम सहित रससे भोजपत्रपर लिख आककी लिख आककी नलिकामें स्थापन नलिकामें रखनेसे तत्काल ज्वर होता है ।

इस यन्त्रको कपिलाके दूधसे साध्य का नाम सहित लिखकर कहीं गुप्त स्थानमें रखे तो ज्वर हो ।



प्रवेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२२१)

ॐ चामुण्डे हन २ दह दह पच २ अमुकं गृह्ण गृह्ण
 स्वाहा" अनेन मन्त्रेण निम्बपत्रकटुतैलं साध्य-
 नाम गृहीत्वा जुहुयात्स ज्वरेण गृह्यते । अनेन
 लवणाहुतीरष्टसहस्रं जुहुयात्स शूलेन गृह्यते ॥ २७ ॥

ॐ चामुण्डे हन हन दह २ पच २ अमुकं गृह्ण २ स्वाहा इस मंत्रसे
 पत्ते लेकर कडुवे तेलद्वारा साध्यका नाम लेकर हवन करे तो
 ग्रसित होता है, इसी मन्त्रसे लवणकी आहुति अष्टोत्तर सहस्र
 करनेसे शूलसे और ज्वरसे ग्रसित होता है ॥ २७ ॥

	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं सां ह्रीं ह्रीं	ह्रीं
सां	ॐ	ह्रीं दे ॐ	ह्रीं व ॐ ह्रीं दे ॐ	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं सां ह्रीं ह्रीं	ह्रीं

सर्पिजना, विष, रुधिर, और राईको एकत्रकर जिसका नाम लिख
 हजनेकी नलिकामें डालकर तपावे तो वह ज्वरसे गृहीत होता है
 वा उपरोक्त वस्तुओंमें राई भी मिलावे । यह अनुभव किया है ।
 तेनैव वेत्रपत्रमष्टसहस्रं जुहुयात्स चतुर्थज्वरेण गृह्यते ।

रक्तपुष्पचित्रकरसेन यस्य नामाभिलिख्य भूर्जे ॥

अर्कलतिकायां स्थापयेत्स दाहज्वरेण गृह्यते ॥

मन्त्रः--“ॐ नमः श्रीनृसिंहाय देवाय दनुजारये

नमः कृष्णाय ” ॥ २८ ॥

वेत्रपत्र आठ सहस्र हवन करनेसे चातुर्थिकज्वरसे ग्रसित होता

। लालफूल और चीतेके रससे जिसका नाम लिख भोजपत्रको

की बेलपर स्थापन कर दे उसे दाहज्वर होगा । मन्त्र--“ॐ नमः

श्रीसिंहाय देवाय दनुजारये नमः कृष्णाय” ॥ २८ ॥

(२२२)

कामरत्न

दशम-

*स्तुक्पयोलेपनेनैव पानेन श्वेतकुष्ठकृत् ।

ताम्बूले इन्दुगोपं च दत्त्वासौ श्वेतकुष्ठजित् ।

पीत्वा यत्ने यथापूर्वं भक्षेद्वा सोमराजिकाम् ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेण

गृह्ण २ पच २ ताडय २ क्लेदय २ हूं फट् स्वाहा

ठः ठः” उक्तयोगानामयं मन्त्रः ॥ २९ ॥

थूहरके दूधसे लेपवा पानसे श्वेत कुष्ठ होता है ताम्बूलमें बीत
हूटी खाय फिर सोमराजीके पीनेसे श्वेतकुष्ठ दूर होता है ॥ मन्त्र यह
है—“ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय अमुकं रोगेण गृह्ण २ पच
२ ताडय २ क्लेदय २ हूं फट् स्वाहा ठः ठः” उपरोक्तयोगोंका
यह मंत्र है ॥ २९ ॥

क्षिपेदृक्षे मृगशिरि तित्तिकाष्ठस्य कीलकम् ।

पञ्चांगुलं रिपोगेहे वह्निमान्द्यं प्रजायते ॥ ३० ॥

सामुद्रं लवणं वह्नि केवलं वा समुद्रजम् ।

बन्धक्या उदरं न्यस्तं सर्वमंतः पुटे पचेत् ॥ ३१ ॥

मृगशिर नक्षत्रमें पांच अंगुल तेंदूवृक्षके काठकी कील शत्रुके घरमें
डालनेसे अग्नि मन्द होती है । समुद्रलवण चीता अथवा केवल सेंधा
नोन बन्धकीमें रखकर सब अन्तरपुटसे जलादे ॥ ३० ॥ ३१ ॥

अथाक्षिरोगजननम्

करवीरार्द्रकाष्ठेन तमादाय सुचूर्णयेत् ।

खाने पानेऽर्पयेद्यस्य तस्य चक्षुः प्रणश्यति ॥ ३२ ॥

*सूकरस्य पयस्तैललेपेन इति वा पाठः । अर्थात् सूकरका दूध और तेल
एकत्र कर शरीरमें लगाने और पीनेसे श्वेतकुष्ठ हो जाता है ।

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२२३)

कनेरके गीले काष्ठाद्वारा उसको लेकर चूर्ण करे जिसके खान
गन्तमें डालदे उसके नेत्र नाश होजाते हैं ॥ ३२ ॥

दृष्टि स्तम्भयितुं तस्य मरिचाक्षफलं वचा ॥

दृष्टिके स्तम्भ करनेको कालीमिर्च बहेडेका फल और वच है ॥

करवीरपुष्पमष्टसहस्रमुक्तमन्त्रेण हुनेत् ।

अक्षिरोगो भवति ॥

आठ सहस्र कनेरके फूल उक्तमंत्रसे वत्रूका नाम ले हवन करने-
नेत्ररोग होता है ॥

उल्लूकमस्तकं ग्राह्यं लवणेन प्रपूरयेत् ।

मृत्पात्रस्थं सप्तवस्त्रमक्षकाष्ठेन चालयेत् ॥ ३३ ॥

उल्लूका मस्तक लेकर लवणसे पूर्ण करे । सात दिनतक मट्टीके
पात्रमें रखकर बहेडेकी लकड़ीसे घोटें तो नेत्ररोग होता है ॥ ३३ ॥

अथ शत्रुभ्रामणम्

अश्वत्थकीलमश्विन्यां यस्य गेहे दशाङ्गुलम्

स्थापयेद्दीर्घयात्रा स्यात्तस्यापि न हि संशयः ॥ ३४ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें पीपलकी दश अंगुली
कील जिसके घरमें स्थापित कर दे उसकी
दीर्घ यात्रा होजाती है । इसमें सन्देह
नहीं ॥ ३४ ॥ इस यंत्रको रक्तसे शवके
झाया हुआ वस्त्रमें लिख देवदत्त स्थानमें
स्थानाम अंकितकरवाव्य दिशामें डालनेसे
वैरीभ्रमताफिरेगा ॥



शृगालस्यास्थिकीलं च स्थाप्यं स्याच्चतुरङ्गुलम् ।

रिपोगेहे सोमऋक्षे दीर्घयात्रा च तस्य वै ॥ ३५ ॥

(२२४)

कामरत्न

दशम

सोमदेवताके नक्षत्र मृगशिरमें शत्रुके त रमेंचार अंगुलकी गोदङ्की
अस्थिस्थापन करनेसे दीर्घयात्रा होजाय, इसमें हन्देह नहीं ॥ ३६ ॥

अथ उन्मत्तीकरणम् ।

तालकं धूर्तबीजं च धनचूर्णं तु भक्षयेत् ।

दत्त्वोन्मत्तो भवेच्छत्रुः सिताक्षीरैः पुनः सुखी ॥ ३६ ॥

हरताल, धतूरेके बीज, मोथेका चूर्ण इनको देतेही शत्रु उन्मत्त हो
जाता है । फिर मिश्री और दूध पीनेसे सुखी होता है ॥ ३६ ॥

तालकं लशुनं मूर्ध्नि क्षिप्तं यस्य पिशाचकृत् ।

सुरामांसताक्षीरं भक्षणाच्च सुखावहम् ॥

हरताल और लहसन जिसके ऊपर डालाजाय वह पिशाच तुल्य

होजाता है । सुरामांस सिता (मिश्री)

और दूध पान करनेसे उसी समय

सुखी होता है । धतूरेके रस और

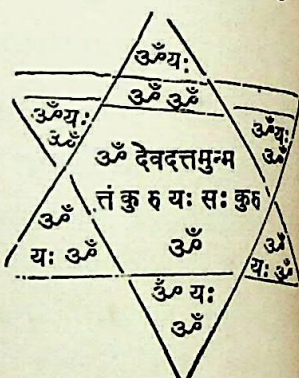
काकके रुधिरसे धतूरेके पत्रपर

साध्यनामसहितइस यंत्रको लिख

नीमकी शाखामें वायव्य दिशामें

धारण करे तो उन्मत्त होजायगा

यह अनुभव किया है सत्य है ॥



मध्वाज्याभ्यां स्वर्णमाक्षीं पिष्ट्वा तत्कृतकज्जलम् ।

दत्तं यस्याञ्जनं नेत्रे उन्मत्तोऽसौ प्रजायते ॥ ३७ ॥

मधु घृत इनसे सोनामक्खीको पीसकर इसका काजर कर अंजत
करनेसे वह उत्तम होजाता है ॥ ३७ ॥

अपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२२५)

गोधृतं सैन्धवं तुल्यं वराहस्य तु पित्तकम् ।

अजाक्षीरेण संयोज्यं पानेनोन्मत्तनाशनम् ॥ ३८ ॥

गौका घी, सेंधा यह बराबर ले वाराहका पित्त बकरीके दूधके सेवन करनेसे उन्मत्तपन नाश होजाता है ॥ ३८ ॥

मयूरपारावतकुक्कुटानां ग्राह्य पुरीषं कनकं च तालम् । तन्मूर्ध्नि दत्तं कुरुते पिशाचवन्निवर्तते मुण्डितमस्तकेन ॥ ३९ ॥

मोर, कुक्कुट (मुरगा), कबूतरकी बीट इनको ग्रहण कर और हरतालको शिरपर डालनेसे वह प्राणी पिशाचवत् हो फिर और मुण्डानेसे सुखी होता है ॥ ३९ ॥

गुडं करञ्जबीजं च घनचूर्णं समंसमम् ।

फलस्यान्ते प्रदातव्यमुन्मत्तो भक्षणाद्भवेत् ॥ ४० ॥

गुड, करंजुएके बीज, माथेका चूर्ण इनको समानभाग लेकर फलमें तो भक्षण करतेही उन्मत्त होजाता है ॥ ४० ॥

शर्कराशतपुष्पाज्यक्षीरपाने सुखावहम् ॥

शक्कर, सोंफ घृत, दूध इनका पान करनेसे सुखी होता है ॥

ॐ नमः उन्मत्तकारिणी विद्ये ठः ठः । उक्तयोगानामयमेव मन्त्रः ॥ ४१ ॥

ॐ नमः उन्मत्तकारिणी विद्ये ठः ठः' पूर्वोक्त योगोंका यही मंत्र ॥ ४१ ॥ इति उन्मत्तीकरण ॥

अथ मारणम्

नरास्थिकीलकं पुष्ये गृहणीयाच्चतुरंगुलम् ।

निखनेद्यस्य गेहे तु भवेत्तस्य कुलक्षयः ॥ ४२ ॥

(२२६)

कामरत्न

दशम-

“ॐ हूं ह्रीं फट् स्वाहा” ॥

पुण्यनक्षत्रमें मनुष्यकी अस्थिकीलक चार अंगुलीकी ग्रहण कर, ॐ हूं ह्रीं फट् स्वाहा से जिसके घरमें गाडदे उसका कुलक्षय हो जाता है ॥ ४२ ॥

अश्वस्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।

शत्रुगेहे निहन्त्याशु कुटुम्बं वैरिणां कुलम् ॥

“हुं हुं फट् स्वाहा” सप्ताभिमन्त्रितं शत्रुगेहे निखनेत् कुलक्षयं याति ॥ ४३ ॥

घोडेकी अस्थि कील चार अंगुलीकी अश्विनी नक्षत्रमें ग्रहण कर शत्रुके घरमें गाडनेसे वैरीके कुटुम्ब और कुलका नाश होजाता है ‘हुं हुं फट् स्वाहा’ इससे सात बार मन्त्र पढकर गाडे तो कुलक्षय हो ॥ ४३ ॥

“ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुं गृह्ण २ हुं हुं ठः २” अनेन नरास्थिकीलकं सहस्राभिमन्त्रितं चितामध्ये निखनेत् स ज्वरेण नश्यति ॥

‘ॐ डं डां’ इस मन्त्रसे मनुष्यकी हड्डीकी कील सहस्रवार अभिमन्त्रित कर चितामें गाडनेसे ज्वरसे नष्ट होता है । वा जिसका नाम लेकर जिसके घर वा श्मशान में गाडे उसका नाश हो ॥

गोरोचनसे भोज-
पत्रपर शत्रुके नाम-
सहित लिख पात्रमें
रख दूधसे प्लावित

ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ॐ देवदत्त ॐ ह्रीं नाशयति ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं

कर जलमें डाल दे तो शत्रुकी शांति अर्थात् मरण हो ॥

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

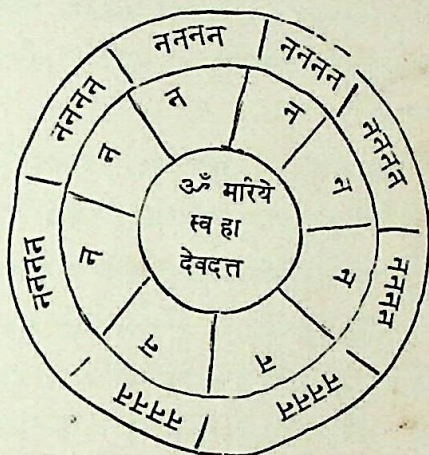
(२२७)

“ॐ णं णां णि णीं णुं णे णै णों णौ णं णः ठः ठः”

अनेन नरास्थिषडंगुलकीलकं सहस्राभिमन्त्रितं
यस्य नाम्ना गृहे श्मशाने वा निखनेत्तस्य सर्व-
नाशो भवति ॥

‘ॐ णं’ इस मन्त्रसे छः अंगुल नरास्थिकील ले हजारवार पढ़कर

जिसके नामसे घर वा
श्मशानमें गाडे तो उसका
नाशहो ॥ भोजपत्रमें इष्टका,
हरिद्रा और हरितालसे
जिसका नामसहित इस
यंत्रको लिख प्रच्छन्न स्थापन
करे वह नष्ट होजायगा
कालनेसे स्वस्थहोगा नष्ट
मन्त्र और यंत्र दोनोंहीके
कारनेसे शीघ्र सिद्धि होती है.



उद्भान्त

जिनिज विधिके मन्त्र विधिसे समझ लेना चाहिये ॥

“ॐ सुरेश्वराय स्वाहा”

सर्पास्थिषडंगुलमेकं तु चाश्लेषाया रिपोगृहे ।

निखनेत्सप्तधा जप्तं मारयेद्रिपुसंततिम् ॥ ४४ ॥

आश्लेषानक्षत्रमें सांपकी हड्डी एक अंगुलकी लेकर ‘ॐ सुरेश्वराय
स्वाहा’ यह मन्त्र सात बार जपकर शत्रुके घरमें गाडनेसे शत्रुके
नाशका नाश होजाता है ॥ ४४ ॥

“ॐ सीं शोषणे स्वाहा”

निम्बषड्बिन्दुकौ ग्राह्यौ विषं त्वग्वानरीफले ।

एतच्चूर्णं प्रदातव्यं शत्रुशय्यासनादिषु ।

जायन्ते स्फोटकास्तीव्रा दशाहान्मरणं भवेत् ॥ ४५ ॥

नींब, षड्बिन्दु, विष, कौंचके फल और छाल इनका चूर्ण, ॐ सीं शोषणे स्वाहा’ इस मन्त्रसे जपकर शत्रुकी शय्या आसनादिमें प्रदान करे तो तीव्र स्फोटक हो जाते हैं; जिससे दशही दिनमें मरण हो जाता है ॥ ४५ ॥

स्नानभूमूत्र भूमृत्स्नां सर्पवक्त्रे विनिःक्षिपेत् ॥ ४६ ॥

वेष्टयेत्कृष्णसूत्रेण मार्गमध्ये ह्यधोमुखम् ।

निखनेन्म्रियते शत्रुस्समुत्थाने सुखी भवेत् ॥ ४७ ॥

शत्रुके स्नानस्थान मूत्रस्थानकी मट्टीको सर्पके मुखमें डाल उसे काले सूत्रसे वेष्टित करके मार्गके मध्यमें नीचेको मुख कर डाले तो शत्रु मरने लगता है और उखाड़े तो सुखी होता है ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

बामदन्तं कुलीरस्य ह्यधोभागस्य चाहरेत् ।

शराग्रे फलकं कुर्याद्विधनुषश्चित्रकेन्धनैः ॥ ४८ ॥

गवां शिरागुणं कृत्वा शत्रुं कुर्याच्च मृन्मयम् ।

तद्वज्जातेन बाणेन म्रियते तत्क्षणाद्रिपुः ॥ ४९ ॥

कैंकडेके नीचेका बायां दांत लावे, उसको बाणके आगे फलमें लगावे और सावधानीसे रक्षा करे, चित्रकका धनुष बनावे । धनुकी शिराका डोरा डाले । शत्रुकी मट्टीकी मूर्ति बनाकर उसपर इस बाणका प्रहार करे तो उस बाणसे प्रहार करतेही उसी समय शत्रु मरजाता है ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२२९)

आर्द्रायां निम्बवन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।

निखनेन्म्रियते शत्रुरुद्धृते च पुनः सुखी ॥ ५० ॥

तथा शिरीषवन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुना हरेत् ।

शत्रोर्गोहे स्थापयित्वा रिपोर्नाशो भविष्यति ॥ ५१ ॥

आर्द्रनिक्षत्रमें नीमका वन्दा लाकर शत्रुके शयनस्थानमें गाड़-

ने शत्रु मरजाता है, उखाडनेसे सुखी होता है । उसी प्रकार

शिरसका वन्दा लाकर उसी नक्षत्रमें शत्रुके घरमें स्थापन करनेसे

शत्रुका नाश हो जाता है ॥ ५० ॥ ५१ ॥

कृष्णवृषभरक्तेन गङ्गामृत्तिकया सह ।

तिलकं भालदेशे च कृत्वा सम्भावयेत्तु यम् ।

विद्वः स्यात्तत्क्षणादेव प्रोज्झिते च शुभं भवेत् ॥ ५२ ॥

काले बैलका रक्त और गंगाकी मृत्तिकाका माथेपर तिलक कर

विसको संभावित करे वह विद्व होता है । फिर तिलकको दूर करनेसे

शुभ होता है ॥ ५२ ॥

कृष्णछागाश्वपादस्य खुरस्थं रोमकं हरेत् ॥ ५३ ॥

कृष्णकुक्कुटकाकस्य ग्राह्यं पक्षचतुष्टयम् ।

सर्वं दग्ध्वा तु भाण्डान्तस्तद्भस्म जलसंयुतम् ॥ ५४ ॥

ललाटे तिलकं कृत्वा वामहस्तकनिष्ठया ।

यं शिरो नम्यते तस्य वेधो भवति निश्चितम् ॥ ५५ ॥

काल बकरे और घोडेके पैरोंके खुरके बाल और काले मुरगे

का कौएके चार पंख लेकर इन्हें जलाय इसकी भस्म बरतनमें धरे ।

पानीमें मिलाय वाम हाथकी कन अंगुलीसे माथेपर तिलक कर

उसके आगे झुके उसका अवश्य वेध होगा ॥ ५३-५५ ॥

(२३०)

कामरत्न

दशम-

ऊर्णनाभिश्च षड्बिन्दुः समांशं कृष्णवृश्चिकम् ।
यस्याङ्गे तत्क्षिपेच्चूर्णं सप्ताहात्स्फोटकं भवेत् ।

मयूरपुच्छनीलाब्जं पिष्ट्वा लेपैः सुखावहम् ॥ ५६ ॥

ऊर्णनाभि, षड्बिन्दुकीट और उसकी बराबर काले वृक्षकका चूर्ण कर जिसके शरीरमें डाले तो सात दिनमें फोड़े होजाते हैं । फिर मोरपिच्छ और नीलकमलका लेप करनेसे वह सुखी होता है ॥ ५६ ॥

रिपुविष्ठां वृश्चिकं च खनित्वा भुवि निःक्षिपेत् ॥ ५७ ॥

आच्छाद्य प्रावरेणाथ तत्पृष्ठे मृत्तिकां क्षिपेत् ।

म्रियते मलरोधेन उद्धृते च पुनः सुखी ॥ ५८ ॥

वृश्चिक और शत्रुकी विष्ठा पृथ्वीमें खोदकर डाल दे तो शत्रुका मल रुक जायगा, वह मृत्युको प्राप्त होगा । उखाडनेसे सुखी होगा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

ॐ “ह्रीं क्षः अमुकं क्षम्” । अनेन मन्त्रेण राजि-
कालवणशिवनिर्माल्यानि कटुतैलेन सहस्रहो-
मात् शत्रोर्वधः ॥ ५९ ॥

‘ॐ ह्रीं क्षः अमुकं क्षम्’ इस मन्त्रसे राई, नोन, शिवनिर्माल्य इनकी कटु तेलके साथ सहस्र आहुति देनेसे शत्रुका वध होता है ॥ ५९ ॥

इस यंत्रको साध्यके रक्त से (शत्रुका) नाम सहित भोजपत्रपर लिखे सिकोरेमें डाल ज्वलित अग्निमें स्थापन करे तो उसी समय शत्रु नष्ट होजायगा ॥

स्व स्वाहार हभ्याम्

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२३१)

अथ अश्वनाशनम्

कृष्णजीरकचूर्णेन अञ्जिताश्वो न पश्यति ।

तत्रेण क्षालयेच्चक्षुः सुस्थो भवति घोटकः ॥ ६० ॥

काले जीरेका चूर्ण आंखमें डालनेसे घोडा अंधा होजाता है, फिर
घुठनेसे आंखें धोनेसे स्वस्थ हो जाता है ॥ ६० ॥

घ्राणे छुछुन्दरीचूर्णं दत्ते पतति घोटकः

सुस्थश्चन्दनपानेन नस्यं प्राप्य न संशयः ॥ ६१ ॥

मरी छछुंदरकी सुखाय उसका चूर्णकर सुंघातेही घोडा गिरजाता

। फिर चन्दनकी नस्य देनेसे वा पान करनेसे स्वस्थ होजाता

इसमें सन्देह नहीं ॥ ६१ ॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां कुर्यात्सप्तांगुलं पुनः ।

निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटाकान् ॥ ६२ ॥

अश्विनीनक्षत्रमें घोडेकी अस्थिकी कील सात अंगुली बनावे

इससे अश्वशालामें गाडनेसे घोड़े मर जाते हैं ॥ ६२ ॥

भरण्यामुक्तमन्त्रेण चितिकाष्ठस्य कीलकम् ।

अष्टांगुलं तु निखनेदश्वशाला विनश्यति ॥ ६३ ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अश्वान् हन २

स्वाहा ॐ पच पच स्वाहा” ॥

भरणीमें आगे लिखे हुए मन्त्रसे चितिकाष्ठकी अष्टांगुल कीलक

अश्वशालामें गाडनेसे घुडसाल नष्ट होती है । मन्त्र यह है—, ॐ नमो

भगवते रुद्राय ॐ अश्वान् हन २ स्वाहा ॐ पच पच स्वाहा ॥ ६३ ॥

इति अश्वनाशन

(२३२)

कामरत्न

दशम-

अथ सस्यनाशनम्

पुनर्वसौ चित्यकाष्ठकीलकं त्र्यंगुलं क्षिपेत् ।

शताभिमन्त्रितं क्षेत्रे सस्यं तत्र विनश्यति ॥ ६४ ॥

“ॐ लोहितमुखे स्वाहा” ॥

पुनर्वसुनक्षत्रमें (चित्यके) चिताके काष्ठकी कील तीन अंगुलके प्रमाणकी लावे उसको सौ बार “ॐ लोहितमुखे स्वाहा” इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित कर खेतमें डालनेसे खेती नष्ट होजाती है ॥ ६४ ॥

आर्द्रायां निःक्षिपेत्कीलं भल्लूकस्यास्थिसम्भवम् ।

क्षेत्रमध्ये तदा शत्रोः शस्यं सर्वं विनश्यति ॥ ६५ ॥

आर्द्रानक्षत्रमें भल्लूककी अस्थिकी कील शत्रुकी खेतीमें डाल तो सब खेती नष्ट होजाती है ॥ ६५ ॥

विशाखायां कालिकाष्ठकीलमष्टांगुलं क्षिपेत् ।

कदलीवाटिकामध्ये नाशयेत्कदली फलम् ॥ ६६ ॥

विशाखानक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी आठ अंगुली कदलीकी वाटिकामें डालनेसे केलेकी फली नष्ट होजाती हैं ॥ ६६ ॥

अथ रजकस्य वस्त्रनाशनम्

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रे जातिकाष्ठस्य कीलकम् ।

अष्टांगुलप्रमाणं तु निखनेद्रजकस्थले ।

शताभिमन्त्रितं तेन तस्य वस्त्राणि नाशयेत् ॥ ६७ ॥

“ॐ कुम्भं स्वाहा ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें जातीफलकाठकी आठ अंगुली प्रमाणकी कील ‘ॐ कुम्भं स्वाहा’ इस मन्त्रसे सौ बार अभिमन्त्रित कर धोबीके घरमें

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२३३)

गाडनेसे रजकके वस्त्र नष्ट होजाते हैं ॥ ६७ ॥ इति रजकवस्त्र-
नाशनम् ॥

अथ धीवरस्य मत्स्यनाशनम्

संग्राह्य पूर्वफाल्गुन्यां बदरीकाष्ठकीलकम् ।

अष्टांगुलं च निखनेन्नाशयेद्धैवरे गृहे ॥ ६८ ॥

“ॐ जले स्वाहा ॥ ॐ मत्स्यिका स्वाहा” ॥

मन्त्रद्वयस्य तुल्यं फलम् ।

पूर्वफाल्गुनीनक्षत्रमें बेरीकी लकड़ी आठ अंगुलकी कील ग्रहण
कर धीवरके घरमें गाडनेसे मच्छियोंका नाश होजाता है । ‘ॐ ज्वल
स्वाहा अथवा ॐ जले स्वाहा ’ ‘ ॐ मत्स्यिका स्वाहा ’ । इन
दोनों मन्त्रोंका समान फल है ॥ ६८ ॥

सप्तांगुलं मघाऋक्षे भल्लातं काष्ठकीलकम् ॥ ६९ ॥

गृहीत्वा दाशगेहे तु देयं मत्स्यान् विनाशयेत् ।

मघा नक्षत्रमें सात अंगुलका भिलावेका काष्ठ धीवरके घरमें
गाडनेसे मच्छियोंका नाश हो जाता है ॥ ६९ ॥

कृतिकायामर्ककाष्ठकीलकं त्र्यंगुलं क्षिपेत् ।

शत्रोर्वापीहृदादौ च मत्स्यस्तत्र विनश्यति ॥ ७० ॥

कृतिकानक्षत्रमें आककी लकड़ी तीन अंगुलकी लेकर शत्रु धीव-
रके बावडी वा हृदादिमें डालनेसे उसमेंकी मछली नष्ट होजाती है
॥ ७० ॥

अथ कुम्भकारस्य भाण्डनाशनम्

हस्ते वै त्र्यंगुलं कीलं करवीरस्य काष्ठजम् ।

निखनेत्कुम्भकारस्य शालायां भाण्डनाशकृत् ॥ ७१ ॥

(२३४)

कामरत्न

दशम-

हस्तनक्षत्रमें तीन अंगुल कनेरकी लकड़ी लेकर कुम्हारके घरेमें गाडनेसे उसके बरतन टूट जाते हैं ॥ ७१ ॥

पञ्चांगुलं निम्बकीलं तदृक्षे पूर्ववत्फलम् ॥ ७२ ॥

पूर्वोक्त नक्षत्रमें पांच अंगुल नीमकी कील गाडनेसे पूर्ववत् फल होता है ॥ ७२ ॥

गोक्षुरं मेषशृङ्गं च बीजं वा कोकिलाक्षकम् ।

शूकरस्य मलं वाथ मूलं वा श्वेतगुञ्जकम् ।

पाकस्थाने तु भाण्डानां क्षिप्तं स्फोटयते ध्रुवम् ॥ ७३ ॥

गोखरू, मेढाशिगी, तालमखाने, शूकरका मल अथवा श्वेत चौं लीकी जड डालनेसे अवश्य बरतन फूटजाते हैं ॥ ७३ ॥

तालं करञ्जबीजं च टङ्कणेन समन्वितम् ।

कृत्वा भाण्डारस्फुटंत्येवमुक्तानां मन्त्र उच्यते ॥ ७४ ॥

हरताल और करंजके बीज, सुहागा यह सब वस्तु डालनेसे आवेके बरतन टूट जाते हैं इन प्रयोगोंके मन्त्र कहते हैं ॥ ७४ ॥

“ॐ मद मद स्वाहा” ॥ “ॐ गुरु हर स्वाहा” अथवा

“ॐ दमन्य दमन्य स्वाहा” मन्त्रत्रयरयतुल्यं फलम् ॥

मन्त्र—‘ॐ मद मद स्वाहा, ॐ गुरु हर स्वाहा’ ‘ॐ दमन्य दमन्य स्वाहा’ इन तीनों मंत्रोंका बराबर फल है । इति कुंभकारभाण्डनाशन ॥

अथ तैलिकस्य तैलनाशनम्

मधुकस्य तु कीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम् ।

निखनेतैलशालायं तैलं तत्र विनश्यति ॥ ७५ ॥

उपदेशः १०.

हिन्दीटीकासहित

(२३५)

चित्रानक्षत्रमें चार अंगुल मुलैठीकी कील तैल शालामें डालनेसे तेल नष्ट हो जाता है ॥ ७५ ॥

ॐ दह दह स्वाहा सहस्रजपः ॥

भल्लातकाष्ठं चित्रायां निखनेतैलिके गृहे ।

अष्टांगुलं तदा तत्र ग्राहको नहि गच्छति ॥ ७६ ॥

ॐ दह दह स्वाहा इस मन्त्रका सहस्र जप कर भिलावेकी लकड़ी चित्रा नक्षत्रमें आठ अंगुलकी तेलीके घर गाड़दे तो उसके यहां कोई ग्राहक नहीं जाता ॥ ७६ ॥

अथ गोपानां गवां क्षीरनाशनम्

निक्षिपेदनुराधायां जम्बुकाष्ठस्य कीलकम् ।

अष्टांगुलं गोपगृहे गोदुग्धं च विनश्यति ॥ ७७ ॥

अनुराधा नक्षत्रमें जामुनकी कील आठ अंगुलकी घोसीके घरमें डालनेसे उसका दूध नष्ट हो जाता है ॥ ७७ ॥

अथ ताम्बूलपर्णनाशनम्

नवांगुलं पूगकाष्ठकीलकं निक्षिपेद्गृहे ।

ताम्बूलिकस्य क्षेत्रे वा ऋक्षे शतभिषाह्वये ।

तदा तस्य च ताम्बूलं नाशमायाति निश्चितम् ॥ ७८ ॥

नौ अंगुलकी सुपारीके काठकी कील शतभिषा नक्षत्रमें तंबोलीके घरमें या ताम्बूलके खेतमें डालनेसे अवश्य ताम्बूलोंका नाश होता है ॥ ७८ ॥

अथ शाकनाशनम्

गन्धकं चूर्णकं तत्र क्षिपेज्जलयुतेन वै ।

नश्यन्ति सर्वशाकानि शेषाण्यल्पबलानि च ॥ ७९ ॥

(२३६)

कामरत्न

दशम-

गन्धकका चूर्ण जलके साथ डालनेसे खेतमेंके सर्व शाक नष्ट हो जाते हैं क्रमसे निस्तेज हो शाक सूख जायगा ॥ ७९ ॥

तन्तुवायस्य सूत्रनाशनम्

अश्विन्यां जाम्बिरं काष्ठं तन्तुवायगृहे क्षिपेत् ।

द्वादशांगुलमानं तु सूत्रं तत्र विनश्यति ॥ ८० ॥

अश्विनीनक्षत्रमें बारह अंगुल जंबीरीकी कील जुलाहेके घरमें डालनेसे उसके तागे नष्ट हो जाते हैं ॥ ८० ॥

अथ शौण्डिकस्य मदिरानाशनम्

कृत्तिकायामर्ककाष्ठं षोडशांगुलकं क्षिपेत् ।

शौण्डिकस्य च गेहे च मदिरा तत्र नश्यति ॥ ८१ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें आककी लकड़ी सोलह अंगुल कलालके घरमें डालनेसे उसकी मदिरा नष्ट हो जाती है ॥ ८१ ॥

अथ कर्मकारस्य लोहनाशनम्

रोहिण्यां बदरीकाष्ठं कीलमेकादशांगुलम् ।

कर्मकारगृहे क्षिप्तं लोहं तप्तं भवेन्नहि ॥ ८२ ॥

रोहिणीनक्षत्रमें बेरीके काष्ठकी ग्यारह अंगुलकी कील लुहारकी दूकानमें गाड़नेसे लोहा तप्तनहीं होता है ॥ ८२ ॥ इति कर्मकार-लोहनाशन ॥

शरीरवेधमोचनमंत्रः

अत्र* पारीशसंभ्रमणकाय वेधच्छेदकज्ञानविज्ञानना-
फूटै । अमुकारकायंहंकलिकाचण्डीतुइमारेम-

* दूसरी लिपिमें इस प्रकार है अब पारीस संभ्रम कायवेध छेदका ज्ञानविज्ञान फूटै अमुकारगाय हंकाचण्डीतो हमारेमाशिल पाथरपर अमुकार गासे मारै-समारै मुमारै रोडांव उलटावेधे विरूपाक्ष विराली उलटावेधे पिंडोमानापै । मोरे पिंडेकरे घाउलटावेधे डांकुतुलखाः फोड २ दण्डी विरूपाक्षरे आज्ञा वारत्त पडिआ प्रातःकाल तीन गण्डूष पानी पिय ।

उपदेशः ११.

हिन्दीटीकासहित

(२३७)

शिलपाथरपडे अमुकारगामे नारससमारै पुत्री-
मारौ तारकउलटावेधे विरूपाक्षरिवानी उलटा-
वेधे पित्र पानी जे मोर पिडे करे घाउलटावेधे
ताककतातुजी खा. फोटफोकटण्डीविरूपाक्षेर
आज्ञा" वारत्रयं पठित्वा प्रतिप्रातः त्रिगण्डूषजलं
पेयम् यदि केनापि विद्धं स्यात् शरीरं तदैव
तेन कार्यमिति ॥ ८३ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने उच्चाटनादिवर्णन
नाम दशमोपदेशः ॥ १० ॥

मंत्र-अमु पानीरा शम्भुकाय वेध छेदक ज्ञान विज्ञाननाफूटे
अमुकार कायं हूं कलिका चंडीतु इमोरमा शिल पाथरपडे अमुकार
गामे नार ससमारै पुत्री मारौ तारक उलटा वेधे विरूपाक्ष रिवानी
उलटावेधे पित्र पानी जे मोर पिडे करे । घा उलटा वेधे ताक ताकतुजी
हा फोट फोट डण्डी विरूपाक्षेर आज्ञा । यह तीन बार प्रति प्रातःकाल
हो और तीन घूंट जल पिये जो किसीसे विद्ध हो तो शरीरका वेध
हट जाता है ॥ ८३ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत
भाषाटीकायां उच्चाटनादिवर्णनं नाम दशमोपदेशः ॥ १० ॥

एकादशोपदेशः

अथ नानाकौतुकम्

शिखिनस्तु शिखाचूर्णं भोजयेद्दिनसप्तकम् ।

तद्विष्ठालिप्तहस्तस्य द्रव्यं लुप्यति तत्क्षणात् ॥ १ ॥

मोरको मोरकी शिखा (कालिहारी) का चूर्ण सात दिनतक भोजन करावे उसकी विष्ठासे हाथ लपेटनसे तत्काल द्रव्य लुप्त होजाता है ॥ १ ॥

सप्ताहं तिलतैलेन भावयेदातपे खरे ।

अङ्गुलीबीजचूर्णं तु योज्यं पेष्ट्यं पुनः पुनः ॥ २ ॥

तत्तैलं ग्राहयेद्यत्नात्तैलकारस्य यन्त्रतः ।

अथवा कांस्यपात्रे द्वे तेन कल्केन लेपयेत् ॥ ३ ॥

उत्थाप्य स्थापयेद्धर्मं सम्मुखन्तु परस्परम् ।

तयोरधः कांस्यपात्रे पतितं तैलमाहरेत् ॥ ४ ॥

सात दिनतक तिलके तेलसे ढेराके बीजोंके चूर्णको भावना देकर धूपमें सुखावे और बारंवार सुखाय पीसे ॥ उसके तेलको कोल्हमें पिलवा ले अथवा कांसीके दो पात्र उसके कल्पसे लेप करे फिर इसको उठाकर धूपमें रखे और सामने रखे उसके नीचे कांसेका बर्तन रखदे, उसमें जो तेल गिरे उसे ग्रहण करले ॥ २-४ ॥

इदमेवाङ्गुलीतैलं विद्धं सर्वत्र योजयेत् ।

लिप्तमङ्गुलितैलेन मण्डितं तत्क्षणादिशेत् ।

सफलो जायते वृक्षस्तत्क्षणाच्चात्र संशयः ॥ ५ ॥

यह अंगुली तेल सिद्ध और सब कार्य योगोंमें प्रयोग करे । अंगुली तेल लगाकर फेरनेसे उसी समय मण्डन होता है । वृक्षपर लगानेसे उसी समय वृक्ष सफल हो जाता है । इसमें सन्देह नहीं ॥ ५ ॥

पद्मिनीबीजचूर्णं तु भाव्यमङ्गुलितैलतः ।

न्यस्तं जले महाश्चर्यस्तत्क्षणात्पद्मसम्भवः ॥ ६ ॥

उपदेशः ११.

हिन्दीटीकासहित

(२३९)

एक अंगुली तेलमें कमलगट्टेकी भावना दे जलमें रखनेसे उसी
 समय कमलकी उत्पत्ति हो जाती है ॥ ६ ॥

यानि कानि च बीजानि जलजस्थलजानि च ।

अङ्गुलीतैललिप्तानि तानि तान्युद्भवन्ति च ॥ ७ ॥

जितने जलस्थलके वृक्षोंके बीज हैं एक अंगुली तैल मात्र लगानेसे
 उसी समय जम जाते हैं ॥ ७ ॥

यत्किञ्चित्काण्डमूलोत्थं पत्रपुष्पफलादिकम् ।

अङ्गुलीतैललिप्तं तु तुल्यरूपं भवेद्ध्रुवम् ॥ ८ ॥

जो कुछ काण्ड मूलसे उठे हुए पत्र पुष्प फल आदिका हैं, वे अंगुली
 तैलमात्र लगा देनेसे निश्चय तुल्यरूप हो जाते हैं ॥ ८ ॥

गुञ्जाफलाम्बुपिष्टं च लेपयेत्पादुकाद्वयम् ।

विना क्लेशं नरो गच्छेत् क्रोशमेकं न संशयः ॥ ९ ॥

जलमें चौटली पीसकर खडाउओंपर उसका लेप करनेसे उसके
 पर मनुष्य चढ़कर एक कोश जा सकता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ९ ॥

लघु दारुमयं पीठं गुञ्जापिष्टेन लेपयेत् ।

शुष्कमन्तर्जलैः सार्द्धमुपविष्टं न मज्जति ॥ १० ॥

छोटी काठकी चौकीको चौटली पीसकर लेपित करे और
 जाकर जलमें चौकीपर बैठनेसे चौकी नहीं डूबती है ॥ १० ॥

गुञ्जाबीजं त्वचोन्मुक्तं चूर्णं भाव्यं नृमूत्रकैः ।

सप्तवारं ततः काष्ठं लिप्तमङ्गुलिसम्भवम् ॥ ११ ॥

तैलमादाय तल्लिप्तं पूर्ववत्पादुकागतिः ॥ १२ ॥

चौटलीके बीजोंकी छाल अलग कर मनुष्यके मूत्रमें चूण कर सातवार काष्ठ पर लेप कर अंगुली तेल लेकर पूर्ववत् दोनों खडा-उओंको लिप्त करे तो पूर्ववत् खडाऊँपर जासकता है ॥ ११ ॥ १२ ॥

वर्तिस्सर्ज्जरसैः पूर्णा तैललिप्ता जले स्थिता ।

ज्वालिता दीपवर्तिस्तु ज्वलत्येव न संशयः ॥ १३ ॥

रालकी बत्ती कर तेलसे लिप्तकरके जलाय जलमें रखनेसे वह बत्ती बराबर जलती रहेगी, इसमें संदेह नहीं ॥ १३ ॥

कटुतुम्ब्युत्थतैलेन पारावतचटोद्भवम् ।

मलं च शिखिमूलं च पेषितं गर्धभास्थिनाम् ॥ १४ ॥

ललाटे तिलकं तेन कृत्वा संदृश्यते पुनः ।

दशास्यो नात्र सन्देहो यथा लङ्केश्वरो नृपः ॥ १५ ॥

जो कडवी तुम्बीके तेलसे कबूतर और चटककी बीट तथा मूलशिखाकी जड़ गर्दभकी हड्डीके साथ पीसकर माथेपर तिलक लगावे वह पुरुष दश शिरके रावणके समान निश्चयही दीखता है ॥ १४ ॥ १५ ॥

शिग्रुबीजोत्थितं तैलं पारावतपुरीषकम् ।

वराहस्य वसायुक्तं शिखिमूलं समं समम् ॥ १६ ॥

ललाटे तिलकं तेन यः करोति स वै जनः ।

दृश्यते पञ्चवक्त्रोऽसौ यथा साक्षान्महेश्वरः ॥ १७ ॥

सहजनेके बीजोंका तेल और कबूतरकी बीट सुअरकी चरबी शिखिमूल इनको समान भाग लेकर जो मनुष्य माथेपर तिलक करे वह पाँच मुखवाला साक्षात् महेश्वरके समान दीखता है ॥ १६ ॥ १७ ॥

प्रदेशः ११.

हिन्दीटीकासहित

(२४१)

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां मयूरास्ये विनिःक्षिपेत् ।

भृङ्गीबीजमदः कृष्णां कृष्णभूमौ निवापयेत् ॥ १८ ॥

तज्जातभाङ्गीं संगृह्य तथा कुर्यात्तु रज्जुकम् ।

तद्रज्जुबद्धः पुरुषो मयूरो दृश्यते जनैः ॥ १९ ॥

कृष्ण चतुर्दशीकी रात्रिमें मोरके मुखमें अतिविषाके बीज, मोमराजी, भारंगी इनको डालकर उन्हें काली मिट्टीमें बोवे । जब वह उत्पन्न होजाय तब उसकी रस्सी बटकर जिस मनुष्यको उससे बांधे वह मनुष्योंको मोर दीखता है ॥ १८ ॥ १९ ॥

तद्योगे कृष्णमार्जारिवक्त्रे वैरण्डबीजकम् ।

तज्जातैरण्डबीजानामेकवक्त्रेण धारयेत् ।

तं प्रपश्यन्ति मार्जारं मनुष्या नात्र संशयः ॥ २० ॥

उसी योगमें कृष्ण बिलावके मुखमें अंडके बीजबोवे, उससे उत्पन्न हुए अंडके बीजोंको एककरके मुखमें धारण करे तो उसको मनुष्य बिलावकी सूरतका देखते हैं, इसमें संदेह नहीं ॥ २० ॥

शृगालश्चानमेषांश्च यद्दिने वापयेत्पृथक् ।

मयूरास्ये यथा भाङ्गी याति सिद्धिश्च तादृशी ॥ २१ ॥

गीदड कुत्ता, मेढा इनके मुखमें पृथक् पृथक् डालनेसे मोरके मुखमें जैसे भृङ्गी सिद्ध होती है वैसी सिद्धि होती है ॥ २१ ॥

रक्तगुञ्जाफलं वाप्यं स्त्रीकपालेऽथ सेचयेत्

जातं फलं क्षिपेद्वक्त्रे स्त्रीरूपो दृश्यते पुमान् ॥ २२ ॥

लाल चौंटलीके फलको धोकर स्त्रीके कपालमें बोकर उसको सींचने उससे जो फल उत्पन्न हो उसे मुखमें रखनेसे स्त्रीरूप दीखता है ॥ २२ ॥

नरादिसर्वजन्तूनां ग्राह्यं सद्योहतं शिरः ।

तच्च कृष्णचतुर्दश्यां सर्वबीजान्वितं वपेत् ॥ २३ ॥

भृङ्गीधत्तरबीजानि * गुञ्जानीवैकसंयुतम् ।

निखनेत्कृष्णभूम्यां तु बलिपूजासमन्वितम् ॥ २४ ॥

सेचयेत्फलपर्यन्तं यावद्वीजानि चाहरेत् ।

तत्तद्बीजे कृते वक्त्रे तत्तद्रूपं भवेद्ध्रुवम् ॥ २५ ॥

इत्येवं कौतुकं लोके नानारूपस्य दर्शनम् ।

मुक्तबीजो भवेत्स्वस्थो नात्र कार्या विचारणा ॥ २६ ॥

मनुष्यादि सम्पूर्ण जन्तुओंका तत्काल हत हुआ शिर ग्रहण कर
कृष्णपक्षकी चौदसको उसमें सब प्रकारके बीज बोवे, भांगरा, धतूरा,
एरण्ड, चौंटली यह सब एकत्र कर कृष्णभूमिमें बलिपूजाके सहित
उसको गाडदे और फलपर्यन्त सींचता रहे । उसीके समान बीजोंके
लेकर जैसे जैसे बीज मुखमें रखते जाय वैसा २ रूप दीखता है, इस
प्रकार लोकमें रखते अनेकरूपका दर्शन होता है । बीजोंको त्यागने
स्वस्थ हो जाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ २३-२६ ॥

हरितालं शिलाचूर्णमंगुलीतैलभावितम् ।

तल्लिप्तवस्त्रं शिरसि स्थितं पश्यति वह्निवत् ॥ २७ ॥

तथैव वाङ्कोलतैलेन स्फुरत्येव न संशयः ॥ २८ ॥

हरिताल, मनशिलका चूर्ण मालकांगनीके तेलमें भावित कर
वस्त्रपर लगाय शिरपर धारण करे तो अग्निके समान दीखता है । इस
प्रकार अंकोलके तेलसेभी दीखता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ २७ ॥ २८ ॥

* गुल्मं निम्बफलं युक्तम् इति पाठान्तरम् ।

प्रदेशः ११.

हिन्दीटीकासहित

(२४३)

सिन्दूरं गन्धकं तालं समं पिष्ट्वा मनश्शिलाम् ।

तल्लिप्तवस्त्रधृक् चासौ रात्रौ संदृश्यतेऽग्निवत् ॥ २९ ॥

सिन्दूर और गंधक हरताल मनशिलको पीसकर उसे कपड़े में धारण कर रात में जाय तो अग्निके समान दीखता है ॥ २९ ॥

दूरेऽपि स्थितलोकैश्च रात्रौ तु कौतुकं महत् ।

खद्योतभूलताचूर्णे ललाटे तिलके कृते ।

रात्रौ संदृश्यते ज्योतिस्तस्मिन्स्थाने तु कौतुकम् ॥ ३० ॥

इससे दूरसे स्थित हुए पुरुषोंको रात्रि में बड़ा कौतुक दीखता है ।

खद्योत और हरतालके चूर्णको माथेपर तिलक करने से रात्रि में बड़ी ज्योतिषी दीखेगी और कौतुक होगा ॥ ३० ॥

मुनिपुष्परसैः पुष्पैर्घृष्ट्वा श्वेताञ्जनं ततः ।

अञ्जिताक्षो नरः पश्येन्मध्याह्ने तारकामयम् ॥ ३१ ॥

अगस्त्यके फूलोंके रससे या फूलोंसे श्वेत अंजन घिसकर आँखोंमें मनुष्यको मध्याह्नसमयमें तारे दीखने लगते हैं ॥ ३१ ॥

वाप्यं वात्ताकुबीजं च नृकपाले मृदा सह ॥ ३२ ॥

तज्जातबीजमूलं वा मुखं प्रक्षिप्य मानवः ।

शतयोजनपर्यन्तं पश्येत्सर्वं * यथान्तिकम् ॥ ३३ ॥

गंगानके बीज मनुष्यकी खोपड़ीमें मिट्टीके साथ बोदेवे उससे उत्पन्न वा जड़को मुखमें रखे तो सौ योजनकी वस्तु निकट दीखने लगी है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

* 'स पश्येद्गरुडो यथा' इति पाठः ।

(२४४)

कामरत्न

एकादश-

वारि मक्षिकया सार्धं तज्जलं यस्य भक्षणे ।
 दीयते निःसरेत्तस्य ह्यधोवायौ तु कौतुकम् ॥ ३४ ॥
 जल मक्षिकाके साथ जिसे भक्षण करने को जल दिया जाय
 उसकी अधोवायुमें यही मक्खी निकलती है यह कौतुक है ॥ ३४ ॥
 उपरोक्तयोगानां मंत्र

“ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय * बहु-
 रूपाय नानारूपधराय हसहस नृत्यनृत्य तुदतुद
 नाना कौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा ” ॥
 अनेन सर्वयोगानामभिमन्त्रणे सिद्धिः अष्टो-
 त्तरशतजपे न पुरश्चरणम् ॥ ३५ ॥

‘ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय बहुरूपाय नानारूपाय
 हस हस नृत्य नृत्य तुद तुद नानाकौतुकेन्द्रजालदर्शकाय ठः ठः स्वाहा
 इस मंत्रको एक सौ आठ बार नित्य जपकर पुरश्चरण करनेसे मंत्रकी
 सिद्धि होती है, इस मंत्रकी सिद्धिसे उपरोक्त योगोंकी सिद्धि अवश्य
 होजाती है । ३५ ॥ इति नानाकौतुकसिद्धिः ॥

अथ खड्गस्तम्भनम्

“सिद्धि + वस्तु सुमति मोहरमाचान्द्र सुरज मोहो-
 वरभाई मोहो वरं आगे कोप खाण्डा फूटै रक्षा-
 कर देवी कालिका चण्डी आई चान्दसुरज तुजि
 मलेमुजि फूटै रामेर आज्ञा सिद्धि ” अनेन

* ‘वज्ररूपाय’ इति वा पाठः । + सिद्धिर्वसुमतिमोहीरमावादसुरजमोहो
 माइमोरअंगे कोप खाण्डाफूटैहुक्षाकरदेवीकालिकाचण्डीआई० चंदसुरजमोहो
 लेमुइफटैरोमेर आज्ञासिद्धहलव इति पुस्तकान्तरे पाठोस्ति ।

उपदेशः ११-

हिन्दीटीकासहित

(२४५)

वारत्रयाभिमन्त्रितम् धूलिना प्रोक्षिते गात्रे कृपा-
णधारा रेखा भवति नान्यथा ॥ ३६ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने नानाकौतुकनामेकादशोपदेशः
॥ ११ ॥

"वस्तु सुमति मोहोरमाचान्द्र सुरज मोहो वर भाई मोह वर आगे
लोप खांडा फूटै रक्षाकर देवी कालिका चण्डी आई चांदसुरननुजि
नले मुजि फूटै रामेर आज्ञा सिद्धि " इस मंत्रसे तीनवार अभिमन्त्रित
कर धूरिसे शरीरको आच्छादित करे तो कृपाण धारा रेखा हो
जाती है, इसमें अन्यथा नहीं है अर्थात् खड्ग बन्धन हो जाता है ॥३६॥

सर्वार्यसिद्धिप्रदयन्त्रम्

ईशान		पूर्व	आग्नेय
	अं अः ल क्षः	अ आ क इ ई ख ग घ ङ च छ ज झ ञ	
उत्तर	ॐ औ श ष स ह ङ	कृ कृ त थ द ध न	दक्षिण
	ए ऐ य र ल व ङ	लृ लृ कृ कृ प फ ब भ म त थ द ध न	
वायव्य		पश्चिम	नैऋत्य

यह यन्त्र कुंकुमसे भोजपत्रपर लिख दक्षिण भुजामें धारण करे तो
सर्वार्यसिद्धि देता है, इसमें सन्देह नहीं है.

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्र-

कृतभाषाटीकायां नानाकौतुकं नामेकादशोपदेशः ॥ ११ ॥

द्वादशोपदेशः

अथ काम्यसिद्धिः

पुष्पार्कं तु समागृह्य मूलं श्वेतार्कसम्भवम् ।
 अङ्गुष्ठप्रमितां तस्य प्रतिमां तु प्रपूजयेत् ॥ १ ॥
 गणनाथस्वरूपां च भक्त्या रक्ताश्वमारजैः
 कुसुमैश्चापि गन्धाद्यैर्हविष्याशी जितेन्द्रियः ॥ २ ॥
 * पूजयेन्नाममन्त्रैश्च तद्बीजानि नमोऽन्तकैः
 यान्यान्प्रार्थयते कामान्मासैकेन तु लभ्यते ॥ ३ ॥
 प्रत्येकं काम्यसिद्धयर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ॥ ४ ॥

रविवार पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड ग्रहण कर उसकी एक अंगुष्ठके समान गणनाथकी प्रतिमाको बनाकर भक्तिभावसे लात कनेरकी कुसुम और गन्धादि उपचारों से पूजन कर हविष्य अर्घ्य खाय जितेन्द्रिय रहे ; नाम मन्त्रसे पूजा करे और बीजादिके अन्तमें 'नमः' लगावे इस प्रकार पूजन करे तो जिस वस्तुकी इच्छा करे व एक मासमें पूर्ण होगी । प्रत्येक कामनाकी सिद्धिके निमित्त एक महीनेभर पूजा करे ॥ १-४ ॥

गणेशबीजमाह । "पञ्चान्तकं ॐ अन्तरिक्षायस्वाहा ।" अनेन पूजयेत् । पञ्चान्तकं गणेशशशिधरं बीजं गणपतेर्विदुः । "ॐ ह्रीं पूर्वदयां ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ॥" अनेन मन्त्रेण रक्ताश्वमारपुष्पाणि घृतक्षौद्रयुतानि जुहुयात् वाञ्छितं ददाति ॥

* वाममन्त्रैरिति च पाठः ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२४७)

"ॐ ह्रीं श्रीं मानसेसिद्धिकरि ह्रीं नमः ।" अनेन मन्त्रेण रक्तकुसुममेकं जपित्वा नद्यां क्षिपेत् । एवं लक्षं जपेत्ततो भगवतो वरदा अष्टगुणानामेकं गुणं ददाति ॥

गणेशबीज कहते हैं—'ॐ पंचांतकं ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा' इससे जपन करे । पांच अक्षर नीचे लिखे यह गणपतिबीज हैं ॐ ह्रीं पूर्व-
सां ॐ ह्रीं फट्स्वाहा' इस मन्त्रसे लाल कनेरका फूल घृत और हृदके सहित हवन करनेसे मनोवांछित फलकी प्राप्ति होती है ।
ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धिकरि ह्रीं नमः' इस मन्त्रसे एक लाल फूल त्रित कर नदीमें डालदे । इस प्रकार लक्ष जप करनेसे देवी वरदायिनी होती है, और अष्टगुणोंमें एक गुण देती है ॥ इति काम्यसिद्धिः ॥

अथ वाक्सिद्धिः

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षवन्दाकं धारयेत्करे ।
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम् ॥ ५ ॥
कृत्तिकानक्षत्रमें सेहुंड (थूहर) नामके वृक्षका वन्दा हाथमें धारण करनेसे वाक्यसिद्धि होती है यह महाश्चर्य है ॥५॥

मन्त्रेण ग्राहयेत्स्वातीनक्षत्रे बदरीभवम् ।
वन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्रार्थ्यते नरैः ॥ ६ ॥
तत्क्षणात्प्राप्यते सर्वं मन्त्रमत्रैव कथ्यते ॥ ७ ॥

"ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा" ॥
अनेन ग्राहयेत् । इति वाक्सिद्धिः ॥

(२४८)

कामरत्न

द्वादश-

स्वातीनक्षत्रमें बेरकी वन्दाको मंत्रसे ग्रहण करे उसे हाथमें धारण कर मनुष्योंसे जो जो प्रार्थना करे वह वह सब प्राप्त कर सकता है। मंत्र यह है—'ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा' इससे ग्रहण करे। इति वाक्सिद्धिः ॥६॥

अथ गुप्तधनगुप्तवेषचौरादिप्रकाशनम्

धनानि यत्र वा सन्ति ये वा चौरादिकास्तथा ।

गुप्तवेषा महात्मानो गन्धर्वा यक्षिणीश्वराः ॥ ८ ॥

जन्तुर्धातुश्च वृक्षाद्या मर्त्यलोके स्थिता ध्रुवम् ।

प्रकाशं जायते सर्वं तच्छृणुष्व समाहिता ॥ ९ ॥

हे देवि ? जो मनुष्यलोक (पृथ्वीमें) जहाँ धनादिक, चौरादिक तथा गुप्तवेष (योगीश्वरादि), गन्धर्व यक्षिणी और ईश्वर आदि यावन्मात्र जन्तु वा लोहादि वृक्षपर्यन्त जो जो छिपे रहते हैं उन सबोंका जिस प्रयोगसे प्रकाश हो जाय वह प्रयोग कहता हूँ। तु सावधान होकर सुन ॥८॥९॥

* वन्दा शाखोटचूतस्थां गोक्षुरं लवणं पदम् ।

अजाक्षीरेण संपेष्य ललाटे तिलके कृते ॥

गुप्ता प्रकाशमायान्ति तत्क्षणान्नात्र संशयः ॥ १० ॥

शाखोटका वन्दा, आमका वन्दा, गोखरू इनका चौथाई भाग लवण इन सबको बकरीके दूधमें पीसकर माथेपर तिलक करे तो सब गुप्त वस्तु उसी क्षणमें प्रकाश होजाते हैं कुछ संदेह नहीं है ॥१०॥

आश्लेषायां शनेर्वारे सायं दाडिमबीजकम् ।

रसं संगृह्य तुवरीं कृष्णाष्टम्यां तु भूमिजे ।

* वन्दा शाखोटवृक्षस्था गोक्षुरं लक्ष्मणापदम् । वा लक्षणापदमिति पाठः

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२४९)

पद्ममूलं मङ्गलेऽहन्यञ्जनं कारयेत्सुधीः ।

प्रकाशं पूर्ववत्सर्वं जायते नात्र संशयः ॥ ११ ॥

आश्लोषानक्षत्रयुक्त शनिवारके दिन सायंकालमें दाडिमके बीजका
 तप्त ग्रहण कर अष्टमी मंगलवारको कमलकी जड़ और शतावरीका रस
 ग्रहण करे । इसे शुद्ध कर अंजन बनाय लगावे तो पूर्ववत् सब प्रकाश
 जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥ इति गुप्तधनगुप्तवेषचौरादि
 काशनम् ॥

अथ धनुर्विद्या

इन्द्रेण पुरार्जुनं प्रति या विद्या कथिता सा सप्त-

विंशत्यक्षरा—“ॐ कालायुता रक्ता घोरा ॐ कार-

शतगुणआधारे एकादशशतसहस्र इन्द्र आज्ञा ।”

एतन्मन्त्रेण शरं धृत्वा नवधा पठित्वा आकर्णपूरिते-

धनुषि शरं मेलयेत् ॥ सहस्रधा भवति ॥ कलौ

दशधा । महादेवेन इन्द्रं प्रति या कथिता सा सप्त-

दशाक्षरा ॥ “चान्द्रधनुर्गुणरेखा काण्डब्रह्म ज्ञान ॐ

ॐ ॐ” एतन्मन्त्रं पठित्वा पञ्चवारं तदा क्षिपेत्पूर्व-

वद्भवति ॥ १२ ॥

इन्द्रे जो विद्या पहले अर्जुनसे कही है वह सत्ताइस अक्षरकी है ।

कालायुता रक्ताघोरा ॐ कारशतगुण आधारे एकादशशत सहस्र

आज्ञा । इस मन्त्रसे धनुषपर बाण धारण कर कर्णपर्यन्त नौबार

कर खेंचे तो सहस्रप्रकार बाण होता है । कलियुगमें दश प्रकारसे

आज्ञा है । महादेवजीने जो इन्द्रसे कही है वह सत्रह अक्षरकी विद्या

(२५०)

कामरत्न

द्वादश-

है । 'चान्द्रधनुर्गुणरेखाकाण्ड ब्रह्मज्ञान ॐ ॐ ॐ' यह मन्त्र पांचवार पढ़कर बाण चढ़ावे तो पूर्ववत् होता है ॥१२॥

सर्पैः कवलितं भेकमर्धमात्रं समुद्धरेत् ।

छित्त्वा सर्पस्य मुण्डं च आतपे शोषयेत्पृथक् ॥ १३ ॥

पिष्ट्वा पृथग्वटी कार्या लक्ष्यलाभप्रदा स्मृता ।

लक्ष्ये तु भेकतिलकं शराग्रे सर्पमुण्डजम् ॥ १४ ॥

दत्त्वा तिलकमाकर्णं गुणं धनुषि वेधयेत् ।

लक्ष्यस्य तिलकं बाणो विन्दत्येव न संशयः ॥ १५ ॥

सर्पसे अर्ध खाये मेंडकको और सर्पके शिरको काटकर लावे । गरमीमें सुखाय पीस गुटिका करे । यह लक्ष्यलाभकी देनेवाली है । लक्ष्यमें मेंडकका तिलक, बाणके अग्रभागमें सर्पके मुण्डका तिलक को फिर डोरा धनुषपर चढ़ाय निशाना लगाय कानतक खेंच कर छोड़े । अवश्य लक्ष्यके तिलकको बाण वेधेगा, इसमें सन्देह नहीं ॥१३-१५॥

“ ॐ रक्ते धनुरक्ते काण्डरक्ते हलिजा मा मारो

अमुकार अमुकआंग आमुकटाई मारों त्रिदशदे-

वगणरुद्रा साक्षीअमुकार मारो देवेन राखी अर्जुन

कृष्णभवानीर आज्ञा ॥” एतन्मन्त्रं पठित्वा यस्य

यदङ्गे मारयेत्तदङ्गं विध्यति ॥ किन्तु प्रथमपरी

क्षायां शनिमङ्गलाहनि मृतस्य ब्राह्मणस्य वंशमा-

नीय धनुःकाण्डं सज्जीकृत्वा तत्प्रमाणं गुणं दत्त्वा

तत्र तत्समये वा पुष्पहारमेकं दत्त्वा मुष्टिस्थाने

हंसजीवमेकं भञ्जयित्वा एकनारिकेलजलेन प्रक्षाल्य

काण्डत्रयेण लक्ष्यं विद्ध्वा साधयेत् । यदा द्रुतं

अध्यायः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२५१)

धनुःकाण्डेन लक्ष्यं शत्रोरङ्गसमीपे वेधयेत्तदा वृथा
न स्यात् ॥

॥३॥ रक्ते धनुरक्ते काण्डरक्ते हालिजामामारो अमुकार अमुकं
अमुकटाई मारों त्रिदशदेव गणरुद्र साक्षी अमुकार मारो देवेनराखी
धनु कृष्ण भवानीर आज्ञा । " यह मंत्र पढकर जिनके शरीर
जहाँ मारे वहाँ अंग विद्ध होगा । किन्तु पहली परीक्षामें शनि
जलके दिनमें मृतक हुए ब्राह्मणकी अर्थोंके बाँसका धनुष बनाय
को उसके प्रमाणके डोरेमें चढाकर एक पुष्पहार प्रदान कर
स्थानमें हंसशिशु भंजन कर नारियलके जलसे धोय तीन
उसे लक्ष्य बेधकर साधे तो वृथा नहीं होगी ॥ इति धनुर्विद्या ॥

अथ धनधान्याक्षयकरणम्

१५ ऋक्षे च पूर्वफाल्गुन्यां दाडिमीवृक्षसम्भवम् ।

वृक्षादनी धने देयमक्षये भवति ध्रुवम् ।

वन्दाकं तु मघाऋक्षं बहुवारकवृक्षजम् ।

धान्यागारे प्रदातव्यमक्षयं भवति ध्रुवम् ॥ १६ ॥

पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें दाडिमके वृक्षका तथा विदारीकंदका बन्दा
से धन अक्षय होता है । मघानक्षत्रमें बहुवारके वृक्षका बन्दा
र धान्यमें रखनेसे अवश्य धान्य अक्षय होता है ॥ १६ ॥

शेफालिकायां वन्दाकं हस्तर्क्षे च समुद्धरेत् ।

धान्यमध्ये तु संस्थाप्य तद्वान्यमक्षयं भवेत् ॥ १७ ॥

(२५२)

कामरत्न

द्वादश-

हस्तनक्षत्रमें निर्गुण्डी वा हारसिंगारका वन्दा ग्रहण कर धान्य रखे तो धान्य अक्षय होता है ॥१७॥

भरण्यां कुशलवन्दाकं गृहीत्वा स्थापयेद्बुधः

सम्पूर्ण धनधान्यान्तस्थः करोत्यक्षयं ध्रुवम् ॥ १८ ॥

भरणीनक्षत्रमें कुशका वन्दा लेकर स्थापन करनेसे सम्पूर्ण धन धान्य अक्षय होता है ॥१८॥

उदुम्बरस्य वन्दाकं रोहिण्यां ग्राहयेद्बुधः ।

स्थापयेत्संचितार्थं तु सदा भवति चाक्षयम् ।

मन्त्रेण मन्त्रितं कृत्वा मन्त्रोप्यत्रैव कथ्यते ।

“ॐ नमो धनदाय स्वाहा” ॥ १९ ॥

रोहिणीनक्षत्रमें गूलरका वन्दा ग्रहण कर “ॐ नमो धनदाय स्वाहा” इस मंत्रसे अभिमन्त्रित कर धन धान्यमें स्थापन करे तो अक्षय अक्षय होता है, ॥१९॥ इति धनधान्याक्षयकरण ॥

श्रुतिधरविद्यादिकरणम्

पथ्या पाठा कणा शुण्ठी सैन्धवं मरिचं वचा ।

शिग्रु प्रतिपलं चूर्णं द्वात्रिंशतिपलं घृतम् ॥ २० ॥

घृताच्चतुर्गुणं क्षीरं दत्त्वा सर्वं विपाचयेत् ।

* घृतशेषं समुत्तार्य लिहेद्वाग्बुद्धिदायकम् ॥२१॥

हरड, पाठा, पीपल, सोंठ, कालीमिर्च, सेंधा निमक, वच, शिग्रु जना ये सब एक एक पल तथा घी बत्तीस पल ले घीसे चौगुने घृत लेकर इन सबको एकत्र पात्रमें पकावे, जब रस जल जाय घृतमा

१ घृतशेष पिबेन्नित्यं वाङ्मेधा स्मृति इतिबुद्धिदम् । इति पाठान्तरम् ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२५३)

रहजाय तब उतार ले, नित्य इनके पानसे वाणी बुद्धि और
सती बढ़ती है ॥ २० ॥ २१ ॥

अथ ब्राह्मीघृतम्

वचा ब्राह्मी फलं कुष्ठं सैन्धवं तिलपुष्पिका ।

चूर्णयित्वा द्रवैर्भाव्यं मण्डूकीब्राह्मिसम्भवैः ॥ २२ ॥

दिनमेकंततः पाच्यं कल्काच्चतुर्गुणं घृतम् ।

घृताच्चतुर्गुणं देयं क्षीरं ब्राह्मीनियोजितम् ।

घृतशेषं समुत्तार्य लिहेद्वाग्बुद्धिदायकम् ॥ २३ ॥

वच ब्राह्मी, फल, कूठ, सेंधा, तिलपुष्प, वा लालचन्दन इनको
चूर्ण कर इसको मण्डूकपर्णी और ब्राह्मीके रसकी भावना दे इस
प्रकार एक दिन इसको पकाकर इसके कल्कसे चौगुना घी डाले घीसे
चौगुना गौका दूध और ब्राह्मी डाले जब रस जल जाय घृत मात्र
रह जाय तब उतार ले इसको चाटनेसे बुद्धि बढ़ती है । तीन मासेकी
प्राप्ति है ॥ २२ ॥ २३ ॥ इति ब्राह्मीघृतम् ॥

द्वे हरिद्रे वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम् ।

अजाजी चाजमोदा च यष्टी मधुकसंयुतम् ॥ २४ ॥

एतानि समभागानि शुष्कचूर्णानि कारयेत् ।

तच्चूर्णं सर्पिषा लेह्यं कर्षकं वाक्यशुद्धिकृत् ।

भक्षयेन्मासमेकं तु बृहस्पतिसमो भवेत् ॥ २५ ॥

दोनों हलदी, वच, कूट, पीपल, सोंठ, जीरा, अजमोद मुलैठी ये
आवर भाग ले सुखाकर चूर्ण करे यह चूर्ण घृतके साथ एक कर्ष
से वाक्यसिद्धि होती है । एक महीने इनके सेवनसे बृहस्पतिके
प्राप्ति होती है ॥ २४ ॥ २५ ॥

(२५४)

कामरत्न

द्वान्त

ब्राह्मी मुण्डी वचा शुण्ठी पिप्पली समचूर्णकम् ।
मधुना भक्षयेत्कर्षं स्पष्टवाग्जायते ध्रुवम् ॥ २६ ॥

ब्राह्मी, मुण्डी, वच, सोंठ, पीपल इनको समान ले चूर्ण कर शहदके साथ एक कर्ष सेवन करनेसे मनुष्य स्पष्ट बोलनेवाला हो जाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ २६ ॥

वचास्थि कारवी गुन्द्रा मुशली मधुकं बला ।
अपामार्गस्य पञ्चाङ्गं क्षौद्रेण पूर्ववत्फलम् ॥ २७ ॥

अपामार्गवचाशुण्ठी विडङ्गं शङ्खपुष्पिका ।
शतावरी गुडूची च समं चूर्णं हरीतकी ।

घृतेन भक्षयेत्कर्षं नित्यं ग्रन्थसहस्रधृक् ॥ २८ ॥

वचकी मींगी, हिंगुपुत्री, भद्रमोथा, मुसली, मुलहठी, खरेंटी, चित्तेका पंचांग, वच, सोंठ, वायविडंग, शंखपुष्पी, शतावरी, गुडूची हरड इनको समान भाग ले चूर्ण कर घृतके साथ एक कर्ष प्रतिदिन खाय तो सहस्र ग्रन्थका धारण करनेवाला होता है ॥ २७ ॥ २८ ॥

अश्वगन्धाजमोदा च पाठा कुष्ठं कटुत्रयम् ॥ २९ ॥

शतपुष्पी विश्वबीजं सैन्धवं च समं समम् ।

एतदद्धं वचा चैव चूर्णितं मधुसर्पिषा ॥ ३० ॥

भक्षयेत्कर्षमात्रं तु जीर्णान्ते क्षीरभोजनम् ।

सहस्रग्रन्थधारी स्यान्मूकोऽपि वाक्पतिर्भवेत् ॥ ३१ ॥

असगन्ध, अजमोद, पाठा, कुटकी (कूठ) त्रिकुटा, सौंफ, सोंठ, सेंधा यह समान भाग लेकर चूर्ण कर इससे आधी वच ले शहद और घीमें मिलाय एक-कर्ष खाय ऊपरसे दूधका भोजन करे तो यह सहस्र ग्रन्थका धारण करनेवाला वाक्पति होता है ॥ २९-३१ ॥

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२५५)

लिहेज्ज्योतिष्मतीतैलं बलया वचया सह ।

स्तोकं स्तोकं क्रमेणैव यावन्निष्कचतुष्टयम् ॥

निर्वति मधुसेवी स्याद्ब्रह्मचारी कविर्भवेत् ॥ ३२ ॥

मालकांगनीके तेलको खरैटी और वचके सहित चाटे थोडा २
क्रमसे चार निष्कतक बढावे । निर्वतिस्थानमें रहे शहद चाटे वह
ब्रह्मचारी कवि होता है । ३२ ॥

सूर्यस्य ग्रहणे वेन्दोः समन्त्रामाहरेद्वचाम् ।

चूर्णितां सघृतां भुक्त्वा सप्ताहे वाक्पतिर्भवेत् ॥ ३३ ॥

सूर्य वा चन्द्रग्रहणमें मन्त्रके सहित वचका वन्दा लावे । इसे चूर्ण
कर घीके साथ खानेसे एक सप्ताहमें वाक्पति होता है । ३३ ॥

इत्येवमादि योगानां मन्त्रराजः शिवोदितः ।

जप्त्वायुतं च सिद्धिः स्यात्पश्चात्तैरेव भक्षयेत् ॥ ३४ ॥

"ओं ह्रूं हयशीर्षवागीश्वराय नमः ।"

इन योगोंको मन्त्रराज 'ॐ ह्रूं हयशीर्षवागीश्वराय नमः' शिवने
कहा है । इस मन्त्रको १०००० वार जपनेसे सिद्धि होती है । पीछे
इस मन्त्रसेही उक्त पदार्थ भोजन करे ॥ ३४ ॥

धात्रीफलरसैर्भाव्यं वचाचूर्णं दिनावधि ।

घृतेन लेहयेन्निष्कं वाक्शुद्धिस्मृतिबुद्धिकृत् ॥ ३५ ॥

वचका चूर्ण आमलेके रसमें एक दिन भावित कर एक निष्क घृतके
साथ चाटनेसेवाणीकी शुद्धि और बुद्धि स्मरण शक्ति होती है ॥ ३५ ॥

वचाचूर्णं क्षिपेत्क्षीरे पुनर्मन्त्रेण मन्त्रितम् ।

भोज्यं क्षीरेण शाल्यन्नं सप्ताहे वाक्पतिर्भवेत् ॥ ३६ ॥

(२५६)

कामरत्न

द्वादश-

उक्त मंत्रको पढ़कर वचका चूर्ण दूधके साथ लेनेसे वाक्पति होता है ॥ ३६ ॥

सप्तमे अष्टमे चैव साक्षाच्छ्रुतिधरो भवेत् ।

वचाचूर्णं पीबेत्क्षीरैर्घृतैः क्षोद्रैश्च यत्पुनः ।

सप्ताहक्रमयोगेन लेह्यं स्यात्पूर्ववत्फलम् ॥ ३७ ॥

सात दिन वा आठ दिन इसे सेवन करनेसे वेदका धारण करनेवाला होता है, अथवा वचका चूर्ण शहद और घृतके साथ चाटनेसे सप्ताहमें बुद्धि तीव्र हो जाती है ॥ ३७ ॥

पुण्यार्कयोगे संगृह्य श्वेताकस्य तु मूलकम् ।

छायाशुष्कं च तच्चूर्णं मन्त्रेणैवाभिमन्त्रितम् ॥ ३८ ॥

कर्षमर्द्धं पलं वापि प्रातरुत्थाय संपिबेत् ।

"ॐ महेश्वराय नमः" अनेन मन्त्रेणाभिमन्त्र्य पिबेत् ॥

तत्रेण सर्पिषा वापि जीर्णान्ते क्षीरभोजनम् ॥ ३९ ॥

एवं सप्ताहमात्रेण कविर्भवति बालकः ॥ ४० ॥

पुष्यनक्षत्रमें श्वेत आककी जड़ ग्रहण कर उसे छायामें सुखाय चूर्ण कर एक कर्ष वा आधे पल प्रातःकाल उठकर "ॐ महेश्वराय नमः" इस मंत्रसे अभिमन्त्रण कर मट्ठेके साथ या घीके साथ खावे । यह औषधि पचनेपर दूध भात खावे । ऐसा सात दिन खानेसे बालकभी कवि हो जाता है ॥ ३८-४० ॥

अथ किन्नरीकरणम्

हरिद्रा च वचां कुष्ठं पिप्पली च यवानिका ।

मरिचं सैन्धवं शुण्ठी चैषां चूर्णं तु कारयेत् ।

मधुना सहितं चूर्णं पेषयित्वा शिलातले ॥ ४१ ॥

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२५७)

दिनेश्च सप्तभिश्चैव भक्षितव्यं निरन्तरम् ।

जायते सुस्वरः पुंसां किन्नरैः सह गीयते ॥ ४२ ॥

हलदी, वच, कूठ, पीपल, अजवायन कालीमिर्च, सेंधानोन,
सोंठ इनका चूर्ण कर इसे शहदसे मिलाय पत्थरमें पीस सात दिन
निरन्तर खानेसे किन्नरीके समान कंठ होता है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

विभीतकं कणा शुण्ठी सैन्धवं त्वक्समं समम् ।

गोमूत्रेण पिबेत्कर्षं किन्नरैः सह गीयते ॥ ४३ ॥

बहेडा, पीपल, सोंठ, सेंधा, तज ये समान भाग ले एक वर्ष गो-
मूत्रके साथ पान करनेसे किन्नरोंके साथ गान कर सकता है यानी
उनके समान स्वर हो जाता है ॥ ४३ ॥

जातीपत्रं कणा लाजा मातुलुङ्गदलं मधु ।

पलं लेह्यं भवेन्नादः किन्नराधिक एव च ॥ ४४ ॥

जाती वृक्षके पत्ते, जीरा, खीलें और बिजोरेनिबूके पत्ते इनको मर्दन
कर ८ तोले शहदसे चाटनेसे किन्नरसेभी उत्तम स्वर होता है ॥ ४४ ॥

देवदारुकणाव्योषं शताह्वा पत्रकं निशा ।

वचा सैन्धवशिग्रूत्थं मूलं पेय्यं समंसमम् ॥ ४५ ॥

कर्षकं मधुसर्पिभ्यां मासमात्रं सदा लिहेत् ॥

कण्ठशुद्धिर्भवेत्तस्य किन्नरैः सह गीयते ॥ ४६ ॥

देवदारु, सोंठ, मिर्च, पीपल, जीरा, सौंफ, पत्रज, हलदी, वच,
सेंधानिमक, सहजनेकी मूली ये सब वस्तु समान भाग लेकर एक कर्ष
मधु और घृतके साथ एक महीने चाटे तो कंठकी शुद्धि होती है
किन्नरोंके साथ गा सकता है ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

शुण्ठी च शर्करा चैव क्षौद्रेणसह संयुता ।

कोकिलस्वर एव स्याद्गुटिकाभुक्तिमात्रतः ॥ ४७ ॥

सोंठ और मिश्री शहदके साथ मिलाय इसकी गोली बनाय सेवन करे तो स्वर कोकिलाके समान अच्छा होजाता है ॥ ४७ ॥

आर्द्रकं भृङ्गकोरण्टवासा ब्राह्मी वचा तथा ।

वचाचूर्णं समांशेन पलैकं वारिणा पिबेत् ॥ ४८ ॥

*मासि मासि चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे द्विसप्तकम् ।

गन्धर्वसदृशं गानं कोकिलानां स्वरो यथा ॥ ४९ ॥

अदरख, भांगरा, दालचीनी, पीपल, अडूसा, ब्राह्मी, वचका चूर्ण ये समान भाग ले जलके साथ एक कर्ष पीवे, पीतेबार महीने २ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीतक चौदह दिन खाय तो गन्धर्व और कोकिलाके स्वरके समान गान कर सकता है ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

निर्गुण्डीमूलचूर्णं तु तितलतैलेन यो लिहेत् ।

कण्ठशुद्धिर्भवेत्तस्य किन्नरैः सह गीयते ॥ ५० ॥

निर्गुण्डीकी जडका चूर्ण तिलके तेलके साथ चाटनेसे कंठकी शुद्धि होती है किन्नरोंके साथ गा सकता है ॥ ५० ॥ इति किन्नरीकरण ॥

अथ चक्षुष्यम्

वर्षाकाले काकमाची समूला तैलपाचिता ।

खादेत्समासतश्चक्षुर्गृध्रदृष्टिसमं भवेत् ॥ ५१ ॥

वर्षाकालमें समूल काकमाचीको तेलमें पकावे, इसे एक महीने खानेसे गृध्रके समान दृष्टि होती है ॥ ५१ ॥

* माघमासि चतुर्दश्यां । इति पाठान्तरम् ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२५९)

श्वेतं पुनर्नवांमूलं घृतघृष्टं सदाञ्जयेत् ।

जलस्रावं निहंत्याशु तन्मूलं तु निशायुतम् ॥

अञ्जने चक्षुरोगाश्च न भवन्ति कदाचन ॥ ५२ ॥

श्वेतपुनर्नवाकी जड घीमें पीसकर सदा आंजनेसे नेत्रोंसे जलका निकलना बंद हो जाता है । अथवा यही जड दारुहलदीके साथ नेत्रमें आंजे तो किसी प्रकारसे नेत्ररोग नहीं होता है ॥ ५२ ॥

द्विनिशा सैन्धवं त्र्यूषं बीजं कारञ्जकं समम् ।

भृङ्गीद्रवैर्युतं वापि तिमिरं पटलं हरेत् ॥ ५३ ॥

दोनों हलदी, सेंधा, त्रिकुटा, करंजके बीज यह समान भाग लेकर तीसके रसमें बत्ती बनाय नेत्रोंमें आंजनेसे तिमिर दूर होता है ॥ ५३ ॥

शम्बूकं वा वराटं वा दग्धं शुष्कं विचूर्णितम् ।

अञ्जयन्नवनीतेन हन्ति पुष्पं चिरन्तनम् ॥ ५४ ॥

गोंधा या कौडी इन्हें जलाय चूर्ण कर मक्खनके साथ नेत्रोंमें आंजे तो बहुत दिनों का फूल दूर होता है ॥ ५४ ॥

अजामूत्रेण भूधात्रीमूलं पिष्ट्वा च वर्तिका ॥ ५५ ॥

नवनीतसमायुक्ता हन्ति पुष्पं चिरन्तनम् ।

अञ्जनान्नाशयेत्पुष्पं क्षौद्रैर्वा स्वर्णमाक्षिकम् ॥ ५६ ॥

छागके मूत्रमें भुईआमलेकी जड पीस उसकी बत्तीको मक्खनके रस लगानेसे पुराना फूल नष्ट हो जाता है अथवा शहदके साथ सोना-रसी मिलाय आंजनेसे फूल नष्ट हो जाता है ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

मरिचैर्मर्दने रक्ते वर्ती रात्र्यन्धताञ्जयेत् ।

जयन्ती वाभया वाथ घृष्ट्वा स्तन्यैर्निशान्धहृत् ।

शोणितं चर्मकोपं च मांसवृद्धिं च नाशयेत् ॥ ५७ ॥

कालीमिर्चके साथ चीनेको मर्दन कर बत्ती बनाय लगावे तो नेत्रोंका रतौंधा दूर होता है अथवा जयन्ती वा हरडको पीस लगावे तो रतौंधा दूर होजाता है । रुधिर विकार चर्मकोप और मांसवृद्धि भी इससे दूर होती है ॥ ५७ ॥

कृष्णाजस्य च मांसान्तः पिप्पलीं मरिचं क्षिपेत् ॥ ५८ ॥

कारयित्वा घृते पच्याद्घटिकान्ते तमुद्धरेत् ।

मध्याज्यस्तन्यसंपिष्टं रात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ५९ ॥

काले बकरेके मांसमें पीपल और कालीमिर्च डाले । फिर एक घड़ी तक घीसे पकाय उसकी बटिका बनावे । उसे शहद घी या स्त्रीके दूधसे पीस लगावे तो रतौंधा दूर हो जाता है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

अजापित्तगतं व्योषं धूमस्थाने विशोषयेत् ।

चिरबिल्वरसैर्घृष्टं रात्र्यन्धहरमञ्जनम् ॥ ६० ॥

बकरीके पित्तमें रखा हुआ सोंठ मिरच पीपल इनको धूमस्थानमें सुखावे । करंजके रसमें इसे घिसकर लगावे तो रतौंधा दूरहो जाता है ॥ ६० ॥

घृतेन पुष्पं मधुनाश्रुपातं तैलेन कण्डूं तिमिरं

जलेन । राज्यन्धकं काञ्जिकया निहन्ति *पुनर्नवा

नेत्रपुनर्नवङ्करी ॥ ६१ ॥

पुनर्नवाको घृतसे लगावे तो फूला, शहतसे अश्रुपात, तेलमें खुजली, जलसे तिमिर, कांजीसे रतौंधा दूर होता है । पुनर्नवा नेत्रोंको फिर नवीन कर देती है । इसमें श्वेतपुनर्नवा लेनी ॥ ६१ ॥

* अत्र श्वेतपुनर्नवा ग्राह्या ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२६१)

चन्द्रोदया वटी

हरीतकी वचा कुष्ठं पिप्पली मरिचानि च ।

विभीतकस्य मज्जा च शंखनाभिर्मनश्शला ॥ ६२ ॥

सर्वमेतत्समं कृत्वा गव्यक्षीरेण पेषयेत् ॥

नाशयेत्तिमिरं कण्डूं पटलान्यर्बुदानि च ॥ ६३ ॥

अपि द्विवाषिकं पुष्पं मासैकेनैव नाशयेत् ॥

अधिकानि च मांसानि यश्च रात्रौ न पश्यति ॥ ६४ ॥

वर्तिश्चन्द्रोदया नाम नृणां दृष्टिप्रसादिनी ।

छायाशुष्का वटी कार्या नाम्ना चन्द्रोदया वटी ॥ ६५ ॥

हरड, वच, कूठ, पीपल, कालीमिर्च, बहेडेकी मींगी, शंखनाभि, मैना-

शिल यह सबको बराबर ले गौके दूधसे पीस लगावे तो तिमिर, अर्बुद,

वर्षका फूला जो नेत्रोंमें अधिक मांस बढ़जाता है तथा जो रात्रिमें

हो देखता है ये सब रोग एक मासमें अवश्य नष्ट होजाता है ।

नृण्योकी दृष्टिको शुद्ध करनेवाली इस वटीको छायामें सुखाकर

नृण्यको प्रयोग करनी चाहिये ॥ ६२-६५ ॥ इति चन्द्रोदयावटी ।

यस्त्रैफलं चूर्णमपथ्यवर्ज्यं सायं समश्नाति हवि-

मंधुभ्याम् । सम्युच्यते नेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथा

क्षीणधनो मनुष्यः ॥ ६६ ॥ इति चक्षुष्यम् ॥

जो मनुष्य त्रिफलेके चूर्णको संध्या समय घृत और शहदके साथ

खाता है उसको नेत्रविकार ऐसा छोड़ देता है जैसे धनहीन पुरुषको

कर छोड़ जाते हैं । ६६ ॥ इति चक्षुरोगनिवारण ॥

(२६२)

कामरत्न

द्वादश-

अथ कर्णस्य बधिरत्वनाशनम्

शिखरिक्षारजलेन तत्कृतकल्केन साधितं तिलजम् ।
अपहरति कर्णनादं बाधिर्यं चापि पूरणात् ॥ ६७ ॥

चिरचिरेके खारयुक्त जलसे वा इसीके साथ तिलके तेलका कल्क
कर कानोंमें डाले तो बधिरता नाश होती है ॥ ६७ ॥

दशमूलीकषायेण तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
एतत्कल्कं प्रदायैव बाधिर्ये परमौषधम् ॥ ६८ ॥

* देशमूलके काढेको एक सेर तेलमें पकावे जब तेलमात्र रहजाय
तो उतारले । कर्णबधिरता नाश करनेकी यह परम औषधी है ॥ ६८ ॥

नीलीब्रध्नरसस्तैलं सिद्धकाञ्जिकसंयुतम् ।
कदुष्णपूरणात्कर्णे निशेषकृमिनाशनः ॥ ६९ ॥

नीली, आक वृक्षकी जड़ कांजीमें मिलाकर तेलमें पकाय कुछ
गरमा गरम कानोंमें पूर्ण करनेसे सब कृमि नाश होजाते हैं ॥ ६९ ॥

दन्तेन चर्वयेन्मूलं × नन्द्यावर्त्तपलाशकम् ।
तन्नालीपूरिते कर्णे ध्रुवं गोमक्षिकाञ्जयेत् ॥ ७० ॥

धव, सोनामक्खी और पलाशकी जड़ इनको दांतोंसे चबानेसे वा
उसका रस कर्णमें पूरित करनेसे गोमक्षिका दूर होती है (कहीं तगर
और ढाकको चबाना लिखा है) ॥ ७० ॥

ताम्बूलभक्षणं कृत्वा तत्र सन्दापयेद्बुधः ।
तत्र स्थितास्तु कृमयो नाशमायान्ति निश्चितम् ॥ ७१ ॥

* बेल, सोनापाठा, कमारी, पाढल, अरणी, सरवन, पिठवन, छोटी कटेरी
और गोखरू ये दश मूल हैं ॥ × तगरं च पलाशकम् इति पाठान्तरम् ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२६३)

तांबूल भक्षण कर सेचन करे तो कानके कृमि अवश्य नाश हो जाते हैं ॥ ७१ ॥

मूषलीबाकुचीचूर्ण खादेद्बाधिर्यशान्तये ।

मनः शिलापामार्गोऽथ मूलं चूर्णं मधुप्लुतम् ।

भक्षयेत्कर्षमात्रं तु बधिरत्वप्रशान्तर्यं ॥ ७२ ॥

मूषली और बाकुचीका चूर्ण खानेसे बधिरता नाश हो जाती है ।

मनशिल अपामार्गके मूलका चूर्ण इनको शहतमें मिलाकर एक कर्षमात्र खानेसे बहरापन शान्त हो जाता है ॥ ७२ ॥

लशुनामलकं तालं पिष्ट्वा तैले चतुर्गुणे ॥ ७३ ॥

तैलाच्चतुर्गुणं क्षीरं पाच्यं तैलावशेषितम् ।

ततैलं निक्षिपेत्कर्णं बाधिर्यं च विनाशयेत् ॥ ७४ ॥

लहसन, आमला, हरताल इनको पीसकर इससे चौगुना तेल ले लेंगे चौगुना दूध डालकर इसको पकावे । जब रस जल जाय तेल मात्र रहजाय तब उतारलेवे, इस तेलको कानमें डालनेसे बहरापन शान्त हो जाता है ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

अथ कर्णपालीवर्द्धनम्

सिद्धार्थं बृहती चैव ह्यपामार्गं समं समम् ।

छागी क्षीरैः प्रलेपोऽयं कर्णपाली विवर्द्धयेत् ॥ ७५ ॥

सफेद सरसों, कटेरी, चिरचिटा इनको समान भाग लेकर चूर्णकर करीके दूधसे लेप करे तो कर्णपाली बढ़ती है ॥ ७५ ॥

मूषलीकन्दचूर्णं च महिषीक्षीरसंयुतम् ।

लोडयेत्स्निग्धभाण्डे तु धान्यराशौ निवेशयेत् ।

सप्ताहादुत्थिते लेप्यं कर्णपाली विवर्द्धते ॥ ७६ ॥

(२६४)

कामरत्न

द्वादश-

मूषलीकन्दका चूर्ण कर भैंसके दूधके साथ बरतनमें मिलाय धान्यराशी में धरे । फिरसात दिनमें निकाल लेप करनेसे कर्णपाली बढ़ती है ॥ ७६ ॥

गुञ्जामूलकृतं चूर्णं महिषीक्षीरसंयुतम् ॥ ७७ ॥

शृतं दधि ततः कुर्यान्नवनीतं तदुद्भवम् ।

कर्णयोर्लेपयेन्नित्यं वर्द्धयेन्नात्र संशयः ॥ ७८ ॥

चौटलीकी जडका चूर्ण कर उसमें दूध मिलाय दही जमाय उसका मक्खन निकालकर कानों पर लेप करे तो कर्णपाली बढ़ती है ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अश्वगन्धा वचा कुष्ठं गजपिप्पलिका समम् ।

महिषीनवनीतेन लेपात्कर्णो विवर्द्धते ॥ ७९ ॥

असगन्ध, वच, कूठ, गजपीपल इनको भैंसके मक्खनके साथ मिलाय लेप करनेसे कान बढ़ता है ॥ ७९ ॥

वराहोत्थेन तैलेन लेपः कर्णविवर्धनः ।

चर्मचटकस्य रक्तेन लेपात्कर्णो विवर्द्धते ॥ ८० ॥

वराहके तेलका कानों पर लेप करनेसे कान बढ़ता है अथवा चर्मचटक चिड़ियेका रक्त लेप करने से कर्णवृद्धि होती है ॥ ८० ॥

अथ दन्तदृढीकरणम्

यमचिञ्चाजयापुङ्खामूलं वा हयमारजम् ।

चलदन्ता दृढायन्ते प्रत्यहं दन्तधावनात् ॥ ८१ ॥

इमली, जयन्ती, शरफोंका, कनेरकी जड इनसे रोज दन्तधावन करनेसे कैसे भी दांत हिलते हों सो दृढ होजाते हैं ॥ ८१ ॥

ताम्रपात्रे क्षणं पाच्यमभया चूर्णकं मधु ।

पिष्ट्वा च गुटिका कार्या दन्तैर्धार्या कृमीन् हरेत् ॥ ८२ ॥

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२६५)

हरडका चूर्ण और शहद इनको तांबके पात्रमें क्षणमात्र पका
गुटिका कर दांतोंमें धारण करे तो दांतोंके कृमि नष्ट होते हैं ॥ ८२ ॥

दन्तैर्धार्यं स्नुहीमूलं कृमिनाशं करोत्यलम् ।

काशीशं घृतसंपक्वं धार्यं दन्ते व्यथापहम् ॥ ८३ ॥

यूहरकी जड वा कसीसकी जड दांतोंमें धारण करनेसे कृमि
नाश होजाते हैं । कसीसको घृतमें पकाकर दांतोंमें धारण करनेसे
दांतोंकी व्यथा दूर होती है ॥ ८३ ॥

विशालयोः पलं चूर्णं तप्तलोहे परिक्षिपेत् ।

तद्धूमस्पृष्टदन्तानां कीटपातो भवन्त्यलम् ॥ ८४ ॥

इन्द्रायण और महेन्द्रवारुणीका चूर्ण एक पल तप्त लोहेपर डाल
॥ उसका धुआं छूतेही दांतोंके कीडा मरजाते हैं ॥ ८४ ॥

जातिकोरकपत्रं च चर्वयेत् प्रातरुत्थितः ।

स्थिराः स्युश्चलिता दन्तास्तत्काष्ठैर्दन्तधावनात् ८५ ॥

प्रातःकाल उठकर जाती और कंकोल मिर्चके पत्तोंको चबावे तो
हलते हुए दांत स्थिर हो जाते हैं । इन्हीं वृक्षोंकी दंतौन करे ॥ ८५ ॥

गुंजामूलं तु कर्णाभ्यां बद्धं दन्तकृमिप्रणुत् ।

त्रिसूतं रौप्य मेकं तु जम्बीररसमर्दितम् ।

जम्बीरफलमध्यस्थं वस्त्रैर्बद्ध्वात्र्यहं पचेत् ॥ ८६ ॥

क्षीरमध्ये समुद्धृत्य गुटिकां तां ततः पुनः ।

भावितं भानुदुग्धेन तालकं सूक्ष्मपेषितम् ॥ ८७ ॥

तन्मध्ये गुटिकां क्षिप्त्वा वस्त्रे बद्ध्वा दिनत्रयम् ।

मधुभाण्डगतं पश्चादुद्धृता चास्यधारिता ।

घर्षणाच्चलितान् दन्तांस्तत्क्षणात्कुरुते दृढान् ॥ ८८ ॥

चौटलीकी जड़ कानोंमें बांधनेसे दांतके कीड़े नष्ट होजाते हैं ॥
 एक रूपयेभर पारा जम्बीरीके रसमें मर्दित करे, फिर उसे जम्बीरी
 नीबूमें रख वस्त्रमें बांध तीन दिनतक दूधमें पकावे फिर उसे निकाल
 गुटिका करे । इसे काली मिर्च, आकका दूध और हरतालसे सूक्ष्म
 पीसकर गुटिका बनाय वस्त्रमें तीन दिन बांध रखे, फिर शहतके
 पात्रमें रखे । फिर इसको निकालकर दांतोंमें घिसे तो हिलते
 हुए दांत दृढ़ हो जाते हैं ॥ ८६-८८ ॥

तालकं भानुदुग्धेन दिनमेकं विमर्दयेत् ।

तद्गर्भरसहोमोत्थां पिडिकां तारसंयुताम् ॥ ८९ ॥

जम्बीरफलमध्यस्थां दोलायन्त्रे त्र्यहं पचेत् ॥ ९० ॥

तैलक्षौद्रयुते भाण्डे समुद्धृत्य विधारयेत् ।

दन्तरोगान् हरेत्सर्वान् घर्षणाच्चलिता दृढाः ॥ ९१ ॥

हरतालको आकके दूधमें एक दिन खरल करे, फिर उसको
 पारेके साथ पिंडी करके एक स्थानमें रखे और जम्बीरीके फलके
 बीचमें रखकर तीन दिन दोलायन्त्रमें पचावे । फिर तेल और शहद
 मिलाय इसको बरतनमें रख छोड़े । इसको मलतेही सम्पूर्ण दांतोंके
 रोगोंको दूर करता है ॥ ८९-९१ ॥

चलद्दन्तस्थिरकरं कार्यं बकुलचर्वणम् ॥

बकुलको चबाना दांतोंको स्थिर और बलयुक्त करता है ॥

बकुलस्य तु बीजं तु पिष्ट्वा कोष्णेन वारिणा ।

मुखे च धारयेद्धीमान् दन्तदाढ्यं करं परम् ॥ ९२ ॥

बकुल (मौलसिरी) के बीजको कुछ गरम पानीके साथ पीसकर
 बुद्धिमान् धारण करे तो दांत दृढ़ हो जाते हैं ॥ ९२ ॥

बकुलस्य त्वचा क्वाथमुष्णं वक्त्रेण धारयेत् ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२६७)

दृढाः स्युश्चलिता दन्ताः सप्ताहान्नात्र संशयः ॥९३॥
बकुल (मौलसिरी) की छालका क्वाथ गरम गरम मुखमें धारण करनेसे हिलते हुए दांत सात दिनमें दृढ होजाते हैं। इसमें सन्देह नहीं ॥ ९३ ॥ इति दन्तदृढीकरणम् ॥

अथ गण्डमालानिवारणम्

कर्कन्धुकोलामलकप्रमाणैः कक्षांसमन्यागलवक्ष-
णेषु । मेदःकफाभ्यां चिरमन्दपाकैः स्याद्गण्डमाला
बहुभिश्च गण्डैः ॥

कोखमें, कन्धोंमें अथवा खवोंमें, नाडके पीछे मन्यानाडीमें, गलेमें तथा वंक्षण स्थानमें मेद और कफसे छोटे बेरके समान या बड़े बड़े बेरके समान बहुतसी गांठें उत्पन्न हों उनको गण्डमाला कहते हैं, ये गांठें बहुत दिनों में थोड़े थोड़े पकते हैं ॥

काञ्चनारत्वचः क्वाथः शुण्ठीचूर्णेन संयुतः ।

माक्षिकाढ्यः सकृत्पीतः क्वाथो वरुणमूलकः ।

गण्डमालां हरत्याशु चिरकालानुबन्धिनीम् ॥

कचनारकी छालका क्वाथ बनाकर उसमें सोंठका चूर्ण डालकर पीवे तो एकही बारमें गण्डमाला नष्ट होती है। वरनाकी जडका क्वाथबनाय उसमें शहद डालकर पीवे तो एकही बारमें बहुत दिनों की

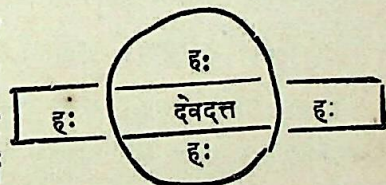
पुरानी गण्डमाला तत्काल नष्ट

होती है ॥ इस यन्त्रको गोरोचन

और लाल चन्दनसे भोजपत्रपर

लिख (रोगीके नामदेवदत्तस्थानमें

लिखकर) रोगीके कंठमें बांधे तो गण्डमाला (कण्ठमाला) नष्ट होती है ॥



अथ आहारकरणम्

ब्रध्नकेनापि वृक्षस्य पीठं कृत्वा शनैः स्थितः ।

योऽसौ भुङ्क्ते घृतैः सार्द्धं भोजनं भीमसेनवत् ॥ ९४ ॥

आकके वृक्षका पीठा कर शनैः शनैः उसपर बैठ घृतके सहित भोजन करे तो भीमसेनके समान भोजन करेगा ॥ ९४ ॥

*संध्यायामाम्रवृक्षस्य कर्तव्यमभिमंत्रितम् ।

प्रातः पुष्पाणि संगृह्य मालां शिरसि धारयेत् ॥

कौपीनं संपरित्यज्य भुङ्क्तेऽसौ भीमसेनवत् ॥ ९५ ॥

संध्याके समय आमके वृक्षको अभिमंत्रित कर प्रातःकाल उसके मौरकी माला शिरपर धारण करे । (कहीं प्लक्षका अभिमंत्रण कहा है) कौपीन त्याग भोजन करनेसे बैठे तो भीमसेनके समान भोजन करे ॥ ९५ ॥

उद्भ्रांतपत्रमादाय कपिला श्वानदन्तकम् ।

कट्यामेव द्वयं बद्ध्वा भुङ्क्तेऽसौ भीमसेनवत् ॥ ९६ ॥

मूषकपर्णीके पत्तोंको रेणुका श्वानदन्त इनके साथ कमरमें बांधे तो भीमसेनके समान भोजन करे ॥ ९६ ॥

गृहीत्वा मन्त्रितान् मन्त्री विभीततरुपल्लवान् ।

आक्रम्य दक्षिणां जङ्घां विंशत्याहारभुग्भवेत् ॥ ९७ ॥

मंत्रका जाननेवाला मन्त्रपूर्वक बहेडेके पत्तेको दहिनी जांघसे आक्रमण कर ग्रहण करे अर्थात् जांघके तले रखकर भोजन करनेसे बीसगुना भोजन करनेवाला होता है ॥ ९७ ॥

* सन्ध्याया प्लक्ष इति वा पाठः ।

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२६९)

“ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस २ शोषय २ भैरवी
आज्ञापयति स्वाहा ।” उक्तयोगानामयं मन्त्रः ॥

मन्त्र— ‘ ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस २ शोषय २ भैरवी आज्ञा
पयति स्वाहा ’ उपरोक्त योगोंका यह मन्त्र है ॥

अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने विबन्धयेत् ।

वायुपुत्र इवाश्चर्यमसौ भुङ्क्ते न संशयः ॥ ९८ ॥

“ ॐ नाभिवेगेन उर्वशी स्वाहा ॥ ”

गिरगटके अधरको शिखास्थानमें बांधनेसे भीमसेनके समान
योजन करता है, इसमें सन्देह नहीं ” ॐ नाभिवेगेन उर्वशी स्वाहा ”
यह मन्त्र है ॥ ९८ ॥ इति आहारकरणम् ॥

अथानाहारकरणम्

अन्त्राणि कृकलासस्य मज्जां कारञ्जबीजकाम् ।

पिष्ट्वा तद्गुटिकां कुर्यात् त्रिलोहेन तु वेष्टिताम् ॥ ९९ ॥

तां वक्त्रे धारयेद्यस्तं क्षुत्पिपासा न बाधते ॥

“ ॐ * सांसांशरीरममृतमाकर्षय स्वाहा । ”

गिरगटकी अन्त्र और करंजके बीजोंकी मींगी पीसकर उसकी
गुटिका बना चांदी सोने अथवा तांबेमें मढाकर मुखमें धारण करनेसे
क्षुत् और प्यास नहीं लगती है ‘ ॐ सांसांशरीरममृतमाकर्षय
स्वाहा ’ ॥ ९९ - ॥ १०० ॥

पद्मबीजमहाशाली छागीदुग्धेन पाचयेत् ।

साज्यं च पायसं भुक्त्वा द्वादशाहं क्षुधापहम् ॥ १०१ ॥

* शां चां इति वा पाठः ।

कमलगट्टेकी गिरी महाशालिचावल इनको छागीके दूधसे पकावे ।
घृत सहित वह खीर खाय तो बारह दिनतक भूख नहीं लगती है ॥ १०१ ॥

उदुम्बरस्य जम्बीरशालिशिम्बीशिरिषजम् ।

बीजं संचूर्ण्य चाज्येन भुक्त्वा पक्षं क्षुधापहम् ॥ १०२ ॥

गूलर, जम्बीरी, शालिचावल, शिम्बी, शिरहके बीज इनका चूर्ण
कर घीके साथ खानेसे पन्द्रह दिन भूख नहीं लगती है ॥ १०२ ॥

उदुम्बरफलं पक्वमिडगुदीतैलभावितम् ।

भुक्त्वा मासं क्षुधां हन्ति पिपासां च न संशयः ॥ १०३ ॥

गूलरका पक्का फल इंगुदीके तेलमें भावित कर खानेसे एक महीने-
तक भूख और प्यास नहीं लगती है । इसमें सन्देह नहीं ॥ १०३ ॥

अपामार्गस्य बीजानि त्वग्ज्यनि प्रपाचयेत् ।

पायसं छागलीक्षीरैर्भुक्तं मासक्षुधापहम् ॥ १०४ ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतार्कमध्ये संस्थि-
ताय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु सः स्वाहा”

उक्तयोगानामयं मन्त्रः ॥ १०५ ॥

अपामार्गके बीजोंका छिलका दूर कर बकरीके दूधमें पकाय इसको
खीर बनाय खानेसे एक महीनेतक भूख नहीं लगती ॥ ‘ॐ नमो भग-
वते रुद्राय अमृतार्कमध्ये संस्थिताय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु सः स्वाहा’
उपरोक्त योगका यह मन्त्र है ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ इत्यनाहारकरणम् ॥

अथ पादुकासाधनम् ।

अश्वनालांगुलीतैलैः पेषयेच्छ्वेतसर्षपम् ।

तल्लिप्तपादहस्तस्तु योजनानां शतं व्रजेत् ॥ १०६ ॥

उपदेशः १२.

हिन्दीटीकासहित

(२७१)

अश्वनाल, अंगुलीका तेल इनके साथ श्वेत सरसों पीसे उसको हाथ पैरोंमें सम्यक् लपेटकर सौ योजन जा सकता है ॥ १०६ ॥

अङ्कोलस्य तु मूलं तु तिलतैलेन पाचयेत् ।

पादौ तु जानुपर्यन्तं लिप्त्वा दूराध्वगो भवेत् ॥ १०७ ॥

अंकोलके जड़ तिलके तेलमें पकावे उसको जंघापर्यन्त लेप करे तो मनुष्य बहुत दूर तक जा सकता है ॥ १०७ ॥

“ॐ ह्रीं नमः ॐ नमश्चंडिकायै गगनं गगनं चालय चालय वेशय हिलि २ वेगवाहिनीह्रींह्रीं स्वाहा ।” उक्तयोगद्वयस्यापमेव मन्त्रः ॥

‘ॐ नमश्चंडिकायै गगनं २ चालय २ वेशय हिलि २ वेगवा-
हो ह्रीं ह्रीं स्वाहा’ उक्त योगोंका यह मन्त्र है ॥

काकस्य हृदयं नेत्रे जिह्वा चैव मनश्शिलाम् ।

गैरिकं सिन्धुजं चैव अजामारी च मालती ॥ १०८ ॥

समं रुद्रजटा चैव विदार्या सह पेषयेत् ।

तल्लिप्तपादः सहसा सहस्रं योजनं व्रजेत् ॥ १०९ ॥

बलीपलितनिर्मुक्त यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ११० ॥

काकका हृदय, दोनों नेत्र और जिह्वा, मनशिल, गेरू, सेंधानोंन, क शिम्बी, मालती इनके समान रुद्रजटा, विदारीकन्द इन सबको मकर उसको हाथ पैरमें लपेटकर सहस्र योजन दूर जा सकते हैं ।
बलीपलितसे निर्मुक्त होकर प्रलयतक विचरण करेगा ॥ १०८-११० ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय
त्रासय २ क्षोभय २ चालने २ स्वाहा ॥”

(२७२)

कामरत्न

द्वादश-

काकजिह्वा ब्रह्मचारी गुडलोहेन वेष्टयेत् ॥

मुखे प्रक्षिप्य गच्छन्ति योजनं शतमेव च ॥ १११ ॥

आगच्छन्ति तदा तूर्णं ते नरा नात्र संशयः ॥ ११२ ॥

" ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय २ क्षोभय २ चालने २ स्वाहा " काकजिह्वा, भारंगी, गुड इनको लोहसे वेष्टित कर मुखमें डालकर सौ योजन जा सकते हैं और बहुत शीघ्र आसकते हैं इसमें संदेह नहीं ॥ १११ ॥ ११२ ॥

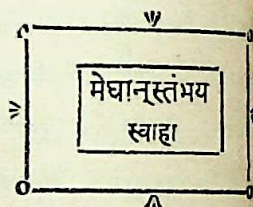
अङ्गकोलतैलसंपिष्टां श्वेतसर्षपलेपिताम् ।

पादुकामुष्ट्रचर्मोत्थां समारुह्य शतं व्रजेत् ॥ ११३ ॥

अङ्गकोलके तेल और सरसोंके तेलसे अङ्गके चर्मकी पादुका लेपन कर उसपर चढ़ सौ कोस जा सकता है ॥ ११३ ॥ इति पादुकासाधनम् ।

अनावृष्टिकरणयंत्रम्

दो ईंटें संपुटकर उसपर श्मशानकी अंगारसे इस यंत्रको लिखकर स्थापन कर देवे । यह यंत्र मेघोंको स्तंभन कर देता है, इससे अनावृष्टि हो जाती है ॥



अनावृष्टिहरणम्

‘हूं ह्रीं’ (अथवा) ‘हुं श्रीं हुं’ इमं मन्त्रं जल-
मध्ये प्रविश्य यदि जपेत् तदा अनावृष्टि हरति ।

महावृष्टिर्भवति ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्नं काम्यसिद्ध्यादिकथनं

नाम द्वादशोपदेशः ॥ १२ ॥

‘हुं श्रीं हुं’ इस मंत्रको जलके मध्यमें खड़ा होकर जपे तो अना

उपदेशः १३.

हिन्दीटीकासहित

(२७३)

बुद्धि जाती रहती है महाबुद्धि होती है ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रमादमिश्रकृत-
भाषाटीकायां काम्यसिद्ध्यादिकथनं नाम द्वादशोपदेशः ॥ १२ ॥

त्रयोदशोपदेशः

अथ निधिदर्शकमञ्जनम् ।

अञ्जनानां तु सर्वेषां मन्त्रं साध्यमघोरकम् ।

बिना मन्त्रेण विद्याश्च नाशयन्ति पदेपदे ॥ १ ॥

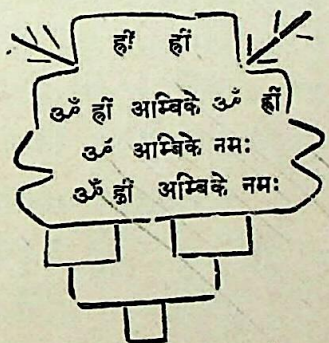
सब अंजनोंमें अघोरमंत्र साधन करना उचित है । बिना मंत्रके
पदमें विद्या नष्ट होती है ॥ १ ॥

* अम्बिकायन्त्रमाश्रित्य जपेदष्टहस्रकम् ।

ततः सर्वविधानानि सुसाध्यानि च प्रारभेत् ॥ २ ॥

अंबिकामूर्तिके आश्रित होकर आठ सहस्र जप करे तो सब
विधि उसको सुखपूर्वक विदित हो जायगी ॥ २ ॥ यह चन्दनकूर्पूर
देकर दर्भाकुर मूल नाम यन्त्र लिखकर वलयाकार करे " ॐ
ह्रीं लो नमः ॐ शं सो लो नमः ॐ यं शो लो नमः ॐ कं को
नमः ॐ खिद खिद विन्द विन्द जौलीनमहानमद २ महा धरण-

ने नमः सर्व सुखदाराय धरण मड
रोमा धरण ॐ ह्रीं अम्बिके ॐ ह्रीं
विके नमः " इति यन्त्रमध्ये लिखित्वा
चात् ' ॐ अम्बे अम्बाले अम्बिके
तारय ठः ठः स्वाहा ' इस मंत्रसे
(३६०००) छत्तीस सहस्र जपनेसे
बुद्धि होती है, फिर जपकर २१ चमे



* यक्षिणामूर्तिमाश्रित्य इति पाठान्तरम् ।

(२७४)

कामरत्न

त्रयोदश-

लोके फूल यन्त्रपर अम्बिकाकी मूर्तिपर रखे तो दीपमें प्रसन्नमुखी दीखती है कुमारीके मुखसे अम्बिका देवी शुभाशुभ कहती है, फिर अम्बिके देवि हूं हूं हों क्षौं यूं क्लीं पढ़कर विसर्जन करे॥

ॐ बहुरूपं विश्वरूपं विद्याधरमहेश्वरम् ।

जपाम्यहं महादेवं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ ३ ॥

‘ॐ बहुरूप विश्वरूप विद्याधर महेश्वर’ सब सिद्धिके देनेवाले महादेवका मैं जप करता हूँ ॥ ३ ॥

“ॐ नमो रुद्राय रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वरूपाय नमो विश्वात्मने नमः तत्पुरुषयक्षाय नमो यज्ञरूपाय नम एकस्मै नम एकाय * नम एकरौरवाय नम एकयक्षाय नम एकेक्षणाय नमो यक्षाय नमो वरदाय नमःतुदतुद स्वाहा ।”

सोपवासो जितेन्द्रियोभूत्वा महेशपूजां कृत्वा इमं मन्त्रं जपेत् ततः सिद्धिर्भवति ॥

‘ ॐ नमो रुद्राय रुद्ररूपाय नमो बहुरूपाय नमो विश्वरूपाय नमो विश्वात्मने नमः तत्पुरुषयक्षाय नमो यक्षरूपाय नम एकस्मै नम एकाय नम एकरौरवाय नम एकयक्षाय नम एकेक्षणाय नमो यक्षाय नमो वरदाय नमः तुद तुद स्वाहा ’ उपवास रहकर जितेन्द्रिय हो शिवकी पूजा कर इस मन्त्रको जपनेसे सिद्धि होती है ॥

कज्जलानां पातनार्थं ग्राह्यो यत्नेन पावकः ।

दीक्षितस्य गृहे श्रेष्ठं चितायां तु विशेषतः ।

× रजकस्य गृहद्वापि तस्करस्य गृहाच्च यः ॥ ४ ॥

* एकरोमाय नमो वा पाठः । × तक्षकस्य गृहच्चापि इति वापाठः ।

काजरके पारनेको यत्नपूर्वक अग्नि ग्रहण करे । दीक्षितके घरकी
 श्रेष्ठ है वा विशेष कर चिताग्नि उत्तम है अथवा धोबीके
 ते वा चौरके यहांसे लावे ॥ ४ ॥

“ॐ ज्वलितविद्युद्धूमाय स्वाहा” ॥ अयमग्नि-
 ग्रहणमन्त्रः । वा ज्वलितविद्युते स्वाहा ” ॐ नमो
 भगवते वासुदेवाय बन्धबन्ध श्रीपतये स्वाहा । ”
 अनेन मन्त्रेण वर्तिमभिमन्त्रयेत् ॥ ” ॐ नमो
 भगवते सिद्धसाधकाय ज्वल २ पच २ पातय २
 बन्धय २ संहर २ दर्शय २ निर्धि नमः ॥ ”
 अनेन दीपं ज्वालयेत् । “ ॐ ऐं मन्त्रः सर्वसिद्धेभ्यो
 नमो *विश्वेभ्यः स्वाहा ॥ ” अनेन कज्जलं ग्राह्यम् ।
 “ ॐ कालि कालि महाकालि रक्षेदमञ्जनं नमो
 विश्वेभ्यः स्वाहा । ” अनेन मन्त्रेण यत्किञ्चिदञ्जन-
 द्रव्यमभिमन्त्रयेत् ॥ ” ॐ सर्वे सर्वहिते क्लीं सर्वे सर्व-
 हिते सर्वौषधि प्रयाहि ते ॥ विरते नमोनमः
 स्वाहा ॥ ” अनेन मन्त्रेणाञ्जनयोग्यां मूलिकाम-
 भिमन्त्रयेत् । आदौ केवलहेमशलाकया नेत्रमञ्ज-
 यित्वा ततस्तथैव शलाकया अञ्जनद्रव्यमञ्जयेत् ॥
 अञ्जयित्वाञ्जनं पश्चात्सप्तधारस्य पत्रकम् ।
 रन्धयेत् प्रतिनेत्रं तु अच्छिद्रं तदधोमुखम् ॥ ५ ॥
 “ ॐ ज्वलितविद्युद्धूमाय स्वाहा । ” यह अग्निग्रहणका मंत्र है ।
 नमो भगवते वासुदेवाय धरधर बन्ध बन्ध श्रीपतये स्वाहा ” इस

* विच्चेभ्यः इति वा पाठः ।

मंत्रसे बत्तीको अभिमंत्रित करे । ' ॐ नमो भगवते सिद्धसाधकाय
ज्वल २ पच २ पातय २ बन्ध २ संहर २ दर्शयदर्शय निधि नमः ।
इस मंत्रसे दीपक जलावे । ' ॐ ऐं मंत्रः सर्वसिद्धेभ्यो नमो विश्वेभ्यः
स्वाहा ' इस मंत्रसे कज्जल ग्रहण करे । ' ॐ कालि कालि महाकालि
रक्षेदमंजनं नमो विश्वेभ्यः स्वाहा ' इस मंत्रसे अंजन द्रव्यको अभिमं-
त्रित करे । ' ॐ सर्वे सर्वहिते क्लीं सर्वे सर्वहिते सर्वौषधी प्रियाहि ते
विरते नमो नमः स्वाहा ' इस मंत्रसे अंजन योग्यवर्तको अभिमंत्रित
करे । प्रथम सुवर्णशलाकासे नेत्रोंको आंजकर उस शलाकासे अंजन
द्रव्यको अभिमंत्रित करे । इस प्रकार अंजनको आंजकर सातधातों
पत्रको प्रतिनेत्रको अच्छिद्र और अधोमुख बंधित करे ॥ ५ ॥

तस्योपरि सितं वस्त्रं पट्टजं चापि बन्धयेत् ।

नाञ्ज्यादधिकहीनाङ्गं श्वदष्टं चाग्निदग्धकम् ॥६॥

उसके ऊपर सम्यक् प्रकारसे रखे हुए श्वेतवस्त्रको वेष्टन कर
वा रेशमीवस्त्रको बांधे । और उस अंजनको अधिक और हीन
अंगवालोंको न आंजे तथा श्वदष्ट अग्निदग्धको न आंजे ॥ ६ ॥

सम्पूर्णङ्गं शुचि स्नात्वा द्विदिनं नक्तभोजनम् ।

भोक्तव्यं क्षीरशाल्यन्नं त्रिदिनान्ते ततोऽञ्जयेत् ॥७॥

सम्पूर्ण प्रकारसे पवित्र हो स्नान करके दो दिनपर्यन्त रात्रिमें नक्त
भोजन करे । दूध शालिधान खाय । इस प्रकार तीन दिनके उपरान्त
फिर आंजे ॥ ७ ॥

अञ्जितस्य शिखाबन्धं कर्त्तव्यं मन्त्र उच्यते ॥८॥

" ॐ नमो भगवते रुद्राय तुलतुल महेश्वर
माहेश्वर नुज्वल २ विज्वल २ मिज्वल २ हर २

उपदेशः . १३

हिन्दीटीकासहित

(२७७)

यक्षरक्षपूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ॥
 ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ नम्र २ महेश्वरविहेश्वर
 विहेश्वरमिहेश्वर २ हरहररक्ष २ पूजिते यक्षकुमारिसु-
 लोचने स्वाहा ।

यक्षाणां मूर्तिमाश्रित्य उदयास्तं मनं जपेत् ।
 पूर्वमेव समाख्यातं शिखाबन्धं शिवोदितम् ॥ ९ ॥
 इदं सर्वाञ्जने ज्ञातव्यम् ।

आंजकर शिखाबंधन करे । उसका मंत्र कहते हैं—' ॐ नमो भगवते
 रुद्राय तुल तुल महेश्वर माहेश्वर नुज्वल २ विज्वल २ मिज्वल २
 हर २ यक्षरक्ष पूजिते यक्षकुमारि सुलोचने स्वाहा ' यक्षोंकी मूर्तिके
 आश्रित होकर उदय और अस्तमें इसका जप करे । शिखाबंधन
 करने पूर्वही कह दिया है । यह सब अंजनमें जानना चाहिये ॥ ८ ॥ ९ ॥

शरत्काले तु संग्राह्या भूतला रक्तवर्णका ।
 सिन्दूरपूरितां कृत्वा वर्ति तूलेन वेष्टयेत् ॥ १० ॥
 अतिकृष्णतिलातैलं ग्राहयेद्रक्षयेत्सुधीः ।

तैलवर्त्याः प्रयोगेण कज्जलं चोत्तरायणे ॥ ११ ॥

ग्राहयित्वाञ्जनं चक्षुर्निधि पश्यति साधकः ।

प्रमाणं च विजानाति गृह्णाति च यथेप्सितम् ॥ १२ ॥

शरत्कालमें पृथ्वीसे इन्द्रगोप (वीरबहूटी) ग्रहण करनी चाहिये
 उसे सिंदूर पूरित करके आककी रुईकी बत्ती करे और बहुत काले
 तैलका तेल लेकर उसको रक्षित करे । उसी प्रयोगसे बत्ती बाल उत्त-
 रायणमें कज्जल ग्रहण करके आंजे तो निधिका दर्शन होता है और
 प्रमाण जानकर यथेष्ट ग्रहण कर सकता है ॥ १०-१२ ॥

(२७८)

कामरत्न

त्रयोदश-

अतिकृष्णस्य काकस्य जिह्वामांसं समाहरेत् ।
वेष्टयद्रवितूलेन वर्ति तेनैव कारयेत् ॥ १३ ॥

अजाघृतेन दीपं तु प्रज्वाल्यादाय कज्जलम् ।
अञ्जिताक्षो नरस्तेन निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ १४ ॥

बहुत काले कौएकी जिह्वाका मांस लावे उसको आककी रुई
लपेटकर बत्तीके समान कर बकरीके घीमें उसका दीपक जलावे
कज्जल ग्रहण करे । उसको लगानेसे मनुष्य अज्ञात निधिको पूर्ववत्
देखता है ॥ १३ ॥ १४ ॥

सप्तधा पद्मसूत्राणि भावयेदिक्षुजै रसैः ।

उद्धृत्य ज्वालयेद्दीपमङ्गुलीतैलसंयुतम् ॥ १५ ॥

ग्राह्यं कृष्णत्रयोदश्यां कज्जलं निधिदर्शकम् ।

सर्वाञ्जनमिदं सिद्धं शम्भुना परिकीर्तितम् ॥ १६ ॥

ईखके रसमें पद्मसूत्रको सात बार भावना दे । फिर उसे लेके
अंगुलीके तेलसे दीपक जलावे । कृष्णपक्षकी त्रयोदशीको कज्जल
ग्रहण करनेसे निधिका दर्शन होता है । यह सर्व सिद्ध अंजन शिवजी
कहा है । १५ ॥ १६ ॥

दीपकज्जलयोः पात्रं कर्तव्यं नरमुण्डजम् ।

सर्वेषां कज्जलानां तु सत्यं स्याच्छिवभाषितम् ॥ १७ ॥

परन्तु इस सब प्रकारके दीपक और काजर पारनेका पात्र मनुष्य
खोपड़ी ग्रहण करनी चाहिये । यह शिवजीने कहा है ॥ १७ ॥

रक्तेन कृकलासस्य भावयित्वा मनशिलाम् ।

तेनैवाञ्जितनेत्ररतु निधिं पश्यति पूर्ववत् ॥ १८ ॥

उपदेशः १३.

हिन्दीटीकासहित

(२७९)

गिरगटके रक्त से मनशिलाको भावना देकर उससे नेत्र रंजित
करके पूर्ववत् निधिको देख सकता है ॥ १८ ॥

गृहीत्वा चानुराधायां वन्दां शाखोटवृक्षजाम् ।
गोरोचनसमं पिष्ट्वा त्वञ्जनं निधिदर्शकम् ।
एतत्सर्वाञ्जनं ख्यातं प्रसिद्धं शिवभाषितम् ॥ १९ ॥
शाखोटवृक्षकी वन्दा अनुराधानक्षत्रमें ग्रहण करके गोरोचनके
अंजनीपीसकर आंजनेसे निधिका दर्शन होता है । यह सब अंजन
सिद्ध और शिवजीके कहे हुए हैं । १९ ॥

अगस्त्यवृक्षजां कुर्यात्पादुकां निधिदर्शकाम् ॥
पादुकाञ्जनयोगेन सिद्धयोगा भवन्ति वै ॥
“ ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय शिलि २
धूमरे नागवेतालिनी स्वाहा ॥ ” अनेन पादुका-
मभिमंत्रयेत् ॥ २० ॥

अगस्त्यके पेड़की पादुका बनानेसे निधिका दर्शन होता है ।
पादुका अंजनके योगसे सिद्धयोग होता है ॥ ‘ ॐ नमो भगवते रुद्राय
उड्डामरेश्वराय शिलि २ धूमरे नागवेतालिनी स्वाहा इससे पादुकाको
अभिमंत्रित करे ॥ २० ॥

तुलसीमूलिकां पुष्ये शनिवारे समुद्धरेत् ।
निष्पिष्य काञ्जिकेनाथ मधुना पुनरञ्जयेत् ॥ २१ ॥
पादजातं कुमारं वा कन्यकां वा तदा निधिः ।
दृश्यते नात्र संदेहः पातालं गतवानपि ॥ २२ ॥

तुलसीकी जड़ पुष्यनक्षत्र शनिवारके दिन ग्रहण करे । उसे कांजीमें
मिश्रितमें मिलाय आंजे, अंजन उन्ही लोगोंको लगाना चाहिये कि,

जो उलटे उत्पन्न हुए हों ऐसे कुमार वा कन्याको पातालपर्यन्तगत मो
निधिका दर्शन हो सकता है । इसमें सन्देह नहीं है ॥ २१ ॥ २२ ॥

“ॐ नमो भगवते रुद्राय कज्जललेपाञ्जनं दर्शय २
स्वाहा ठःठः ।” अनेन मन्त्रेण कज्जललेपाञ्जन-
मभिमन्त्रयेत् ॥

खन्यमाने च सर्पाश्च निस्सरन्ति पदे पदे ॥ २३ ॥

‘ॐ नमो भगवते रुद्राय कज्जललेपाञ्जनं दर्शय २ स्वाहा ठः ठः
इस मन्त्रसे कज्जललेपाञ्जनको अभिमन्त्रित करे । फिर खनन करने
पद पदमें बड़े बड़े सर्प निकलते हैं ॥ २३ ॥

औषधेन विना तेभ्यो भयं स्यान्मन्त्रिणामपि ।

तस्मादौषधयोगेन पादलेपेन ताञ्जयेत् ॥ २४ ॥

औषधीसे विना मन्त्रवालोंको भी इनसे भय हो सकता है इ
कारण औषधिके योगसे चरणमें लेप करके इनको जय करे ॥ २४ ॥

अर्कस्य करवीरस्य *पनसस्य तु मूलिकाम् ।

पिष्ट्वा पादप्रलेपाच्च दूरे गच्छन्ति पन्नगाः ॥ २५ ॥

आक, करवीर और पनसकी जड़को पीसकर चरणोंमें लेप कर
सर्प दूर भागजाते हैं ॥ २५ ॥ इति निधिदर्शकअंजन ॥

अथ अदृश्यकरणम् ।

चतुर्लक्षमिमं मन्त्रं श्मशाने प्रजपेच्छुचिः ।

नग्नवृत्तिस्ततस्तुष्टा पटं यच्छति यक्षिणी ॥ २६ ॥

तेनावृतो नरोऽदृश्यो विचरेद्वसुधातले ।

निधिं पश्यति गृह्णाति न विघ्नैः परिभूयते ॥ २७ ॥

* पनसोत्पलमूलिकम् । ऐसा पाठ है तहाँ कमलकी जड़ लेना ।

उपदेशः १३.

हिन्दीटीकासहित

(२८१)

पवित्र होकर आगे कहाहुआ मन्त्र श्मशानमें नग्न होकर ४०००००
 में तब यक्षिणी इसको एक वस्त्र देती है । उससे आवृत मनुष्य
 कीकी न दीखता हुआ पृथ्वीतलमें विचरता है और निधि
 कर ग्रहण करसकता है कहीं विघ्नोंसे इसका तिरस्कार नहीं होता
 ॥ २६ ॥ २७ ॥

“ॐ ह्रां ह्रीं स्फं श्मशानवासिनी स्वाहा ॥”
 निशाचरीं निशि ध्वात्वा जप्त्वा वामेन पाणिना ।
 अदृश्यकरिणीं विद्यां लक्षजाप्ये प्रयच्छति ॥ २८ ॥
 “ॐ ह्रां ह्रीं स्फं श्मशानवासिनी स्वाहा” रात्रिमें ध्यान कर वाम-
 से जप करता हुआ एक लक्ष जप करके इस अदृष्टकारणी विद्याको
 प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

“ॐ नमो निशाचरमहामहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलो-
 कलोचनानि बन्धय २ देव्याज्ञापयति स्वाहा ।
 रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां श्मशानान्तः शिवालये ।
 बलिना चोपहारेण कुर्यादर्चनमुत्तमम् ॥ २९ ॥
 ततो दीपाङ्गुलीतैलैर्वर्तिः स्यादर्कतन्तुभिः ।
 प्रज्वालय नृकपाले तु तत्पात्रे धृतकज्जलम् ।
 अञ्जयेन्नेत्रयुगलं देवैरपि न दृश्यते ॥ ३० ॥
 “ॐ नमो निशाचर महामहेश्वर मम पर्यटतः सर्वलोकलोचनानि
 बन्धय देव्याज्ञापयति स्वाहा” कृष्णचतुर्दशीकी रात्रिमें
 श्मशानके बीच शिवालयमें बली उपहार आदिसे उत्तम अर्चन करे ॥
 अंगुलीके तेलसे युक्त आकके तन्तुओंकी बत्ती बनावे, मनुष्यकी
 आँखोंमें बालकर खोपड़ीपरही काजल पारे, उसको दोनों आँखोंमें
 तेलसे देवताओंकोभी नहीं दीखता है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टपद्मजतन्तुभिः ॥ ३१ ॥

पञ्चभिर्वर्तिकाभिश्च नृकपालेषु पञ्चसु ।

*नवनीतेन दीपाः स्युः कज्जलं नृकपालतः ॥ ३२ ॥

ग्राह्येत्पञ्चभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये ।

पञ्चस्थानीयजातं तु एकीकुर्यात्तु तं पुनः ।

मन्त्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ॥ ३३ ॥

“ॐ हूं फट् स्वाहा कालि २ महाकालि मांसशोणित-
भक्षिणि रक्तकृष्णमुखे देवी मा मे पश्यतु मानुषेति

ॐ हूं फट् स्वाहा ॥” एतन्मन्त्रायुतजपात्सिद्धि-

र्भवति ॥ उक्तादृश्यप्रयोगाणामयमेव मन्त्रः ।

अनेन मन्त्रेणाष्टोत्तरशताभिमन्त्रिताङ्गुलितैल-

प्रयोगात्सिद्धा भवन्ति ॥ ३४ ॥

आक, शेमल, कपास, वस्त्र, कमलके तन्तु इनसे पांच बत्ती करके
अलग २ पांच मनुष्योंकी खोपड़ीमें मक्खनके घीसे वा नरतेलसे
काजर पारे । । इन पांचोंको पूर्ववत् शिवालयमें पांचों स्थानों से लेकर
फिर उसे एकत्र करे । । फिर इस मन्त्रसे अभिमन्त्रितकर नेत्रोंमें लगानेसे
देवताओंकोभी नहीं दीखता है । मन्त्र—“ॐ हूं फट् स्वाहा कालि २ महा-
कालि मांसशोणितभक्षिणि रक्तकृष्णमुखे देवी मामे पश्यतु मानुषेति
ओं हूं फट् स्वाहा” इस मन्त्रको १०००० जपनेसे सिद्धि होती है । यह
मन्त्र सब अदृश्यकरणके प्रयोगमें जानलेना । इस मन्त्रसे एक सौ आठ
बार अभिमन्त्रित अंगुली तेलके प्रयोगसे सब सिद्ध होते हैं ॥ ३१-३४ ॥

* नरतैलेन इति वा पाठः । अर्थ-नरका तेल ।

उपदेशः १३.

हिन्दीटीकासहित

(२८३)

अंगुलीतैलसंसिक्ता यवाः सप्तदिनावधि ।

त्रिलोहवेष्टितास्तेषां गुटिकां कारयेच्छुभाम् ।

अदृश्यकारिणी सा तु मुखस्था नात्र संशयः ॥ ३५ ॥

अंगुली (गजगर्णी) के तेलसे सात दिनपर्यन्त जौको सिंचन करे और उसको त्रिलोहसे वेष्टित कर सुन्दर गुटिका बनाय उसको मुखमें रखनेसे अदृश्य हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ३५ ॥

ततैले सर्षपाः श्वेतास्त्रिलोहेन तु वेष्टिताः

गुटिका मुखमध्यस्था साऽदृश्यकारिणी मता ॥ ३६ ॥

उस तेलमें श्वेत सरसोंको पूर्ववत् भावना दे गुटिका बनाय (चाँदी आदि) से मढाय मुखमें रखनेसे अदृश्य होजाता है ॥ ३६ ॥

कृष्णकाकस्य रुधिरं पित्तं गोमायुसम्भवम् ।

काकारिनखचञ्च्वापि समभागं विचूर्णयेत् ॥ ३७ ॥

ऋक्षे पुनर्वसौ वर्ति कृत्वा नेत्रे च रंजयेत् ।

अदृश्यो भवति क्षिप्रे सर्वकार्यप्रसाधकः ॥ ३८ ॥

काले कौएका रुधिर, गीदडका पित्ता, उलूकके नख, चोंच इनको समान भाग लेकर चूर्ण करे और पुनर्वसु नक्षत्रमें इसकी बत्ती बनाय त्रोंमें आंजे तो वह शीघ्र अदृश्य हो जाता है तथा सब कार्यको बढ़ हो कर सकता है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कृष्णकुक्कुटपुच्छाग्रं निर्माल्यं मृतकस्य* च ।

काकनेत्रं च मरिचं पिष्ट्वा कार्यम् च मूत्रकैः ॥ ३९ ॥

कलायार्द्धप्रमाणेन वटीं कृत्वा प्रशोषयेत् ।

तेनैवाञ्जितनेत्रस्तु अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ४० ॥

* शंकरस्य च ।

काले मुर्गेकी पूछका अग्रभाग, मृतकका निर्माल्य, कौएका नेत्र, काली मिर्च, अश्वबला इनको गोमूत्रके साथ पीसकर बेरकी बराबर गोली बनाकर सुखाले । इससे नेत्रोंको आंजे तो निश्चयही अदृश्य हो जाता है ॥ ३९ ॥ ४० ॥

कृष्णमार्जारान्तरस्थं रक्तं संगृह्यभावयेत् ।

नक्तमालस्य तैलेन तत्र श्वेतार्कसूत्रजाम् ॥ ४१ ॥

वर्ति प्रज्वाल्य वज्रस्य* दले संगृह्य कज्जलम् ।

तेनाञ्जनेन मनुजस्त्वदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥ ४२ ॥

काली बिल्लीका रक्त ग्रहण कर नक्तमाल (करंज) तेलद्वारा भावना दे यत्नपूर्वक श्वेत आककी कपासकी वत्ती बालकर वज्रवृक्ष (सेहुण्ड) के पत्तेमें काजर ग्रहण कर उससे अंजन करनेसे अवश्यही मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

सुकृष्णं चैव मार्जारं मारयित्वा चतुष्पथे ॥ ४३ ॥

प्रोक्षणं कारयित्वा तु दिनानां पञ्चविंशतिः ।

तत्संगृह्य प्रयत्नेन क्षालयेच्छीतवारिणा ॥ ४४ ॥

यदस्थि च श्रोत्रभेदि स्याद्ग्राह्यं यत्नतोऽभयम् ।

पूजयित्वा महाकालीं गoroचनसमन्वितम् ॥ ४५ ॥

नकुलस्य तु पित्तेन भावयित्वा प्रपेषयेत् ।

तद्वर्तितिलकादेव नरोऽदृश्यो भवेद्ध्रुवम् ॥ ४६ ॥

चौराहेमें काली बिल्लीको वध कर पञ्चीस दिनपर्यन्त उसे प्रोक्षण करे अर्थात् ग्रहण कर शीतल जलसे धोवे । यदि अस्थि श्रोत्रभेदी हो तो यत्नसे ग्रहण कर महाकालीकी पूजा और जप कर गoroचन

* बदरस्य इति च पाठान्तरम् ।

पदः १३.

हिन्दीटीकासहित

(२८५)

तौलेकी पित्तेकी भावना देकर पीसे उसकी बत्तीसे तिलक करे
अवश्यही मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ ४३-४६ ॥

नृमांसं च शिवामांसं यत्नतो ग्राह्येद्बुधः ॥

प्रथमरजस्वलायाश्च रुधिराण्यवतीं कुरु ॥

त्रिलोहवेष्टिता सा तु मुखस्थाऽदृश्यकारिणी ॥ ४७ ॥

मनुष्य और गीदडीका मांस यत्नसे ग्रहण करके प्रथम रजस्वला
स्त्रीके रुधिरसे उसकी वटिका बनावे । उसे चांदी तांबे अथवा
तेसे मढाकर मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ ४७ ॥

कृष्णमाज्जरामुण्डे तु कृष्णगुञ्जां प्रवापयेत् ।

तत्फलं वदनस्थं हि साक्षाददृश्यकारकम् ॥ ४८ ॥

काली बिल्लीके मुण्ड (खोपड़ी) में काली चौंटली बोवे । उससे
पत्र हुआ उसका फल मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है ॥ ४८ ॥

कोकाया नयनं वामं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत् ।

सा वटी मुखमध्यस्था अदृश्यं कुरुते ध्रुवम् ॥ ४९ ॥

कोयलके बायें नेत्रकी वटी बनाय त्रिलोहसे वेष्टित कर मुखमें
तेसे प्राणी अदृश्य होजाता है ॥ ४९ ॥

दिवाभीतस्य नयनं त्रिलोहेन प्रवेष्टयेत् ।

मुखस्थं कुरुतेऽदृश्यं यथेच्छं विचरेन्महीम् ॥ ५० ॥

गल्लूके नेत्रको चांदी सोने आदिसे मढाकर मुखमें रखनेसे मनुष्य
होजाता है । फिर जहां इच्छा हो वहां विचरने लगे ॥ ५० ॥

रुक्षे चैवानुराधायां वन्दां रासलवृक्षकाम् ।

मुखे प्रक्षिप्य च नरोऽदृश्यः स्यान्नहि संशयः ॥ ५१ ॥

अनुराधानक्षत्रमें रोहित वृक्षका वन्दा ग्रहणकर मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है इसमें सन्देह नहीं ॥ ५१ ॥

शाखोटस्य च वन्दाकं नक्षत्रे मृगशीर्षके ।

गृहीत्वा पानपात्रेण अदृश्यो जायते नरः ॥ ५२ ॥

मृगशिरनक्षत्रमें शाखोट वृक्षके वन्दाको पानपात्रद्वारा ग्रहण करके मुखमें रखनेसे मनुष्य अवश्यही अदृश्य होजाता है ॥ ५२ ॥

भरण्यां तु समागृह्य वन्दां कार्पासिसम्भवाम् ॥ ५३ ॥

हस्ते बद्ध्वा ह्यदृश्यः स्यात्स्वात्यां वा निम्बवृक्षजाम् ।

पिबेदुत्तरषाढायामशोकवृक्षसम्भवाम् ॥ ५४ ॥

वन्दां तदा अदृश्यः स्यादश्विन्यां बिल्ववृक्षजाम् ।

वन्दाकं वा करे धृत्वा अदृश्यो जायते नरः ॥ ५५ ॥

भरणीनक्षत्रमें कपासका वन्दा लेकर हाथमें बांधनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है अथवा स्वातीनक्षत्रमें नीमका वन्दा ग्रहण करे तथा उत्तराषाढामें अशोकवृक्षका वन्दा ग्रहण कर पीवे एवं अश्विनीनक्षत्रमें बेलके पेडका वन्दा लावे और इनको हाथमें धारण करनेसे मनुष्य अदृश्य होजाता है ॥ ५३-५५ ॥ इति अदृश्यकरण ॥

अथ मृतसञ्जीवनी

मृतसञ्जीवनीविद्यां प्रवक्ष्यामि समासतः ।

लिङ्गमङ्गकोलवृक्षाधः स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ॥ ५६ ॥

संक्षेपसे मृतसंजीवनी विद्याको कहता हूं—ढेरेके वृक्षके नीचे शिव-लिंगको स्थापन कर पूजा करे ॥ ५६ ॥

नवं घटं च तत्रैव पूजयेत्लिङ्गसंनिधौ ।

वृक्षं लिङ्गं घटं चैव सूत्रेनैकेन वेष्टयेत् ॥ ५७ ॥

उन्हींके निकट नवीन कलश वा घटको स्थापन करके पूजन करे ।
उत्त वृक्ष लिंग और घटको एकही सूत्रसे वेष्टित करे ॥ ५७ ॥

चतुर्भिस्साधकैर्नित्यं प्रणिपत्य क्रमेणतु ।

एवं *द्विद्विदिनं कुर्यादघोरेण समर्चयेत् ॥ ५८ ॥

“ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वतः सर्व
सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ।” उक्तयोगानामयंमन्त्रः ॥

चार साधकोंसे नित्य प्रणाम करके दो दिन बराबर यह विधान
कर 'अघोरेभ्यो०' इस मंत्रसे शंकरका आराधन करे । कहीं दो तीन
दिन करना कहा है ॥ इस प्रयोगमें यह अघोर मंत्रकाही विधान है ॥ ५८ ॥

पुष्पादिफलपाकान्तं साधनं कारयेद्बुधः ।

फलानि पक्वान्यादाय पूर्वोक्तं पूरयेद्घटम् ॥ ५९ ॥

पुष्प फल पाकतक इस साधनको करे अर्थात् फूल फल लाकर
पूर्वोक्त घटको समर्पणकर पूर्ण करे ॥ ५९ ॥

तद्घटं पूजयेन्नित्यं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।

तुषवर्जम् ततः कुर्याद्विजानां घट्टयेन्मुखम् ॥ ६० ॥

उस घटको नित्य गंध अक्षतसे पूजन करे और छुलका रहित
जिोंको मुखपर ढकदे ॥ ६० ॥

तन्मुखं बृहणं वृत्तं किञ्चित् किञ्चित्प्रलेपयेत् ।

विस्तीर्णमुखभागान्तः कुम्भकारकरोद्भवाम् ॥ ६१ ॥

मुख वृद्धिमें किञ्चित् किञ्चित् लेप करे—कुम्हारके हाथमें रखी
(मिट्टी) लाय ॥ ६१ ॥

* द्विदिनम् इत्यपि पाठः ।

(२८८)

कामरत्न

त्रयोदश-

मृत्तिकां लेपयेत्तत्र तानि बीजानि रोपयेत् ।

कुंडल्याकारयोगेन यत्नाद्दूर्ध्वमुखानि वै ॥ ६२ ॥

उसपर मृत्तिका लेपन कर पश्चात् बीजोंका रोपण करे अर्थात् कुण्डलीके आकार बोवे ॥ ६२ ॥

शुष्कं तं ताम्रपात्रोर्ध्वं भाण्डं देयमधोमुखम् ।

आतपे धारयेत्तैलं ग्राहयेत्तं च रक्षयेत् ॥ ६३ ॥

जब वह सूख जाय तब उसपर तांबेका पात्र रखकर नीचेको उसका मुख कर दे आतपमें रखकर उससे तेल ग्रहण कर उसकी रक्षा करे ॥ ६३ ॥

मासार्द्धं चैव तत्तैलं मासार्द्धं तिलतैलकम् ।

नस्यं देयं मृतस्यैव कालदष्टस्य तत्क्षणात् ॥ ६४ ॥

आधा मासा यह तेल और आधा मासा तिलका तेल ग्रहण कर इनकी नास देनेसे कालरूपी राक्षसका काटा पुरुष जीवित होजाता है ॥ ६४ ॥

अथवा—पुंशुक्रं पारदे तुल्यं तेन तैलेन मर्दयेत् ।

नस्यं देयं मृतस्यैकं कालदष्टस्य वा क्षणात् ॥ ६५ ॥

तत्कृत्वा जीव्यते सत्यं गतेनापि यमालयम् ।

रोगापमृत्युसर्पादिमृतो जीवति हि स्वयम् ।

जीवमायाति नो चित्रं महादेवेन भाषितम् ॥ ६६ ॥

अथवा पुरुषका शुक्र, पारा रंस यह तेलमें मर्दन कर नास दे तो काल दष्ट हुआभी जीवित होजाता है यमालयको गया हुआ तथा अपमृत्यु रोग और सर्पादिका काटा हुआभी अच्छा होता है, इसमें सन्देह नहीं। यह महादेवजीने कहा है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

अपदेशः १३.

हिन्दीटीकासहित

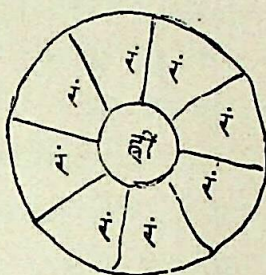
(२८९)

पुष्पभास्करयोगेन गुडूचीमूलमाहरत् ।

कर्षमुष्णजलैः पीतो मृते मृत्युहरो भवेत् ॥ ६७ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने निधिदर्शनांजनादिमृत्युसंजीवनी कथनं नाम त्रयोदशोपदेशः ॥ १३ ॥

पुष्पनक्षत्रसे जब सूर्यका योग हो तब गिलोयकी जड़ लावे इसको पाठ कर्ष जलके साथ पीनेसे मृत्युका भय दूर होजाता है । ६७ ॥ गौरीचन कुंकुमसे योजपत्रमें इस यन्त्रको लिख भुजामें धारण करे तो अपमृत्यु दूर हो, 'मृत्युञ्जयाय नमः' यह मूल मंत्र है । यह यन्त्र सिद्धिदायक है ।



इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकायां निधिदर्शनांजनादिमृत्युसंजीवनी कथनं नाम त्रयोदशोपदेशः ॥ १३ ॥

(२९०)

कामरत्न

चतुर्दश-

चतुर्दशोपदेशः

अथ विषनिवारणम्

शम्भुनोक्तं समासेन विषं स्थावरजङ्गमम् ।

कृत्रिमं योगजं चैव वृश्चिकाद्यं तु सम्भवम् ॥ १ ॥

शिवजीने जो संक्षेपसे स्थावर, जंगम, कृत्रिम, योगसे उत्पन्न तथा वृश्चिकादि विष कहा है ॥ १ ॥

क्रमाल्लक्षणमेतेषां मन्त्रव्युतं वदाम्यहम् ।

नाम वक्ष्ये विषाणां तु शम्भुना कीर्तितं पुरा ॥ २ ॥

क्रमसे उनके लक्षण और मन्त्र वर्णन करताहूं तथा उन विषों के नाम कहताहूं जो पहले शिवजीने कहे हैं ॥ २ ॥

दरदो वत्सनाभश्चमुस्तकं पुष्करं विषम् ।

क्रूरं शठं कर्मठं च हरिद्रं कालकूटकम् ॥ ३ ॥

इन्द्रबीजं चित्रबीजं हरितं गालवं विषम् ।

शृङ्गी कर्कटशृङ्गी च च मेषशृङ्गी हलाहलम् ॥ ४ ॥

शाकूटं रक्तशृङ्गी च ह्यञ्जनं पुण्डरीकम् ।

संकोचं मधुपाकं च रोहिणं मेदुरं तथा ॥ ५ ॥

पञ्चविंशतिभिर्भेदैर्विज्ञेयं स्थावरं विषम् ।

एतन्मध्ये ह्यतिक्रूरं संकोचं कालकूटकम् ॥ ६ ॥

दरद (हिंगुल), वत्सनाभ, मुस्तक, पुष्कर, क्रूर, शठ, कर्मठ, हरिद्र, कालकूट, इन्द्रबीज, चित्रबीज, हरित, गालवविष, शृङ्गी, कर्कट, शाकूट, रक्तशृङ्गी, अञ्जन, पुण्डरीक, संकोच, मधुपाक, रोहिण, मेदुर, तथा पञ्चविंशतिभिर्भेदैर्विज्ञेयं स्थावरं विषम् ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(२९१)

रीक, संकोच, मधुपाक, रोहिण, मेदूर, ये नामवाले पञ्चीस स्थावरविष जानने चाहिये । इनमें संकोच और कालकूट विष बड़ा तीक्ष्ण है ॥ ३-६ ॥

भृङ्गी मुस्तं वत्सनाभं पञ्चमं तु विषाद्विषम् ।

एषां देहप्रविष्टानां शृणु लक्षणमुच्यते ॥ ७ ॥

भृङ्गी मुस्त वत्सनाभ विष पांचवां विषसे विष है । देहमें प्रविष्ट

हुए इन विषोंका लक्षण कहता हूं सुनो ॥ ७ ॥

वान्तिमूर्च्छातिसारं च भ्रान्तिशूलं च कम्पनम् ।

कासश्वासौ तीव्रदाहो लक्ष्येद्गद्गदस्वरम् ॥ ८ ॥

वान्ति, मूर्च्छा, अतिसार, भ्रान्ति, शूल, कम्प, खांसी, श्वास, तीव्र दाह गद्गदस्वर होना यह विष खायेहुएके लक्षण हैं ॥ ८ ॥

पुत्रजीवफलामज्जां शीततोयेन पेषयेत् ।

भोजने चाञ्जने पाने लेपे सर्वविषापहम् ॥ ९ ॥

स्थावरं जङ्गमं क्रूरं कृत्रिमं योगजं तथा ।

निष्कमात्रं न सन्देहः कालदण्डोऽपि जीवति ॥ १० ॥

जियापोतेकी मींगी शीतलजलके साथ पीसकर भोजन पान लेपन अंजनमें देनेसे सब प्रकारके विष दूर होजाते हैं तथा स्थावर, जंगम, कृत्रिम, योगज, आदि विष भी उपरोक्त औषधीके एक निष्क सेवन करनेसे जाते रहते हैं । बहुत क्या ? इसके प्रतापसे कालदण्डभी जीवित होता है ॥ ९ ॥ १० ॥

शाड्वलं कडकणं तुत्थं कट्फलं रजनी वचा ।

नरमूत्रेण संपीत्वा एकैकं तु विषं हरेत् ॥ ११ ॥

शाड्वल, शुद्ध सुहागा, तूतिया, वट्फल, हलदी, वच, इनको मनुष्यके मूत्रमें पीस पीनेसे एक एक विषको भी दूर करते हैं ॥ ११ ॥

(२९२)

कामरत्न

चतुर्दश-

समूलपत्रां सपाक्षीं तथैव देवदालिकाम् ।

गिरिकण्याश्च वा मूलं नरमूत्रेण पूर्ववत् ॥ १२ ॥

त्रिकटुं देवीदालिं च नस्ये सर्वविषापहम्

ब्रह्मदण्डीयमूलं तु मधुना सह भक्षयेत् ॥ १३ ॥

पत्ते जडके सहित सहदेई और देवदाली अथवा विष्णुक्रान्ताकी जड इनको मनुष्यके मूत्रसे पूर्ववत् पीसकर वा त्रिकुटा, देवदाली इनको पीसकर नास लेनेसे भी सब विष दूर हो जाते हैं अथवा ब्रह्मदंडीकी जड मधुके सहित भक्षण करे ॥ १२ ॥ १३ ॥

श्वेताङ्कोलस्य मूलं तु मुखस्थे तिलकेऽथवा ।

मुखस्थैरण्डमूलं वा छायाशुष्कं विषापहम् ॥ १४ ॥

श्वेत अंकोलकी जड मुखमें रखनेसे अथवा तिलक करनेसे तथा छायामें सुखाई अंडकी जड मुखमें रखनेसे विषको दूर करती है ॥ १४ ॥

टङ्कणं देवदालिं च जलैः पाने विषापहम् ।

नीलसर्पस्य पुच्छं तु कृकलासस्य पुच्छकम् ॥ १५ ॥

ताम्रेण वेष्टितं कृत्वा मुद्रिकां तां च धारयेत् ।

तया स्पृष्टजलं पीतं स्थावरं जङ्गमं हरेत् ॥ १६ ॥

सुहागा, देवदाली (घर बेल) इनको जलके साथ पानमें देनेसे विषको दूर करनेवाली है । नीले साँपकी पुच्छ और गिरगटकी पूंछ ताँवेसे लपेट मुद्रिका बनाय हाथमें धारण करे । उससे स्पर्श किया जल पान करनेसे स्थावर और जंगम विष दूर होजाता है ॥ १५ ॥ १६ ॥

मन्त्र :-आतरथाकी यातरथा श्लातोहाते उपजीलो

वृक्षमुंचचुलु करपापियो सिंदूरसावाणी कालकू-

टविष श्रीगोरक्षेर वाणीमुखे दिले ह्ये अमृतवाणी

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(२९३)

विषखाड विषजारो विषकरोति भर विषहरि
 आछे त्रिदशर ईश्वर महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी
 ॥ १ ॥ सिन्दूरसार वाणी कालकूट विषशरीरमध्ये
 हया पानी श्रीगोरक्षेर आज्ञा ॥ २ ॥ खेदाय गुरु
 आदम सिख आमुकारे कान्देनाही कालकूट
 विष ॥ ३ ॥ महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी काल-
 कूट विष शरीरमध्ये हयापानी कालकूटविष
 दृष्टि हन २ ॐ पार्णा । मन्त्राभ्युक्षितं विषं मंत्रेण
 वारत्रयमभिमन्त्रितं भक्षयेत् ॥ ४ ॥ यदि किञ्चि-
 तथापि विक्रियते तर्हि चतुर्थमन्त्रेण वारत्रयम-
 भिमन्त्रयेत् ॥ जलं वारत्रयं गण्डूषमात्रं पेयम् ॥

मन्त्र—‘आतरथाकी यातरथा इलाता हारत उपजीले वृक्षमुजि च-
 चिजा पिजो सिन्दूर सारणी कालकूट विष शरीर मध्ये हयापानी
 गोरक्षेर आज्ञा । विषउखाड विषाजारो विषाकरोति भर विषहारी
 आछे त्रिदश ईश्वर महादेवेर आज्ञा गोरक्षेर वाणी सिन्दूर सारवाणी
 कालकूट विष शरीरमध्ये हयापानी’ इस मन्त्रसे विष खायेहुएके
 त्रिसरे तीनवार मन्त्र पढकर जल दे और जो कुछ विकार होय तो
 या मंत्र पढकर तीनवार अभिमन्त्रित कर कुल्ले मात्र जलपान
 से विष दूर हो जायगा ॥

भूनागसत्त्वसंजातां मुद्रिकां धारयेत्करे ।

न तस्याक्रमते सत्यं विषं स्थावरजङ्गमम् ।

तत्स्पृष्टोदकपानेन विषं सर्वं विनश्यति ॥ १७ ॥

(२९४)

कामरत्न

चतुर्दश-

गण्डूषपदी और भूनागके सत्त्वकी मुद्रिका हाथथमें धारण करनेसे स्थावर जङ्गम विष इसको आक्रमण नहीं कर सकता है । इसी मुद्रिकाका स्पर्श किया जलपान करनेसे सब प्रकारके विष नाश हो जाते हैं ॥ १७ ॥

शिरीषबध्नकं ग्राह्यं रेवत्यां चन्दनान्वितम् ।

तद्धृष्टं मर्दितं गात्रे तस्याङ्गे विषनाशनम् ॥ १८ ॥

जब रेवती नक्षत्रमें चन्द्रमा हो तब शिरसका वन्दा लावे, उसको घिसकर चंदनके साथ शरीरमें मलनेसे विष नाश होता है ॥ १८ ॥

बराहगोधानकुलशशकुक्कुटपित्तिकम् ।

श्वेताया गिरिकर्ण्यश्च फलमूलं विपेषयेत् ॥ १९ ॥

पाने सर्वविषं हन्ति मृतोप्युत्तिष्ठते क्षणात् ।

नाम्ना चामृतयोगोयं पुरा रुद्रेण भाषितः ॥ २० ॥

शूकर, गोय, नौला खरगोश, कुत्ता, इन सबका पित्त तथा श्वेत विष्णुक्रान्ताके फल और मूल दोनोंको पीसले इसके पान करनेसे सब विष दूर होकर मृतक पुरुष भी उसी समय उठ बैठता है, यह अमृतयोग प्रथम शिवजीने कहा है ॥ १९ ॥ २० ॥

पणवं पटहं चैव ह्यनेनैव प्रलेपयेत् ।

मृतोऽपि विषयोगेन श्रुत्वा वाद्यं प्रबुध्यते ॥ २१ ॥

पणव और पटह बाजेपर इसीका लेप करे, विष योगसे मरा हुआ इस बाजेको सुनकर जाग उठेगा ॥ २१ ॥

श्वेतापराजितामूलं पीत्वा दुग्धेन मानवः ।

स्थावरं च विषं हन्ति उदरस्थं न संशयः ॥ २२ ॥

ससिंधुकाञ्जिकं पीत्वा स्थावरादिविषं हरेत् ॥ २३ ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(२९५)

श्वेत अपराजिताकी जड दूधके साथ पीसकर पान करनेसे उदरमें स्थित स्थावरविष दूर होता है इसमें सन्देह नहीं। सेंधानोंन मिलाय कंजीको पीनेसे स्थावर विष जाता रहता है इसमें संदेह नहीं। २२। २३।

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुंचितामृत
मर्चतजटाय ठः ठः स्वाहा ॥” अनेन सर्वौषधम-
भिमन्त्रयेत् ॥ इति स्थावरविषनिवारणम् ॥

मन्त्र—ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुंचितामृतमर्चतजटाय ठः
ॐ स्वाहा’ इससे सब औषधियों को अभिमन्त्रित करे ॥ इति स्थावर
विषनि ० ॥

अथ (जङ्गम) सर्पविषनिवारणम् ।

जातीनां नाम रूपं च जंगमानामिहोच्यते ।

ब्राह्मणाः श्वेतवर्णाः स्युः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः ॥

वैश्यास्तु पीतवर्णाश्च कृष्णवर्णास्तु शूद्रकाः ॥ २४ ॥

अब जंगमविषकी जाति और स्वरूप कहते हैं—श्वेतवर्णका सर्प
ब्राह्मण, लाल वर्णका क्षत्रिय, पीतवर्णका वैश्य और कृष्णवर्णका
शूद्र होता है ॥ २४ ॥

सर्पविषहरणमन्त्रः

ॐ मेघमालेधिमाले हरहरविषवेगं हाहाहहासवा-
रिहं अंबे लंबे सर्वविषनाशिनि महामाये हूं हूं लं सः
ठः ठः स्वाहा । जः जः जः सर्वविषनाशिनीमेघमाला
नाम विद्या ॐ प्रौठः नील कंठाय स्वाहा । ॐ नमो
भगवति रक्ताङ्गे रक्तलोचने कपिलजटे कपिल-

(२९६)

कामरत्न

चतुर्दश-

शरीरे कट्कट्कहकहभंजभंजशूलाग्रपाणि उग्र-
 चण्डतर्पेमहातर्पे कृष्णे अतिकृष्णे इदं मानुषं
 शरीर मनुप्रविश्य भ्रम २ भ्रम २ भ्रामय २ नृत्य २
 बहुरूपे विलासिनिभक्ते कृष्णाङ्गी पूरय २
 वेशय २ विश्वरूपिणी रक्तपट्टिरुद्रे आज्ञापयति हूं
 फट् ठः ठः एषा स्वास्थावेषाविद्या ॐ नमो भग-
 वते पार्श्वयक्षाय ह्रीं २ हूं २ धेनु २ कंप २
 पुराणं दृष्ट्वा मावेशय २ स्वाहा ॥” ॥ २५ ॥
 “ॐ मेघमाले” यह मन्त्र सर्पोंकेविषको नाश करनेवाला मन्त्र है ॥ २५ ॥
 अष्टकुलनागाः

अनन्तः कुलिकश्चैव वासुकी शङ्खपालकः ।
 तक्षकश्च महापद्मः कर्कोटः पद्म एव च ।
 कुलनागाष्टकं ह्येते तेषां चिन्हं शिवोदितम् ॥ २६ ॥
 अनन्त कुलिक, वासुकी, शंखपालक, तक्षक, महापद्म, कर्कोटक,
 पद्म ये आठ कुलनाग हैं । इनके चिन्ह शिवजीने कहे हैं ॥ २६ ॥
 श्वेतपद्ममनन्तस्य मूर्ध्नि पृष्ठे च दृश्यते ।
 शङ्खं शेषस्य शिरसि वासुकेः पृष्ठ उत्पलम् ॥ २७ ॥
 अनन्तनागके शिर और पीठमें श्वेत पद्म देखा जाता है शेषके शिर
 पर शंखका चिन्ह, वासुकीके पृष्ठपर कमलका चिन्ह होता है ॥ २७ ॥
 त्रिनेत्राङ्कस्तु कर्कोटस्तक्षकः शशकाङ्कितः ।
 ज्वलत्रिशूलचन्द्रार्द्धं शङ्खपालस्य मूर्द्धनि ॥ २८ ॥
 कर्कोटक नागपर त्रिनेत्रका चिन्ह, तक्षकपर शशका चिन्ह, शंख-
 पालके शिरपर जलते हुए त्रिशूलका और अर्धचन्द्रका चिन्ह है ॥ २८ ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(२९७)

राजवत्तु समो बिन्दुर्महापद्मस्य पृष्ठतः ।

पद्मपृष्ठे च दृश्यन्ते सुरक्ताः पञ्चबिन्दवः ॥ २९ ॥

महापद्मकी पीठपर राजाके समान बिन्दु होते हैं । पद्मनागकी पीठ पर लाल पंचबिन्दु होते हैं इन लक्षणोंसे इन्हें पहचाने ॥ २९ ॥

एवं यो वेत्ति जात्यादीन्नाम बिन्दुं शिवोदितम् ।

तस्य मन्त्रौषधान्येव सिद्धयन्ते नान्यथा पुनः ॥ ३० ॥

दूरतस्तस्य सर्पाद्याः पतन्ति गरुडे यथा ।

कालाख्या नामतश्चिन्हं शिवेनोक्तं यथापुरा ॥ ३१ ॥

इस प्रकार शिवजीके कहे नाम बिन्दु जाति आदिको जो जानता है उसीको मंत्र औषधी सिद्ध होती है अन्यथा नहीं, सर्पादि उससे ऐसे दूर रहते हैं जैसे गरुडसे, यह वार्ता पूर्वमें शिवने कही है ॥ ३० ॥ ३१ ॥

दशभेदाः

त्रेयो दशविधो दंशो भुजङ्गानां भिषग्वरैः ।

भीतोन्मत्तः क्षुधार्तश्च आक्रान्तो विषदर्पितः ॥ ३२ ॥

आहारेच्छुः क्षुधार्तश्च स्वास्थानपरिरक्षणः ।

नवमो वैरिसन्धानो दशमः कालसंज्ञकः ॥ ३३ ॥

सर्पोंका दंश दशविधका होता है, ऐसा वैद्योंको जानना उचित है । भीत, उन्मत्त, क्षुधार्तित, आक्रान्त, विषदर्पित, आहारकी इच्छावाला, भूखा, अपने स्थानको रक्षा करनेवाला, नवम वैरिसंधान, दशम कालसंज्ञक है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

स्थानभेदेन दशफलम्

उद्याने जीर्णकूपे च वटशृङ्गाटचत्वरैः ।

शुष्के वृक्षे श्मशाने च प्लक्षश्लेष्मातशिग्रुके ॥ ३४ ॥

(२९८)

कामरत्न

चतुर्दश-

देवतायतनागारे तथा च शाकवृक्षके* ।

एषु स्थानेषु ये दष्टास्ते न जीवन्ति मानवा ॥ ३५ ॥

भ्रूमध्ये चाधरे मूर्ध्नि जङ्घे नेत्रे भ्रुवौ तथा ।

ग्रीवाचिबुककण्ठेषु करमध्ये च तालुके ॥ ३६ ॥

स्तनयोः संधयोः कुक्षौ लिङ्गवृषणनाभिषु ।

मर्मसंधिषु सर्वत्र सर्पदष्टो न जीवति ॥ ३७ ॥

बगीचेमें, जीर्ण कूपमें, वट, शृंगाट, चौराहा, सूखे वृक्ष, श्मशान, शेलुवृक्ष, सहिजने, देवताओंके स्थान, शाकवृक्ष इतने स्थानोंमें जो काटे गये हैं वे मनुष्य जीवित नहीं होसकते हैं । शाक-आकवृक्ष वा सेगुन वृक्ष, भ्रूमध्य, अधर (होठ), शिर, जंघा, नेत्र, दोनों भौं, गर्दन, ठोड़ी, कंठ, हथेली, तालु, दोनों स्तनोंकी संधि, कोख, लिंग वृषण, नाभि, सब मर्मकी सन्धियोंमें सर्पका काटाहुआ नहीं जीता है ॥ ३४-३७ ॥

रवौ भौमे शनेर्वारे सर्पदष्टो न जीवति ।

अष्टमी पञ्चमी पूर्णा ह्यमावास्या चतुर्दशी ।

अशुभास्तिथयः प्रोक्तास्सर्पदष्टो न जीवति ॥ ३८ ॥

रवि, मंगल और शनिवारको सर्पका काटा नहीं जीता है । अष्टमी, पंचमी, पूर्णा, अमावास्या, चतुर्दशी यह अशुभ तिथि हैं, इनमें सर्पका काटा नहीं जाता है ॥ ३८ ॥

कृत्तिका श्रवणं मूलं विशाखा भरणी तथा ।

पूर्वास्तिस्रस्तथा चित्राश्लेषाभेषु न जीवति ॥ ३९ ॥

कृत्तिका, श्रवण, मूल, विशाखा, भरणी, तीना पूर्वा, चित्रा, आश्लेषा इनमें काटा हुआ नहीं जाता है ॥ ३९ ॥

* रसाल इति वा पाठ । अर्थ-आम ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(२९९)

मध्याह्ने सन्ध्ययोश्चैव ह्यर्द्धरात्रे निशात्यये ।

कालवेला वारवेला सर्पदष्टो न जीवति ॥ ४० ॥

मध्याह्न, दिन रातकी संधि, अर्धरात, निशाके अवसान होनेमें और कालवेला, वारवेला इसमें सर्पसे काटा हुआ नहीं जीता है ॥ ४० ॥

सर्पस्य तालुमध्ये तु यो दन्तोऽङ्कुशसन्निभः ।

विमुञ्चति विषं घोरं तेनायं कालसंज्ञकः ॥ ४१ ॥

चक्राकृतिश्चि वा दंशः पक्वजम्बूफलाकृतिः ॥ ४२ ॥

मुनीलः श्वेतरक्तो वा त्रिदशोऽपि न जीवति ।

स्रवेन्मूत्रपुरीषं वा हृच्छूलं छर्दिदाहकृत् ॥ ४३ ॥

सर्पके तालुमूलमें अङ्कुशके समान एक दांत है। उसीमेंसे यह कालसंज्ञक घोर विषको त्यागता है। जहां सर्प काटे उस स्थानमें चक्राकार होजाय या पकी जामुनसा होजाय। नीलवर्ण श्वेत अथवा लाल होनेसे देवताभी उसकी रक्षा नहीं करसकते। जिसका मूत्र निकलने लगे, हृदयमें शूल दाह हो, वहे नहीं जीता है ॥ ४१-४३ ॥

सानुनासिकया वाक्यं संधिभेदमथापि वा ।

ताम्राभं नेत्रयुगलमथवा काकनीलकम् ॥

वियोगो देवदष्टाख्यं तं विद्यात्कालपाशगम् ॥ ४४ ॥

जिसके गुणगुना शब्द सन्धिभेद होता है, जिसके दोनों नेत्र ताम्रवर्ण अथवा काकके समान नीलवर्ण होजाय, यह देवदष्टाख्य वियोग है। उससे जान लेना कि, यह कालपाशको प्राप्त है ॥ ४४ ॥

सेचनादुदकेनाङ्गे शीतलेन मुहुर्मुहुः ।

रोमाञ्चा न भवेद्यस्य तं विद्यात्कालपाशगम् ॥ ४५ ॥

जिसके शरीरमें शीतल जल छिडकनेसे रोमांच न हो उसको कालपाशमें प्राप्त जानो ॥ ४५ ॥

वेदना दंशमूले वा नष्टदंशोऽथवा भवेत् ।

तत्क्षणात्तीव्रदाहश्च सोऽपि कालेन भक्षितः ॥ ४६ ॥

जिसके दंशमें वेदना हो जिसके दंशमूल न देखा हो और जलन (महादाह-विसंज्ञा) हो उसे भी कालसे भक्षित जानो ॥ ४६ ॥

सोमं सूर्यं यदा दीप्तं न पश्यति च तारकम् ॥ ४७ ॥

दर्पणे सलिले वाथ घृततैलेन वा मुखम् ।

न पश्येद्वीक्ष्यमाणोऽपि कालदष्टो न संशयः ॥ ४८ ॥

जब चन्द्रमा सूर्य दीप्तिमान् तारोंको न देखे तथा घृत तेल जलमें मुखकी परछाई जिसको न दीखे उसे भी निःसन्देह कालका काटाहुआ जानो ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

ज्ञात्वा कालमकालं च पश्चाद्भूषजमाचरेत् ।

सर्पदंशे विषं नास्ति कालदष्टो न जीवति ॥ ४९ ॥

तस्य तत्रापि कर्तव्या चिकित्सा जीवनावधि ।

रसदिव्यौषधीनां तु प्रभावात्कालजिद्भवेत् ॥ ५० ॥

काल अकालको जानकर औषधी करनी चाहिये कारण कि, सर्पके काटेमें विष नहीं है, परन्तु जिसको काल काट ले वह नहीं जीता है। तोभी प्राणीके जीनेतक चिकित्सा करे तो रस मात्रा तथा औषधियोंके प्रभावसे काल भी जीता जा सकता है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

विषचिकित्सा

सूतकं गन्धकं तुल्यं टडकणं रजनीसमम् ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३०१)

देवदाल्या द्रवैर्मथ्यं दिनं निष्कं तु भक्षयेत् ॥ ५१ ॥

कालशैलाशनिर्नाम रसः सर्वविषापहः ।

नरमूत्रं पिबेच्चानु कालदष्टोपि जीवति ॥ ५२ ॥

शोधा पारा, गन्धक बराबर ले तथा हलदी और सुहागा बराबर ले इसे देवदालीके रसमें युक्त कर प्रतिदिन एक कर्ष भक्षण करे । यह कालशैलाशनि नामक रस सब विषोंका हरनेवाला है, इसको मनुष्यके मूत्रके साथ लेनेसे कालका काटाभी जीवता है ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

श्वेतापराजितामूलं देवदालीयमूलकम् ।

वारिणा पेयितं नस्यं कालदष्टोपि जीवति ॥ ५३ ॥

श्वेत विष्णुक्रान्ताकी जड़, देवदाली (बडी तोरई) की जड़ जल पीस नास देनेसे कालका काटाभी जी सकता है ॥ ५३ ॥

दधिमधुनवनीतं पिप्पलीशृङ्गवेरं

मरिचमपि च कुष्ठं चाष्टमं सैन्धवं स्यात् ॥

यदि दशति सरोषस्तक्षको वासुकिर्वा

यमसदनगतः स्यादानयेत्तत्क्षणेन ॥ ५४ ॥

दही, शहत, मक्खन, पीपल, अदरक, काली मिरच, कूठ इनसे आठवां भाग सेंधा मिलाया सेवन करनेसे साक्षात् तक्षक और वासुकीका काटाभी क्षणमें मृत्युसे लौट आता है ॥ ५४ ॥

कुटकी मुशलीमूलं पीत्वा तोर्यैर्विषापहम् ।

वृश्चिका वीरणामूलं लेपात्सर्वविषापहम् ॥ ५५ ॥

कुटकी और ताल मुशलीकी जड़ जलके साथ पीनेसे सब विष हर होजाते हैं ॥ ५५ ॥

वारिणा टडकणं पीतमथवार्कस्य मूलकम् ।

सैन्धवं वा नृमूत्रेण प्रत्येकं विषनाशनम् ॥ ५६ ॥

जलके साथ सुहागा पीनेसे अथवा आककी जड़ पीनेसे अथवा मनुष्यके मूसे सेंधा पीसकर पान करनेसे विष नाश होजाता है ॥ ५६ ॥

इन्द्रवारुणिमूलं तु शुक्ला चाथ पुनर्नवा ।

बन्ध्याकर्कोटकीमूलं मुशलीशिखिमूलकम् ।

तण्डुलोदक पानेन प्रत्येकं विषनाशनम् ॥ ५७ ॥

इन्द्रायणकी, जड़ श्वेत पुनर्नवा, बन्ध्या, कर्कोटकीकी मूली, ताल-मूली, अपामार्गकी जड़ इन प्रत्येकको चालवलके जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है ॥ ५७ ॥

गौक्षीरै रजनी कुष्ठं क्वाथपानं विषापहम् ॥ ५८ ॥

हलदी और कूठ इनका काढा कर गौके दूधमें मिलाकर पीनेसे विष दूर होता है ॥ ५८ ॥

भृङ्गराजस्य मूलं तु त्रिशूलिन्यास्तु मूलकम् ।

तोयैर्वा तण्डुलीमूलं प्रत्येकं विषजिद्भवेत् ॥ ५९ ॥

भांगरेकी जड़, त्रिशूलिनी* की जड़ अथवा चौलाईकी जड़ जलके साथ पीनेसे विषको हरती है, चावलके जलके साथ प्रत्येक वस्तु विषहर होती है ॥ ५९ ॥

सोमराजीबीजचूर्णं सकृद्गोमूत्रभावितम् ।

चराचरविषघ्नं तन्मृतसंजीवनं पिबेत् ॥ ६० ॥

सोमराजीके बीजोंका चूर्ण कर एक बार गोमूत्रमें भावित करके तो यह चर अचर विषका नाशक एवं साक्षात् मृतसंजीवन है ॥ ६० ॥

* शिवलिङ्गी-औषधी ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३०३)

कटुतुंब्युद्भवं मूलं सूक्ष्मं गोमूत्रपेषितम् ।

छायाशुष्कवटी मूत्रैः पानैर्लेपैर्विषापहा ॥ ६१ ॥

कडवी तूंबीकी जड एक बार गोमूत्रमें भावित कर इसकी वटी बनाय छायामें सुखाले, यह गोमूत्रके साथ पान करने वा लेपन करनेसे विष दूर करसकती है ॥ ६१ ॥

गोमूत्रैर्नरमूत्रैर्वा पुराणेन घृतेन वा ।

हरिद्रापानमात्रेण विषं हन्ति चराचरम् ॥ ६२ ॥

गोमूत्रसे वा नरमूत्रसे वा पुराने घृतमें हलदीको मिलाकर पान मात्रसे स्थावर जंगमका विष दूर होजाता है ॥ ६२ ॥

दशवर्षात्परं सर्पि पुराणमिति कथ्यते ।

तत्पानादञ्जनाद्वापि हरत्येव न संशयः ।

यदि सर्पविषातानां सर्वस्थानगतं विषम् ॥ ६३ ॥

दशवर्षके बाद घृत पुराना कहलाता है । यदि सर्पादिका विष सब शरीरमें प्राप्त हो गया हो तो भी उसको पीनेसे वा आंजनेसे विष दूर होता है यह निश्चय है ॥ ६३ ॥

गोक्षीरैरजनीक्वाथं पिबेत्सर्वविषापहम् ।

हरिद्राकुष्ठमध्वाज्यं भुक्तं सर्वविषापहम् ॥ ६४ ॥

गौके दूधसे हलदीका क्वाथ पीनेसे सब विषका हरनेवाला है ॥ हरिदी कूठ, शहत, घृत यह खानेसे सब विष दूर होते हैं ॥ ६४ ॥

मूलं तु श्वेतगुञ्जाया वक्त्रस्थं विषनाशनम् ।

पुष्योद्धृतं तस्य मूत्रं नस्येन विषनाशनम् ॥ ६५ ॥

श्वेतचौटलीकी जड मुखमें रखनेसे विष दूर होता है । पुष्यनक्षत्रमें बाड़ी हुई इजसीकी जडकी नास लेनेसे विषका नाश होता है ॥ ६५ ॥

पाठाद्रवेण तन्मूलं पाने स्यात्कालकूटजित् ।

अर्कमूलेन संलिप्य दंशं विषहरं महत् ॥ ६६ ॥

पाठाके साथ उसकी जड़ पान करनेसे कालकूटको जीतनेवाली है।
आककी जड़के साथ इसीका लेप करनेसे सर्पका विष दूर होता है ॥ ६६ ॥

रक्त चित्रेन्द्रगोपाभ्यां तथा विषविनाशकम् ।

सर्प हरितवर्णं च पुच्छाग्रे पाटयेच्छिरः ॥ ६७ ॥

लाल चीता, वीरबहूटी ये भी विषका नाश करनेवाली हैं। हरित
वर्ण सर्पकी पूँछ और शिर काटले इसे सुखाले ॥ ६७ ॥

शुक्लं कृष्णं पृथक्कार्यं नस्यं सर्वविषापहम् ।

शुक्लं शुक्ले दक्षिणांगे कृष्णं कृष्णे च वामके ।

मृतसञ्जीवनं ह्येतत्कालदष्टोपि जीवति ॥ ६८ ॥

शुक्ल, कृष्ण इनकी पृथक् नास लेनेसे सब प्रकारका सर्पविष दूर
होजाता है। शुक्लको शुक्ल दक्षिण अंगमें और कृष्णको कृष्ण वाम
अंगमें न्यास करे। यह मृतसञ्जीवन है इसके प्रयोगसे कालका
काटा हुआ भी जीता है ॥ ६८ ॥

तिक्तकोशातकीवार्थं मध्वाज्यसंयुतं पिबेत् ।

तत्क्षणाद्वमयेद्यस्तु विषयोगाद्विमुञ्चति ॥ ६९ ॥

कुडा क्षिमनीलताका काढा घृत शहतके साथ पीनेसे तत्काल वमन
होता है इससे विषके संयोगसे छूट जाता है ॥ ६९ ॥

कुटकी जम्बुमूलं वा तक्राम्लैर्वा पिबेज्जलम् ।

तत्क्षणाद्वमते शीघ्रं विषयोगाद्विमुच्यते ॥ ७० ॥

कुटकी और जामुनवृक्षकी मूल तक्र और अम्ल पदार्थोंके साथ

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३०५)

पीसकर जलसे पिये तो उसी समय वमन कर विषके संयोगसे
कृत जाता है ॥ ७० ॥

राजवृक्षत्वचं ग्राह्यं शुक्लं कृष्णं पृथक्पृथक् ।

शुक्लवृक्षे तु शुक्लान्तां चतुर्विंशतिभिः सह ॥ ७१ ॥

मरिचैः पाननिष्ठस्य कृष्णे कृष्णत्वचं तथा ।

पीत्वा तैर्निविषो दष्टः कथितं हरमेखले ॥ ७२ ॥

अमलतासवृक्षकी छाल ग्रहण करे जो शुक्ल और कृष्ण हों इनको
पृथक्पृथक् ग्रहण करे । धववृक्षमें शुक्ल छालको चौबीस पूर्ण दक्षिणी
मिरचोंके साथ पान करे और कृष्ण मिरचोंके साथ काली छालको
पीनेसे निविष हो जाता है तो हरमेखलामें कहा है ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

कुङ्कुमालक्तकं लोध्रं शिला चैवाथ रोचना ।

गुटिकालेपनाद्वन्ति विषं स्थावरजङ्गमम् ॥ ७३ ॥

कुङ्कुम, लाख, लोध, मनशिला, गोरोचन इनकी गुटिका बनाय लेप
करे तो स्थावर, जंगम सब प्रकारका विष दूर हो जाता है ॥ ७३ ॥

द्वे हरिद्रे शिला तालं कुङ्कुमं कुष्ठकं* जलैः ।

गुटिका लेपमात्रेण विषं हन्ति महाद्भुतम् ॥ ७४ ॥

दोनों हलदी, मैन्शिल, ताल, कुङ्कुम कूठ (बामोथा) इनको जलसे
टिका बनाय लेप करनेसे स्थावर जंगम विष दूर होता है ॥ ७४ ॥

पूतीकरञ्जबीजस्य मज्जानं कारवेल्लजम् ।

पिष्ट्वा पिबेत्सर्पिष्कं विषं हन्ति न संशयः ॥ ७५ ॥

पूतीकरंजके बीजकी मींग, करेली इनको पीसकर घीके साथ पान
करे तो सर्व विष अवश्य दूर होते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥ ७५ ॥

* मुस्तकं इति वा पाठः । अर्थ-मोथा ।

पिप्पलीं मरिचं कुष्ठं गृहधूमं मनःशिलाम् ।

तालकं सर्षपाः श्वेतां गवांः^१ पित्तेन लोडयेत् ॥ ७६ ॥

गुटिकाञ्जननस्येन पानाभ्याञ्जनलेपनात् ।

तक्षकेणापि दष्टस्य निर्विषीकुरुते क्षणात् ॥ ७७ ॥

पोपल, कालीमिर्च, कूठ, घरका धूप, मनशिल, हरताल, सफेद सरसों इनको गोपित्तके (वा गोके) दूधके साथ मिलाय इसकी गुटिका बनाय अंजन और नास तथा पान वा लेप करे तो तक्षकका काटा हुआ भी क्षणमात्रमें निर्विष होजाता है ॥ ७६ ॥ ७७ ॥

पथ्या+ क्षौद्रं मरिचं च पत्रं हिङ्गु शिला वचा ।

जलेन गुटिकां नस्येत्कालदष्टोऽपि जीवति ॥ ७८ ॥

हरड, शहत, कालीमिर्च, तेजपात, हिङ्गु, मनशिल, वच इनको जलसे पीस गुटिका कर नास लेनेसे कालका कांटाहुआ भी जीवित हो जाता है ॥ ७८ ॥

अश्वगन्धा मेघनादो गोमूत्रं महिषाक्षकम् ।

गृहधूमेन वा लेपः शिरःकण्ठविषं हरेत् ॥ ७९ ॥

असगंध, चौलाईकी जड, गोमूत्र, भैंसका मूत्र, गृहधूम इनका लेप शिर और कंठ तक प्राप्त हुए विषको दूर करता है ॥ ७९ ॥

पञ्चाङ्गमश्वगन्धायाश्छागीमूत्रेण पेषयेत् ।

लेपे पाने न सन्देहो नानाविषविनाशनम् ॥ ८० ॥

असगंधका पंचांग छागके मूत्रसे पीसकर इसका लेप और पान करनेसे नाना प्रकारके विष नाश होजाते हैं ॥ ८० ॥

शिला हिङ्गु वचा व्योषमभयात्वक्च पत्रकम् ।

नस्ये वासुकिदष्टस्य निर्विषं शीतवारिणा ॥ ८१ ॥

* गवां क्षीरेण लोडयेदिति पाठान्तरम् । + पत्रं पलमिति वा पाठः ।

उपदेशः १४ः

हिन्दीटीकासहित

(३०७)

मन्तशिल, हिंगु, वच, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरडकी बकली, तज,
पात इनकी ठंडे जलके सहित नास लेनेसे वासुकीका काटा हुआ
निर्विष होजाता है ॥ ८१ ॥

पुत्रजीवफलान्मज्जां गवां क्षीरेण पेषयेत् ।
लेपनाञ्जननस्येन कालदण्डोऽपि जीवति ॥ ८२ ॥
जियापोतेके फलकी मींग, गौके दूधसे पीसे उसके लेप अंजन और
नसे कालका काटा हुआ भी जी जाता है ॥ ८२ ॥

कृष्णधत्तूरमूलस्य चूर्णं ग्राह्यं पलोन्मितम् ।
करञ्जतैलकर्षेण वटीं कृत्वा तु धारयेत् ।
जम्बीरस्य रसैः पीत्वा रौद्रीविषनिवारणम् ॥ ८३ ॥
काले धतूरेकी जडका एक पल चूर्ण लेकर एकरंजक कर्ष के
से वटी बनाय रखे उसे जम्बीरीके रससे पिये तो कठिन विष
होजाता है ॥ ८३ ॥

लज्जालुमूलं नील्यां वा मूलं स्वच्छेन वारिणा ।
पीत्वा रौद्रीविषं हन्ति लेपाद्गुञ्जाबलां नतः ॥ ८४ ॥
गृहधूमं हरिद्रे द्वे समूलं तन्दुलीयकम् ।

अपि वासुकिना दण्डाः पिबेद्दधिघृतान्वितम् ॥ ८५ ॥
गुञ्जावन्तीकी जड अथवा नीलीकी जड स्वच्छजलसे पीस पीने से
विष नाश होजाता है और चौंटली, खरेंटी, घरका धुआं, दोनों
को, चौलाईकी जड इनको दधि और घीके साथ पीनेसे वासुकीका
हुआभी निर्विष होजाता है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

तन्दुलीयकमूलं तु पीतं तन्दुलवारिणा ।
क्षकेणापि दण्डस्य निर्विषं कुरुते ध्रुवम् ॥ ८६ ॥

चौलाईकी जड चावलके जलके साथ पीनेसे तक्षकका काटा हुआभी क्षणमें निर्विष होजाता है ॥ ८६ ॥

कुलिकामूलनस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ।

“ ॐ आदित्यचक्षुषा दृष्टोऽहं हर विषं स्वाहा ॥ ”

अनेन मन्त्रेणोक्तयोगानभिमन्त्रयेत् ॥ ८७ ॥

कोकिलावृक्ष के जडकी नास लेनेसे कालका काटाभी जीवता है । ‘ ॐ आदित्यचक्षुषा दृष्टः दृष्टोऽहं हर विषं स्वाहा ’ इस मंत्र पछले कहे योगोंको अभिमन्त्रित करे ॥ ८७ ॥

अपराजितामूलं तु घृतेन त्वग्गतं विषम् ।

पयसा रक्तगं हन्ति मांसगं कुष्ठचूर्णतः ॥ ८८ ॥

अस्थिगं रजनीयुक्तं मेदोगं * लाङ्गलीयुतम् ।

मज्जगं पिप्पलीयुक्तं चण्डालीमूलसंयुतम् ।

शुक्रगं हन्ति लौहित्यं तस्मादेयापराजिता ॥ ८९ ॥

अपराजिताकी जड-घृतसे युक्त पान करनेसे त्वचामें प्राप्त हुआ विष जाता रहता है, दूधके साथ पान करनेसे रक्तमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है, कुष्ठके चूर्णके साथ पीनेसे मांसमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है, हलदीसे युक्त कर पीनेसे हड्डीमें प्राप्त हुआ विष और ककिलारी (काकिली) की जडसे मेदमें प्राप्त हुआ, पिप्पलीसे मज्जा में प्राप्त हुआ और पचगुगरियाकी जडके साथ वीर्यमें प्राप्त हुआ विष दूर होता है इस कारण अपराजिता देनी चाहिये ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

इति भावो भवेद्यस्य आत्मरूपमिदं जगत् ।

तत्सर्वैर्विषकीटाद्यैर्भक्ष्यमाणो न बाध्यते ॥ ९० ॥

* काकलीयुतम् इति वा पाठः ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३०९)

जो पुरुष ऐसा समझता है कि, यह जगत् आत्मस्वरूप है उस
पुरुषको किसी कीटादिका विष व्याप्त नहीं होता है ॥ ९० ॥

सद्यः सर्पेण दष्टस्य वामनासिकया कृतः ।

लेपः कर्णमलेनापि नृमूत्रैः सेचनेन वा ॥ ९१ ॥

स्तम्भते गरलं तेन नोद्ध्वं धावति धातुषु ।

वराहकर्णिकामूलं हस्ते बद्धं विषापहम् ॥ ९२ ॥

जिस समय सर्प काटे उसी समय हाथकी अनामिका अंगुलीसे
नासिकाके मलको दंशपर लेपन करनेसे अथवा नरमूत्रसे सेचन
करनेसे विष स्तम्भित होजाता है, धातुओंमें फैलता नहीं । असगंधकी
हाथ में बांधनेसे विषकी हरनेवाली है ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

* शिरीषपुष्पस्वरसैः सप्ताहं मरिचं सितम् ।

भावितं सर्पदष्टानां पाने नस्येऽञ्जने हितम् ॥ ९३ ॥

शिरसके फूलके स्वरसमें सात दिन कालीमिरचको रख मिश्रीके
लेप करनेसे या पान करनेसे आंजनेसे नस्यसे हितकारक है,
विष उतरता है ॥ ९३ ॥

स्वच्छन्दभैरवी विद्या कथ्यते विषनाशिनी ।

"ॐ नमो भगवती स्वच्छन्दभैरवी महाभैरवी काल-

कूटविषं स्फोटय २ विस्फारय २ खादय २ अव-

तारय २ नास्ति विषहालाहलविषकृत्रिमं विषं

संयोगविषं ह्यत्युग्रविषं स्थावरं विषं जङ्गमं विषं

कालचंचुयायराइष्टमन्त्रस्तडदघायिण इथयइथय

ॐ कालाय महाकालय कालमर्ददेवी अमृत-

* जयन्तो । इति पाठान्तरम् ।

गर्भदेवी ॐ ॐ फट्फट् स्वाहा " अनेन मन्त्रेण
मन्त्रयेत् ॥ सप्तधा नवधा जलमभिमन्त्र्य तेनाभि-
षिच्य तज्जलं पाययेच्च निर्विषंस्यादियं स्वच्छ-
न्दभैरवी विद्या ॥ " ॐ हूं हूं संस्वः हंसः ॥ वा ॐ
क्रूंक्रूं संस्वः हंसः । " अनेन मन्त्रेणाभिमन्त्रितपानी-
यपाननापि माज्जनेन वा निर्विषः स्यात् ॥

स्वच्छन्दभैरवीविद्याको भी विषनाशनी कहा है ' ॐ नमो भगवते
स्वच्छन्दभैरवी कालकूठविषं स्फोटय स्फोटय विस्फारय विस्फारय
खादय २ अवतारय २ नास्ति विष हालाहल विष कृत्रिमं विषं संयोग
गजविषं ह्यत्युग्रविषं स्थावरं विषं जंगमं विषं काल चंचुयायरा इष्ट
त्रस्तडदघायण इथय इथय ॐ कालाय महाकालाय कालमदे
अमृतगर्भदेवी ॐ ॐ फट् फट् स्वाहा ' इस मंत्रसे झाडदे । सात बार
या नौवार जल अभिमन्त्रित कर दे तो निर्विष हो जायगा ।
स्वच्छन्दभैरवी विद्या है । ' ॐ हूं हूं संस्वः हंसः ' इस मंत्रसे अभि-
त्रत जलके पानसे मार्जनसे मनुष्य विषरहित होजाता है ॥

देवदारु चित्रकं च करवीरार्कलाङ्गली ।

मूलानि वारिणा पिष्ट्वा कालदष्टहरं पिबेत् ॥ ९४ ॥

देवदारु, चीता, कनेर, आक, कलिहारी इनकी जड़ जलसे पीसकर
पीनेसे कालदष्टभी जीवित होता है ॥ ९४ ॥

मन्त्रौषधिप्रयोगेण यदि दष्टो न जीवति ।

छेदयत्तीक्ष्णशस्त्रेण दंशस्थानं भिषग्वरः ॥

स्थावरं तु विषं दद्याद्दष्टो दष्टेन हन्यते ॥ ९५ ॥

जो काटाहुआ मन्त्र औषधीके प्रयोगसे न जिये तो काटे

मानको तीक्ष्ण शस्त्रसे छेदन करदे, उसको स्थावर विष दे, क्योंकि
काटेसे काटा हुआ हनन होता है वा विषको विष मारता है ॥ ९५ ॥

यस्तु संरोषितः सर्पो धूमं वक्राद्विमुञ्चति ।

तुण्डाग्रे पिशितं भुक्त्वा बहुशस्तेन दंशितः ॥ ९६ ॥

अशक्यमगदैरन्यैर्विषेणैव चिकित्सयेत् ॥ ९७ ॥

जो क्रोधित सर्प मुखसे धूम निकालता हो उसके मुखके आगे मांस
खकर उसको बहुतवार कटवादे । तो और औषधियोंसे अशक्य हो
यह देकर विशेष चिकित्सा करनी ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥

क्षीरक्षौद्रघृतैर्युक्तं द्विगुञ्जं पाययेद्विषम् ।

विषेण लेपयेद्दंशं कालदष्टोऽपि जीवति ॥ ९८ ॥

दूध शहत घीसे युक्त दो चौटली भर विष दे और काटे हुए पर
वायका लेप करे तो कालका काटा हुआ भी जीता है ॥ ९८ ॥

मृतसञ्जीवनं ख्यातं निर्गुण्डी तगरं विषम् ।

पिण्डीतगरमूलं च पुष्येणोत्पाटय योजितम् ।

दंशे देशं मृतस्यापि दष्टो जीवति तत्क्षणात् ॥ ९९ ॥

यह मृतसंजीवननामसे विख्यात है—निर्गुण्डी तगर विष गंधक और
४ राका मूल पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर उसमें मिलावे । जहां सर्पने
सका हो वहां यह वस्तु लगानेसे गुण होगा ॥ ९९ ॥

सर्पदष्टो यदा वीरस्तं सर्प दशते स्वयम् ।

मुक्तोऽसौ म्रियते सर्पः स्वयं निर्विषतां व्रजेत् ॥ १०० ॥

जब सर्प काटता है तब धीर पुरुष उस सर्पको स्वयं काटले । तब यह
१ से छूटता है, सर्प मर जाता है और यह निर्विष होजाता है ॥ १०० ॥

यद्वा तद्वा फलं दन्तैस्सर्पभावेन भक्षयेत् ॥ १०१ ॥

दन्तैर्वा दंशयेद्भूमिं दण्डवत्पतितो नरः ।

सर्पभावे न सन्देहो न तस्य क्रमते विषम् ॥ १०२ ॥

सर्पकी भावनासे किसी फलको चबाले, दंडके समान गिरकर दांतोंसे पृथ्वीको काटे और सर्पकी भावना करे । इसमें सन्देह नहीं, उसको विष नहीं चढेगा ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

अत्यन्तविषयोगार्त्तं जलमध्ये विनिक्षिपेत् ॥ १०३ ॥

जो अत्यन्त विषसे व्याकुल हो उसे जलमें डालदे तो निविड हो ॥ १०३ ॥

मूलं तन्दुलवारिणा पिबति यः प्रत्यङ्गिरासम्भवं
निष्पष्टं शुचिं भद्रयोगदिवसे तस्याहिभीतिः कुतः ।

दर्पादेव फणी यदा दशति तं मोहान्वितं मानवं
स्थाने तत्र स एव याति नियतं चक्री यमस्याचिरात् ॥ १०४ ॥

जो श्वेतपुनर्नवाको चावलके पानीके साथ भद्रा मुहूर्त योगमें पीता है उसको सर्पके काटनेका भय नहीं होता । जो मोहसे सर्प मनुष्यको दंशित करता है तो वह शीघ्रही उसके बदले आपही यमराजके लोकको जाता है ॥ १०४ ॥

आषाढशुक्लपञ्चम्यां कट्यां शिरीषमूलकम् ।

तन्दुलोदकं पानेन सर्पदंशो न जायते ।

भ्रमाद्वा दशते सर्पस्तदा सर्पो विनश्यति ॥ १०५ ॥

आषाढशुक्ल पंचमीके दिन जो अपनी कमरमें शिरसकी जड़ बांधता है और तन्दुलका जल पान करता है उसको सर्पदंश नहीं होता है और जो कदाचित् भ्रमसे सांप काट खाय तो वह सर्पही नष्ट होजाता है ॥ १०५ ॥

पुष्ये श्वेतार्कमूलं तु श्वेतवर्षाम्बुमूलकम् ॥ १०६ ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३१३)

संगृह्य पेयं तदृक्षे स्नात्वा तन्दुलवारिणा ।

सर्पभीतिविनाशार्थं प्रतिसंवत्सरं नरैः ॥ १०७ ॥

पुष्पनक्षत्रमें श्वेत आककी जड और श्वेत पुनर्नवाकी जड लाकर
खान कर तन्दुलके जलके साथ प्रतिवर्ष पिये तौ उसको कभी सर्पसे
भय नहीं होता है ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

मसूरनिम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगते रवौ ।

अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषार्तस्य न संशयः ।

अतिरोषान्वितस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति ॥ १०८ ॥

मेषके सूर्यमें एक मसूरको दो निम्बके पत्तोंके साथ भक्षण करे
तो एक वर्ष तक उसकी सर्पसे भीति नहीं होती है । तक्षक भी
बोधकर उसका क्या कर सकता है ? ॥ १०८ ॥

कृकलासस्य दन्तांश्च श्वेतसूत्रेण वेष्टयेत् ;

बाहौ बद्ध्वा विषं हन्ति विषं भुक्त्वा न बाध्यते ।

सर्पवृश्चिकमूषाणां मुखस्तम्भः प्रजायते ॥ १०९ ॥

“ॐ शबरी कीर्तय सञ्जाव सञ्जाव स्वाहा”

सहस्रजपात्सिद्धिः । अनेन मन्त्रेण हस्ते बन्धयेत् ॥ ११० ॥

गिरगटके दांतको श्वेतसूत्रसे लपेटकर भुजामें बांधनेसे विष दूर हो
जाता है, विष खानेपर भी बाधा नहीं होती तथा सांप बिच्छू और
जहोंका मुख स्तंभित हो जाता है । मन्त्र यह है—‘ॐ शबरी कीर्तय
सञ्जाव सञ्जाव स्वाहा’ सहस्र जपसे सिद्धि होती है । इस मन्त्रसे
नखोंमें बांधे ॥ १०९ ॥ ११० ॥

पातालगारुडीमूलं लम्बमानं गृहे स्थितम् ।

दृष्ट्वा गच्छन्ति ते दूरं सर्पाद्या विषकीटकाः ॥ १११ ॥

छिरहिटाकी जड घरमें लाकर रख देनेसे सर्पादि विषके कीड़े उसे देखकर दूर पलायन करते हैं ॥ १११ ॥

“ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा ॥ वा अशेषसर्पकुलाय स्वाहा” अनेन सप्ताभिमन्त्रितां मृत्तिकां गृहमध्ये क्षिपेत्, तदा सर्पाः पलायन्ते ॥

‘ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा’ इस मन्त्रसे सात बार अभिमन्त्रित का मिट्टी घरमें डाल देनेसे सर्पादिक दूरसे पलायन कर जाते हैं ॥

इति सर्पविषनिवारणम् ।

अथ वृश्चिकविषनिवारणम्

शिरीषबीजं गोमेदं दाडिमस्य तु मूलकम् ।

अर्कक्षीरयुतं हन्ति धूपो वृश्चिकजं विषम् ॥ ११२ ॥

शिरसके बीज, गोमेद, दाडिमीकी, जड आकका दूध इनकी धूप बिच्छूके विषको दूर करती है ॥ ११२ ॥

मयूरपारावतकुक्कुटानां ग्राह्यं पुरीषं सह भानु-

मूलैः ॥ धूपौ निहन्त्याशु विषं समस्तं चतुर्विधं वृश्चिक वृश्चिकसर्पजातम् ॥ ११३ ॥

मोर, कबूतर, मुरगा इनकी बीट और आककी जड लेकर धूप देनेसे वा लेपसे चार प्रकारके बिच्छू सर्पादिके विषको दूर करती है ॥

रजनीचूर्णधूपेन विषं वृश्चिकजं हरेत् ।

वस्त्रेणाच्छाद्य गात्राणि धूपधूपं च पाययेत् ।

दंशं च धूपयेच्छीघ्रं सर्वधूपेष्वयं विधिः ॥ ११४ ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३१५)

हलदीका चूर्ण कर उसकी धूप देनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है। वस्त्रसे शरीरको ढककर धूपका धुंआ प्यावे, शीघ्रतासे दंशपर धूप देनी चाहिये। सब धूपोंकी यही विधि है ॥ ११४ ॥

तोयैर्वा नागरं नस्यं पिबेद्वा सैन्धवं घृतम् ।

अर्कधत्तूरमूलं वा जलपाने विषापहम् ॥ ११५ ॥

जलके साथ सोंटकी नास दे वा सैन्धा और घृतको पान करे अथवा आक धतूरेकी जड़को जलके साथ पान करनेसे विष दूर होता है ॥ ११५ ॥

पुत्रजीवफलान्मज्जां पलाशोत्थां* करञ्जाम् ।

मज्जां तोयः प्रलेपोऽयं हन्ति वृश्चिकजं विषम् ॥ ११६ ॥

जियापोतेके फलोंकी मींग तथा ढाककी और करंजकी मींगको तलमें पीस लेप करने से बिच्छूका विष उतरता है ॥ ११६ ॥

हिङ्गु वा जललेपेन वृश्चिकोत्थं विषं हरेत् ।

तिलमात्रं विष खादेत्लेपाद्वा नाशयेद्विषम् ॥ ११७ ॥

होंगको जलसे घिस कर लेप करे तो बिच्छूका विष दूर हो जाता अथवा तिलमात्र विष खाने वा लेपकरनेसे विष उतरता है ॥ ११७ ॥

घृतार्कदुग्धलेपेन यष्ट्या+ वा धूपितेन वा ।

बीजपूरकमूलस्य लेपाद्वापि हरीतकी ॥ ११८ ॥

सिक्थकं सप्तधा भाव्यं स्नुह्यर्कपयसाऽऽतपे ।

तत्तप्तं वह्निना स्पृष्टं दंशस्थाने विषं हरेत् ॥ ११९ ॥

घी और आकके दूधके लेपसे वा मुलैठीकी धूप देनेसे अथवा गौरेकी जड़ हरडेके साथ पीस लेप करनेसे वा मोमको थूहर और

* त्यांकुरं जलमिति वा पाठः । + "पथ्याभिर्धूपितेन वा" इस पाठमें धूपित अर्थ जानना ।

आकके दूधकी सात भावना देकर गरम कर काटे स्थानपर लगानेसे
वृश्चिकका विष उतर जायगा ॥ ११८ ॥ ११९ ॥

लेपो जातीगुडाभ्यां वा हरिद्रालेपनेन वा ।

वृश्चिकस्य विषं हन्ति प्रत्येकं नैव संशयः ॥ १२० ॥

जाती गुड वा हलदीके लेपसे बिच्छूका विष दूर हो जाता है, इससे
सन्देह नहीं ॥ १२० ॥

मातुलुङ्गस्य मूलं तु रविवारे समुद्धरेत् ।

उत्तराभिमुखेनैव हूँ (क्रूं) मन्त्रोच्चारणात्पृश्नेत् १२१

मातुलुङ्गकी जड़ रविवारके दिन लावे और उत्तरको मुख कर
'हूँ वा क्रूं' मन्त्रको उच्चारण कर उसे स्पर्श करे ॥ १२१ ॥

वाभाङ्गे दक्षिणे दष्टे वामे दष्टे च दक्षिणे ।

मार्जनेन विषं हन्यात्सदंशं दृष्टप्रत्ययम् ।

सप्तधा मार्जनेनैव विषं वृश्चिकजं हरेत् ॥ १२२ ॥

जो दहिने अंगमें काटा हो तो वाममें और वाममें काटा हो तो
दक्षिणमें उससे मार्जन करनेसे विष उतर जायगा । यह देखा हुआ
है । सात बार मार्जन करनेसे बिच्छूका विष नष्ट होजाता है ॥ १२२ ॥

असगन्धीयमूलं तु मूलं श्वेतपुनर्नवा ।

रविवारे समुद्धृत्य द्वाभ्यां वृश्चिकदंशनम् ॥ १२३ ॥

मार्जनेन विषं हन्त्यात्स्वदृशा ह्यनुभावितम् ।

कर्पासमूलं चवित्वा विषजित्कर्णफूत्कृते ॥ १२४ ॥

असगन्धकी जड़, श्वेत पुनर्नवाकी जड़ रविवारके दिन उखाड़कर
इन दोनोंको बिच्छूने जहां काटा हो जहां मार्जन करे तो अवश्य विष
उतर जाता है, यह अनुभव देखा है । कपासकी जड़ जबाकर कानमें
फूंक मारनेसे विष उतर जाता है ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३१७)

ग्राह्यं हंसपदीमूलं प्रातरादित्यवासरे ।

मुखस्थं फूत्कृतं कर्णं विषं वृश्चिकजं हरेत् ॥ १२५ ॥

हंसपदीकी जडको रविवारके दिन प्रातःकालमें लावे । उसे मुखमें
कानमें फूंक मारनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है ॥ १२५ ॥

“ॐ क्षः फट्स्वाहा ॥” अनेनापोमार्जयेन्निविषो भवति

‘ॐ क्षः फट्स्वाहा’ इस मन्त्रसे मार्जन करनेसे निविष होता है ।
और भी तीन मन्त्र लिखे हैं । तीसरेसे करनेरकाष्ठसे जल मार्जन
करे निविष होगा ॥

बकुलत्वचबीजं वा निष्पीड्य दंशनस्थले ।

प्रलेपाद्वृश्चिकविषहरणं चाभिमन्त्रितात् ॥ १२६ ॥

“ॐ झं हुं कंडं वं वं लं क्षं एं ऐं ओं औं हं हः ”

इति मन्त्रेण अभिमन्त्र्यप्रलेपयेत् ।’ हां हीं मं चं

ॐ इति मन्त्रेण ओलवृन्तमभिमन्त्र्य तेन मार्जनात्

वृश्चिकविषनाशो भवति । अयं शिवेन भाषितो

योगो नावहेलनीयः ॥

मौलसिरीकी छाल और बीज ससलकर पहिले मंत्रसे दंशपर लेप

रनेसे बिच्छूका विष उतरता है, दूसरे मन्त्रसे जिमीकन्द और

१ ‘आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च । गरुडपक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ
विष ॥ ओं ठः ठः ठः जः जः जः । ओं श्रीपक्षयोगिपादाज्ञा’ इति मन्त्रः ।

मन्त्रः । दूसरा मंत्र ‘मंत्र -हिमवत्युत्तरे पार्श्वे कपिलोनाम वृश्चिकः ।

हं प्रेषितो दूतो गच्छ गच्छ महाविष ॥ क्लीं क्लीं स्वाहा । डाकिनी

फट् इति ॥ इक्कीस बार दंशको छूकर छूकर कानमें जपे । अथवा

सा माखा साही खौही’ अनेन गरुडमन्त्रेण वृश्चिकदष्टे करवीरकाष्ठेनापो

येन्निविषो भवति ॥

(३१८)

कामरत्न

चतुर्दश-

बैंगनको अभिमंत्रित कर मार्जन करे तो विष उतर जायगा । यह शिवका कहा अवज्ञाके योग्य नहीं है । म्याँडीके पत्तोंकी नास देनेसे मोह नाश होय । ज्वर कंप होय तो घृत मर्दनसे छूटे । चंदन कर्पूर पानसे वायु छूटे ॥ १२६ ॥ इतिवृश्चिकविषनिवारण ।

शतपदी (कानखजूरेका) विषनिवारणम्

दीपकोत्सृष्टतैलं तु दंशस्थाने प्रलेपयेत् ।

धूपदत्त्वा गुग्गुलेन अर्कपत्रं च वेष्टयेत् ॥ १२७ ॥

दियेके तेलको दंशपर लगावे अथवा गुगलकी धूप दे । पीछे आकके पत्ते लपेट बांधे विष छूटे ॥ १२७ ॥

अथ मूषकनिवारणम्

शिलातालककुष्ठं च भाव्यं निर्गुण्डिकाद्रवैः ।

पानं मूषिक दष्टानां दत्तं तीव्रं विषं हरेत् ॥ १२८ ॥

मैनशिल, हरताल, कूठ इनको निर्गुण्डीके रसमें भावित करके पान करनेसे मूसेका विष उतर जाता है ॥ १२८ ॥

गृहगोधां समादाय पिष्ट्वा तन्दुलवारिणा ।

लेपादाखुविषं हन्ति पिबेद्वा क्षीरपाचिताम् ॥ १२९ ॥

गृह गोधा लाकर चावलके जलसे पीस लेप करनेसे चूहेका विष शान्त हो जाता है अथवा क्षीर को पाचित कर पीनेसे चूहेका विष शान्त हो जाता है ॥ १२९ ॥

सर्षपं कुङ्कुमं तक्रं समभागं घृतं पिबेत् ।

विषं मूषिकदष्टानां शममाप्नोति तत्क्षणात् ॥ १३० ॥

सरसों, कुंकुम, मट्ठा ये समान भाग लेकर घृतके साथ पान करने तो उसी समय चूहेका विष उतर जाता है ॥ १३० ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३१९)

त्रिञ्चाफलसमायुक्तं गृहधूमं पलाढ्यकम् ।

पुराणाज्येन सप्ताहं लिहेदाखुविषं हरेत् ॥ १३१ ॥

त्रिञ्चाफलके साथ आधे पल घरके धूमको पीस सात दिन पुराने धूतके साथ चाटे तो चहेका विष उतर जाता है ॥ १३१ ॥

अथ श्वानविषनिवारणम्

शिरीषस्य च बीजं वै स्नुहीक्षीरेण घर्षितम् ।

तल्लेपेन वराहोहे नश्येत्कुक्कुरजं विषम् ॥ १३२ ॥

हे वरारोहे पार्वती ? शिरसके बीजको थूहरके दूधमें पीसकर लेप करनेसे कुत्तेका विष दूर हो जाता है ॥ १३२ ॥

गुडं तैलार्कदुग्धं च लेपाच्छ्वानविषं हरेत् ।

पिष्ट्वापामार्गमूलं च कर्षकं मधुना लिहेत् ।

श्वानदष्टविषं हन्ति लेपात्कुक्कुटविष्ठया ॥ १३३ ॥

गुड तेल और आकका दूध इनको लेप करनेसे श्वानविष उतर जाता है अथवा चिरचिटेकी जड़ पीस एक कर्ष शहतके साथ चाटे कुक्कुटकी विष्ठाका लेप करे तो कुत्तेका विष उतर जाता है १३३ ॥

उन्मत्तश्वानदंष्ट्राणां कुमारीदलसैन्धवम् ।

मुखोष्णं बन्धयेत्पिण्डं त्रिदिनान्ते सुखावहम् ॥ १३४ ॥

उन्मत्त कुत्तेके विषपर घीकुंआरका पत्ता सेंधा कुछ गरम कर तीन दिन बांधनेसे विष उत्तर जाता है ॥ १३४ ॥

“ॐ हड वड कुत्ता खडवड दांत कुत्तेकी बांधो

सतौडाढ आवै नलाहू पाकै न घाव कुत्तेका

विष उतरजाव वीरहनुमन्तकी दुहाई रामलछ-

मनकी दुहाई फुरोमन्त्रईश्वरोवाच ॥”

(३२०)

कामरत्न

चतुर्दश-

‘ॐ हड’ इस मंत्रसे सात बार गुड अभिमंत्रित कर कुत्तेके काटे हुएको खानेको दे तो निर्विष हो जाता है ॥ इति श्वानविषनिवारणम् ॥

अथ मत्स्यमेकादिविषनिवारणम्

* शिरीषफलत्वक्क्षीरं पिबेद्भूकविषापहम् ।

त्र्यूषमाज्यं मेघनादो भेकमत्स्यविषा पहम् ॥ १३५ ॥

शिरसकी फली और मूल जलके साथ पीनेसे मेंडकका विष दूर होता है । सोंठ, मिरच, पीपल, घृत, चौलाई इनको पीवे तो मेंडक व मत्स्यका विष दूर होता है ॥ १३५ ॥

शृङ्गीमत्स्यविषं स्वेदाघृतचिककां सपिण्डिताम् ॥ १३६ ॥

काकडासिंगोको घृतसे घोटकर पीवे तो शृङ्गी मछलीका विष दूर होता है ॥ १३६ ॥

गृहगोधाविषं + हन्यात्काश्मीरीफलनस्यतः ।

पिबेन्मधुसितायुक्तं गृहगोधाविषं हरेत् ॥ १३७ ॥

गम्भारीके फलकी नास देनेसे घरकी गोयका विष शान्त होजाता है अथवा इसीकोही शहत और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे घरकी गोयका विष दूर करता है ॥ १३७ ॥

अथ व्याघ्रविषनिवारणम्

वृकव्याघ्रशृगालाख्यभल्लूकद्विपवाजिनाम् ।

रुधिरं स्नावयेद्दंशाद्हेल्लोहशलाकया ॥ १३८ ॥

भेडिया, व्याघ्र, चीता, गीदड, रीछ, गेंडा इनके काटनेपर वहाँका रुधिर निकाले वा उस काटे स्थानपर लोहशलाकासे जलावे ॥ १३८ ॥

* मिडीफलस्नुहीक्षीरं इति वा पाठः ।

+ दक्षिणात्य कश्मीरिनाम हरकिडीरको कहते हैं ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३२१)

लेपात्सर्पविषं हन्ति मूलं श्वेतपुनर्नवा ।

किमत्र बहुनोक्तेन तत्क्षणाद्विषनाशनम् ॥ १३९ ॥

श्वेतपुनर्नवाकी जड़का लेप करनेसे सर्पका विष दूर होता है ।
कहुत कहनेसे क्या है, उसी समय विष नाश होता है ॥ १३९ ॥

विडङ्गस्य च पानेन व्याघ्रव्यालविषं हरेत् ।

धतूरपत्रतोयेन चूर्णं त्रिकटुसम्भवम् ॥ १४० ॥

उदरस्थं विषं हन्ति व्याघ्रव्यालसमुद्भूतम् ।

करञ्जतैललेपेन ज्वालां व्याघ्रनखाद्भूवाम् ॥ १४१ ॥

वायविडंगके पानसे व्याघ्र और व्यालका विष दूर होजाता है ।

धतूरेके पत्तोंका अर्क और त्रिकुटा इनकोपानकरनेसे व्याघ्रविष,

व्यालविष पेट में प्राप्त होगया हो तो भी दूर होता है । करंजके तैलको

लेप करनेसे व्याघ्रके नखोंकी ज्वाला शांत हो जाती है ॥ १४० ॥ १४१ ॥

गोजिह्वामूलिकां पिष्ट्वा जलेन मधुना सह ।

लेपो हि सर्वजन्तूनां नखतुण्डविषं हरेत् ॥ १४२ ॥

गोजिह्वालताकी मूलिका शहत और जलके साथ पीस लेप करनेसे

जन्तुओंके नख और तुंडका विष दूर होजाता है ॥ १४२ ॥

तथा निम्बवचा चैव शमी वृक्षत्वचं तथा ।

उष्णोदकेन लेपः स्यान्नखतुण्डविषापहः ॥ १४३ ॥

तथा दारुहरिद्राया लेपो दन्तविषापहः ॥ १४४ ॥

गोजिह्वा, गवेधुका, नीम, वच, शमीकी छाल इनका लेप गरम

पानीसे करे तो सब जीवोंके नख और मुख लगनेका विष दूर होजाता

। इसी प्रकार देवदारु हलदीका लेप करनेसे दांतोंका विष दूर

जाता है ॥ १४३ ॥ १४४ ॥

अथ कीटविषनिवारणम्

आज्येन तन्दुलीमूलं तुलसीमूलिकापि वा ।

तन्दुलोदकपानेन कीटकोत्थं विषं हरेत् ॥ १४५ ॥

घृतके साथ चौलाईकी जड और तुलसीकी जड चावलके जलके साथ पान करनेसे कीटविष नष्ट होजाता है ॥ १४५ ॥

लाङ्गल्याः कटुतुम्ब्या वा देवदारु निशापि वा ।

मूलं बीजं काञ्जिकेन लेपः कीटविषापहः ॥ १४६ ॥

कलिहारी, कडवी तूम्बी, देवदारु, हलदी इनकी मूल बीजकांजीके साथ लेप करनेसे कीटविष दूर होजाता है ॥ १४६ ॥

तिलं च सर्षपं कुष्ठं बीजं करञ्जसम्भवम् ।

उद्वर्तनात्प्रलेपाद्वा सर्वकीटविकारजित् ॥ १४७ ॥

तिल, सरसों, कूठ, करंजके बीज इनके उद्वर्तन वा लेपसेसब प्रकारके कीड़ोंका विष शांत होजाता है ॥ १४७ ॥

करञ्जबीजं सिद्धार्थं तिलैर्लेपो विषापहः ।

एरण्डतैललेपो वा सर्वकीटविषापहः ॥ १४८ ॥

करंजके बीज, सरसों, तिल इनका लेप करनेसे विष दूर होता है अथवा एरण्डके तैलका लेप करनेसे सब कीटोंके विषको दूर करता है ॥ १४८ ॥

निशा दारुनिशा चैव मञ्जिष्ठानागकेशरम् ।

एषां लेपो निहन्त्याशु विषं लूतादिसम्भवम् ॥ १४९ ॥

हलदी, देवदारु, मँजीठ, नागकेशर इनका लेपकरनेसे लूत (मकड़ी) आदिका विष दूर होता है ॥ १४९ ॥ इति कीटविषनिवारणम्

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३२३)

अथ सर्वजन्तूनां विषनिवारणम्

पुत्रजीवफलान्मज्जां शीततोयेन पेयिताम्।

लेपनाञ्जननस्यैस्तु पानाद्वा निष्कमात्रतः ॥ १५० ॥

व्याघ्रमूषकगोनासवृश्चिकादिविषं हरेत् ।

दुस्सहं यद्विषं चाशु विस्फोटं च विनाशयेत् ॥ १५१ ॥

जियापोताके फलकी मींगी शीतल जलके साथ पीस लेप करनेसे
तथा अंजन करनेसे वा एक निष्कमात्र पान करनेसे व्याघ्र, मूषक
गोनास (सर्प) वृश्चिकादिका विष दूर होजाताहै । यह दुस्सह विषसे
उत्पन्न हुए विस्फोटक रोगकाभी नाश करता है ॥ १५० ॥ १५१ ॥

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दं जलैः पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ।

सर्पमूषकमाज्जरिवृश्चिकादिविषं हरेत् ॥ १५२ ॥

वन्ध्या कर्कोटकी (वनककोडा) का जड़ जलसे पीस लेप करनेसे ॥
सर्प, चूहा, विलाव, वृश्चिकादिका विष दूर होजाता है ॥ १५२ ॥

अथोपविषादिनिवारणम्

स्तुह्यर्कोन्मत्तकश्चैव करवीरश्च लाङ्गली ।

वज्री जैपालकः कृष्णकुष्ठं गुञ्जा तथैव च ॥ १५३ ॥

महाकालश्च इत्याद्याः स्मृतास्तूपविषा बुधैः ।

ससिन्धुं काञ्जिकं पीत्वा समस्तोपविषं हरेत् ॥ १५४ ॥

स्तुही (थूहर), अक, धतूरा, कनेर लांगली (कलिहारी), हड-
संधारी (दूसरी थूहर), जलमालगोटे, सुरमा, कूठ, चौंटली, महाका-
ललता ये वस्तु उपविष हैं । सेंधा कांजीके साथ पान करनेसे सम्पूर्ण
उपविषोंकी शान्ति होती है ॥ १५३ ॥ १५४ ॥

करवीरविषं हन्ति घृतेनापि हरीतकी ।

निम्बपत्रं घृतं हन्ति घृतेन मधुपानतः ॥ १५५ ॥

घृत और हरडका सेवन करनेसे कनेरका विष शान्त हो जाता है।
नीमके पत्तेका घृतसे अथवा घृत और मधुपानसे दूर होजाता है ॥ १५५ ॥

अथ कृत्रिमविषनिवारणम्

अनेक विषजीवानां चूर्णं ह्युपविषैर्युतम् ।

मिश्रितं नखकेशाद्यैर्लोहाद्यैश्चूर्णसञ्चयम् ॥ १५६ ॥

कृत्रिमं च विषं ख्यातं पक्षान्मासाद्विबाध्यते ॥

आलस्यं कुरुते जाड्यं कासं श्वासं बलक्षयम् ॥

रक्तस्रावो ज्वरः शोषः पीतचक्षुश्च लक्षयेत् ॥ १५७ ॥

अनेक विषैले जीवोंका चूर्ण अर्थात् उनके नख केशादि मिलाकर
तथा लोहादि चूर्णके सहित सेवन करनेसे कृत्रिमविष नष्ट होता है।
इसका पखवारे तथा महीनेके आगे भी उपाय न करे तो आलस्यके
कारण, कास, श्वास होकर बलका क्षय होता है रक्तस्राव ज्वर शोष
नेत्रोंमें पीलापन होजाता है ॥ १५६ ॥ १५७ ॥

मृतं सूतं मृतं स्वर्णं शुद्धं वै हेममाक्षिकम् ।

त्रयाणां गन्धकं तुल्यं मर्द्यं कन्याद्रवैर्दिनम् ॥ १५८ ॥

तच्च शुष्कं सिताक्षौमसिमेकं लिहेत्सदा ।

वह्निमूलयुतं क्षीरं मनुष्यगरनाशनम् ॥ १५९ ॥

शोधा पारा, सोना, शोधी सोनामाखी इन तीनोंकी तुल्य गंधक घी-
कुवारके रसमें एक दिन खरल करे उसको सुखाय मिश्री और शहदके
साथ एक महीनेतक सदाचाटे या पीपलामूल दूधमें औटाय खाय तो
मनुष्यका विष नाश होजाता है ॥ १५८ ॥ १५९ ॥

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३२५)

पुत्रजीवफलान्मज्जां निष्कमात्रं गवां पयः ।

पीत्वा चोग्रगरं हन्यान्नानाकृत्रिमयोगजम् ॥ १६० ॥

जियापोताके फलकी मींग एक निष्क और गौका दूध पान करनेसे तीन कृत्रिम और योगजविष दूर होजाता है ॥ १६० ॥

शठीपुष्करमूलस्य पानं मद्यविषापहम् ॥ १६१ ॥

कचूर, पुहकरमूल इनका पान करनेसे अत्यन्त मद्यका विष दूर होता है ॥ १६१ ॥

तत्पिबेत्क्षीरपानेन* गरतृष्णाज्वरापहम् ।

क्षीरं मुद्गयुतं पथ्यं शाल्यन्नं परमं हितम् ॥ १६२ ॥

पुहकर मूलको क्षीरके साथ पान करनेसे विषकी तृषा और ज्वर दूर होता है बारंवार दूध मूंग शालिअन्न यह इसपर पथ्य और परम हित है ॥ १६२ ॥

गृहधूमं जलैः पिष्ट्वा तन्दुलीमूलतुल्यकम् ।

कल्काच्चतुर्गुणं चाज्यं घृतात्क्षीरं चतुर्गुणम् ।

घृतशेषं पचेत्सर्वं पिबेत्सर्वगरापहम् ॥ १६३ ॥

घरका धुआं जलके साथ पीसकर तथा चौलाईकी जड़की मूलका कल्क कर कल्कसे चौगुना घृत, उससे चौगुना दूध डाल पकावे, जब उस जल जाय घृतमात्र शेष रह जाय तब उतारलेवे । इसके खानेसे सर्व प्रकारके विष दूर हो जाते हैं ॥ १६३ ॥

समूलपत्रां सर्पाक्षीं जलेन क्वथितां पिबेत् ।

नरमूत्रैश्चैव पिष्टां पिबेत्सर्वगरापहम् ॥ १६४ ॥

सर्पाक्षी (नाकुली कंद) के मूल और पत्तोंका लेप करनेसे व

* तत्पिबेच्छीतलेपाने । इस पाठमें वा शीतल जलके साथ पीवे ऐसा बर्ण करना ।

क्वाथ कर पान करनेसे अथवा नरमूत्रके साथ पीसकर पान करनेसे सर्व विष दूर होता है ॥ १६४ ॥

एलातालीशपत्राणि त्र्यूषणं जीरकं समम् ।

चूर्णाद्विधा सिता योज्या भुक्त्वा गरहरं भवेत् ॥ १६५ ॥

इलायची, तालीसपत्र, सोंठ, मिरच, पीपल, जीरा ये समान भाग ले चूर्णकर चूर्णसे दूनी मिश्री मिलाय खानेसे विष दूर होता है ॥ १६५ ॥

पयसा रजनीकुष्ठं मध्वाज्यं गृहधूमकम् ॥

तन्दुलीमूलसंयुक्तं कर्षं गरहरं लिहेत् ॥ १६६ ॥

दूधके साथ हलदी, कूठ, शहद, घृत, गृहका धूम, चौलाईकी जड़ इनको कर्षमात्र सेवन करनेसे विष दूर होता है ॥ १६६ ॥

अथ योगजविषनिवारणम्

तैलकर्पूरजम्बीरसंयोगाद्योगजं विषम् ।

समांशेन तु मध्वाज्यमेवं संयोगजं विषम् ॥ १६७ ॥

नारिकेलाम्बु कर्पूरं संयोगाद्योगजं विषम् ।

मरीचतुम्बिकामूलं योगजं विषमेव तत् ॥ १६८ ॥

तेल कपूर और जम्बीरीके योगसे योगज विष होता है, बराबर शहद और घीसे योगज विष होता है, नारियलका जल कपूरके योगसे योगजविष होता है और कालीमिर्च कडवी तूंबीकी जड़के योगसे योगज विष होता है, विषम योगसे उत्पन्न विष होता है ॥ १६७ ॥ १६८ ॥

पुत्रं जीवफलेनैव रजनीमारनालकैः ।

देवदालीनृमूत्रैर्वा सर्पाक्षी चेन्द्रवारुणी ॥ १६९ ॥

गिरिकर्णायामूलं वा प्रत्येकं विषजिह्वेत् ।

मध्वाज्यं*काकजडघाया द्रवैः पिष्ट्वा विषं हरेत् ॥ १७० ॥

* काकमाच्या वा इति पाठः ।

उपदेशः १४.

हिन्दीटीकासहित

(३२७)

गिरिकर्णी नागपुष्पी मुण्डीपानाद्विषं हरेत् ॥ १७१ ॥

इन योगज विषोंको नीचे लिखी हुई विधिसे दूर करे—जियापोताके फलको लेकर जलके साथ पीसकर लेनेसे तथा हलदी कांजी और देव-दाली मनुष्यके मूत्रके साथ, सर्पाक्षी इन्द्रवारुणी अथवा गिरिकर्णी (अपराजिता) की जड़ यह प्रत्येक विषकी जीतनेवाली है और मधु घृतके साथ काकमाचीका रस पीनेसे विष दूर होता है तथा अपरा-जिता नागकेशर और मुण्डीके पानसे योगज विष दूर हो जाता है ॥ १६९ - १७१ ॥ इति योगजविषनिवारण ।

अथ भल्लातकविषनिवारणम्

भल्लाततैलसंपर्कात्स्फोटः सञ्जायते नृणाम् ।

नवनीतं तिलं पिष्ट्वा तल्लेपेन तु तं जयेत् ॥ १७२ ॥

भिलावेतैलके सम्पर्कसे मनुष्यके शरीरमें फोड़े होजाते हैं, मक्खनके साथ तिलोंको पीस लगानेसे आराम हो जाता है ॥ १७२ ॥

निम्बीपत्रप्रलेपाद्वा तं जयेत्तत्पदेन वा ।

भल्लातकस्य मूलस्य मृत्तिकाभिः प्रलेपनात् ।

तत्सञ्जातविकारांश्च नाशयत्येव निश्चितम् ॥ १७३ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने विषनिवारणं नाम

चतुर्दशोपदेशः ॥ १४ ॥

नीमके पत्तोंका लेप करनेसे आराम होता है अथवा भिलावेकी जड़का विष मृत्तिका लेपनसे जाता है । यह मृत्तिका उससे उत्पन्न हुए विकारोंको अवश्य नाश करती है ॥ १७३ ॥

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्वालाप्रसादमिश्रकृत-भाषाटीकायां विषनिवारणं नाम चतुर्दशोपदेशः ॥ १४ ॥

पञ्चदशोपदेशः

अथ द्वात्रिंशद्यक्षिणीसाधनम्

तत्र साधकनियमाः

सर्वासां यक्षिणीनां तु ध्यानं कुर्यात्समाहितः ।

भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपं तुल्यं यथोप्सितम् ॥ १ ॥

यक्षिणी का साधन करे तो सावधान होकर करना चाहिये । इसमें सावधानी होनेसे सिद्धि होती है । अपनी इच्छानुसार किसीको भगिनी किसी को माता किसीको स्त्री तथा किसीको पुत्रीको प्रकारसे सम्बोधन देकर ध्यान करे ॥ १ ॥

भोज्यं निरामिषं चान्नं वर्ज्यं ताम्बूलभक्षणम् ।

उपविश्याजिनादौ च प्रातः स्नात्वा न कं स्पृशेत् ॥ २ ॥

नित्यकृत्यं तु कृत्वा च स्थाने निर्जनके जपेत् ।

यावत्प्रत्यक्षतां यान्ति यक्षिण्यो वाञ्छितप्रदाः ॥ ३ ॥

जपेल्लक्षद्वयं मन्त्रं श्मशाने निर्भयो मुनिः ।

दशांशं गुग्गुलुं साज्यं हुत्वा तुष्यति यक्षिणी ॥ ४ ॥

इसमें निरामिष अन्न खाना चाहिये, ताम्बूलका भक्षण न करे, अजिम (मृगछाला) पर बैठे प्रातःकाल स्नान कर किसीको स्पर्श न करे और अपनी नित्यक्रिया करके निर्जन स्थानमें जप करे जबतक प्रत्यक्ष होकर मनवांछित न दे तबतक बराबर जप करता रहे । निर्भय और मौन होकर श्मशानमें नित्य दो लक्ष मन्त्रका जप करे और इसका घृत और गुग्गुलुका दशांश हवन करे तो यक्षिणी प्रसन्न होती है ॥ यह नियम सब यक्षिणी साधनमें जाने ॥ २-४ ॥

उपदेशः १५.

हिन्दीटीकासहित

(३२९)

विभ्रमासाधनम् १

विभ्रमासाधनं वक्ष्ये प्रथमं शृणु वल्लभे ।

विभ्रमायां प्रसन्नायां वाञ्छितार्थान्प्रयच्छति ।

पञ्चाशन्मानुषाणां च ददाति भोजनं सदा ।

मन्त्रः—“ॐ ह्रीं वां विभ्रमरूपे एहि २ भगवति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा” (१)

हे वल्लभे पार्वती ? उन यक्षिणियोंमें विभ्रमानामक यक्षिणीका साधन पहिले कहता हूं सुनो, विभ्रमा यक्षिणी प्रसन्न होजावे तो सब कामनाओं को देती है और भी ५० मनुष्योंको सदा भोजन देती है ।

मन्त्र—‘ॐ ह्रीं वां विभ्रमरूपे एहि २ भगवति स्वाहा’ ‘ॐ ह्रीं विभ्रम-
रूपे विभ्रमं कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा, (१)

रतिप्रियासाधनम् २

शंखलिप्तपटे देवीं गौरवर्णां धृतोत्पलाम् ।

सर्वालङ्कारिणीं दिव्यां समोलिख्यार्चयेत्ततः ॥ ५ ॥

शंखलिप्त पटपर देवीको इस प्रकार लिखे कि, कमल धारण किये गौरवर्ण, सम्पूर्ण अलंकारयुक्त, दिव्यमूर्ति है ऐसी बनाकर अर्चनकरे ५

जातीपुष्पैस्सोपचारैः सहस्रैकं ततो जपेत् ।

त्रिसंध्यं सप्तरात्रं तु ततो रात्रिषु निर्जपेत् ॥ ६ ॥

अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।

पञ्चविंशतिदीनारान् प्रत्यहं तोषिता सती ॥ ७ ॥

मन्त्रः—“ॐ ह्रीं कनकनक मैथुनप्रिये रतिप्रिये स्वाहा” २

षोडशोपचारसे चमेलीके फूलोंसे पूजन करे और एक सहस्र मंत्र जपे, सात दिनतक तीनों संध्याओंमें इसी प्रकार जप करे ! फिर

रात्रिमें भी इसी प्रकार जपे तो आधी रातके समय आकर देवी प्रत्यक्ष दर्शन देती है और नित्यप्रति पच्चीस दीनारों (अर्शफियों) को संतुष्ट हो प्रदान करती है ॥६॥७॥ मंत्र—'ॐ ह्रीं कनकनकमैथुन-प्रिये रतिप्रिये स्वाहा' वा ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ॥ (२)

सुरसुन्दरीसाधनम् ३

एकलिङ्गः* महादेवं त्रिसंध्यं पूजयेत्सदा ।

धूपं दत्त्वा जपेन्मन्त्रं त्रिसंध्यं त्रिसहस्रकम् ॥ ८ ॥

मासमेकं ततो याति यक्षिणी^x सुरसुन्दरी ।

दत्त्वार्घ्यं प्रणमेन्मन्त्री ब्रूते सात्त्वं किमिच्छति ॥ ९ ॥

देवि दारिद्र्यदग्धोस्मि मे तन्नाशकरी भव ।

ततो ददाति सा तुष्टा वित्तायुश्चिरजीवितम् ॥ १० ॥

मन्त्रः—'ॐ ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरि स्वाहा' (३)

एकलिङ्ग महादेवका तीनों संध्याओंमें सदा पूजन करे और धूप देकर तीनों संध्याओंमें तीन सहस्र मन्त्र जपे ऐसा एक महीने जप करनेसे सुरसुन्दरी यक्षिणी आकर प्राप्त होती है । उसे अर्घ्य देकर प्रणाम करे । तब वह कहने लगती है कि, तू क्या इच्छा करता है ? जब देवी ऐसे पूछे तबक है कि, हे देवि ! मैं दारिद्र्यादिसे जल रहा हूँ मेरे दारिद्र्यका नाश करनेवाली हो, ऐसी प्रार्थना करे । तब वह प्रसन्न होकर वित्त, आयु और चिरकालतक जीवन प्रदान करती है ॥ ८-१० ॥ मंत्र—'ॐ ह्रीं आगच्छ २ सुरसुन्दरि स्वाहा' (३)

अनुरागिणीसाधनम् ४

कुङ्कुमेन समालिख्य भूर्जपत्रे सुलक्षणाम् ।

प्रतिपत्तिथिमारभ्य पूजां कृत्वा जपेत्ततः ॥ ११ ॥

* कर्पूराङ्गमिति वा पाठः । ^x प्रत्यक्षम् इति वा पाठः ।

उपदेशः १५.

हिन्दीटीकासहित

(३३१)

भोजपत्रपर कुंकुमसे सुंदर लक्षणोंसे युक्त अनुरागिणी देवीको लिखे । शुक्ल प्रतिपदासे पूजा आरंभ कर जप करे ॥ ११ ॥

त्रिसन्ध्यं त्रिसहस्रं तु मासान्ते पूजयेन्निशि ।

संजपेदर्द्धरात्रं तु समागत्य प्रयच्छति ।

दीनाराणां सहस्रैकं ददाति*परितोषिता ॥ १२ ॥

“ॐ ह्रीं ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ” (४)

तीनों सन्ध्याओंमें तीन सहस्र जप करे एक महीनेके उपरान्त रात्रिमें पूजन करे जप करनेसे अर्धरात्रिमें आकर मनोरथ पूर्ण करती है प्रसन्न होकर एक सहस्र दीनार प्रतिदिन देती है ॥ १२ ॥ मन्त्र—

“ॐ ह्रीं ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा (४)

सामुद्रीसाधनम् ५

ध्यात्वा जपेत्ततो रात्रौ सागरस्य तटे शुचिः ।

लक्षजापे कृते सिद्धिर्दत्ते सागरचेटकः ।

रत्नत्रयं तथा भोज्यं सौम्यो मन्त्री सुखी भवेत् ॥ १३ ॥

“ॐ भगवन् समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्रीं नमो-
स्तु ते स्वाहा ” (५)

ॐ भगवन् समुद्र देहि रत्नानि जलवासो ह्रीं नमोस्तु ते स्वाहा इस मन्त्रको ध्यान करके पवित्र होकर सागरके किनारे एक लाख ००००० जपे तो सिद्धि होनेसे सागर चेटक तीन रत्न बड़े मोलके देता है भोजन देता है सौम्य रहनेसे मन्त्री सुखी भी होता है ॥ १३ ॥

वटयक्षिणीसाधनम् ६

त्रिपथे तु वटस्थाने रात्रौ मन्त्री जपेत्स्वयम् ।

* प्रत्यहमिति वा पाठः ।

लक्षत्रयं ततः सिद्धा देवी च वटयक्षिणी ॥१४॥

वस्त्रालङ्कारकं दिव्यं रससिद्धिरसायनम् ।

दिव्याञ्जनं तु सा तुष्टा साधकाय प्रयच्छति ॥ १५ ॥

मंत्रः—“ॐ ह्रीं वटवासिनि यक्षकुलपताके वटयक्षिणि
एह्येहिस्वाहा” (६)

पवित्र होकर त्रिमार्गमें वटके नीचे रात्रिमें अकेला हो इस मन्त्रको
तीन लक्ष जप करनेसे सिद्ध होकर देवी वटयक्षिणी वस्त्र दिव्यअलङ्कार
रससिद्धि और रसायन दिव्य अंजन प्रसन्न होकर साधकके निमित्त
देती है ॥ १४॥१५॥ मंत्र—‘ह्रीं वटवासिनि यक्षकुलपताके वट-
यक्षिणि एह्येहि स्वाहा’ (६)

वटयक्षिणीसाधनम् ७

ॐ वटवृक्षं समारुह्य लक्षमेकं जपेन्मनुम् ।

ततस्सप्ताभिमन्त्रेण काञ्चिकैः क्षालयेन्मुखम् ॥ १६॥

मासत्रयं जपेद्वात्रौ वरं यच्छति यक्षिणी ।

रसं रसायनं दिव्यं क्षुद्रकर्म ह्यानेकधा ।

सिद्धानि सर्वकार्याणि नान्यथा शङ्करोऽब्रवीत् ॥१७॥

मंत्रः—“ॐ नमश्चन्द्राद्यावाकर्णकारण क्लीं स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय चण्डवेगिने स्वाहा” (७)

रातमें वटके वृक्षपर चढ़कर एक लक्ष मन्त्र जप करे । जप करने
उपरांत सात बार अभिमन्त्रित कर कांजीसे मुख धोडाले । रात्रिमें
तीनमहीने जपे तो यक्षिणी वर देती है और इसको दिव्य रसायन, अनेक
क्षुद्रकर्म भोज्य पदार्थभी और सब कर्म सिद्ध हो जाते हैं, इसमें अन्यथा

उपदेशः १५.

हिन्दीटीकासहित

(३३३)

नहीं ऐसा शंकरने कहा है ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ 'ॐ नमश्चन्द्राद्यावाकर्ण-
कारण क्लीं स्वाहा ॥ वा ॐ नमो भगवते रुद्राय चण्डवेगिने स्वाहा' ७

अथ विशालासाधनम् ८

चिञ्चावृक्षतले लक्षं मन्त्रमावर्तयेच्छुचिः ।

शतपुष्पोद्भूतैः पुष्पैः सघृतैर्होममाचरेत् ॥ १८ ॥

विशाला च ततस्तुष्टा रसं दिव्यं रसायनम् ।

प्रसन्ना यच्छति ततः सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥ १९ ॥

मंत्रः—“ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा । अथवा

ॐ ऐं विशाले क्रीं ह्रीं ब्रीं क्लीं क्रीं स्वाहा ” (८)

इमली वृक्षके नीचे बैठकर पवित्र होकर मन्त्रको जपे, इसीके वा
सौंफके पत्र पुष्पोंसे घृतके साथ हवन करे । तब प्रसन्न होकर विशाला
दिव्य रस रसायन देती है उससे सब सिद्धि होजायगी ॥ १८ ॥ १९ ॥

मंत्र—ॐ ऐं विशाले त्रां त्रीं क्लीं स्वाहा ” (८)

अथ महाभयासाधनम् ९

नरास्थिनिर्मिता माला गले पाणौ च कर्णयोः ।

धारयेज्जपमालां च तादृशीं तु श्मशानतः ॥ २० ॥

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं साधको निर्भयश्शुचिः ।

ततो महाभया यक्षी प्रयच्छति रसायनम् ॥ २१ ॥

तस्य भक्षणमात्रेण सर्वरत्नानि चालयेत् ।

बलीपलितनिर्मुक्तश्चिरं जीवी भवेन्नरः ॥ २२ ॥

“ॐ ह्रीं त्रां महाभये क्लीं स्वाहा ॥ वा ॐ क्रीं महा-
भये क्लीं स्वाहा ” (९)

मनुष्यकी अस्थिसे बनी मालाको गले हाथ और कर्णमें धारणकर पवित्र हो निर्भय हृदयसे अकेला श्मशानमें वास करे, नरास्थ मालाको हाथमें धारण कर एक लक्ष मन्त्र जपे । तब यह महाभया यक्षिणी प्रसन्न होकर साधकको सिद्धिदायक रसायन देती है । उसके भक्षण-मात्रसे सब रत्नोंको यथास्थानसे चलायमान करनेमें समर्थ हो जाता है और बलीपलितसे निर्मुक्त होकर मनुष्य चिरंजीवी होता है २०-२२ 'ॐ ह्रीं त्रां महाभये क्लीं स्वाहा' (९)

चन्द्रिकासाधनम् १०

शुक्लपक्षे जपेत्तावद्यावत्संदृश्यते विधुः ।

प्रतिपत्पूर्वपूर्णान्तिं नवलक्षमिदं जपेत् ॥ २३ ॥

अमृतं चन्द्रिकादत्तं पीत्वा जीवोऽमरो भवेत् ॥ ३४ ॥

“ ॐ ह्रीं चन्द्रिके हं सः क्रीं क्लीं स्वाहा ” (१०)

शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे जप आरंभ करे तबतक जप करे जबतक आकाशमें चन्द्रमा दीखता रहे इस प्रकार प्रतिपदासे पूर्णातक नौ लक्ष इसको जप करे तब चन्द्रिका देवी प्रसन्न हो साधकको अमृत देती है उसके दिये अमृतको पान करनेसे अमर होजाता है ॥ २३ ॥ २४ ॥ 'ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्रीं क्लीं स्वाहा' (१०)

अथ रक्तकंबलासाधनम् ११

जप्यं मासत्रयं रक्तकम्बला सा प्रसीदति ।

मृतकोत्थापनं कुर्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा ॥ २५ ॥

“ ॐ ह्रीं रक्तकम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कम्पय २ नीलय नीलय विहस २ हंहं ” (११)

उपदेशः १५.

|हिन्दीटीकासहित

(३३५)

रक्तकम्बलाका मन्त्र तीन महीने जपने से लालकम्बला प्रसन्न होती है, इससे मृतके उत्थापन और प्रतिमाचालन कर सकता है॥२५॥
 'ॐ ह्रीं रक्तलम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वता-
 कम्पय २ नीलय २ विहस २ हूँ हूँ' (११)

अथ विद्युज्जिह्वासाधनम् १२

अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किञ्चित्स्वादुभोजनम् ।
 तद्वलिर्दीयते तस्यै वटाधो मासमेकतः ॥ २६ ॥
 ततो देवी समागत्य हस्ताद्गृह्णाति भोजनम् ।
 तत्रैव सा वरं दत्ते नित्यं सान्निध्यकारकम् ॥ २७ ॥
 अतीतानागतं कर्म स्वस्थास्वस्थं ब्रवीति सा ।
 प्रतिमाः पर्वतान्सर्वाश्चालयत्येव तत्क्षणात् ॥ २८ ॥
 *ॐकारमुखे विद्युज्जिह्वे।ॐ ह्रूं चेटके जयजय
 स्वाहा (१२)

उक्त मन्त्रको एकसौ आठ बार जप कर जो कुछ अपने निमित्त स्वादु भोजन है उसकी बलि वटके नीचे उस यक्षिणीके निमित्त दे । ऐसा एक मासपर्यन्त करे । तब देवी आकर अपने हाथ से उसका भोजन ग्रहण करती है और नित्य समीप रहती है । अतीत अनागत कर्मको स्वस्थ होकर वह कह देती है, जिससे प्रतिमा और सब पर्वतोंकोभी चलायमान कर सकता है॥२६-२८॥ 'ॐ कार मुखे०स्वाहा' मन्त्र है

कर्णपिशाचिनीसाधनम् १३

पूर्वमेवायुतं जप्त्वा कृष्ण कन्याभिमन्त्रितः ।
 हस्तपादप्रलेपेन सुप्ते वक्ति शुभाशुभम् ।

* ॐ समुखे विद्युज्जिह्वेओहूं बेटकेश + स्वाहा इति वा पाठः ।

त्रैलोक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम् ॥ २९ ॥
 “ॐ ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चण्ड-
 वेगिनि वद वद स्वाहा अथवा ॐ क्रीं
 सनामशक्तिभगवति कर्णपिशाचिनि चण्डरोपिणि
 वदवद स्वाहा” (१३)

उक्तमन्त्रको पहिले दशसहस्र जप करके कृष्णकन्यासे अभिमंत्रित
 कर हाथ पांवको लेप करके सोनेसे शुभ अशुभ त्रिलोकमें जो वार्ता है
 उसका फलाफल कहती है ॥ २९ ॥ ‘ॐ ह्रीं सः’ यह मंत्र है (१३)

चिचिपिशाचिनीसाधनम् १४

रोचनैः कुंकुमैः क्षीरैः पद्मं चाष्टदलं लिखेत् ।
 नीरन्ध्रे भूर्जपत्रे च मायाबीजं दले दले ॥ ३० ॥
 लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि इमं* मन्त्रं ततो जपेत् ॥
 पूर्वमेवायुतं जप्त्वा चैवं कुर्यात्प्रयत्नतः ।
 अतीतानागतं सर्वं स्वप्ने वदति देवता ॥ ३१ ॥
 “ॐ ह्रीं चिचिपिशाचिनि स्वाहा” (१४)

गोरोचन, कुंकुम दूधसे आठ दलका कमल छिद्ररहित भोजपत्रमें
 लिखे, मायाबीज प्रत्येक दलपर लिखकर शिरपर धारणकर १००००
 इस मंत्रको पहिलेही जपे । सात दिन पर्यन्त इस कार्यको करे तो
 सोतेमें देवी भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालकी बात कहती है
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ “ॐ ह्रीं चिचिपिशाचिनी स्वाहा” (१४)

* सप्ताह वा इतिपाठ ।

उपदेशः १५.

हिन्दीटीकासहित

(३३७)

कर्णयक्षिणीसाधनम् १५

अलाबुमूलिकां पुष्ये तथा सर्पाक्षिमूलिकाम् ।

ग्राह्याभिमन्त्रितां यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ।

मूर्ध्नि बद्ध्वा तथासुप्तं वदत्येव शुभाशुभम् ॥३२॥

“ॐ नमो भगवत्यै रुद्राण्यै कर्णयक्षिण्यै स्वाहा” ॥१५॥

पुष्यनक्षत्रमें कडवी तुंबीकी मूल तथा सर्पाक्षीकी मूलको ग्रहण कर लाल सूत्रसे वेष्टन कर इसे शिरपर रखनेसे सोतेमें देवी सम्पूर्ण शुभाशुभ कथन करती है ॥ ३२ ॥ ‘ॐ नमो भगवत्यै—’ (१५)

स्वप्नावतीसाधनम् १६

मृद्गोमयैलिपेद्भूमिं कुशांस्तत्र समास्तरेत् ।

पञ्चोपचारनैवेद्यदेवदेवीं प्रपूजयेत् ॥ ३३ ॥

अक्षसूत्रं करे धृत्वा पूर्वमेवायुतं जपेत् ।

सूर्यकोटिसमां ध्यात्वा रात्रौ पाणितले जपेत् ।

अर्द्धरात्रे गते देवी वार्त्तां वेदित शुभाशुभम् ॥ ३४ ॥

“ॐ ह्रीं आगच्छ २ चामुण्डे श्रीं स्वाहा” (१६)

मिट्टी गोबरसे पृथ्वीको लीपकर कुशोंको बिछावें और पंचोपचार नैवेद्यसे देवदेवीका पूजन करे । अक्षसूत्र (रुद्राक्षमाला) हाथमें रखकर पहले दशसहस्र जपे । कोटिसूर्यके समान प्रकाशमान देवीका ध्यान करे । आधीरातके समय सोने पर देवी शुभ अशुभ कहती है ॥३३॥३४

“ॐ ह्रीं आगच्छ २ चामुण्डे श्रीं स्वाहा” (१६)

विचित्रासाधनम् १७

लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं वटवृक्षतले शुचिः ।

बन्धूककुसुमैः पद्मान्मध्वाज्यैः क्षीरमिश्रितैः ॥३५॥

दत्ते धूपे दशांशेन जुहुयात्पूर्णयान्वितम् ।

ततः सिद्धा भवेद्देवी विचित्रा वाञ्छितप्रदा ॥ ३६ ॥

“ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धिकुरु २ स्वाहा” (१७)

मंत्री पवित्र होकर बट वृक्षके नीचे एक लक्ष मंत्र जपे । पीछे बंधूक (दुपहरियाके) फूल, मधु, घृत, दूध मिलाकर दशांश धूप दे, कुंडम हवन करे । तब विचित्रादेवी सिद्ध होकर विचित्र जयकी देनेवाली होती है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ‘ॐ विचित्रे विचित्ररूपे सिद्धि कुरु २ स्वाहा यह मंत्र है ॥ (१७)

अथ हंसीसाधनम् १८

प्रविश्य नगरस्यान्तं लक्षसंख्यं जपेच्छुचिः ।

पद्मपत्रैः कृतो होमो घृतोपेतैर्दशांशतः ॥ ३७ ॥

प्रयच्छत्यञ्जनं हंसी येन पश्यति भूनिधिम् ।

सुखेन तं च गृह्णति न विघ्नैः परिभूयते ॥ ३८ ॥

“ॐ हंसि हंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा”

ॐ नमो हंसिनि हंसगते मां स्वाहा इति वा । (१८)

नगरके अन्तमें जाकर एक लक्ष मन्त्र जपे, कमलपत्रोंयुक्त घृतसे दशांश हवन करे ऐसा करनेसे हंसी अंजन देती है, जिससे पृथ्वीका खजाना दीखता है और वह सुखपूर्वक ग्रहण कर ऐश्वर्यसे पूर्ण हो जाता है विघ्न नहीं होते ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ‘ॐ हंसिहंसिजने ह्रीं क्लीं स्वाहा वा’ ‘ॐ नमो हंसिनि हंसगते मां स्वाहा’ यह मंत्र है (१८)

मदनासाधनम् १९

लक्ष संख्यं जपेन्मंत्रं राजद्वारे शुचिः स्थिरः ।

सक्षीरैर्मालतीपुष्पैर्घृतहोमो दंशांशतः ॥ ३९ ॥

उपदेशः १५.

हिन्दीटीकासहित

(३३९)

मदना यक्षिणी सिद्धि गुटिकां संप्रयच्छति ।

तथा मुखस्थयाऽदृश्यश्चिरस्थायी भवेन्नरः ॥ ४० ॥

"ॐ* ऐं मदने मदनविद्रावणे अनङ्गसङ्गमं देहि २
क्रीं क्रीं स्वाहा" (१९)

पवित्र हो स्थिरतासे राजद्वारमें एक लक्ष मन्त्र जपे । दूध, मालतीके
और घृतसे दशांश हवन करे तो मदनायक्षिणी सिद्ध होकर
गुटिका प्रदान करती है, उसको मुखमें रखनेसे मनुष्य अदृश्य हो और
चिरस्थायी होता है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ मंत्र—'ॐ ऐं मदने मदन-
विद्रावणे अनङ्गसङ्गमं देहि देहि क्रींक्रीं स्वाहा' (१९)

कालकर्णीसाधनम् २०

लक्षसंख्यं जपेन्मन्त्रं पलाशतरुजेन्धनैः ।

मधुनाज्यैः कृते होमे कालकर्णी प्रसीदति ॥ ४१ ॥

सैन्यधारास्त्रबन्धं च गतिस्तम्भकरी भवेत् ।

सततं तां स्मरेन्मन्त्री विविधैश्वर्यकारिणीम् ॥ ४२ ॥

"ॐ ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा" (२०)

उक्त मंत्र एक लक्ष ढाकके पेड़के नीचे बैठकर जपे और शहदसे
हवन करे तो कालकर्णी प्रसन्न होजाती है, प्रसन्न होकर सैन्यधारा
बन्ध और गतिको स्तम्भ करती है । मन्त्र जाननेवाला अनेक
शुभ करनेवाली भगवतीको निरन्तर स्मरण करे ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
'ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा' यह जपका मंत्र है (२०)

लक्ष्मीयक्षिणीसाधनम् २१

स्वगृहे संस्थितो रक्तैः करवीरप्रसूनकैः ।

लक्षमावर्तयेन्मन्त्रं होमं कुर्याद्विंशतिः ॥ ४३ ॥

ऐं मदनेमदनविडम्बिनिआलिंग्य २ संगमं देहि २ स्वाहा इति वा पाठः ।

होमे कृते भवेत्सिद्धिर्लक्ष्मीनाम्नी च यक्षिणी ।

रसं रसायनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ॥ ४४ ॥

“ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणीं कलहंसी स्वाहा” (२१)

अपने घरमें स्थित हो लाल कनेरके फूलोंसे अर्चन कर और लक्ष मंत्र जप करके उसके दशांश हवन करनेसे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध होजाती है तथा दिव्य रसायन और विधानको प्रदान करती है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ’ ॐ ऐं लक्ष्मी श्रीं कमलधारिणीं कलहंसी स्वाहा’ यह मंत्र है (२१)

शोभनासाधनम् २२

रक्तमाल्याम्बरौ मन्त्रं चतुर्दशदिने जपेत् ।

ततः सिद्धा भवेद्देवी शोभना भोगदायिनी ॥ ४५ ॥

“ॐ अशोक पल्लवाकारकरतले शोभनीं श्रीं क्षः स्वाहा” (२२) (

लाल माला और लाल वस्त्र धारण कर यह मन्त्र चतुर्दशीके दिन जपे तब शोभना भोगदायिनी देवी प्रसन्न होजाती है ॥ ४५ ॥

‘ ॐ अशोकपल्लवाकारकरतले शोभनीं श्रीं क्षः स्वाहा’ (२२)

नटीसाधनम् २३

पुण्याशोकतलं गत्वा चन्दनेन सुमण्डलम् ।

कृत्वा देवीं समभ्यर्च्य धूपं दत्त्वा सहस्रकम् ॥ ४६ ॥

मन्त्रमावर्तयेन्मासं नक्तभोजी नरस्तदा ।

रात्रौ पूजां शुभांकृत्वा जपेन्मन्त्रं निशार्द्धके ॥ ४७ ॥

नटी देवी समागत्य निधानं रसमञ्जनम् ।

ददाति मन्त्रिणमन्त्रं दिव्ययोगं च निश्चितम् ॥ ४८ ॥

“ॐ ह्रीं क्रीं नटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा” (२३)

पदेशः १५

हिन्दीटीकासहित

(३४१)

पवित्र हो अशोकवृक्षके नीचे जाकर चन्दनसे सुन्दर मण्डल कर
 देवीको पूज धूप दे सहस्र मन्त्र सदा जपे नक्त भोजन करे, रात्रिमें
 अच्छी प्रकार पूजा प्राप्त होकर निधियुक्त रस और अंजन मन्त्रीको
 दी है तथा दिव्य योग तथा मन्त्र देती है यह निश्चय है ॥ ४६-४८ ॥
 ॐ ह्रीं क्रीं यटि महानटि स्वरूपवति स्वाहा ' यह मन्त्र है (२३)

पद्मिनीसाधनम् २४

स्रक्सुगन्धिगृहस्थाने चन्दनेन सुमण्डलम् ।

कृत्वा हस्तप्रमाणेन पूजयेत्तत्र पद्मिनीम् ॥ ४९ ॥

धूपं सगुग्गुलुं दत्त्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रकम् ।

मासमेकं ततः पूजां कृत्वा रात्रौ पुनर्जपेत् ॥ ५० ॥

अर्द्धरात्रे गते देवी समागत्य प्रयच्छति ।

निधानं दिव्ययोगं* च तस्मान्मन्त्री सुखी भवेत् ॥ ५१ ॥

"ॐ ह्रीं (वा क्रीं) पद्मिनी स्वाहा" (२४)

इति श्रीनित्यनाथविरचिते वगमरत्ने यक्षिणीसाधनं

नाम पंचदशोपदेशः ॥ १५ ॥

माला सुगन्ध द्रव्य और चन्दनसे अपने स्थानमें सुंदर मंडल
 हाथके प्रमाणमें बनाय उसमें पद्मिनीका पूजन करे गुग्गुलुसहित
 देकर एक सहस्र मंत्र जपे, इस प्रकार एक महीने पूजाकर रात्रिमें
 जप करे आधीरात बीतनेपर देवी आकर निधि और दिव्य योग
 है उससे मंत्र जपनेवाला सुखी होता है ॥ ४९-५१ ॥ मंत्र यह
 कि- 'ॐ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा' (२४)

तंत्रान्तरमें कहे हुए पुरसुन्दरी आदि आठ यक्षिणियों का साधन
 भाषामेंही लिखा जाता है, उनका मूल तंत्रान्तरोंमेंही देख लें ।

* ' बलं च इति वत्पाठः ।

(३४२)

कामरत्न

पंचदश-

पुरसुन्दरी, मनोहरी, कलावती, कामेश्वरी, रक्तकरी, पद्मिनी, नटी, अनुरागिणी ये आठ यक्षिणी हैं।

पुरसुन्दरीका साधन २५

“ ॐ आगच्छ पुरसुन्दरि स्वाहा ” इस मंत्रको पढ घर जाय गूगलकी धूप देकर तीनों संध्याओंमें उपरोक्त मन्त्र सहस्रवार जपे तो एक महीनेमें आती है, उस समय चन्दन जलसे अर्घ्य दे। इसकी तीन भाव हैं—माता, भगिनी, पत्नी जो माताका भाव करे तो वस्त्र द्रव्य रस रसायन देती है, भगिनी भावमें भी पूर्ववत् वस्त्र देती है, यदि भार्या हो तो महा ऐश्वर्य आश्चर्य करती है। इन सबको पूजन करे इसमें दूसरे के साथ शयन तथा मैथुन न करे. यदि करे तो नाश होता है।

मनोहरीसाधन २६

“ ॐ आगच्छ मनोहरि स्वाहा ” इस मंत्रको पढ नदीतट मंडल कर अगर धूप देकर महीने भर पूजन करे, सहस्र जप करे, जावे तब चन्द न अर्घ्य दे. फूल वाटिकामें एकचित्तसे अर्चन करे आधीरातमें अवश्य आती है. आतेही कहे कि, सौभाग्य दे। तब स अशरफी प्रतिदिन देती है.

कलावतीसाधन २७

“ ॐ ह्रीं कलावति मैथुनप्रिये आगच्छ स्वाहा ” वृक्षके नीचे मद्य मांस देकर सुराकी प्रार्थना सहित सात दिनतक जपे। आधी रातको सर्वालंकारसे भूषित परिवार सहित जब आती है तब भाग्य होती है। बारह जनोंको वस्त्रालंकार भोजन है। आठ फल दिन देती है.

उपदेश: १५.

हिन्दीटीकासहित

(३४३)

कामेश्वरीसाधन २८

“ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा” भोजनपत्रपर गोरोचनसे
 उसकी प्रतिमा लिखे। देवीका पूजन करे। शय्यामें चढ़कर एकमास
 सहस्रमंत्र प्रतिदिन जपे। मासान्तमें देवीकी पूजा करे। घृतमधुयुक्त
 तिरात्र दे, मौन हो जप करे आधीरातको अवश्य आती है। आनेपर
 उच्छा करे तो भार्या होती। शयनमें दिव्य अलंकारोंको छोड़कर
 बलीजाती है। इसमें परस्त्रीसे मैथुन न करे।

रतिकरीसाधन २९

“ॐ ह्रीं आगच्छ रतिकरि स्वाहा” अयःपटमें चित्ररूपसे
 लिखकर कनक वस्त्रलंकारसे भूषितकर कमल हाथमें लिये कुमारीको
 पूजन करे, गूगल धूपदे, आठ सहस्र जप करे, मासान्तपर्यंत पूजाकर
 त धूपदे, तब आधीरातको आकर प्राप्त होती है। स्त्री भावसे
 प्रसन्ना करे तो भार्या होती है। साधककी सकुटुम्ब रक्षा करती है।
 वश्यकामनावाले भोजनको देती है।

पक्षिनीसाधन ३०

“ॐ ह्रीं आगच्छ पक्षिनी स्वाहा” अपने घरमें मंडल कर
 गूल धूप देकर एक सहस्र जप करे। पूर्णमासीको विधिपूर्वक पूजाकर
 तो आधीरातको आती है। कामना करनेसे भार्या होती है। सब
 कामार्थ सिद्धि करती है। रस रसायन सिद्धिद्रव्य देती है

नटीसाधन ३१

“ॐ ह्रीं आगच्छ नटि स्वाहा” अशोक वृक्षके नीचे जाय मांस
 गन्ध, पुष्प धूप दीपादि बलि देकर सहस्र जप करे तो एक
 महीनेमें अवश्य आती है। आनेपर यदि माता हो तो कामिक भोजन
 होती है, वस्त्र सुवर्ण देती है, भगिनी हो तो सो योजनसे लक्ष्मी ला

(३४४)

कामरत्न

पंचदश-

ती है, वस्त्र अलंकार भोजन रसायन देती है, जो स्त्री हो तो दिव्य रसायन आठ दिन स्थित हो देती है.

अनुरागिणीसाधन ३२

“ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि स्वाहा” कुंकुमसे यह मंत्र भूर्जपत्र पर लिखे और प्रतिदिन गंधादिसे पूजन कर सहस्र जप करे। तीनों कालमें एक महीना पूजा कर घृत दीप दे, सम्पूर्ण रात्रि जप करे एक महीने में अवश्य आती है, और सब पूर्ववत् करे।

इति श्रीनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पंडितज्ज्वालाप्रसादमिश्रकृत-
भाषाटीकायांयक्षिणीसाधनं नाम पंचदशोपदेशः ॥ १५ ॥

श्रीः

षोडशोपदेशः

अथ वाजीकरणादिप्रयोगसिद्धये

रसशोधनम्

पलान्मूत्रं न कर्तव्यं रससंस्कारमुत्तमम् ।

अघोरेणैव मन्त्रेण रसराजस्य पूजनम् ॥ १ ॥

ॐ अघोरेभ्यो घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।

सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ २ ॥

एक पलसे न्यून पारेका संस्कार न करे और अघोरमंत्रसेही रस राजका पूजन करे ॥ १ ॥ ॐ अघोरइत्यादि मंत्र है ॥ २ ॥

कुमार्याश्च निशाचूर्णैर्दिनं सूतं विमर्दयेत् ।

पातयेत्पातनायन्त्रे सम्यक्शुद्धो भवेद्रसः ॥ ३ ॥

घोक्रुवार और हलदीके चूर्णसे एक दिन पारेकी खरल करे और तनायंत्रसे उसको पातन करे तो भलीप्रकारसे शुद्ध होता है ॥ ३ ॥

अथवा हिङ्गुलात्सूतं ग्राहयेत्तन्निगद्यते ।

पारिभद्ररसैः पेष्यं हिङ्गुलं याममात्रकम् ॥ ४ ॥

अथवा हिङ्गुल (सिंगरफ) मेसे पारा निकाले, उसके निकालनेकी विधि कहते हैं—निम्बके रसमें एक पहर हिङ्गुलकी डलीको खरल करे ४

जम्बीराणां द्रवैर्वाथ पात्यं पातालयन्त्रके ।

तं सूतं योजयेद्योगे सप्तकञ्चुकवर्जितम् ॥ ५ ॥

(३४६)

कामरत्न

षोडश-

अथवा जम्बीरी नीबूके रसमें खरल कर पातालयंत्रसे पातन करे तो सात कैचलीसे वर्जित हुए उसे पारेकी कार्यमें प्रयुक्त करे ॥ ५ ॥

सूतस्य दशमांशं तु गन्धं दत्त्वा विमर्दयेत् ।

जम्बीरो त्थद्रवैर्यामिं पात्यं पातालयन्त्रके ॥ ६ ॥

पुनर्मर्द्यं पुनः पात्यं सप्तवारं विशुद्धये ।

इत्येवं शुद्धयः ख्यातास्तासामेकां तु कारयेत् ॥ ७ ॥

उपर्यापो ह्यधो वह्निर्मध्ये च रसपिष्टिका ।

क्रमादग्निविदध्यात्तत्पातालं* यन्त्रमुच्यते ॥ ८ ॥

पारेसे दशमांश गंधक मिलाकर खरल करे तथा जम्बीरीके रसमें एक पहर मर्दन कर पातालयंत्रमें पातन करे इस प्रकार फिर मर्दन कर फिर पातन करे सात वा विशुद्धिके निमित्त पातालयन्त्रम्

कृत्य करे इस प्रकार पारेकी शुद्धि कही है इनमेंसे कोई एक करे । ऊपर जल, नीचे अग्नि, बीचमें रस-की पोटली रखवे, क्रमसे अग्नि दे इसका नाम पातालयन्त्र है ॥ ६-८ ॥ इति रसशोधन ॥



अथ रसमारणम्

उक्तं सर्वस्य सूतस्य तप्त खल्वे विमर्दनम् ।

अजाशकृत्तुषाग्निं तु भूगर्ते त्रितयं क्षिपेत् ॥ ९ ॥

तस्योपरि स्थितं खल्वं तप्तखल्वमिदं भवेत् ।

खल्वं लोहमयं शस्तं पाषाणोष्णमथापि वा ॥ १० ॥

* पातनायन्त्रमुच्यते इति पाठान्तरम् ।

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३४७)

अजीर्णं चाप्यबीजं वा यः सूतं घातयेन्नरः ।

ब्रह्महा सुदुराचारो मन्त्रद्रोही महेश्वरि ॥ ११ ॥

हे पार्वती अँसब प्रकार पारेकी तप्त खल्वमें मर्दन करना श्रेष्ठ कहा
 है। बकरीकी मँगनसे, तुषाग्निसे तीन दिन पृथ्वीके गर्तमें पाचित
 करे, उसके ऊपर लोहेका खरल रखे यह तप्तखल्व कहलाता है,
 अच्छा खरल लोहेका है, वह न हो तो पाषाणकाभी उत्तर है।
 बिना जीर्ण किये अर्थात् अबीज और अजीर्ण पारा जो मनुष्य घात
 (जारण) करता है, वह ब्रह्महत्या करनेवाला, दुराचारी और
 मन्त्रद्रोही है ॥ ९-११ ॥

रामठं पञ्चलवणं तथा क्षारचतुष्टयम् ।

त्रिकटुं शृङ्गवेरं च मातुलुङ्गं रसाप्लुतम् ॥ १२ ॥

पिण्डमध्ये रसं दत्त्वा स्वेदयेत्सप्तवासरान् ।

सारनाले तु मृद्भाण्डे ग्रासार्थी जायते ध्रुवम् ॥ १३ ॥

एतदेव रसं यत्नाज्जम्बीरद्रवसंयुतम् ।

दिनैकं धारयेद्धर्मे मृत्पात्रे वा मृतो भवेत् ॥ १४ ॥

ग्रासं तत्रैव दातव्यं स्वर्णशुद्धिः शनैः शनैः ।

चतुष्पष्ट्यादि तुल्यांशं देयं जीर्णञ्च चालयेत् ॥ १५ ॥

होंग और पांचों नोंन, चारों खार, सोंठ, मिरच, पीपल, अदरख,
 तुलुंग, (बीजपूर-बिजौरे) के रससे पीस इसको एक अंगुलके गाढे
 लच्छ कपडेमें लेप कर उसके मध्यमें पारेकी रखकर सात दिन स्वेदन
 (औटावे) संस्कार करे और फिर मट्टीके बरतनमें रख कांजीके साथ
 इस स्वीकार करता है इस प्रकारसे यत्नपूर्वक उस रसको जम्बीरीके
 समें खरल कर एक दिन धूपमें सुखाय फिर मट्टीके बरतनमें सुवर्णके

शुद्धग्रास शनैः २ देने चाहिये और चौसठवां भाग शुद्ध सुवर्णका
दे १२-१५

चतुष्षष्ट्यंशकं चादौ द्वात्रिंशत्तदनन्तरम् ।

पुनर्विशतिमं ग्राह्यं द्विष्टद्वादशं क्रमात् ॥ १६ ॥

अष्टमांशं चतुर्थं वाप्यर्द्धं चैव समांशकम् ।

प्रतिग्रासे तप्तखल्वे दिनमम्लेन मर्दयेत् ॥ १७ ॥

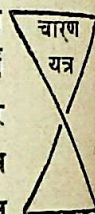
तं क्षिपेच्चारणायंत्रे जम्बीरनीरसंयुतम् ।

तद्यन्त्रं धारयेद्धर्मे दिनं स्याज्जारितो रसः ॥ १८ ॥

तं छागक्षीरगोमूत्रस्नुक्क्षीराम्लैः प्रलेपिते ।

दृढवस्त्रे बहिर्बद्ध्वा मृदघटे स्वेदयेद्बुधः ॥ १९ ॥

पहले चौसठ, पीछे बत्तीस, फिर सोलह, फिर बारह इस क्रमसे ग्रास
देकर खरल करे । फिर आठवां अंश, चौथा अंश, आधा अथवा, बरा-
बर दे प्रतिग्रासको तप्त खरलमें अम्लवर्गके साथ एक दिन
खर करे । जम्बीरीके रसके सहित उसको चारणायन्त्रमें
डाले और उसको धूपमें रखे तो एक दिनमें रस बने फिर
उसको छागके दूध, गोमूत्र, थहरके दूध, अम्लवर्गसे लिप्त
करके वस्त्रमें दृढ बांधकर मृत्तिकाके घटमें स्वेदन
करे ॥ १६-१८



काञ्जिकाक्षारमूत्रैर्वा दोलायन्त्रे त्वहनिशम् ।

तमुद्धतं रसं देवि खल्वे संशोधयेत्क्षणात् ॥ २० ॥

संमर्द्य पूर्ववत्खल्वे यन्त्रे लिप्तपुटे पुनः ।

क्रमेणानेन देवेशि त्रिभिर्ग्रासैः प्रजीर्यते ॥ २१ ॥

हे देवि ! कांजी क्षार और गोमूत्रके साथ दोलायंत्रमें एक दिन
रात स्थित करे फिर उसमें से रसको निकालकर खरलमें शुद्ध

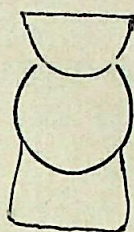
उपदेशः १६

हिन्दीटीकासहित

(३४९)

करे। फिर पूर्ववत् खरल करे और वस्त्र आदिमें
पेटकर पुट दे हे देवि ? इस क्रमसे तीन ग्रासों
में जीर्ण हो जाता है॥२०॥२१॥

दोलायं व ।



यावत्तेन यदा तस्मात्तावत्तेन विमर्दयेत् ।
प्रतिग्रासे तप्तखल्वे यथाशक्त्या च
चारयेत् ॥ २२ ॥

जब तक ठीक न हो बराबर मर्दन करता रहे और प्रतिग्रासमें तप्त
खलमें यथाशक्ति जलावे ॥ २२ ॥

तं जीर्णं मारयेत्सूतं मारणं कथ्यते द्रवैः ।

तं हि सर्वरसोपेतं पिष्ट्वा खल्वे विमर्दयेत् ॥ २३ ॥

सूतं गन्धकसंयुक्तं दिनान्ते तन्निरोधयेत् ।

पुटयेद्भूधरे यन्त्रे दिनान्ते तत्समुद्धरेत् ॥ २४ ॥

उस जीर्ण हुए पारेको मारे । अब द्रवद्वारा उसका
रण कहते हैं उसको रसोंके साथ खरलमें डालकर
दे, पारे और गन्धककी कजली कर पुट देकर
यन्त्रमें पचानेसे पारा मर जायगा ॥ २३-२४ ॥

भूधरयंत्र ।



कृष्णधत्तूरतैले सूतो मर्द्यो द्वियामकम् ।

दिनैकं तत्पचेद्यन्त्रे कच्छपाख्ये न संशयः ॥ २५ ॥

मृतः सूतो भवेत्सद्यः सर्वरोगेषु योजयेत् ।

रसगन्धं समं मर्द्य दिनं निर्गुण्डिकाद्रवैः ।

चक्रमूषान्विते ध्माते भस्म सूतं भवेन्मलम् ॥ २६ ॥

एक पैसे भर सिद्ध पारेमें काले धतूरेका रस डालकर कच्छपयंत्र
 एक दिन घोटें, एक दिन नियामक औषधी (बन्दालका पुटकलुका
 रस, आकका दूध, कबूतरकी बीठ, गीली हंसपदीका रस
 इन्द्रायनके फलका रस) इनमें घोटें, पीछे गोला बनाय
 कच्छपयंत्रमें रख आंच दे तो निःसन्देह पारा मरे । इससे
 सबीज निर्बीज पारा मरता है इसे सब रोगमें दे । पारे
 गन्धकको एक दिन निर्गुण्डीके रसमें मर्दन कर मूषामें
 रखकर फूंकनेसे पारेकी भस्म हो जायगी ॥ २५ ॥ २६ ॥

टङ्कणं मधु* लाक्षा च कुर्णगुञ्जायुतो रसः ॥ २७ ॥

मर्दयेद्भृङ्गजद्रावैर्दिनैकं चान्धयेत्पुनः ।

ध्मातो भस्मत्वमाप्नोति शुद्धः स्फटिकसन्निभः ॥ २८ ॥

सुहागा, शहद, लाख, पीपल, चौंटली, भांगरा इनके, रसमें पारेको
 खरल कर एक दिन अंधरा करे फिर फूंक देनेसे शुद्ध स्फटिकके
 समान भस्म होती है ॥ २७ ॥ २८ ॥

द्विपलं सूतराजस्य पलैकं गन्धकस्य च ।

मर्दयेन्मार्कवद्रावैर्दिनमेकं निरन्तरम् ॥ २९ ॥

रुद्ध्वा तद्भूधरे यन्त्रे दिनैकं मारयेत्पुटात् ।

इत्येवं जारिते सूते मारणं परिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

दो पल पारा, दो पल गन्धक इनको निरन्तर एक दिन भांगरेके
 रसमें मर्दन करे और भूधरयंत्रमें उसको एक दिन पुटित कर मारे
 इस प्रकार जारित पारेका मारण कहा है ॥ २९ ॥ ३० ॥

*मधुलाक्षा वा ऊर्णोति पाठे-ऊर्णा ऊन अर्थ है ।

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३५१)

अथवा ग्रासयोग्यं तु निहन्यात्सान्वितं रसम् ।

सूतकं घनसत्त्वं च मर्दयेत्कंगुणीद्रवैः ॥ ३१ ॥

अथवा ग्रासयोग्य बलिष्ठ रसको (पारेको) मालकांगनीके
तसे निरन्तर मर्दन करे ॥ ३१ ॥

दिनैकं गोलकं तं च शोषयेदातपे खरे ।

गर्भयन्त्रगतं पच्यात् त्रिदिनं हि तुषाग्निना ॥ ३२ ॥

इस प्रकार एक दिन मर्दन कर उसका गोला बनाय तीक्ष्ण धूपमें
सूखावे फिर गर्भयन्त्रमें रखकर तीन दिन तुष अग्निसे पचावे ॥ ३२ ॥

करीषाग्नौ दिवारात्रौ पचेत्तद्भस्मतां नयेत् ।

सूतं स्वर्णं व्योम शङ्खं समं रम्भाद्रवैर्दिनम् ॥ ३३ ॥

मर्दयेद्वीजसंयुक्तं चर्षिचारणयन्त्रके ।

सर्वकैर्मूलिकाद्रावादनमेकं तु मर्दयेत् ॥ ३४ ॥

एक दिनरात करीष (उपले गोबर सूखा) अग्निमें पचावे तो
पारेकी भस्म हो जायगी । पारा, सुवर्ण, अभ्रक, केलेका रस और
वीज इनके साथ मर्दन करे तथा चारणयन्त्रमें पारेको मूलिका रसोंके
साथ एक दिन मर्दन करे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

गर्भयन्त्रगतं पाच्यं म्रियते पूर्ववद्रसः ।

ब्रह्मदण्डी मेघनादो चित्रकं कटुतुम्बिका ॥ ३५ ॥

वज्रवल्ली बला कन्या त्रिकुटार्कं स्नुहीपयः ।

कन्दोरम्भा च निर्गुण्डी लज्जा जाती जयन्तिका ॥ ३६ ॥

विष्णुक्रान्ता हस्तिशुण्डी दद्रुघ्नो भृङ्गराट् पटुः ।

गुडूची लाङ्गली नीरकणा काली महोरगा ॥ ३७ ॥

काकबाची च दन्ती च एताः पारदमारकाः ।

व्यस्ताः समस्ता वा सर्वा देया ह्यष्टदशाधिकाः ।

उक्तस्थाने प्रयोक्तव्या रसराजस्य सिद्धये ॥ ३८ ॥

गर्भयन्त्रमें रखकर पारेको पचावे तो वह पूर्ववत् मर जाता है।
ब्रह्मदंडी, चौलाई, चीता, कडवी तुम्बी, वज्रवल्ली, खरेंटी, घोकुवार,
सोंठ, मिर्च, पीपल, आक, थूहरका दूध, रंभाकन्द, निर्गुण्डी, लाजा
(लज्जवन्ती जाती, जयन्ती, विष्णुक्रान्ता, हाथीशुण्डी, पमाड,
भांगरा, पित्तपापडा, गिलोय, कलिहारी, सुगन्ध वाला, नीली, कट-
सरैया, पीपल, सर्पाक्षी, वा तगर, काकमाची और दन्ती यह सब
समस्त वा पृथक् २ पारेकी मारनेवाली अठारह मूलिका हैं। रसराज-
की सिद्धिके निमित्त निजकथित स्थानमें प्रयोग करनी चाहिये ३५-३८

अथ गर्भयन्त्रप्रकारः

चतुरङ्गुलदीर्घा तु मृन्मयी दृढमूषिका ।

त्र्यङ्गुलीमध्यवितारे वर्तुलं कारयेन्मुखम् ॥ ३९ ॥

लोनस्य विंशतिर्भागा एको भागस्तु गुग्गुलोः ।

सुश्लक्ष्णं पेषयित्वा तु तोयं दत्त्वा पुनः पुनः ॥ ४० ॥

मुखालेपं ततः कुर्याद्रसं तत्र विनिक्षिपेत् ।

अन्धयित्वा पुटं देयं गर्भयन्त्रमिदं भवेत् ॥ ४१ ॥

चार अंगुल दीर्घ और तीन अंगुल चौड़ी मिट्टीकी दृढ मूषा बनावे।
उसका गोल मुख करे, लोनके बीस भाग, गुग्गुल एक भाग महीन
पीसकर मूषापर दृढ लेप करे, लवणादि मिट्टीमें प्रथम पारेकी पिट्टी
रखे। पीछे मुख बन्द कर लेप करे। पीछे जमीनमें गढा खोदकर
तुषाग्निसे मन्द मन्द स्वेदन करे तो एक दिनरात्रि वा तीन रात्रिमें पारा
भस्म होवे। यह गर्भयन्त्ररविधान है ॥ ३९-४१ ॥ इति रसमारण ॥

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३५३)

अथ हिगुलशुद्धिः

मेषीक्षीराम्लवर्गाभ्यां दरदं धर्मभावितम् ।

सप्तवारं प्रयत्नेन शुद्धिमायाति निश्चितम् ॥ ४२ ॥

हिगुल (सिंगरफ) को भेडके दूध और अम्लवर्गकी सात भावना धर्ममें देनेसे हिगुल शुद्ध होता है ॥ ४२ ॥ इति हिगुलशुद्धिः ॥

अथ गन्धकशुद्धिः

शुक्लपक्षसमच्छायो नवनीतसमप्रभः ।

मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठो गन्धक उच्यते ॥ ४३ ॥

शुक्ल पक्षके समान छायावान्, मक्खनके समान कान्तिमान्, एकसाकठिन और चिकना गन्धक श्रेष्ठ होता है ॥ ४३ ॥

घृतं भाण्डे पयः क्षिप्त्वा मुखं वस्त्रेण वेष्टयेत् ।

तत्पूर्वं चूर्णितं गन्धं क्षिप्त्वा तस्योपरि न्यसेत् ॥ ४४ ॥

कपालमेकमुत्तानं गन्धकस्यावियोगि तत् ।

दुग्धभाण्डं न्यस्य भूमौ देयमूर्ध्वपुटं लघु ॥ ४५ ॥

घी डालकर और दूध डालकर उस हांडीका मुख वस्त्रसे ढकदे । आमलासार गन्धक १६ तोले पीसकर घीमें गलावे । गलनेपर वस्त्रपर गलदे, गंधक उस वस्त्रसे टपककर दूधमें जम जायगी ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

ततः क्षीरे द्रुतं गन्धं शुद्धयोगेषु योजयेत् ।

गन्धं घृते विपक्तव्यं यावत्तैलनिभं भवेत् ॥ ४६ ॥

वस्त्रेणान्तरितं कृत्वा चालयेस्त्रिफलाम्भसि ।

एवं गन्धकशुद्धिः स्यात्तत्तो योगेषु योजयेत् ॥ ४७ ॥

तब उस दूधसे निकली हुई शुद्ध गंधकको कार्यमें लावे । गन्धकको घृतमें तबतक पकावे जबतक कि, वह तेलके समान होजाय । उसे

फिर वस्त्रमें छानकर त्रिफलेके जलमें डाल दे । इस प्रकारसे गन्धक शुद्ध कर योगोंमें लगाना उचित है ॥४६॥४७॥ इति गंधकशुद्धिः ॥

अथ अभ्रक शुद्धिः

कृष्णः पीतः श्वेतरक्तो योज्यो योगरसायने ।

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रं चेति चतुर्विधम् ॥ ४८ ॥

काला, पीला, श्वेत, लाल अभ्रक, रसायनके योग्य है। पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र ये चार भेद काले अभ्रकके हैं ॥ ४८ ॥

पिनाकाद्यास्त्रयो वर्ज्या वज्रं यत्नात्समाहरेत् ।

मुञ्चत्यग्नौ च निक्षिप्तः पिनाको दलसञ्चयम् ॥ ४९ ॥

इनमें पिनाकादि तीनोंको त्याग करके वज्र अभ्रकको यत्नसे ग्रहण करे, पिनाक अभ्रक अग्निमें डालनेसे दलसंचय अर्थात् पत्तोंको छोड़ता है ॥ ४९ ॥

अज्ञानाद्भ्रक्षणात्तस्य महादुःखप्रदो भवेत् ।

दर्दुरोऽग्नौ विनिक्षिप्तः कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ ५० ॥

इसको अज्ञानसे खानेसे महादुःखदायक कुष्ठ होता है, दर्दुर अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेडककीसी ध्वनि करता है ॥ ५० ॥

तच्च भक्षणमात्रेण नानारोगान् प्रयच्छति ।

नागश्चाग्निस्थितः सद्यः फूत्कारं च विमुञ्चति ॥ ५१ ॥

उसके खानेसे अनेक रोग होते हैं। नाग अभ्रक अग्निमें डालनेसे सर्पवत् फूत्कार करता है ॥ ५१ ॥

स च देहगतो नित्यं व्याधिं कुर्याद्भ्रगन्दरम् ।

वज्राभ्रकं तु वह्नौ च न किञ्चिद्विक्रियां व्रजेत् ॥ ५२ ॥

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३५५)

उसको खानेसे भगंदर रोग होता है. वज्राभ्रक अग्निमें रखनेसे कुछ भी विकारको प्राप्त नहीं होता है ॥ ५२ ॥

तस्माद्वज्राभ्रकं योज्यं व्याधिवाधक्यमृत्युजित् ।

धमेद्वज्राभ्रकं वह्नौ यावदग्निनिभं भवेत् ॥ ५३ ॥

गोक्षीरे च ततः सेच्यं गोक्षीरे च पुनः पुनः ।

भिन्न पात्रे च तत्कृत्वा मेघनादद्रवाम्बुना ।

भावयेदष्टयामं च जायते दोषवर्जितम् ॥ ५४ ॥

इस कारण व्याधि बुढापा मृत्युका दूर करनेवाला वज्राभ्रक प्रयुक्त है, उसको अग्निमें फूँके । जब यह अग्निके समान होजाय तब इसपर गोक्षीर दूध वारंवार छिड़के अर्थात् इसमें बुझावे । फिर इसे अलग रख गोलाईके रसमें आठ पहर भावना दे तो दोषवर्जित होता है ॥ ५३॥५४॥

अथवाभ्रस्य भागौ द्वौ सुस्ता चैकं जलेस्सह ।

त्रिदिनं स्थापयेत्पात्रे ततः सूक्ष्मं प्रपेषयेत् ॥ ५५ ॥

एतदभ्रकचूर्णं तु निस्तुषं व्रीहिसंयुतम् ।

वस्त्रेण बद्ध्वा सारनाले भाण्डमध्ये विमर्दयेत् ॥ ५६ ॥

हस्ताभ्यां स्वयमायाति यावदम्लं तु रेणुताम् ।

अदोषाभ्रगतं शुद्धं शुष्कं धान्याभ्रकं भवेत् ॥ ५७ ॥

अथवा अभ्रक दो भाग, मोथेका एक भाग इनको जलके साथ तीन दिन पात्रमें स्थापन कर फिर सूक्ष्म पीस ले वह अभ्रकका चूर्ण होकर रहित जौके सहित ले उसको वस्त्रमें बांध कांजीके साथ पात्रमें घुमाकर करे । हाथसे तबतक मले जबतक वह सर्वथा चूर्ण होजाय तब दोषरहित शुद्ध अभ्रक होती है ॥ ५५-५७ ॥

धान्याभ्रकं रविक्षीरे रविमूलद्रवैश्च वा ।

दिनमर्धपुटे पच्यात्सप्तधैनं मृतं भवेत् ॥ ५८

धान्याभ्रकस्य भागैकं द्वौ भागौ टङ्कणस्य तु ॥ ५९ ॥

पिष्ट्वा तदन्धमूषायां रुद्ध्वा तीव्राग्निना धमेत् ।

स्वभावशीतलं चूर्णं सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ ६० ॥

धान्य अभ्रकको आकके दूधमें वा आककी जड़के रसमें आधे दिन पुट देकर पाचित करे । ऐसा सात बार करनेसे अभ्रक मरता है । धान्याभ्रकका एक भाग, सुहागा दो भाग दोनोंको पीस अन्ध-मूषाम रख धान्याभ्रक बन्द कर तीव्र अग्नि दे । जब स्वांगशीतल हो जाय तब निकाल चूर्ण कर सब योगोंमें दे ॥ ५८-६० ॥ इति अभ्रकशुद्धिः ॥

अथामृतीकरणम्

सर्वेषां घातितानां तु ह्यमृतीकरणं शृणु ।

त्रिफलोत्थकषायस्य पलान्यादाय षोडश ॥ ६१ ॥

गोधृतस्य पलान्यष्टौ मृताभ्रस्य पलान् दश ।

एकीकृत्वा लोहपात्रे पीचयेन्मृदुवह्निना ॥ ६२ ॥

द्रवैर्जोर्णं समादाय सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ ६३ ॥

अब सब मारी हुई धातुका अमृतीकरण सुनो—त्रिफलेका काढा सोलह पल, गौका घी आठ पल, अभ्रक दश पल इन सबको एकत्र कर मृदु अग्निसे लोहपात्रमें पकावे जब रस जल जाय अभ्रक मात्र शेष रहे तब सब योगोंमें युक्त करे ॥ ६१-६३ ॥ इति अमृतीकरणम् ॥

अथ अभ्रकसत्त्वपातनम्

चूर्णोक्तं गगनपत्रमथारनाले धृत्वा दिनैकमथ

शोष्य च सूरणस्य । भाव्यं रसस्तदनु मूलरसे

कदल्या वेदांशटङ्कणयुतं शफरीसमेतम् ॥ ६४ ॥

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३५७)

पिण्डीकृतं तु बहुधा महिषीमलेन संशोष्य कोष्ठ-
गतमाशु धमेद्यताग्नौ । भस्त्रीद्वयेन च ततो वमते
हि सत्त्वं पाषाणधातुगतमात्रमसंशयोस्ति ॥ ६५ ॥

अभ्रकके चूर्णको एक दिन कांजी और एक दिन जमीकंदके रसमें
भिगोदे । पीछे केलाकंदके रसमें भावना दे, चतुर्थांश सुहागा और
छोटी मछली मिलाय भैंसके गोबरके साथ छोटी छोटी गोली बनावे ।
फिर धूपमें सुखाय कोष्ठिकामें रख बंकनाल धौंकनीसे महा अग्नि देवे
तो सत्त्व निकले । यह महारसायन जारणयोग्य तथा सब रोगोंको दूर
करनेवाला है ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ इति अभ्रकसत्त्वपातनम् ॥

अथ मनःशिलाशुद्धिः

जयन्तीभृङ्गराजोत्थं रक्तागस्तिरसैः शिलाम् ॥ ६६ ॥
दोलायन्त्रे पचेद्यामं यामं छागोत्थमूत्रकैः ।

क्षालयेदारनालेन सर्वयोगेषु योजयेत् ॥ ६७ ॥

हलदी, भांगरा, अगस्तिया इनके साथ मनशिलको दोलायंत्रमें
मूत्रके साथ एक पहरतक पकावे तो शुद्ध हो पीछे कांजीसे प्रक्षा-
न कर सबयोगोंमें प्रयोग करे ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ इति मनःशिलाशुद्धिः ॥

अथ हरतालशुद्धिः

तालकं पोटलीं बद्ध्वा सचूर्णं काञ्जिके क्षिपेत् ।

दोलायन्त्रेण यामैकं ततः कूष्माण्डजे रसे ॥ ६८ ॥

तिलतैले पचेद्यामं यामं च त्रिफलाजलैः ।

एवं यन्त्रे चतुर्यामं पाच्यं शुद्धयति तालकम् ॥ ६९ ॥

हरनालको चूर्ण कर पोटली बांध कांजीमें डाल दे और एक
पहरतक दोलायंत्रमें पचावे, फिर पेटेके रसमें तिलके तेलसे एक पहर-

(३५८)

कामरत्न

षोडश-

तक पकावे, फिर एक पहर त्रिफलाजलसे पाचित करे तो रक्त मूत्रों-
में हरताल शुद्ध होजाता है ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ इति हरतालशुद्धिः ।

अथ तुत्थशुद्धिः

विष्ठया मदयत्तुत्थं मार्जारककपोतयोः ।

दशांशं टङ्कणं दत्त्वा पाच्यं मृदुपुटे तु तत् ।

पुटं दध्ना पुटं क्षौद्रे देयं तुत्थं विशुद्धये ॥ ७० ॥

तुत्थ (तूतीया) को बिलाव और कबूतरकी बीटमें मर्दन करे,
उससे दशवां हिस्सा सुहागा डालकर मृदु पुटमें पचावे तथा इसकी
शुद्धिके निमित्त दही और शहदकी पुट देने चाहिये ॥ ७० ॥

अथ काशीशशंखनाभिशुद्धिः

घर्मे शुद्धयति काशीशं दिनं जम्बीरभावितम् ॥ ७१ ॥

एक दिन जंबीरीके रसमें भावना देकर धूपमें सुखावे तो काशीश
शुद्ध होवे ॥ ७१ ॥

शङ्खनाभं च संदग्ध्वा भाव्यमम्लेन सप्तधा ।

प्रक्षाल्यं ग्राहयेत्तावच्छुद्धिमायाति नान्यथा ॥ ७२ ॥

शंखनाभि (नाभिशंख) को लाकर सातवार अम्ल पदार्थसे
भावना देकर प्रक्षालन करे तो शुद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ॥ ७२ ॥

अथ शातकुम्भादिधातुशोधनम्

मृत्तिकामातुलुङ्गाम्लैः पञ्चवासरभाविता ।

सभस्मलवणैर्हर्म शोधयेत्पुटपाकतः ॥ ७३ ॥

पांच प्रकार की मृत्तिका भस्मके साथ जम्बीरी अम्ल इनसे पुट-
पाकहारा सुवर्णको शोधे ॥ ७३ ॥

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३५९)

बल्मीकमृत्तिका धूमं गैरिकं चेष्टिका पटुः ।

इत्येता मृत्तिकाः पञ्च जम्बीरैरारनालकैः ॥ ७४ ॥

पिष्ट्वा लिप्तस्वर्णपत्रं पुटेन परिशुद्धयति ।

नागेन टङ्ककणेनैव धूमे शुद्धयति रौप्यकम् ॥ ७५ ॥

बमइकी मिट्टी, धूम्र, गेरू, इंट और लवण ये पांच मृत्तिका जम्बीरी
तीबूके रस और कांजीमें खरल कर उसके द्वारा स्वर्णके पत्तोंपर लेप
कर पुटपाक करनेसे सुवर्ण भले प्रकारसे शुद्ध होजाता है । रूपा बग
और सुहागेके साथ लगानेसे शुद्ध होता है ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

खटिका लवणं तक्रैरारनालैश्च पेषयेत् ।

तेन लिप्तं ताम्रपत्रं तप्तं तप्तं निषेचयेत् ॥ ७६ ॥

खडिया और सेंधेनोनको तक्र और कांजीमें पीसकर तांबेके पत्रों-
पर लेप कर बारंबार आगमें तपाकर शुद्ध करे ॥ ७६ ॥

खदिरारनालतक्रान्तनिर्गुण्डी च विशुद्ध्यते ॥ ७७ ॥

रोहणं राजवं चैवं तृतीयं च पुटीरकम् ।

इति तीक्ष्णं त्रिधा तं च शोधयेद्योगसिद्धये ॥ ७८ ॥

खैर तथा कांजी, मट्ठा और निर्गुण्डी, राजवृक्ष, रोहिण और पुटीर
का प्रयोग करना चाहिये । इस प्रकार तीक्ष्ण तीनवार शुद्ध कर
गोमें लगावे ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

अथ तुत्थटङ्ककणकाचलोहशोधनम्

शशरक्तेन संलिप्तं त्रिवारं चाग्निपाचितम् ।

तुत्थटङ्ककणकाचैर्वा धामितं शुद्धमृच्छति ॥ ७९ ॥

तीन वार रक्तवर्गकी वा शशाके रक्तकी भावना देकर तीन वार अग्निमें पचावे, बारबार लेपकर अग्निमें रखनेसे तूतिया सुहागा और काच ये तापसे शुद्ध होते हैं ॥ ७९ ॥

अथवा लोहचूर्ण तु गोमूत्रैः षड्गुणैः पचेत् ।

प्रक्षालयेदारनालैः शोष्यं शुद्धिमवाप्नुयात् ॥ ८० ॥

अथवा लोहचूर्ण छः गुने गोमूत्रमें पकाकर पीछे कांजीसे प्रक्षालन कर धूपमें सुखानेसे शुद्ध होता है ॥ ८० ॥

सर्वेषां मते मारणम्

शुद्धसूतं समं स्वर्णं खल्वे कुर्याच्च गोलकम् ।

अधोर्द्ध्वं गन्धकं दत्त्वा सर्वतुल्यं निरुध्य च ॥ ८१ ॥

विंशद्वनोपलैर्देयं पुटान्येव चतुर्दश ।

निरुत्थं जायते भस्म गन्धं देयं पुनः पुनः ॥ ८२ ॥

शुद्धपारेके समान सोना लेकर खरल करे गोली बनावे । उससे आधा गन्धकका चूर्ण गोलेके नीचे धर गोलेको भूषामें रख बीस वनकी उपलियोंके द्वारा चौदह वार पुट देनेसे स्वर्णकी भस्म बनजाती है । हरेक पुटमें गन्धकका चूर्ण देता जाय ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

रौप्यं पत्रं चतुर्भागं गन्धं भागेन लेपयेत् ।

जम्बीरीनरपिष्टेन पञ्चविंशद्वनोपलैः ॥ ८३ ॥

वध्वा त्रिभिःपुटे पञ्चाद्गन्धं देयं पुनः पुनः ॥

म्रियते नात्र सन्देहस्तत्तत्कर्मणि योजयेत् ॥ ८४ ॥

* कसूम, खैर, लाख, मंजीठ, लालचंदन, सहिजना, दुपहरिया, कपूरगंधो, सोना । माखी ये रक्तवर्ग हैं ।

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३६१)

चार भाग चांदीके पत्र, एक भाग गन्धक जम्बीरी नींबूके रसमें खरल कर उनपर लेप करे । फिर संपुटमें रख पच्चीस वनके उपलोंकी अग्निके द्वारा हरेके पुटमें गन्धक देकर तीन बार पुटकपाक करे अवश्य चांदीकी भस्म होजायगी फिर कार्यमें लावे ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

ताम्रतुल्येन गन्धेन ह्यम्लपिष्टेन लेपयेत् ।

कण्टवेधीकृतं पत्रमन्धयित्वा पुटे पचेत् ॥ ८५ ॥

उद्धृत्य चूर्णयेत्तस्मिन् पादांशं गन्धकं क्षिपेत् ।

जम्बीरैरारनालैर्वा पिष्ट्वा बध्वा पुटे पचेत् ॥ ८६ ॥

एवं चतुः पुटैः पाच्यं गन्धं देयं पुनः पुनः ।

मातुलुङ्गद्रवैः पिष्ट्वा पुटमेकं प्रदापयेत् ॥ ८७ ॥

तांबेके कंटकवेधी पत्र लेकर उसके बराबर गन्धकको कांजीमें खरल कर उसको तांबेके पत्रोंपर लपेटे, फिर उन कंटकवेधी तांबेके पत्रोंको गजपुटमें पचावे, फिर महीन पीस चूर्ण करले । इसके उपरान्त चौथा भाग गन्धक मिलाय जम्बीरीनींबू कांजीमें पृथक् पृथक् पीसकर गंधक मिलाय चार पुट दे और जंबीरीके रसमें पीसकर वा बिजौरेके रसमें पीसकर पुटपाक करनेसे भस्म होजाती है ॥ ८५-८७ ॥

अथास्य दोषहरणम्

सितशर्करयाप्यैकं पुटं देयं मृतं भवेत् ॥ ८८ ॥

मृतं ताम्रं तु जम्बीरैर्यामिं खल्वे विमर्दयेत् ।

तद्गोलं सूरणे क्षिप्त्वा रुद्ध्वा सर्वं च लेपयेत् ।

शुष्कं गजपुटे पाच्यं निर्दोषं सर्वरोगहृत् ॥ ८९ ॥

एक भाग तांबा और दो भाग पारा इनको जम्बीरीके रसमें खरल कर खांड मिलाय तीन बार पुटपाक करनेसे तांबेकी भस्म होजाती है ।

मरे ताम्रको जम्बीरीके, रसमें एक पहर खरल कर गोला बनावे ।
उसको जिमीकन्दके बीचमें धर लेप कर गजपुटमें पचानेसे सर्व
रोगोंकी हरनेवाली भस्म होती है ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

अथ लोहमारणम्

नायं पचेत् पञ्चपलादवागूध्वं त्रयोदश ।

आदौ मन्त्रस्तथा कर्म कर्तव्यं मन्त्र उच्यते ॥ ९० ॥

लोहमारण श्रेष्ठ कर्म है इससे प्रथम इसकोपांच पलसे तेरह पल
पर्यन्त लोहेको लेकर पहले मन्त्र पढ़े फिर कर्म करे ॥ ९० ॥

“ ॐ अमृतोद्भवाय स्वाहा ” इति मर्दनमन्त्रः ।

अनेन मन्त्रेण लोहस्य तत्साधकस्य रक्षा
कर्तव्या । “ ॐ नमश्चण्डचक्रपाणये स्वाहा यक्ष-

सेनाधिपतये नुरगुरुमहाविद्याबलाय स्वाहा । ”

अनेन मन्त्रेण बलिं दत्त्वा ततः कर्म कुर्यात् ॥

“ ॐ अमृ. ” इस मन्त्रको पढ़कर मर्दन करे ॥ इस मन्त्रसे लोह
और साधक की रक्षा करे और दूसरे “ ॐ नमश्च. ” इस मन्त्रसे बलि
देकर कर्म करे ॥

दन्तीपत्रद्रवं तस्यां लोहचूर्णं दिनोदये ।

घर्मे धार्यं दिनं कांस्ये द्रवं देयं पुनः पुनः ॥ ९१ ॥

रुद्ध्वा रात्रौ पुटे पाच्यं प्रातर्द्रवैश्च भावयेत् ।

एवमष्टदिनं कुर्यात्त्रिविधं म्रियते तु यः ॥ ९२ ॥

दन्तीके पत्तोंके रसमें लोहेका चूर्ण खरलकर तीन दिन धूपमें रक्खे
बार बार इसकी भावन दे, फिर रातमें लोहेको शरावसंपुटमें रक्खकर
प्रातःकालमें पूर्वोक्त द्रवोंसे पचाना, इस प्रकार आठ दिन करनेसे
लोहा मर जाता है ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३६३)

मृतस्य लक्षणम्

मध्वाज्यं मृतलोहं च रौप्यं सम्पुटके क्षिपेत् ।

रुद्ध्वा ध्माते तु संग्राह्यं रौप्यं चेत्पूर्वमानकम् ।

तदा लोहं मृतं विद्यादन्यथा साधयेत्पुनः ॥ ९३ ॥

शहद, घी और मृत लोहेकी रूपके सम्पुटमें रख मुख बन्द कर
अग्नि जलानेसे लोह भस्मही यदि पूर्ण ही रहे तो लोहेको मृत जाना
यदि न हो तो फिर पुटपाक करे ॥ ९३ ॥

अथ शोधनम्

गन्धकं तुल्यकं लोहं तुल्यं खल्वे विमर्दयेत् ॥ ९४ ॥

दिनैकं कन्यकाद्रावै रुद्ध्वा गजपुटे पचेत् ।

इत्येवं सर्वलोहानां कर्तव्यं स्यान्निरुत्थनम् ॥ ९५ ॥

गन्धक और मृत लोहेको खरलमें डालकर एक दिन घीकुवारके
तमें मर्दन करे, फिर गोला बनाय सम्पुटमें रख गजपुटमें पचावे, इस
प्रकार सब लोह शुद्ध हो जाते हैं ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

अथास्यामृतीकरणम्

घृततुल्यं मृतं लोहं लोहपात्रगतं पचेत् ।

जीर्णं घृते समादाय योगवाहेषु योजयेत् ॥ ९६ ॥

घृत और लोहेकी भस्मको बराबर लेकर लोहेके बासनमें पकावे ।
ब घी जीर्ण हो जाय तब उतार ले । इसको योगवाही योगोमें प्रयोग
करे ॥ ९६ ॥ इति लोहभारणम् ॥

अथ भूनागसत्त्वम्

सद्यो भूनागमादाय क्षालयेच्छिथिलं बुधः ।

अथवा कुक्कुटं वीरं कृत्वा मन्दिरमाश्रितम् ॥ ९७ ॥

(३६४)

कामरत्न

षोडश-

मलमूत्रं गृहीतेन सदम्बु प्रथमांशकम् ।

आलोड्य टङ्कं मध्वाज्यैर्घर्मे सर्वार्थमादरात् ।

मुञ्चेत्तु ताम्रवत्सत्त्वमेतद्भूनागसत्त्वकम् ॥ ९८ ॥

प्रथम भूनागको लाकर जो कि, वर्षाकालमें ताम्रभूमिमें हुआ हो उसको क्षालित करके अथवा देवकरुड कनेर मिलाकर वा सुरगेंकी बीटके साथ उसको मिलाकर अथवा गैके मलमूत्रके साथ जल मिलाय तत्कालके जलसे उसके चूर्णको शहद घृतमें मिलाय धूपमें धर दे । फिर मर्दन कर वंकनालमें रख फूके तो तांबे के समान सत्त्व निकले ९७।९८।

अथ लवणपञ्चकम्

सामुद्रं सैन्धवं काचं चुल्लिका च सुवर्चलम् ।

मूलिका नवक्षारश्च क्षेयं लवणपञ्चकम् ॥ ९९ ॥

समुद्रलवण, सेंधा, कांच, चुल्लिका, काला नमक, मूलिका और नवक्षार यह पांच लवण जानने ॥ ९९ ॥ इति लवण पञ्चक ॥

अथ क्षाराः

त्रिक्षारष्टङ्कणक्षारो यवक्षारश्च स्वर्जिका ॥ १०० ॥

सुहागा, जवाकार और सज्जीखार ये तीन क्षार हैं ॥ १०० ॥

अथ वृक्षक्षारः

तिलापामार्गकदलीपलाशः शिग्रुपौण्ड्रकौः

मूलकार्द्रकचित्राश्च सर्वमन्तः पुटेपचेत् ॥ १०१ ॥

समालोड्य जलैर्बध्वा वस्त्रे ग्राह्यमधोजलम् ।

शोधयेत्पाचयेदग्नौमृद्भाण्डेन तु तज्जलम् ।

ग्राह्यं क्षारावशेषं तु वृक्षक्षारमिदं स्मृतम् ॥ १०२ ॥

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३६५)

तिल चिरचिटा, केला, ढाक, सहिजान, पौड्रक, मूली, अदरख, चीता इनको, पृथक् अन्तःपुटमें पचावे । (कहीं पौड्रकका अर्थ इक्षु है) और जलमें अच्छी प्रकार आलोडित कर वस्त्रमें ग्रहण कर छान ले और उस जलको शोधन कर अग्निमें पचाय मिट्टीके बर्तनमें रखे फिर जो शेष रहे वह क्षार है यह वृक्षक्षार जानो ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

अथ विडः

मूलिकार्द्रकवल्लीनां क्षारं गोमूत्रयोजितम् ।

वस्त्र पूतं जलं ग्राह्यं गन्धकं तेन भावयेत् ॥ १०३ ॥

सप्तवारं खरे धर्मे बीजोऽयं हेमजारणे ।

कन्याहयारिधत्तूरद्रवैर्भाव्यं तु गन्धकम् ॥ १०४ ॥

शतवारं खरे धर्मे बीजोऽयं हेमजारणे ।

गन्धकं शङ्खचूर्णं वा गोमूत्रैः शतभावितम् ।

बीजोऽयं जारणे श्रेष्ठो बीजानां द्रावणे हितः ॥ १०५ ॥

मूली, अदरख, चीता इनको गोमूत्रसे पीस वस्त्रसे छानले, उसमें गन्धककी भावना दे । इस प्रकार, सातवार कर कठिन धूपमें रखदे । यह सुवर्णके जारण करनेका बीज है । घीकुवार कनेर और धतूरीके रस सहित गंधककी भावना देकर सातवार कठिन धूपमें रख दे यह भी सुवर्णके जारणका बीज है गंधक और शंखके चूर्णको सौ बार गोमूत्रसे भावना दे । यह हेमजारणमें श्रेष्ठबीज है । बीजोंके द्रावणमें हित कारक है । (विरिया सौचर नोनको भी विड कहते हैं) १०३-१०५ - १०५ ॥

अथ अम्लवर्गः

जम्बीरं नागरङ्गश्च मातुलुङ्गाम्बवेतसम् ।

चाङ्गेरी चणशुक्रश्च अम्लवर्गः प्रकीर्तितः ॥ १०६ ॥

(३६६)

कामरत्न

षोडश-

जम्बोरीनींबू, नागरंग (नारंगी), मातुलुंगी, बिजौरानींबू, अम्लवे-
तस, अम्ललौना, चना, चीता यह अम्लवर्ग हैं ॥ १०७ ॥ इति अम्लवर्ग।

अथ वज्रमूषा

वल्मीकमृत्तिकाभागं गवास्थितुषभस्मनोः ।

भागं रसं समादायं वज्रमूषा विरच्य ते ॥ १०७ ॥

इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचिते कामरत्ने रसादिशोधनं नाम
षोडशोपदेशः ॥ १६ ॥

तिनकोंकी राख दो भाग, बँमईकी मट्टी एक भाग, रस एक भाग
लेकर अर्थात् लोहेका सेल एक भाग ले । बकरीके दूधसे पीसकर दूध
मूषा बनावे, धूपमें सुखा ले उपरोक्त कल्क लेपन कर मुख बंध करे ।
वह वज्रमूषा है । इसमें उत्तम पारेकी भस्म होती है ॥ १०७ ॥

इस ग्रन्थमें जो तोलका प्रमाण आया है

उसका प्रमाण

चार चौकी एक जौटली वा रत्ती होती है ।

छः रत्तीका एक माशा वा धान्यक होता है ।

चार माशेको एक शाण वा टंक कहते हैं ।

दो टंकको एक कोल (आठ मासे) कहते हैं ।

दो कोलका एक कर्ष (तोला) होता है ।

दो कर्षका आधा पल होता है, इसे शुक्ति कहते हैं ।

दो पलकी एक प्रसृति (८ तोले) होती है ।

दो प्रसृतिकी एक अञ्जली और वल्ली कुडव (१६ तोले) है ।

इस प्रकार परिभाषा समझना चाहिये ।

उपदेशः १६.

हिन्दीटीकासहित

(३६७)

अथ दीर्घायुष्यकरणम्

नीमकी छाल ४ मासे, नीमकी जड ५, मीमके फूल ५, हरिद्रा ७, अपामार्ग (चिरचिटा) ५, त्रिकुटा, २ बेलकी जड १, २५, श्वेतचीता १ मासा, अजबायन १ तोला, लवण, ५ मासे, यह सब एकत्र कर तत्ते पानीसे वस्त्रमें शोधले । तीन मासेकी गोली बनाकर प्रतिदिन एक गोली खायतो तीन सौ साठ वर्ष जिये ।

पहले महीने अग्निकी प्रबलता दूसरे महीने व्याधिनाश, तीसरेमें पुष्टि, चौथेमें जनैकदृष्टि, पांचवमें सुन्दरता, छठेमें कोकिलास्वर, सातवेंसे पलितनाश, आठवेंमें वज्रकाय, नौवेंमें निद्रानाश, दशवेंमें यशोवृद्धि, ग्यारहवेंमें श्रुतिधर और बारहवेंमें सर्वसिद्धि होवे ॥

“ॐ स्वस्तिनानन्दग्रामात् नानन्दग्रामात् नानन्दगृहात् नानन्दविहारात् नानन्दकोनाम भिक्षुः एका हिक, दद्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक नित्यज्वर, मासिक, वार्षिक द्विवार्षिक, हाकिनी, कृत्या, वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, सन्निपातादीन् सर्वज्वरान् समादिशाते भवद्भिः प्रहितराजादेशश्रवणपत्रदर्शनात् श्री अमुकस्य शरीरे मुहूर्तमपि न स्थातव्यं ज्वर रे रे फट् फट् हुं स्वाहा । मारीच २ अमुकस्य ज्वरं हर २ उच्चाटय २ स्वाहा” इदं यंत्रं लिखित्वा शिरसि बद्धं सर्वज्वरान् हन्ति ।

यह यंत्र लिख शिरपर बांधनेसे सब ज्वर दूर होते हैं ॥

इस यंत्र को काक और उल्लूके रक्तसे लिख शिरमें बांधे या कौएके गलेमें बांध छोड़दे तो ज्वर आदिका उच्चाटन होकर रोगी सुखी हो जायगा । यह सत्य है ॥



इति श्रीपार्वतीपुत्रनित्यनाथविरचिते कामरत्ने पण्डितज्वालाप्रसाद-
मिश्रकृतभाषाटीकायां रसादिशोधनं नाम षोडशोपदेशः ॥ १६ ॥

(३६८)

कामरत्न

संवत् गुणशर अंग विधु, पौष कृष्ण गुरुवार ।
 सकल कामप्रद पंचमी, मन इच्छा दातार ॥ १ ॥
 पूर्ण कियो शुभ ग्रन्थ, यह भाषा तिलक बनाय ।
 लखाहि सजन हिय लहाहि मुद, काम अर्थको पाय
 कामरत्न सब कामप्रद, सेवाहि जो करि नेम ।
 ते पारवाहि सुख संपदा, बढहि वंशमें क्षेम ॥ ३ ॥
 वसत राम गंगा निकट, नगर मुरादाबाद ।
 तहां रहत हरिभजनरत, द्विज ज्वालापरसाद ॥ ४ ॥
 तिन भाषाटीका कियो, गौरि गिरीश मनाय ।
 भक्तन सुख दायक सदा, जनकी करें सहाय ॥ ५ ॥

इति कामरत्नं समाप्तम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
 “लक्ष्मीवेंकटेश्वर” स्टीम् प्रेस,
 कल्याण-मुंबई,

खेमराज श्रीकृष्णदास,
 “श्रीवेंकटेश्वर” स्टीम्,
 खेतवाडी-मुंबई,

